लोकमान्य तिलक

(जीवन-चरित्र)

★

— लेखक —

प्रा. भीमराव गोपाल देशपांडे,

अेम. अे., बी. टी, राष्ट्रभाषा-कोविद

मराठी विभाग,

काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय

★

प्रकाशक

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

निवेदन

राष्ट्रभापा प्रचार-सम्मेलनके छठे, पुरी-अधिवेशनमें निर्णय किया गया कि लोकमान्य तिलककी शताब्दीय जयन्तीपर लोकमान्यको श्रद्धाजलि देनेके निमित्त राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अुनके सम्बन्धमे हिन्दीमे अेक पुस्तक प्रकाशित करे। अिस निर्णयके अनुसार यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। अिसके लेखक हैं हिन्दू-विश्वविद्यालयके मराठीके प्राध्यापक श्री भी. गो. देशपाण्डे। अेक अरसा हुआ, वे अिस पुस्तककी तैयारी कर रहे थे और अुन्होने अुसके लिअे वहुत कुछ सामग्री सग्रह कर ली थी। जब हम अुनसे मिले, पुस्तक लगभग तैयार हो चुकी थी। अुन्होंने अपनी पुस्तक प्रकाशनार्थ समितिको दी, अिसके लिअे हम अुनके कृतज्ञ हैं।

पुस्तक है तो छोटी परन्तु हमारा विश्वास है कि लोकमान्यके जीवन-चरित्रपर हिन्दीमें अच्छी पुस्तकका जो अभाव है, अुसे यह पूरा कर सकेगी। लेखकने अच्छी सामग्री अेकत्र की है और अुसे सक्षेपमे तथा सुरुचिपूर्ण भाषामें अिस पुस्तक द्वारा रख दिया है। अिसकी पाण्डुलिपि पढनेपर अेक मित्रने लिखा था—"अिसमे अच्छी सामग्री है, भाषा भी अच्छी है, किन्तु अुसमें कोओ नवीनता नही।" मित्रका यह अपना अभिप्राय है, परन्तु अिस पुस्तकको जब हमने देखा तब अिसमें हमने अेक नवीनताका भी अनुभव किया। वैसे अूपर-अूपरसे देखनेसे तो प्रतीत होता है कि जैसे और जीवन-चरित्र लिखे जाते हैं, वैसे ही

यह पुस्तक भी लिखी गअी है; फिर भी अिसकी अपनी विशेषता है। हिन्दीमे ही क्यो सम्भवत. मराठीमें भी लोकमान्यपर अैसी पुस्तकोकी वहुत कमी है। श्री नृसिंह चिन्तामणि केलकरका "लोकमान्य टिळकाचे चरित्र" वहुत बडा ग्रन्थ है। अुसे पूरा पढ जाना सबके लिअे आसान नही और पढनेपर भी अितने विस्तारसे लोकमान्यका जीवन-चित्र अपनी दृष्टिके समक्ष अुभारना पाठककी अपनी कल्पना और बुद्धिशक्तिकी क्षमतापर अवलम्बित है, परन्तु श्री भी गो देशपाण्डेने २२४ पृष्ठकी अिस पुस्तकमे श्री लोकमान्यके जीवनकी मुख्य-मुख्य बातोका तो समावेश किया ही है, साथ ही अपनी शक्ति-अनुसार अुनके देशसेवामे निरत संघर्षमय अेव कर्मनिष्ठ जीवनका अेक आदर्श चित्र भी अुपस्थित करनेका प्रयत्न किया है। अिसमे वे कितने सफल हुअे है, यह तो पाठक स्वयं ही निर्णय कर ले, परन्तु अिस पुस्तककी यही अेक विशेषता है जिसके प्रति हम पाठकोका ध्यान खीचना चाहेगे।

श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित "कुसुमाकर" ने अिसकी पाण्डुलिपिके सम्पादन-कार्यमे जो सहायता की है, अुसके लिअे हम अुनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते है। श्री चितलेजी आदि जिन भाअियोने अिसे अधिक अुपयोगी बनानेकी दृष्टिसे सुझाव दिअे, अुनके प्रति भी हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते है। पुस्तकमे दिअे गअे चित्रो तथा कुछ आवश्यक जानकारी प्राप्त करनेमे सहायता करनेके लिअे हम केसरी-कार्यालय — विशेषकर श्री सोमणजीके अत्यन्त कृतज्ञ है।

मोहनलाल भट्ट

मन्त्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

३–७–५६

अनुक्रमणिका

प्रकरण			पृष्ठ

भूल सुधार

पृष्ठ	पंक्ति	भूल	सुधार
१४	२१	On British Rule in India	Un British Rule in India
१३०	२४	पूर्वता	ऽपूर्वता
१३०	२५	लिङग	लिङगम्
१३२	१०	गत्रुन्कभुक्ष्व	शत्रुन्भुक्ष्व
१३२	१३	स्मृद्ध	समृद्ध
१३७	६	परेपदमापदाम्	परपदमापदाम्
१४६	२६	दर्शक	प्रतिनिधि
१४८	१२	कुशासन भी	स्व कुशासन भी
१५१	१४	तिलकला	तिलकका
१५५	२४	बेकाबू	बेकाम
१५६	१०	श्रेष्ठात्मक	श्लेषात्मक
१६०	४	दूरदृष्टिका परिणाम था	दूरदृष्टि थी
१६०	५	व्याख्या	व्यवस्था
१६३	४	कामना	प्रशंसा
१६४	१४	सग्रह	लोकसग्रह
१७४	१	भारतसे नही लौटे थे	भारतसे लौटे थे
१८२	१	करवा	करवाकर
१८२	२३	वह	वहाँ
१८३	२	बेनस्कूर	बेनस्फूर
१९१	१	हत्याकाण्डको	हत्याकाण्डके
१९९	२१	कारण ग्रथ	करण ग्रथ
२०६	१	कामरे	कामटे
२१३	२४	चलानि	चलन्ति
२२१	६	वपतोऽस्य	वपनस्थ
२२१	१३	सहत	सहृत
२२२	३	क्लासु	कलासु
२२२	८	माकथ	मा कथं

लोकमान्य तिलक

जन्म
२३ जुलाओी, १८५६

मृत्यु
१ अगस्त, १९२०

लोकमान्य तिलक

(जीवन-चरित्र)

पहला प्रकरण

अेकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन भासते ।
कुलं पुरुषसिंहेन चन्द्रेणेव हि शर्वरी ।।

कोकण प्रदेशके चिखलगाँवमे ता. २३ जुलाअी १८५६ को अेक साधारण परिवारमें लोकमान्य बाल गगाधर तिलकका जन्म हुआ था । अपनी विशाल शाखाओ अेव घने पत्तोकी छायासे सैकडो थके पथिकोको आश्रय देनेवाले वृक्षराज वटकी अुत्पत्ति जैसे सरसोके समान सूक्ष्म बीजसे होती है, वैसे ही तिलकका जन्म अत्यन्त साधारण कुल और अज्ञात गाँवमे हुआ था । अुनके पिताका शुभ नाम गगाधर पन्त तिलक (टिळक) था । गगाधरकी सह-धर्मचारिणी हिमगिरि सुता 'पार्वती' के अतिरिक्त अन्य हो कौन सकती थी ? सौभाग्यवती पार्वतीबाअी तिलकमें पुराण-प्रसिद्ध पार्वतीकी तपस्या, चरित्र तथा पातिव्रत्य अपने यथार्थ रूपमे विद्यमान थे ।

विशुद्ध धर्मका आचरण करनेवाले अिस युगलको तीन कन्याअें हुअी । अत' पुत्र-लाभकी कामनासे सौभाग्यवती पार्वतीबाअी तिलकने सूर्योपासना की । भगवान सूर्यनारायण अुनकी निष्ठा तथा तपस्यासे अितने प्रसन्न और

सन्तुष्ट हुअे कि सूर्योदयके केवल दो घडी पश्चात् पार्वतीबाओीको सूर्य-सा तेजस्वी पुत्र प्राप्त हुआ। गगाधर पन्त और पार्वतीबाओीकी ससृति-बेलमे अमृत-फल लगा। अुनके हर्षका ठिकाना न रहा। बालकका नामकरण हुआ और अुनके कुलदेवके नामपर नाम रक्खा गया 'केशव', किन्तु माता-पिता अुसे वात्सल्य प्रेमवश 'बाल' कहकर ही पुकारते थे। सौभाग्यसे पार्वती गगाधरका यह 'बाल' भारत-माताका भी लाडला पुत्र बनकर बाल गंगाधर तिलक नामसे प्रसिद्ध हुआ। युवावस्थामे वह 'यथा नाम तथा गुण.' 'बलवन्तराव' बना और जिस प्रकार पार्वतीके पुराण-प्रसिद्ध पुत्र कुमार कार्तिकेय देवोकी मुक्तिके लिअे लडे, वैसे ही बलवन्तराव तिलक भी भारत-माताकी स्वतन्त्रताके लिअे जीवन-पर्यन्त वीरतापूर्वक लडते रहे।

बुद्धिमान और कर्मठ गंगाधर शास्त्री

श्री गगाधर पन्त तिलकने मराठीकी सातवी कक्षा तक ही शिक्षा पाओी थी। अंग्रेजी भाषा तथा साहित्यसे अुनका कुछ भी परिचय नही था, किन्तु वे थे बड़े प्रतिभाशाली। निर्धनतासे पराभूत होकर वे सरकारी प्राथमिक पाठशालामे पाँच रुपअे मासिक वेतनपर अध्यापक बने, किन्तु अपनी कार्यकुशलता, कर्मठता और बुद्धिमानीसे बढते-बढते शिक्षा-विभागके असिस्टेन्ट डिप्टी अिन्स्पेक्टर-पद तक पहुँच गअे। वे अत्यन्त कुशल अध्यापक थे। गणित, व्याकरण तथा सस्कृत आदि विषयोके अच्छे ज्ञाता थे। अुन्होने अपने ही प्रयत्नसे अिन विषयोका गम्भीर अध्ययन किया, अिसलिअे अुनके प्रधानाध्यापक तथा सस्कृत भाषाके प्रकाण्ड विद्वान डा० भाण्डारकर अुन्हें 'गंगाधर शास्त्री' कहने लगे। डा० भाण्डारकरकी सहानुभूतिके कारण वे असिस्टेंट डिप्टी अिन्स्पेक्टर होकर ७०) रुपया मासिक वेतन पाने लगे। अुन्होने गणित, व्याकरण तथा सस्कृतकी कओी छोटी-छोटी छात्रोपयोगी पुस्तके लिखी और अुनसे लगभग चार हजार रुपया अर्जित किया। अुन्हे लिखने, पढने और पढानेका व्यसन-सा था। समयनिष्ठा, कर्मठता, मनस्विता, स्वाभिमान और शुद्ध चरित्र आदि गुणोकी वे साक्षात्

मूर्ति थे। पुत्र पर अैसे पिताका प्रभाव पडना स्वाभाविक ही था। जैसे शरद्‌की पूर्णिमाके चन्द्रमाका पूर्ण प्रतिविम्ब मानसरोवरमे पड़ता है, वैसे ही गगाधर शास्त्रीके सब सद्‌गुणोका प्रभाव कुमार बाल तिलकके स्वच्छ मनपर भी पडा।

बुद्धिमान पिताका अधिक बुद्धिमान पुत्र

जब बाल तिलक पाँच वर्षके हुअे तब अुन्हे रत्नागिरिकी प्राथमिक मराठी पाठशालामे पढने भेज दिया गया। किन्तु केवल पाठशालाकी पढ़ाअीसे गगाधर शास्त्री सन्तुष्ट नही थे। अतः, वे अुन्हे घरपर भी पढाने लगे। तिलककी बुद्धि अितनी तीव्र थी कि अुनके पिता जो कुछ भी पढाते अुसे वे तत्काल ग्रहण कर लेते। अेक श्लोक कण्ठस्थ करनेपर पिताजी अेक पाअी पुरस्कार दिया करते थे। अिस प्रकार, अुन्होने शीघ्र ही चार-पाँच सौ श्लोक कण्ठाग्र कर दो-तीन रुपअे संग्रह कर लिअे। यज्ञोपवीत सस्कारके पूर्व ही अुन्होने रूपावली, समाज-चक्र, अमर-कोश और ब्रह्म-कर्म आदि अितने कण्ठस्थ कर लिअे कि सन् १८६४ मे जब अुनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, तब अुनकी तीव्र स्मरण-शक्ति, अुच्चारणकी शुद्धता तथा स्पष्टता देखकर अुपाध्याय और वैदिक गुरुको आश्चर्य-चकित होना पड़ा और वे अुसे सन्ध्या पढानेमे संकोच करने लगे। साधारणतया संस्कृत और गणित दोनोमें अेक साथ प्रवीणता नही हो पाती, किन्तु बाल-तिलकको ये दोनो विषय हस्तामलकवत थे। गणित तथा व्याकरण आदि सभी विषयोमे अितना पर्याप्त प्रवेश हो गया था कि पाठशालाकी वार्षिक परीक्षामे प्रथम आना अुनके लिअे बाअें हाथका खेल था। बुद्धि अितनी कुशाग्र थी कि केवल दसवे सालमे ही बाल-तिलक संस्कृत श्लोकका अर्थ लगाने लगे।

अुनने अपने अद्वितीय बुद्धि-चमत्कारसे प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयके अध्यापको और महाविद्यालयके प्राध्यापकोको ही चकित नही किया अपितु अपने पिता गंगाधर शास्त्रीको भी स्तभित कर दिया था। अेक बार बाल-तिलकने अपने पिताजीसे बाणभट्टकी 'कादंबरी' माँगी।

गगाधर शास्त्री मन-ही-मन मुस्करा पडे । अुन्हे अुनकी माँग केवल बालहठ ही जान पडी । किन्तु बालकका अुत्साह भग न करनेकी भावनासे अुन्होने अेक युक्ति सोची। अुन्होने बालको अेक अत्यन्त कठिन गणितका प्रश्न हल करनेको कहा । बुद्धिवीर बाल-तिलक दो घडी तक अुस प्रश्नसे जूझते रहे और अन्ततोगत्वा अुसने अुसे हल कर दिया । पुरस्कारमे गगाधर शास्त्रीको 'कादंबरी' देनी पडी ।

सत्यप्रीति तथा आग्रही वृत्ति

पाठशालामे बाल तिलकके दो गुण सत्यप्रीति और आग्रही वृत्ति विशेष रूपसे प्रकट हुअे । आग्रही वृत्तिका व्यक्ति झगडालू होता है । तिलककी सत्यप्रीति निष्क्रिय नही थी, सक्रिय थी । असत्यका विरोध और प्रतिकार करना अुनके लिअे अनिवार्य था । पाठशालामे अुन्हे बुद्धिमान किन्तु झगडालूकी अुपाधि मिली थी । जब वे झगडा करते थे तब केवल दिखावटी झगडा नही करते थे । सत्यके लिअे वे अैसे अड जाते थे कि अुनका वह आग्रह पीछे चलकर झगड़ेका रूप धारणकर लेता था । अुनकी दूसरी विशेषता यह थी कि वे साधारण विद्यार्थीकी भाँति परम्परागत प्रणालीसे अभ्यास नही करते थे । कुछ असाधारणता और अलौकिकता अपनाना अुनका सहज स्वभाव था । पाठशालामें पढते समय अेक बार अुनके अध्यापकने 'सन्त' शब्द लिखनेको कहा । वे ठहरे स्वयप्रज्ञ । अुन्होने वह शब्द 'सन्त, सन्‌त, सत' तीन प्रकारसे लिखा । परन्तु कक्षाके सब विद्यार्थियोंने 'सत' लिखा । रूढि-पालक सामान्य अध्यापकको यह बात बहुत खटकी । अध्यापक बड़े रुष्ट हुअे और डाँटने लगे, परन्तु तिलक तनिक भी विचलित नही हुअे, वे कहने लगे कि मैंने जो लिखा है वह व्याकरणसे शुद्ध है । यह सुनकर कक्षाके सब विद्यार्थी हँसने लगे । अध्यापक महोदय आपेसे बाहर हो गअे । जब यह झगडा वहांके न्यायी तथा सुविचारी हेडमास्टरके पास पहुँचा तो अुन्होने बाल तिलकके ही पक्षमें निर्णय दिया और अुनकी मौलिक तथा सत्याग्रही वृत्तिकी सरहना की ।

वे किसी भी प्रकारके कडे-से-कडे दण्डके भयसे सत्यका पक्ष नही छोडते थे। अेकबार बाल-तिलकको छोडकर कक्षाके सब विद्यार्थियोने कक्षा मे मूँगफली खाओी और अुनके छिलके कक्षामे डाल दिअे। ज्यो ही अध्यापक महोदय कक्षामे प्रविष्ट हुअे अुन्होने क्रोधसे पूछा—"ये छिलके किसने फेके है?" सब विद्यार्थी भयसे कॉप अुठे। कक्षामे सन्नाटा छा गया। किन्तु बाल-तिलक आँधीमे भी चट्टानकी भाँति स्थिर थे। क्रुद्ध अध्यापक सारी कक्षाको दण्ड देनेके विचारसे बाल तिलकके पास गअे और अुन्हे दण्ड देनेवाला ही थे कि अितनेमे वह बालवीर कहने लगा—"आप अन्याय कर रहे है। मै निरपराध हूँ, अिसलिअे मै दण्ड स्वीकार नही करूँगा।" अध्यापकने अुन्हे कक्षाके बाहर चले जानेकी आज्ञा दी। वे तुरन्त अपनी स्लेट और झोला लेकर सीधे घरकी ओर चल पडे। गगाधर शास्त्रीके समक्ष अध्यापकने तिलकपर अुद्दडताका आरोप लगाया, परन्तु तेजस्वी पिताने अुत्तर दिया कि मेरा पुत्र असत्य कभी नही बोल सकता और अुसके आचरणमे अैसा असयम भी कभी नही आ सकता। अध्यापक महोदय चुप हो रहे। अिसमे भी बाल तिलककी विजय हुअी।

'पूतके पॉव पालनेमे' (विद्यार्थियोंके नेता)

अिसी समय गगाधर शास्त्री डिप्टी अिन्स्पेक्टरके पदपर नियुक्त होकर पूना चले गअे। अिसलिअे बाल तिलकको अिस प्रसिद्ध विद्यानगरीमे पढने और रहनेका सुअवसर मिल गया। अुन दिनो पूनामें अँग्रेजी स्कूलके हेडमास्टर जेकब साहब थे। वे बड़े कर्तव्यपरायण और कठोर अनुशासनशील व्यक्ति थे। अुनका अितना दबदबा था कि कोअी अुनकी आँख-से-आँख मिलानेका साहस नही करता था। अेक बार न जाने किसने कोअी अपराध किया और प्रत्येक विद्यार्थीके हाथपर अुन्होने दो-दो बेंत मारना प्रारम्भ कर दिया। तिलकने तत्काल निर्भीकतासे अिस अन्यायका विरोध किया। अिसपर जेकब साहबने अुन्हे कक्षा छोडकर चले जानेकी आज्ञा दी। आश्चर्य यह कि ज्यो ही तिलक शान्त भावसे बाहर जाने लगे त्यो ही सब विद्यार्थी अुनके

पीछे हो लिअे । विद्यार्थियोंने अिस अन्यायके विरुद्ध हडताल कर दी और तिलकको अपना मुखिया नियुक्त किया । किन्तु हेडमास्टरने बुद्धिमानीसे स्थिति सँभाल ली और शान्ति हो गअी । अिसी तेजस्विताके कारण वे आगे चलकर लोकमान्य हुअे । अिसीको कहते हैं "होनहार बिरवानके होत चीकने पात ।"

माता-पिताका वियोग

पूना आनेके पश्चात् दो वर्ष भी नही बीत पाअे थे कि माताकी दु.खद मृत्यु हो गअी किन्तु पिताने अत्यन्त निष्ठासे तिलकका पालन-पोषण किया । कुछ वर्षोके पश्चात् अुनकी बदली ठाणाके लिअे हो गअी और विद्यार्थी तिलक अपने चाचाके साथ पूनामे रहने लगे । पिता वृद्धावस्थाके कारण दिन प्रति-दिन क्षीण होते जा रहे थे । अुनकी अन्तिम अिच्छाके अनुसार सन् १८७२ मे विद्यार्थी-दशामे ही तिलकका विवाह सत्यभामाके साथ हो गया । विवाहके पश्चात् दो महीनेके भीतर ही गगाधर शास्त्रीका स्वर्गवास हो गया । अिस समय तिलक मैट्रिक कक्षाके विद्यार्थी थे । अुनपर विपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा, अुनके सिरपर परिवारका भार आ गया, परन्तु वे तो धैर्यशील पिताके परम धैर्यशील पुत्र थे । विपत्तियोसे लडनेमे ही अुन्हे अधिक आनन्द आता था । अुन्होने शान्त चित्तसे अपना अध्ययन जारी रक्खा और मैट्रिक परीक्षामें (सन् १८७३ के मार्चमे) सम्मानपूर्वक अुत्तीर्ण हुअे । अितने प्रतिभाशाली होते हुअे भी वे कभी प्रथम श्रेणीमे नही अुत्तीर्ण हो पाअे क्योकि अुनकी अुत्तर लिखनेकी पद्धति अत्यन्त विचित्र अेव असामान्य थी । गणितके प्रश्नपत्रमे वे अुन्ही प्रश्नोको हल करनेका पहले प्रयत्न करते थे जो अत्यधिक कठिन होते थे । अिसलिअे वे नियमित समयमे सब प्रश्नोके अुत्तर क्रमश. नही लिख पाते थे और अुनसे कम बुद्धिशाली किन्तु व्यवहार-कुशल सहपाठी परीक्षामे अधिक अक प्राप्त कर लेते थे ।

दूसरा प्रकरण

भावी जीवनकी नींव

सत्यं तपो ज्ञानमहिंसता च विद्वत्प्रमाणं च सुशीलता च ।
अेतानि यो धारयते स विद्वान्न केवल य पठते स विद्वान् ।।

सन् १८७३ मे तिलक मैट्रिक परीक्षामे अुत्तीर्ण होकर पूनाके डेक्कन कालेजमें प्रविष्ट हुअे। कालेजका जीवन सुख, स्वच्छन्दता तथा विलासका क्षेत्र था। अपनी भाषा, सस्कृति, समाज और देशके प्रति विद्यार्थियोके मनमे रचमात्र भी आदर न था। प्रत्येक युवक, साहब बननेके लिअे पागल बना फिरता था। अैसे विलास-पूर्ण कालेज-जीवनमे जलमे कमल-सा अछूता रहना बहुत कठिन था। परन्तु असाधारण व्यक्तिके सभी काम असाधारण होते हैं। वैभवमे ही विरक्ति शोभा पाती है। पौरुषवालेको ही ब्रह्मचर्य शोभा देता है। असाधारणताका महत्व विपरीत परिस्थितियोमे ही परखा जाता है। सामान्य जन तो प्रवाह-पतित होते हैं, किन्तु असाधारण पुरुष बाणकी भाँति प्रवाहको सीधे चीरते चले जाते हैं। तिलक भी असामान्य नर थे। अुन्हे यह विलासी जीवन तनिक भी आकृष्ट नही कर सका।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

जब तिलकने कालेजमे प्रवेश किया तब अुनका स्वास्थ्य क्षीण था, परन्तु अुन्हे अध्ययनका व्यसन था। अुन्होने अनेक पराक्रमी महापुरुषोकी जीवनियोका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। बुद्धिमान तो थे ही अतअेव अुन महापुरुषोका सक्रिय आदर्श ही अुन्होने अपने जीवनका ध्येय बना लिया। अुन्होने निश्चय कर लिया कि भावी जीवनमे बड़े-बड़े पराक्रम करनेके लिअे आरोग्यता अतीव आवश्यक है। जैसे अूंचे मन्दिरकी नीव भी पक्की और गहरी होती है, वैसे ही जीवन-मन्दिरकी नीव दृढ़ आरोग्य और बलपर

निर्भर है। तिलक केवल विचार प्रधान और स्वप्न-लोकमें विचरण करनेवाले व्यक्ति नही थे। वे आचार-प्रधान वीर थे। 'आरोग्य ही सच्ची सपत्ति है' अिस सिद्धान्तको जीवनका आदर्श वनाकर अुन्होने अुसका सक्रिय अनुसरण करना आरम्भ किया। अुन्होने प्रात. साय व्यायाम करना तथा यथेष्ट पौष्टिक आहार करना प्रारम्भ कर दिया। प्रतिदिन, दो घड़ी तालावमे नाव भी चलाने लगे। वे प्राध्यापकोके अभिभाषण तो ध्यानसे सुनते थे, परन्तु अध्ययन करना अुन्होने विल्कुल वन्द कर दिया। नौ महीनोंके लिअे अुन्होने पुस्तको तथा अपने प्रिय मित्रोसे छुट्टी लेली। जव कोअी प्राध्यापक पूछता कि लिखते क्यो नही या अध्ययन क्यो छोड़ रखा है तो वे तत्काल अुत्तर देते कि "अिस वर्ष मुझे परीक्षा देनी नही है। अिस वर्षको स्वास्थ्य तथा वल-सम्पादन करनेके लिअे समर्पित किया है। मैं अेक वर्षतक शक्तिकी आराधना करना चाहता हूँ। आप मुझे न सताअिअे। केवल आवश्यक अुपस्थितिके लिअे ही मैं कालेज आता हूँ।" अिस प्रकार सयत आचार तथा नियमित व्यायामका परिणाम यह हुआ कि वे वास्तवमे वलवान अर्थात वलवन्तराव वन गअे। वे कितावी कीडो और दुर्वल विद्यार्थियोकी चुटकियाँ लेते थे। यदि किसीके कमरेमे औषधिकी वोतल दिखाअी दे जाती तो अुसे वाहर फेक देते और कहते कि "व्यायाम करो, पौष्टिक पदार्थ खाओ और वलवान वनो" यदि कोअी छात्र चाय पीता दिखाअी देता तो चाय फेंक देते और अुससे दूध पीनेका अनुरोध करते। अुनके अिस सात्विक अुपद्रवोके कारण सहपाठी अुन्हे शैतान या 'डेविल' कहने लगे। वे भी हंसते हुअे कहा करते कि दुर्वल और निष्क्रिय होनेकी अपेक्षा शैतान वनना कअी गुना अच्छा है। अिसी समय अुन्होने कडुआ सत्य वोलनेका अभ्यास प्रारम्भ किया और भावी जीवनमें स्पष्टवक्ता वन गअे।

समानधर्मो मित्र

कहा जाता है कि "समान-शील-व्यसनेषु सख्यम्" (समान ध्येयवाले व्यक्तियोमे ही मैत्री ठीक तरहसे होती है।) अिसी समय डेक्कन कालेजके

विलासी ससारमे दो विरक्त तथा विचारशील युवकोकी मैत्री हो गअी। अिन दोनोमें अेक थे बाल गंगाधर तिलक और दूसरे सुधारकोके सिरताज गोपाल गणेश आगरकर। समान ध्येयवाले ये दोनो युवक रात-रात भर राष्ट्रका अुद्धार करनेके अुपाय तथा ध्येय निश्चित करनेमे सलग्न रहते। अुस समय जब कि प्रत्येक डिग्रीधारी व्यक्ति आचार-विचार तथा भाषासे अगरेजियतमे रँगा जा रहा था, नकली साहब बननेमे गौरव अनुभव करता था और अग्रेज सरकारकी नौकरीके स्वर्णिम मोहजालमे अुलझा हुआ था, खुले आम देश-सेवाकी चर्चा करनेका अर्थ था सीधे जेलकी हवा खाना। अतअेव ये दोनो युवक जिनकी दुनिया अलग थी, अेकान्तवासमे दिनरात राष्ट्रके सम्बन्धमे विचार-विमर्श करते रहे और गम्भीर अेव दीर्घ विचार-विनिमयके पश्चात् अपना ध्येय निर्धारित किया।

देश-सेवाके लिअे दृढ़ प्रतिज्ञ

वह ध्येय क्या था? अुसका स्वरूप कैसा था? अुसके लिअे अितने दीर्घ और गम्भीर सोच-विचार करनेकी क्या आवश्यकता थी? वास्तवमे विचारकोके लिअे ध्येय निश्चित करना बडी कठिन समस्या होती है। फिर समय भी अत्यत विषम था अिसलिअे अुसका निश्चित करना और भी गहन हो गया था। देश-सेवा करने तथा देशकी स्वतन्त्रताके लिअे बलिदान होनेका ध्येय निश्चित कर तिलक और आगरकर दोनो प्रतिज्ञाबद्ध हुअे और अन्त तक अपनी प्रतिज्ञापर अडिग रहे। ध्येय-प्राप्तिके साधनोके सम्बन्धमे वे कोअी योजना नही बना पाअे क्योकि साधन परिस्थिति-सापेक्ष होता है और वे तो परिस्थितिकी वास्तविकतासे अनभिज्ञ विचार-जगतमें अुडनेवाले महत्वाकाक्षी विद्यार्थी थे।

परीक्षार्थी नहीं विद्यार्थी

जिस प्रकार तिलकने अपना शरीर पुष्ट, सुदृढ तथा मजबूत बनाया, अुसी प्रकार विद्वत्ता, त्याग, बुद्धि और देशभक्तिसे अुन्होने अपना मनोबल भी प्रबल किया। केवल परीक्षाओमे सफलता पाना ही अुनका ध्येय नही था।

अुनका ध्येय तो विषयका गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान सम्पादन कर ज्ञानवान बनना था। गणित तथा सस्कृत-साहित्यका अुन्होने अति सूक्ष्म और गम्भीर अध्ययन किया। केवल पाठचक्रममे निर्धारित ग्रन्थोपर ही वे नही निर्भर रहते थे, अिनके अतिरिक्त वे अन्य ग्रन्थोका भी अध्ययन करते थे। डेक्कन कालेजके गणित-विभागके अध्यक्ष तथा अनुभवी प्राध्यापक केरोपन्त छत्रे अुनपर गर्व करते थे। अेक समय कक्षामे तिलकने गणितका अेक अैसा सवाल सरलतासे हल कर दिया जिसका हल करना कक्षाके अन्य विद्यार्थियोको तो क्या, स्वय प्राध्यापक छत्रेके लिअे भी कठिन था। अुस समय अुन्होने बडी आत्मीयता और गर्वके साथ भविष्यवाणीकी थी कि "यह तिलक किसी दिन दिग्विजय करेगा क्योकि अिसकी अपनी चमक कुछ और ही है।" जिस समय विद्यार्थियोके प्रिय प्राध्यापक केरोपन्त छत्रे मरणासन्न अवस्थामे थे, अुस समय अुनका अन्तिम दर्शन करनेके लिअे चारो ओरसे विद्यार्थी अेकत्र हुअे। जब अुनके अेक परम मित्रने अुनसे पूछा कि आपकी मृत्युके पश्चात् डेक्कन कालेजमे गणित-विभागकी क्षति कैसे पूरी होगी, तो अुन्होने तत्काल वहाँ खडे हुअे तिलककी ओर अगुलि-निर्देश किया। तिलक भी अपने सुयोग्य प्राध्यापक केरोपन्त छत्रेपर गर्व करते थे। "मै केरोपन्तका शिष्य हूँ" यह वाक्य वे गर्वसे कहा करते थे। गणितके अध्ययनमे वे ऋषि जैसे ध्यानमग्न हो जाते थे। रेखा-गणित जटिल प्रश्नोको सुलझानेके लिअे घण्टो अेकाग्र चित्त रहते और खाने-पीनेकी सुध भी नही रहती। यही बात सस्कृत-साहित्यके सम्बन्धमे भी थी। कविकुलशेखर कालिदासका 'मेघदूत' तथा 'रघुवश' और राजा भर्तृहरिका 'नीतिशतक' अुन्हे कण्ठस्थ थे।

संस्कृतके कवि तिलक

गणितके शास्त्रज्ञ होते हुअे भी तिलककी वृत्ति रागात्मिका थी। अेक समय अुनके सस्कृतके प्राध्यापक जिनसीवालेने विद्यार्थियोसे 'मातृ-विलाप' विषयपर कविताकी रचना करनेके लिअे कहा। तिलकके सहपाठियोमे सस्कृत-अँग्रेजी-शब्दकोशके रचयिता प्रकाण्ड विद्वान् म शि. आपटे भी थे। किन्तु श्री जिनसीवालेने निर्णय दिया कि श्री तिलककी सस्कृत-कविता अन्य कविताओसे अधिक सरस है। 'महता सर्वहि महत्' बडोका सब कुछ बड़ा

होता है। प्राध्यापक जिनसीवालेने तिलककी काव्य-शक्तिकी खुलकर बडी प्रशसा की और अुन्हे कविता-रचनाके लिअे प्रोत्साहन भी दिया। किन्तु स्वभावसे वे शास्त्रज्ञ ही अधिक थे कवि नही। दूसरी विशेष महत्वकी बात यह थी कि वे अपनी मानसिक शक्ति कार्य विशेषपर ही केन्द्रित करना चाहते थे। अुनक जीवन-मार्ग नियोजित था। वे काव्य, गायन, वादन अित्यादि ललित कलाओके मोहजालमे नही फँसे। तीसरी बात यह थी कि लिखनेकी अुन्हे विशेष रुचि नही थी। वे वहुत पढते थे, किन्तु कक्षामे प्राध्यापकोके 'लेक्चर्स के नोट्स' नही लेते थे। वे आत्मनिर्भर विद्यार्थी थे। ग्रन्थोका सूक्ष्म अध्ययनकर वे स्वय 'नोट्स' तैयार करते और फिर अपनी बुद्धिकी तेजस्विताका परिचय देते थे। अिस प्रकार वे सन् १८७८ मे बी अे की परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे अुत्तीर्ण हुअे। यह अेक प्रकारका अपूर्व योगायोग था क्योकि परीक्षा-फलकी ओर तो अुनका कभी ध्यान ही नही जाता था। गणित-शास्त्रकी ओर अुनकी नैसर्गिक प्रवृत्ति थी। अतः सन् १८७९ मे वे गणित-विषय लेकर अेम अे की परीक्षामे बैठे। अुन्होने डटकर अभ्यास किया, किन्तु अुनकी असामान्यता प्रदर्शित करने-वाली वृत्तिने अुन्हे धोखा दिया। वे जटिल प्रश्न हल करनेमे व्यस्त रहे और अिधर प्रश्न-पत्रके लिअे निर्धारित समय समाप्त हो गया। आठमेसे केवल दो प्रश्न ही कर सके। परीक्षामे अुन्हे अनुत्तीर्ण होना पडा। फिर भी वे हतोत्साहित नही हुअे। अुन्होने अपनी अध्ययन-नौकाको न्याय और कानूनकी ओर मोडा। अुन्होने अिसे ही अपनी भावी सफलताका सोपान माना। दो वर्षोतक अुन्होने अिन विषयोका सूक्ष्मतासे अध्ययन किया और सन् १८७९ के दिसम्बरमे वे अेल्-अेल्. बी. अुत्तीर्ण हुअे। कानूनका अध्ययन करनेसे अुनकी बुद्धि और विचार-शक्ति अधिक तीव्र तथा सूक्ष्म बन गअी। भविष्यमे देश-सेवा और समाज-सेवा करनेकी दृष्टिसे ही अुन्होने कानूनका अध्ययन किया। अुनके निजी ग्रन्थालयमें कानूनके सैकडो ग्रन्थ थे। कानूनके अध्ययनसे अुन्हे पत्रकारिता तथा राजनीतिके क्षेत्रमे विशेष सहायता मिली। अिस प्रकार सन् १८७९ के दिसम्बरमे वलवतराव तिलकने अपना विद्यार्थी-जीवन समाप्त कर अपने जीवन-मन्दिरकी पक्की और गहरी नीव रखी।

तीसरा प्रकरण

सन् १८७९ पूर्वका भारत

तिलकके सार्वजनिक जीवन तथा देश-सेवाकी स्फूर्तिका मर्म समझनेके लिअे अुनसे पूर्वके भारतको विशेपकर महाराष्ट्रकी यथार्थ स्थितिका ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। प्रत्येक महान् पुरुपपर समय और परिस्थितियोका प्रभाव अवश्य पडता है। अपने भविष्य-निर्माणके लिअे वह पूर्व परिस्थितियोसे सामग्री अेकत्र करता है और तात्कालिक परि-स्थितियोकी आधार-शिलापर भविष्यका विशाल मन्दिर खडा करता है। तिलकके चरित्रका मर्म समझनेके लिअे हमे भारतवर्पके पूर्वेतिहासपर अवश्य ध्यान देना पडेगा।

सन् १८१८ मे भारतवर्षकी स्वतन्त्रताकी ज्योति वुझ गअी अर्थात् भारतीयोके अन्तिम राज्य मराठा-शासनका पूर्णतया पराभव हो गया। अग्रेज समस्त भारतपर अेकछत्र राज करने लगे। अग्रेजोके आधुनिक कालके शस्त्रास्त्रोने भारतीयोको पूर्णतया पराजित किया और अैसा प्रतीत होने लगा कि अव भारत सदियो तक होश नही सँभाल सकेगा। परन्तु लार्ड डलहौजीकी राज्योको हड़प लेनेकी दुर्नीतिसे हिन्दू तथा मुसलमान नरेश जागृत ही नही हुअे, वल्कि आगववूला हो अुठे और अुन्होने सन् १८५७ मे स्वतन्त्रताकी लड़ाअी छेड दी। अेक वर्पतक वे अग्रेजोंसे मुकावला करते रहे। और सन् १८५७ के सशस्त्र प्रयत्नोने यह सिद्ध कर दिया कि भारतकी आजादीके लिअे हिन्दू तथा मुसलमान धर्म-भेद भूलकर कन्वेसे कन्धा भिड़ाकर विदेशी हुकूमतसे लोहा ले सकते है।

सन् १८५६ में वम्वअी, कलकत्ता तथा मद्रासमें विश्वविद्यालयोकी स्थापना की गअी। शिक्पाका कार्य लार्ड मेकालेकी शिक्पा-नीतिके अनुसार प्रारम्भ हुआ। अग्रेज सरकारने अपने सामने तीन अुद्देश्य रखकर होनहार

भारतीय युवकोको नअे प्रकारकी शिक्षाकी व्यवस्था की। (१) राज-कार्य चलानेके लिअे नौकरोकी न्यूनता न रहे (२) भारतीयोमे पश्चिमी सभ्यताके प्रति प्रेम अुत्पन्न हो जिससे वे स्वाभिमान-शून्य बनकर विलायती मालके स्थाअी ग्राहक बन जाअे, और (३) धर्मपरिवर्तन कर अीसाअी बने। अपना धर्म, अपनी सभ्यता और अपना व्यापार बढ़ानेके हेतु ही अग्रेजोने देशमे अग्रेजी शिक्षा-प्रणालीका सूत्रपात किया। अग्रेजोको राज चलानेके लिअे नौकरोकी आवश्यकता थी और भारतीयोको पुराने धन्धे डूब जानेके कारण निर्वाहके लिअे नौकरी की।

अल्प कालमे ही अग्रेजोको मालूम हो गया कि शिक्षाके द्वारा धर्म-प्रसारका कार्य अतीव अल्प परिमाणमे ही हो सकेगा। अुनके धार्मिक प्रचारके विरुद्ध भारतमे तुरन्त प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गअी और बगालमे राजा राम-मोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्मसमाजके नेतृत्वमे महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, अीश्वरचन्द्र विद्यासागर अित्यादि विद्वानोने अपनी पूरी शक्तिसे अग्रेजोकी नीतिका विरोध किया। महाराष्ट्रमे न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे तथा डाक्टर भाडारकरने प्रार्थना-समाजकी स्थापना की। विष्णु बुवा ब्रह्मचारीने भी पादरियोका घोर विरोध किया। बगालमें रामकृष्ण मिशनका कार्य प्रारम्भ हुआ और पजाबमें स्वामी दयानन्द सरस्वतीके 'आर्य-समाज' का जोरोसे प्रसार होने लगा। भारतमे सास्कृतिक पुनरुज्जीवनकी लहरे तिलकके बी अे. अेल-अेल बी. होनेसे पहले ही फैल चुकी थी और भारतीयोके मनमें अपने धर्म तथा अपनी संस्कृतिके प्रति आदरका भाव जाग्रत हो चुका था।

अग्रेजोकी स्वार्थपूर्ण आर्थिक नीतिके कारण भारतका तीव्रतासे शोषण हो रहा था। जबसे अिग्लैंडमे औद्योगिक क्रान्ति हुअी थी वहाँका बना माल यहाँ सस्ते दामोमे बेचा जाता था जिसकी प्रतिस्पर्धामे भारतीयोके गृह तथा ग्रामोद्योगका टिकना कठिन था। सभी ओरसे भारतकी आर्थिक हानि हो रही थी। सर्वप्रथम अिसकी प्रतिक्रिया महाराष्ट्रमे प्रारम्भ हुअी और सार्वजनिक

काका अर्थात् गणेश वासुदेव जोशीने स्वदेशी वस्त्रोका प्रचार आरम्भ किया। अिस प्रकार महाराष्ट्रमें स्वदेशीकी भावनाका वीजारोपण तो हुआ, किन्तु वह पनप नही सकी। लार्ड मेकालेका यह कथन प्रसिद्ध है कि "भारतसे अग्रेजी राज अुठ जाअे तो भी हमे पर्वाह नही, सिर्फ हमारा व्यापार यहाँ वना रहे।" अग्रेजी साम्राज्यके अिस आर्थिक मूलको काटनेका अेक मात्र साधन स्वदेशीका प्रचार ही था। पूनामे यह कार्य सन् १८६५ से १८८० तक गणेश वासुदेव जोशी या सार्वजनिक काकाने त्यागपूर्वक किया। तिलकपर भी अिसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

सन् १८५३ मे भारत-राष्ट्र-प्रपितापह दादाभाअी नौरोजीने वम्वअी प्रान्तमे 'वाम्वे अेसोसिअेशन' नामक अेक राजनीतिक सस्था स्थापित की। अिसके पश्चात् दस-वीस वर्षोमे वगाल, मद्रास आदि मुख्य-मुख्य प्रान्तोमे भी। अिसी प्रकारकी सस्थाअे स्थापित हुअी, जिनमे प्राय· अूंचे सरकारी अधिकार अथवा धनी लोग ही सम्मिलित होते और प्रमुख सामयिक सामाजिक प्रश्नो और कभी-कभी राजनैतिक प्रश्नोपर वडे ठंडे दिमागसे विचार करते थे। अँग्रेज सरकारका कृपा-पात्र वननेकी अुनमें आपसमें होड लगी रहती थी। आम जनताके दुख-दर्दसे वे अपरिचित थे और अधिकतर अपने प्रादेशिक प्रश्नोमें ही अुलझे रहते थे। सरकारके कारोवारमें योग देना और अधिक अूंचा अधिकार प्राप्त करना ही अुनका ध्येय था। संक्षेपमें वे याचनावादी थे। केवल राष्ट्र प्रपितामह दादाभाअी नौरोजी अेक अैसे असामान्य महापुरुष थे जो दिनरात भारतकी राजनीतिक तथा आर्थिक अवस्था सुधारनेके लिअे प्रयत्नशील रहते थे। अुन्होंने "On British Rule In India" नामक ग्रन्थकी रचना की जिससे होनहार युवकोंका ध्यान अुनकी ओर आकर्षित हुआ। अिस ग्रन्थको पढकर नवयुवक अँग्रेजी राज्यकी सभी प्रकारकी वुराअियोसे परिचित होने लगे। दादाभाअी नौरोजीके स्वार्थत्यागमय जीवनका भी युवकोपर प्रभाव पडा। महाराष्ट्रपर तो अुनका विशेष प्रभाव था। अुनसे स्फूर्ति प्राप्तकर सन् १८७० में सार्वजनिक काका और न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडेने पूनामें 'सार्वजनिक सभा' की स्थापना की। सरकारके सम्मुख लोगोंके दु.ख-कष्ट अुपस्थित

करना अिस सभाका प्रमुख अुद्देश्य था। अँग्रेज सरकारके सम्मुख जनताके कष्ट अुपस्थित करनेवाली यह प्रथम संस्था थी। धीरे-धीरे अिस सभाने ज्यूरीके अधिकार, रेलवे-यात्रियोकी शिकायते, म्युनिसिपलिटीमे लोक-निर्वाचित सदस्योकी नियुक्ति, राजा और प्रजाका पारस्परिक सम्वन्ध आदि प्रश्नोपर अँग्रेज सरकारके पास सूचनाअे भेजना शुरू किया। अिस सभा तथा 'वाम्बे अेसोसिअेशन' ने सन् १८७२ मे नियुक्त पार्लमेन्टरी कमेटीके सम्मुख-साक्षी दी और सन् १८७६–७७ के अकालमे लोकोपकारी कार्य भी किअे। न्यायमूर्ति रानडे अिस सभाके आधारस्तम्भ थे। वे मौलिक विचारक थे। महाराष्ट्रके आद्य समाज-सुधारक राववहादुर देशमुख अर्थात् 'लोक-हितवादी' भी ब्रिटिश राजको अीश्वरकी देन मानते थे। ब्रिटिश लोगोकी न्यायवुद्धिपर अुनका अडिग विश्वास था। वे कहते थे कि जैसे ही भारतीय राज-कार्य चलाने योग्य हो जाअेंगे, सभ्य अँग्रेज शासक स्वय ही भारतके शासनकी वागडोर अुनके हाथोमें सौपकर अिंग्लैण्ड लौट जाअेंगे। अुनका यह भी विश्वास था कि भारतकी दासता अुसके सामाजिक दोषोका ही कुफल है। अत. जवतक भारतकी जनता सामाजिक सुधारोकी ओर अग्रसर नही होती तवतक भारतकी राजनीतिक प्रगति सम्भव नही। सक्षेपमें वे राजनीतिक सुधारोकी अपेक्षा सामाजिक सुधारोपर अधिक जोर देते थे और भारतीयोको पश्चिमी विशेषतया अँग्रेजी सभ्यताका अुचित अनुकरण करनेको प्रोत्साहित भी करते थे। वे अुदार मतवादके समर्थक थे। अुन्होने भारतकी सर्वांगीण अुन्नतिपर जोर दिया और प्रार्थना-समाज तथा विधवा-विवाह-मण्डल स्थापित किअे। महाराष्ट्रमें अिन समाज-सुधारक आन्दोलनोकी तीव्र प्रतिक्रिया हुअी। सन् १८७४ में विष्णु शास्त्री चिपलूणकरनेमराठी भाषामे 'निवन्ध-माला' मासिक पत्रिकाका प्रकाशन प्रारम्भ किया। अुनका अटल विश्वास था कि ससारमें हिन्दू धर्म, सस्कृति, दर्शन तथा साहित्य ही सर्वश्रेष्ठ है। वे जन्मत: देशभक्त थे। विदेशी अग्रेजी सत्ताके प्रति अुनके मनमें अनादरकी कटु भावना थी। वे स्वराज्यके पक्षपाती थे। अुनकी धारणा थी कि 'विदेशी अग्रेजोके सुराज्यकी अपेक्षा स्वजनोका वुरा स्वराज्य

भी सौ गुना अच्छा होगा।' अुन्होंने रानडेकी समाज-सुधार नीतिकी कठोर आलोचनाकी और अुनपर कटु वाक्-प्रहार भी किअे। चिपलूणकर वहुत अूँचे दर्जेके निबन्ध-लेखक थे। अुनके लेखोका नवयुवक पाठकोपर वड़ा प्रभाव पडा। तेजस्वी चिपलूणकरने राजनीतिक सुधारकोका भरसक समर्थन किया। अुनकी दृष्टिमे देशका सामाजिक ढाँचा तथा व्यवस्था निर्दोष थी। अुन्होंने अँग्रेजोके अन्धानुकरणकी कठोर भर्त्सना की। गुलामी की मनोवृत्ति कहकर अुसकी बुरी तरहसे मजाक भी अुडाअी। अैतिहासिक तथ्योके आधारपर सिद्ध किया कि सब दु.खोका मूल पराधीनता है। अतअेव स्वराज्यकी पुन· स्थापना ही भारतीयोका प्रथम कर्तव्य है। सन् १८७७ में अँग्रेज सरकारने 'हमारे देशकी सद्य स्थिति' शीर्षक अुनका १५० पृष्ठोका सारगर्भित निबन्ध जब्त कर लिया। अुनके लेख देश-प्रेमसे परिपूर्ण होते थे। वे भारतके लिअे अँग्रेजोका राज सर्वथा विनाशक अेव कलकस्वरूप मानते थे। अुन्होंने स्वावलम्बन तथा स्वार्थत्यागका सहारा लेकर स्वराज्य प्राप्तिके लिअे भारतीयोको प्रोत्साहित किया। सक्षेपमे रानडे तथा चिपूलणकरकी दृष्टि तथा नीतिमे जमीन आसमानका अन्तर था। चिपलूण-करकी कथनी तथा करनीमे मेल था। अुन्होंने सरकारी नौकरी छोडकर देश-बन्धुओके हृदयमें स्वदेश, स्वधर्म, स्वसस्कृति तथा स्वभाषाका ज्वलन्त अभिमान जाग्रत करनेके लिअे ही 'निबन्ध-माला' का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। अिस समय तिलक पूनाके कालेजमे पढते और अपने समानधर्मी मित्र गोपालराव आगरकरके साथ रात-रातभर जगकर राष्ट्रीय समस्याओ-पर विचार-विमर्श करते थे।

महापुरुष और प्रवाहगत साधारण पुरुषके मनमे बडा अन्तर होता है। महापुरुषका मन फोटोके कैमरेके लेन्सकी तरह होता है और साधारण पुरुषोका मामूली काँचकी तरह। पहलेमे अतीत, वर्तमान तथा भविष्यकी प्रतिमा अुतरती है, परन्तु दूसरेमे अिसका पूर्ण अभाव रहता है, ठीक अुसी प्रकार जिस प्रकार साधारण काँचमे सूर्यकी प्रतिमा नही दिखाअी देती। अतअेव अुपर वताअे गअे विचार-प्रवाहोंका प्रभाव महापुरुप तिलकके मनपर पड़ना स्वाभाविक था।

चौथा प्रकरण

देश-सेवाका श्रीगणेश

वक्षुद्राः सन्ति सहस्रशः स्वभरणव्यापारमात्रोद्यताः
स्वार्थं यस्य परार्थमेव स पुमानेकः सतामग्रणीः ।

—भर्तृहरि

सन् १८७९ मे तिलक प्रथम श्रेणीमें अेल-अेल. बी. की परीक्षामे अुत्तीर्ण हुअे । अुस समय अूंची अग्रेजी शिक्षा अलाअुद्दीनके जादुअी चिरागकी भाँति थी । जो कुछ माँगा जाअे वह अुससे प्राप्त होता था । अग्रेजीकी केवल चार किताबें पढनेवाले तहसीलदार बनकर सैकड़ो रुपया मासिक वेतन प्राप्त करते थे । तिलक तो प्रथम श्रेणीमे बी. अे., अेल-अेल. बी. अुत्तीर्ण हुअे थे । यदि वे चाहते तो न्याय-विभागमे पाँच-सात सौ रुपया मासिक वेतनपर मुँसिफ होकर सुखसे अपने जीवनका श्रीगणेश कर बीस-पचीस वर्षों बाद अुच्च न्यायालयके न्यायाधीश बन तीन-चार हजार रुपया मासिक प्राप्त कर लेते । अुस समय समाजमे वकीलोकी आवश्यकता भी थी । तिलकके पूर्व बम्बअी प्रान्तमे केवल बीस बी. अे., अेल-अेल. बी.थे, अिसलिअे वकालतका धन्धा दिनपर दिन वढ़ता जा रहा था और अुसे समाजमे अूंची प्रतिष्ठा भी प्राप्त थी । अुन्हीके साथियोने वकालत कर काफी धन पैदा किया और सुख-समृद्धिमें रहकर अपना जीवन विताया, परन्तु भारतकी स्वतन्त्रताकी वकालत करनेके लिअे अपने सुखको लात मारनेवाले तिलक तो अेक असाधारण पुरुष थे ।

'न्यू अिंग्लिश स्कूल'की स्थापना

कविकुलशेखर कालिदासकी सूक्ति है कि 'नदी मुखेनेव समुद्र-माविशेत् ।' नदीके मुखसे विशाल समुद्रमें प्रवेश करना चाहिअे । देश तथा

समाजका कार्य सागरके समान ही विशाल और गम्भीर होता है। जो लोग सोच-विचार कर अथवा किसी अुद्देश्यको लेकर अुसमे प्रवेश नही करते, वे चन्द दिनोमें ही परास्त अेव निराश होकर अुससे पृथक हो जाते हैं। कअी लोग अुमग और भावनाओके अुद्रेकमे भी समाज-सेवा तथा देश-सेवाके क्षेत्रमे कूद पडते हैं, पर्याप्त स्वार्थत्याग भी करते हैं, किन्तु अन्ततोगत्वा निराश होकर प्रतिक्रियावादी बन जाते हैं। अच्छी तरह विचार करके ही अिस क्षेत्रमे अवतीर्ण होना चाहिअे। तिलककी देशभक्ति विचारपूर्ण थी और अुनकी भावना तथा तड़प अुन्हे क्रियाशील बना रही थी। वे और अुनके सहपाठी मित्र आगरकर रात-रातभर जगकर कालेज जीवनमे ही देश-सेवाका विचार करने लगे थे। अिससे अुन्होने समाजमें मानसिक क्रान्ति पैदा करनेका निश्चय किया। सामाजिक जागृति होनेपर ही राजनीतिक अेवं सामाजिक क्रान्तिकी नीव डाली जा सकती है। मानसिक क्रान्तिके भी दो पथ हैं। प्रथम समाचार-पत्रो तथा व्याख्यानो द्वारा जन-साधारणके मनमे परिवर्तन अुपस्थित करना और दूसरा शिक्षा द्वारा नवयुवकोके मनपर अभीष्ट सस्कार अुत्पन्न कर अुनके सामने नअे युगका आदर्श अुपस्थित करना। पहला मार्ग कठिनाअियोसे भरा हुआ होता है और सफलताकी अुसमें बहुत कम सम्भावना रहती है, क्योकि वृद्ध लोग, जो समाजमे लब्धप्रतिष्ठ भी होते हैं, प्राय. परिवर्तनोके विरोधी होते हैं। नअी पीढीपर सस्कारोका जल्दी प्रभाव पड़ता है और वह प्रगति अेवं परिवर्तनोका स्वागत भी करती है। बुद्धिमान तिलकने अपने मित्र आगरकरकी सहायतासे सर्वप्रथम नवोदित पीढीकी शिक्षाका प्रश्न अपने हाथोमे लिया। नअी पीढीमें स्वभाषा, स्वदेश और स्वसस्कृतिके प्रति अुत्कट निष्ठा अुत्पन्न करनेका लक्ष्य निर्धारित किया। यह कार्य सरकारी विद्यालयो द्वारा कदापि सम्भव न था क्योकि ये विद्यालय तो क्लर्क निर्माण करनेवाले कारखाने मात्र ही थे। वहाँ स्वतत्र विचारोके लिअे अवकाश ही नही था। अतः अुन्होने सर्वप्रथम देशकी पददलित और अुत्पीड़ित तरुणाअीके मनमें क्रान्ति पैदा करना प्रारम्भ किया। अिस कार्यमें मार्गदर्शनके लिअे अुन्हे

अेक अनुभवी शिक्षाविद्की आवश्यकता अनुभव हुअी। सयोगसे अिसी समय मराठी भाषाके शिवाजी, निवन्धमालाकार, प्रकाण्ड पण्डित विष्णु शास्त्री चिपलूणकर देश-सेवा करनेकी अुत्कण्ठासे रत्नागिरिके सरकारी हाअीस्कूलसे पदत्याग कर पूना पधारे थे। वे तपे हुअे, परिपक्व अनुभवी देशभक्त शिक्षक थे। पूनामें अुनके आगमनका समाचार सुनकर तिलक फूले नही समाअे। आगरकरको साथ लेकर वे अुनसे मिलने गअे। वहाँ समान हृदयके तीन महापुरुषोका मेल त्रिवेणी-सगमके समान हुआ और तुरन्त ही सरस्वतीकी पावन-धारा वहने लगी। 'शुभस्य शीघ्रम्' न्यायके अनुसार सन् १८८० के जनवरी मासमे 'न्यू अिंग्लिश स्कूल' की स्थापना की गअी। ब्रह्मा, विष्णु, महेशकी भाँति विष्णु शास्त्री चिपलूणकर बी. अे., वलवन्तराव तिलक बी. अे , अेल-अेल. बी और गोपालराव आगरकर अेम अे स्कूलके संस्थापक अेव अध्यापक वने। अिन देशभक्तोंके स्कूलमे पहले दिन केवल १९ विद्यार्थी सम्मिलित हुअे, परन्तु ये निरुत्साह नही हुअे। अिन्होने तन-मन-धनसे युवकोको शिक्षा देनेका कार्य प्रारम्भ किया। तीनो ही प्रकाण्ड विद्वान् और अुत्साही अध्यापक थे। अेक मासमे ही स्कूलमे विद्यार्थियोकी सख्या १५० हो गअी। फिर तो सस्था अुत्तरोत्तर वढती ही गअी और तीन मासमें यह संख्या ५०० तक पहुँच गअी। न्यू अिंग्लिश स्कूल और अुसके संस्थापकोकी सफलतामे दिन-पर-दिन चार चाँद लगने लगे। तीन वर्षोंके अन्दर विद्यार्थियोकी संख्या १००० पहुँच गअी और स्कूलके सामने सामग्री, स्थान, भवन अित्यादिकी कठिन समस्या पैदा हो गअी। स्कूलमे पढाअी वड़े सुचारु ढगसे होती थी और मैट्रिक परीक्षाका फल ८० प्रतिशत रहता था जिससे विद्यार्थियोका प्रवाह दिन-पर-दिन बढ़ता रहा। विवश हो व्यवस्थापकोको संख्याको मर्यादित करना पड़ा और प्रवेशके सम्वन्धमे सैंकडो विद्यार्थियोको सखेद अिन्कार भी करना पड़ा।

४०) रुपये मासिक वेतनपर

'न्यू अिंग्लिश स्कूल' की नीव स्वार्थ-त्यागपर अवलम्वित थी। स्कूल अल्पावधिमें फूला और फला, किन्तु तिलक और आगरकर केवल चालीस

रुपया मासिक वेतन लेते थे। सम्भवत तिलक ही प्रथम अेल-अेल. बी. परीक्षा-अुत्तीर्ण शिक्षक थे जो अितने अल्प वेतनपर अुत्साहसे कार्य करते थे। अपने परिवारके पालण-पोषणके लिअे अुन्होने यह नाममात्रका वेतन लेना स्वीकार किया, परन्तु अेडीसे चोटी तकका पसीना बहाकर अध्यापन कार्य करते थे। तिलक और आगरकरके पसीनेसे सीचा गया स्कूलका पौधा दिन पर दिन अधिक लहलहाता गया।

अध्यापकसे प्राध्यापक

जैसे वृक्षोका विकास पत्तोके बाद फूल और फलके रूपमे होता है, वैसे ही 'न्यू अिंग्लिश स्कूल' से सन् १८८५ मे फर्ग्युसन कालेजका विकास हुआ। अिसके पूर्व तिलक और आगरकरने 'डेक्कन अेज्यूकेशन सोसायटी' की स्थापना *की जिसका ध्येय शिक्षा-सस्थाओकी स्थापना कर स्वदेश-प्रेमी विद्यार्थी तैयार* करना था। तिलक तथा आगरकर अिस सस्थाके आजीवन सस्थापक-सदस्य थे। 'डेक्कन अेज्युकेशन सोसायटी' ने ७० हजार रुपयोका चन्दा अेकत्र किया और कुछ व्यवहारिक अेव राजनीतिक कठिनाअियाँ मिटानेकी दृष्टिसे बम्बअीके तत्कालीन गवर्नर मि. फर्ग्युसनके नामपर अुनके ही द्वारा अिस कालेजका शिलान्यास करवाया गया। तिलक जैसे अुग्रदलवादी देशभक्तने अिसमे भी समयानुकूल राजनीति अपनाअी। तिलक अिस कालेजमे गणित तथा सस्कृत पढ़ाते थे। कक्षामे अपने विषयके अतिरिक्त कुछ नही बोलते थे। विद्यार्थियोकी शका-कुशकाओको क्षणभरमे दूर करना अुनके लिअे सरल काम था। गणितकी पढाअी तो अितनी तन्मयतासे करते थे कि विद्यार्थियोके मस्तिष्कमे विषय तत्क्षण जम जाता था। विशेष आवश्यकता होनेपर ही वे ब्लेक बोर्डका अुपयोग करते थे, अन्यथा प्रश्नोके अुत्तर मौखिक देते थे। सस्कृत-साहित्यके अध्यापन मे भी वे अत्यन्त कुशल थे। अिस प्रकार यशस्वी अध्यापक तथा प्राध्यापक बनकर अुन्होने अपनी आयुके दस वर्ष बिताअे, परन्तु औश्वर तो तिलकको दूसरे विशालतर कार्योमे लगाना चाहता था।

अध्यापक तथा प्राध्यापकोकी सख्या बीस गुनी हो गअी। मूल सस्थापक तिलक अेव आगरकरके समान स्वार्थत्याग दूसरोके लिअे सम्भव न था। मतभेद हुआ, दलबन्दी बढी। दलबन्दीका मुख्य कारण था सोसायटीके संगठनके सम्बन्धमे सदस्योका मत-भेद। 'न्यू अिंग्लिश स्कूल' की स्थापनाके समय तिलक और आगरकर अित्यादिने यह निश्चय किया था कि यह सस्था योरपके जेसुअिट साम्प्रदायके ढगसे चलाअी जाय। जेसुअिट सम्प्रदायके समस्त लोगोको अुतनी रकमपर ही सन्तुष्ट रहना पडता है जितनी कि अुन्हे सस्थाकी ओरसे मिलती है। वे स्वय और जो अुद्योग करते हैं, अुसकी समस्त आमदनी सस्थामे जमा करानी पड़ती है। अिस प्रकार किसीकी बुद्धिमत्ता, अुद्योगशीलता अथवा कार्यततपरता कम या ज्यादह होनेका कोअी प्रभाव नही पडता। यही सिद्धान्त 'न्यू अिंग्लिश स्कूल' और फर्ग्युसन कालेजकी स्थापनाके समय ग्रहण किया गया था, परन्तु आगे चलकर अिस सम्बन्धमे तर्क-वितर्क होने लगे और दो पक्ष भी अुत्पन्न हो गअे। अेक पक्षका कहना था कि पाँच घन्टेतक सोसायटीका काम करनेके बाद आजीवन सभासद शेष समय अपनी अिच्छानुसार द्रव्यार्जन अथवा अन्य कामोमे लगा सकते हैं। सबकी योग्यता और बुद्धि अेक-सी नही होती, अतअेव जो अधिक बुद्धि और क्षमता रखता है, वह यदि विद्यालयका काम करके शेष समयमे दूसरे काम भी करे तो आपत्ति नही होनी चाहिअे। दूसरे पक्षका कथन था कि आजीवन सभासद होनेका अर्थ यही है कि वह अपना सारा समय और सारी बुद्धि अेव शक्ति सोसायटीके ही काममे लगावे और यदि दूसरे कार्यमे समय लगावे भी तो अुससे होनेवाली आय सस्थाकी सम्पत्ति समझी जाय। बलवन्तराव दूसरे पक्षके समर्थक थे। प्रश्न था कि अिस विषयका निर्णय कैसे हो? पहला पक्ष कहता था कि निर्णय बहुमतसे होना चाहिअे। तिलक अिसके खिलाफ थे। वे बहुमतकी अुपेक्षा करते हो, यह बात नही थी, परन्तु अुनका कहना था कि किसी सस्थाके संगठनके मूल तत्वोमे बहुमतसे कोअी परिवर्तन नही करना चाहिअे, वरन् सस्थापकोने जिन तत्वोके आधारपर संस्थाकी नीव डाली है, अुन्हे अटल तत्व मानकर अनुयायियोको अुनके अनुसार चलना ही श्रेयस्कर

है। अुनका यह भी कहना था कि जिन्हे यह सिद्धान्त स्वीकार न हो वे चाहे तो सस्थासे अलग हो सकते है, परन्तु अुन्हे सिद्धान्तोमे परिवर्तन करानेके चक्करमे नही पड़ना चाहिअे। तिलक अिन तत्वोका प्रतिपादन केवल मौखिक ही नही करते थे, बल्कि अिनके अनुसार आचरण भी करते थे। अेक बार स्वर्गीय श्री शिवाजीराव होलकर पूना आअे। अुन्होने वहाँके विद्वानो और प्रतिष्ठित सज्जनोको बुलाकर अुनका यथोचित सत्कार किया। तिलक भी बुलाअे गअे और अुन्हे ३५०) प्रदान किअे गअे। यह रकम अुनकी निजी सम्पत्ति थी। अतअेव यदि तिलक अुसे अपने पास रख लेते तो अनुचित न था, परन्तु अुन्होने पूरी रकम सोसायटीको दे डाली।

अिसके अतिरिक्त कुछ गौण मतभेद और भी थे, परन्तु मतभेदकी मुख्य जड़ यही थी और जब अुसका निर्णय तिलकके प्रतिकूल हुआ, तथा अन्य कारणोसे भी पारस्परिक विरोध बढ़नेका रंग दिखाअी दिया, तब अुनके सामने त्यागपत्र देनेके अतिरिक्त कोअी मार्ग नही था। सन् १८९० में अुन्होने व्यथित हृदयके साथ 'डेक्कन अेज्युकेशन सोसायटी' से त्यागपत्र दे दिया। जिस संस्थाको अुन्होने अपने खूनसे सीचकर हरा-भरा किया था, अुस संस्थाको छोड़ते समय अुनके मनमे कितना क्लेश हुआ होगा, अिसकी कल्पना पाठक स्वयं कर सकते है। त्यागपत्रमे अुन्होने लिखा था कि "आज मुझे अिस संस्थासे अलग होते समय यह प्रतीत हो रहा है कि मैंने अपने जीवनके सारे ध्येयोका ही परित्याग कर दिया है। अूंचा ध्येय सम्मुख रखकर गत दस वर्षोतक हमने सस्थाके लिअे कष्ट अुठाअे। कुछ भी बाकी नही रखा। लोगोकी भर्त्सना अेव विरोधको भी धीरजके साथ सहन किया। अुपहास, व्यंग्य और निराशा भरे शब्दोको भी हँसकर पी गया। जितना बन सका अुतना स्वार्थत्याग किया। सस्थाकी तन-मन-धनसे सेवा की। मेरी अेक मात्र महत्वाकाक्षा अिस सस्थाके अध्यापकके पदपर रहकर विनम्र सेवा करनेकी थी, किन्तु भगवान मुझसे कुछ और ही चाहता है। अतअेव जिस हृदय-विदारक मानसिक व्याकुलतासे मैं त्यागपत्र दे रहा हूँ, अुसकी कल्पना आप कर सकते है। भगवानकी कृपासे सस्था दिन प्रति दिन

आगे बढे ।" तिलक स्वभावसे विद्याव्यासगी थे, परन्तु देशकी विशिष्ट तथा विषम परिस्थितियोके कारण राजनीतिकी ओर मुडे और 'राष्ट्रजनक' तथा 'लोकमान्य' कहलाकर अजर-अमर हो गअे । अुनकी आन्तरिक अिच्छा अुन्हीके शब्दोमे कहनी हो तो "स्वराज्य मिलनेके बादमे गणितका अध्यापक होना ही पसन्द करूँगा और अध्यापक पदपर ही मरूँगा" यही थी । परन्तु 'देवमन्यत् चिन्तयेत्' मनुष्य जो सोचता है अुसके विपरीत देव या दैव करता है । अुनका शिक्षा-क्षेत्र परमेश्वरको व्यापक बनाना था । वे चहार-दीवारीके भीतर पढानेवाले मामूली शिक्षक नही थे । अीश्वर अुन्हे लोक-शिक्षक बनाना चाहता था । तिलककी देश-सेवा रूपी गगाकी अुत्पत्ति "न्यू अिग्लिश स्कूल" रूपी गगोत्रीसे हुअी, परन्तु जैसे गगा तेजीसे बढती हुअी हरिद्वारके समीप विशाल समतल, भूमिपर बहकर जन-साधारणको अपने पावन तथा विशद प्रवाहसे परिपुष्ट करने लगी, वैसे ही तिलककी बहुमुखी सेवाओने अनेक रूपोमे भारत और भारतीय जनताके भविष्य-निर्माणमे योग दिया ।

पाँचवाँ प्रकरण

‘केसरी’ का कँटीला किरीट

‘केसरी’का अुद्देश्य-बोधक श्लोक—

> ‘स्थितिं नो रे दध्याः क्षणमपि मदान्धेक्षण सखे
> गजश्रेणीनाथ त्वमिह जटिलायां वनभुवि।
> असौ कुंभिभ्रान्त्या खरनखरविद्रावित महा—
> गुरुग्रावग्रामः स्वपिति गिरिगर्भे हरिपतिः॥
>
> —पण्डितराज जगन्नाथ

लोक जागृतिके प्रभावशाली साधन समाचार-पत्र होते हैं। सम्राट नेपोलियन तोपोकी आवाजसे अितना नही डरता था जितना समाचार-पत्रोकी आवाजसे। फ्रान्सकी राज्यक्रान्ति (सन् १७७९) का प्रादुर्भाव रूसो और वाल्टेयरके प्रेरक निबन्धोके प्रभावसे हुआ। जोसेफ मेजिनीने अपनी लेखनीसे अिटलीमे क्रान्तिकी आग सुलगाअी। तिलकके लेखन-गुरु विष्णु शास्त्री चिपलूणकरने लगातार सात साल तक ‘निबन्ध-माला’ का सम्पादन कर अंग्रेजी विद्यावारुणीपर मुग्ध हुअे नवशिक्षितोकी आँखोमें चुभनेवाला अजन आँजा। तिलक अुन्हीके शिष्य थे। गुरुका अधूरा कार्य अुन्होने अपने हाथोमे लिया और लगभग चालीस वर्षो तक लेखनी द्वारा देशमें जागृति पैदा की। ‘न्यू अिंग्लिश स्कूल’ की जड़ जमते ही सन् १८८० के अन्तमें चिपलूणकर, तिलक और आगरकर समाजको जागृत करनेके सम्बन्धमे विचार करने लगे। तीनो ही प्रकाड विद्वान थे और जनतासे कुछ-न-कुछ कहनेके लिअे व्याकुल थे। अपने विचारोकी छाप नवोदित पीढीके मनपर डालनेका कार्य तो वे स्कूलमें करते थे, किन्तु प्रौढ और सर्व सामान्य शिक्षितोके मनमें देश-प्रेम,

भाषा-प्रेम तथा सस्कृति-प्रेम जाग्रत करनेके लिअे अुन्होने अपनी शिक्षा-सस्थाकी ओरसे समाचार-पत्र निकालनेका निर्णय किया ।

'केसरी' और 'मराठा' का प्रकाशन

सस्थाकी ओरसे 'केसरी' मराठी साप्ताहिक और दूसरा 'मराठा' अग्रेजी साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया । चिपलूणकर, तिलक और आगरकरका अेक सम्पादक-मण्डल बना किन्तु गोपालराव आगरकर 'केसरी' के और तिलक 'मराठा' के प्रधान सम्पादक बने । यह सम्पादक-मण्डल दोनो साप्ताहिक पत्रोका सचालन करता था । प्रथम वर्षके 'केसरी' मे शास्त्री, आगरकर और तिलक तीनोके लेख प्रकाशित हुअे । साहित्यिक लेख शास्त्रीजी लिखते थे । अितिहास, अर्थशास्त्र तथा सामाजिक विषयोपर आगरकर लिखते और धर्मशास्त्र अेव राजनीति या कानून सम्बन्धी लेख तिलक द्वारा लिखे जाते थे । अग्रलेख लिखनेके अतिरिक्त तीनो अपने लिअे निश्चित विषयोको छोडकर अन्य लेखोंकी ओर ध्यान नही देते थे । फुटकर लेखादिकी पूर्तिका भार आगरकर पर था क्योकि अुनमे विनोद, निस्पृहता अेव रोमेन्टिक स्वभावकी झलक पद-पद पर पाअी जाती थी । सातवे अकमे ही तिलकने 'वहिष्कार' शीर्षक लेख लिखा । अग्रेजीमे 'मराठा' प्रकाशित करनेका हेतु था जनताकी माँगे, अुसकी आशा-आकाक्षाओ, अुसके दुखो और अुसकी वास्तविक परिस्थितिसे अग्रेज सरकारको परिचित कराना, साथ ही आग्ल विद्याविभूषित अूँची शिक्षा प्राप्त लोगोमें राष्ट्रीय चेतना पैदा करना । तीसरा कारण यह था कि वे अन्य प्रान्तोमे रहनेवालोको भी अपने राजनैतिक तथा सामाजिक विचारोसे परिचित कराना चाहते थे । अुन्होने यह भली भाँति समझ लिया था कि समस्त भारतवर्षमे जागृति पैदा किअे विना देशमें प्रवल संगठन तथा आन्दोलन नही चलाया जा सकता । अुस समय अंग्रेजी भाषा ही सम्पूर्ण भारतमे राजनैतिक जागृति पैदा करनेके लिअे सहायक हो सकती थी । दोनो पत्रोके अुद्देश्योके सम्बन्धमे कहा गया था कि "अग्रेज सरकारके सम्मुख जनताके कष्ट, मत तथा

माँगोको निर्भीकतासे अुपस्थित करनेवाला कोअी पत्र नही है, अिसलिअे हम 'केसरी' तथा 'मराठा' का प्रकाशन कर रहे हैं। दोनो पत्र लोक-जागृति करनेके लिअे हमारे हथियार हैं। अिनमे जो लिखा या प्रकाशित किया जाअेगा वह सम्पादक-मण्डलकी निर्धारित नीतिके अनुसार होगा। सत्यका निर्भीकता और लोकहितकी दृष्टिसे प्रतिपादन, प्रकाशन अेव प्रचार करना हमारी दृढ प्रतिज्ञा है। हमे आशा है कि प्रस्तुत साप्ताहिक पत्रोमे प्रकाशित लेख पत्रोके नामको सार्थक करनेवाले होगे।"

'केसरी' और 'मराठा' नामोका सार्थक चुनाव

मराठी साप्ताहिक समाचारपत्रका नाम 'केसरी' वड़े सोच विचार कर वाद रखा गया था। जैसे केसरी अर्थात् वनराज सिह शूर और पराक्रमी होता है तथा अपना श्रेष्ठ पद अपनी वहादुरीसे प्राप्त करता है न कि अन्य हीन चेष्टाओसे, वैसे ही निर्भीकता, वहादुरी और सत्यप्रियताके साथ जनताकी राय प्रदर्शित कर श्रेष्ठ पद प्राप्त करना 'केसरी' का अुद्देश्य था। अिस नाममे अेक व्यग्य भी निहित था, वह यह कि जिस प्रकार पराक्रमी सिह दैववशात् या भूलसे जालमे फँस जाता है, वैसे ही महावैभवशाली, विशाल अेव पराक्रमी भारतवर्ष भी धोखेसे अँग्रेजोके दासता-पकमे फँस गया है। अतअेव वास्तविक गुणोका परिचय कराकर भारतको अुसी प्रकार पराक्रम करनेके लिअे अुत्तेजित करनेके हेतु पत्रका नाम 'केसरी' रक्खा गया। 'मराठा' का ध्येय था आँग्ल विद्या-विभूषित अेव अँग्रेज सरकारकी गुलामी करनेवालोमे पराक्रम-पूर्ण स्वतन्त्र और त्यागयुक्त अतीतके प्रति आदरकी भावना पैदा करना। अिस नाममें प्रान्तीयताकी भावना लेश मात्र भी नही थी। समाचार-पत्र का नाम 'मराठा' होनेपर भी अिसकी दृष्टि सकीर्ण और कार्यक्षेत्र प्रान्त विशेषतक सीमित नही रहा। अपने कार्यक्षेत्रकी अखिल भारतीय मर्यादा वतलाते हुअे मराठा-सम्पादक अर्थात् तिलकने, प्रथम लेखमें ही यह लिख दिया था कि "हमारे अितिहास प्रसिद्ध-नामको देखकर यदि किसीको अिस वातका भय प्रतीत हो कि हम दूसरोके प्रदेशपर

आक्रमण करने या छापा मारने लगेगे, तो अुसकी यह शका सर्वथा निराधार होगी। 'मराठा' किसी प्रान्त विशेष या जाति विशेषका पक्षपाती नही होगा।" अिससे स्पष्ट है कि तिलककी दृष्टि राष्ट्रीयतासे ओतप्रोत थी। भविष्यमे अिन दोनो साप्ताहिक पत्रोने अपने नाम सार्थक किअे और देशके स्वतन्त्रता-सग्राममें भरसक योग भी दिया।

तिलक और आगरकरने बोझ ढोअे

'केसरी' और 'मराठा' के प्रकाशनके लिअे अेक बेकार और २४०० रुपयोमे गिरवी रखा हुआ छापाखाना मिला। नियमित समयपर किस्तबन्दीमे अुसकी कीमत अदा करनेकी शर्तपर अुसे खरीदा गया। प्रेस अेक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाना था। बोझ अुठानेवाले अधिक पैसे माँगने लगे, परन्तु वहाँ सम्पादक-मण्डल निर्धनोका था। काम तुरन्त करना था। अतअेव तिलक और आगरकर मजदूर बने और अुन्होने बडे हर्षसे छापाखानेके टाअिप, केस अपने सिरपर ढोअे। अपने महान और विशाल ध्येयकी पूर्तिके लिअे छोटे-से-छोटा काम करनेमे भी अुन्हे हिचक नही मालूम हुअी। सन् १८८१ जनवरीकी ४ तारीखको नियत समय पर 'केसरी' तथा 'मराठा' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भिक छह महीनोमें 'केसरी' की केवल १२०० और 'मराठा' की केवल ५०० प्रतियाँ विकती थी। दोनो ही साप्ताहिक घाटेमे थे। बेचारे सम्पादक दूसरा कार्य करके अपनी गुजर-वसर करते थे। ये ध्येयनिष्ठ सम्पादक कंपोज करनेसे लेकर पत्र छप जानेपर अुनपर ग्राहकोके पते लिखने, टिकट लगाने और अन्तत. पोस्ट बक्समे डालनेतकका सारा कार्य सहर्ष अेवं अुत्साहपूर्वक करते थे। पत्रोके साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनीतिक लेखोका अभीष्ट प्रभाव भी पड़ने लगा। 'केसरी' की १६०० प्रतियाँ पहले वर्षके अन्ततक बिकने लगी, परन्तु 'मराठा' की हालतमे विशेष परिवर्तन नही दिखा।

प्रथम कारावास

'केसरी' निर्भीक होकर अँग्रेज नौकरशाहीपर अपने तीखे तीक्ष्ण लेखोका पजा मारता रहता था और 'मराठा' वाघनख चलाता था। दोनोके अग्रलेख

परतन्त्रताके किलेको ध्वस करनेमे सुरगका कार्य करने लगे। सत्य-प्रतिपादन, और निर्भीक मुँहतोड अुत्तर दोनोकी विशेषता थी। 'केसरी' और 'मराठा' का सम्पादन करनेका अर्थ था आगसे खेलवाड़ करना। अंग्रेज सरकार अुनके लेखोसे चिढ-सी गअी। कोल्हापुर रियासतके अंग्रेज पोलिटिकल अेजेटके अिशारेपर वहाँके दीवानने 'केसरी'—सम्पादक आगरकर और 'मराठा'— सम्पादक तिलक अेव अुनके अन्य साथियोपर मानहानिका मुकदमा चला दिया। तिलक और आगरकरने कोल्हापुरके महाराजाके सम्बन्धमे जो कुछ लिखा था वह अक्षरश सत्य था और अुनके हृदयमे शिवाजी महाराजके वशजोके प्रति आदर भी था, किन्तु भयवश जानकारी प्रदान करनेवालोके मुकर जानेके कारण कोर्टमे वे अपनी सफाअी नही दे सके। अुन्होने निर्भीकतासे बयान दिया कि हम लोगोने जो कुछ लिखा है वह सत्य है, किन्तु अुसके लिअे हम प्रमाण अुपस्थित करनेमे असमर्थ हैं। फैसलेमें अुन्हे चार मासके कैदकी सादी सजा सुनाअी गअी। दोनोको डोंगरी किलेके अेक छोटे कमरेमें रक्खा गया। यह घटना सन् १८८२ की है। अिसके पूर्व समस्त भारतमे सामाजिक या राजनीतिक कार्य करने या लिखने बोलनेके अपराधमे कोअी भी नेता अथवा सम्पादक जेल नही गया था। बादमें बगालके सिंह सुरेन्द्रनाथ बैनर्जीपर भी अिसी तरहका मानहानिका मुकदमा सन् १८८३ मे चलाया गया और अुन्हे दो मासकी सादी कैदकी सजा दी गअी। हम यह नि:सकोच कह सकते हैं कि भारतमे देश-हितके लिअे कारावासमें जानेकी प्रथाका श्रीगणेश तिलक और आगरकरने किया। अुस समय अुनकी आयु २६ वर्षकी थी। जेलकी व्यवस्था अितनी कष्टप्रद और गन्दी थी कि १०१ दिनोमे (क्योकि १९ दिनोकी छूट मिली थी) तिलकका वजन २६ पौड और दुर्बल आगरकरका १६ पौड घटा। किन्तु अुन १०१ दिनो तक दोनो मित्रोने खूब चिन्तन मनन किया और भावी कार्योकी योजनाअे बनाअी मानो सरकारने अुन्हे विश्राम और चिन्तनके लिअे ही जेलमें बन्द किया हो। अिधर 'केसरी' की लोकप्रियता भी खूब बढी। अुसकी ३६०० प्रतियाँ बिकने लगी। देश-कार्यके लिअे जेल जानेवाले तिलकके प्रति लोगोके हृदयमें

आदरकी भावना बढ गअी और वे अुन्हे नेता मानने लगे। जब वे जेलसे छूटे तब जनताने हजारोकी सख्यामे जेलके फाटकपर अेकत्र हो अुनका स्वागत किया और पूनाकी अेक विशाल सभामे सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया।

विष्णु शास्त्री चिपलूणकरकी अकल्पित मृत्यु

१८८२ के मार्चमे अेकाअेक तिलकके लेखन और शिक्षा-क्षेत्रके मार्ग-दर्शक चिपलूणकरकी सन्निपात-ज्वरसे मृत्यु हो गअी। अुनकी आयु केवल ३२ वर्षकी थी। अुनके हृदयमे स्वदेश, स्वधर्म और स्वसस्कृतिके प्रति अगाध प्रेम था। अुन्होने शिक्षा-विभागकी सरकारी नौकरी त्यागकर शिक्षा-सस्थाकी स्थापना करने तथा 'केसरी' और 'मराठा' के प्रकाशनमे तिलकका योग्य मार्गदर्शन किया। वे सामाजिक सुधारोके पूर्व स्वराज्य प्राप्त करना आवश्यक मानते थे। अतअेव समाज-सुधारकोपर तीव्र वाग्बाण भी फेकते रहते थे। आपकी आकस्मिक मृत्युसे "केसरी" की अमिट क्षति हुअी। तिलक और आगरकर जैसे अति अुत्साही अेव अपने मतके पक्के युवको परसे अेक अनुभवी विद्वानकी छत्रछाया हट गयी। दोनो बहुत शोका-कुल हुअे और अुन्हे भावी आपसी मतभेदोकी भी छाया दिखलाअी पडने लगी।

"केसरी" और समाज-सुधार

सन् १८८४ में बम्बअीके प्रसिद्ध समाज-सुधारक बैरामजी मलबारीने सरकारको अिस आशयका सुझाव भेजा कि बालविवाह प्रथा कानून द्वारा बन्द कर दी जाय और जिन विद्यार्थियोका विवाह हो गया हो अुन्हे विश्व-विद्यालयमें प्रवेश न मिले। कानून भग करनेवालोको योग्य दण्ड देनेकी भी सलाह दी गयी। सरकारी दरबारमें मलबारीकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। लोगोको अुनके प्रयत्नोसे भय लगने लगा। बम्बअीमें विरोधी आन्दोलन छेड दिया गया। पूनामे भी वैसी ही हवा बहने लगी। "केसरी" के

सम्पादक-मण्डलकी सभा हुअी। अुसमे बहुमतसे निर्णय किया गया कि समाज-सुधारके कार्योमे सरकारी हस्तक्षेपका कडा विरोध किया जाय। सम्पादक-मण्डलने समाज-सुधारके प्रति अपनी नीति निर्धारित्त की जिसके अनुसार धीरे-धीरे लोगोको जाग्रत कर लोगोकी प्रतिनिधि सस्थाओ द्वारा ही समाज-सुधार करना अुपयुक्त समझा गया। अुसकी रायमें समाजकी अपना सुधार स्वयं करना चाहिअे न कि सरकार द्वारा। तिलक बहुमतके निर्णयके समर्थक थे, किन्तु अुनके परम मित्र आगरकर अिसके कट्टर विरोधी थे। अिसलिअे समझौतेके तौरपर निर्णय किया गया कि "केसरी" में अिस सम्बन्धमे जो लेख प्रकाशित हो अुनपर लेखकके नाम दिअे जाअेंगे ताकि लेखोकी जिम्मेदारी लेखकोपर रहे और सामान्य पाठकगण "केसरी" की नीतिके बारेमें भ्रममे न पड़े। यह समझौता मतभेद टालनेके लिअे ही किया गया था किन्तु समझौता केवल मरहमपट्टी मात्र था। आपरेशनका कार्य मरहमपट्टी कैसे करती ? दिन प्रतिदिन मतभेद बढ़ता गया और आगरकरने सम्पादक-पदसे त्यागपत्र दे दिया। सन् १८८७ मे तिलक "केसरी" के प्रधान सम्पादक बने और अुन्होने मृत्यु तक (१९२० तक) अुसके सम्पादकका कार्य किया। अिसके पश्चात् "केसरी" की बहुत ही आश्चर्यजनक अुन्नति हुअी। सन् १८८७ मे "केसरी" की ४००० प्रतियाँ प्रकाशित होती थी। सन् १८९३ मे अुसकी बिक्री ६००० तक हो गयी और वह महाराष्ट्रका लोकप्रिय पत्र बन गया। सम्पादककी (तिलककी) विद्वत्ताकी अपेक्षा "केसरी" की लोकप्रियता निर्भीक समाज अेव देश-सेवाके कारण अधिक बढ़ी। तिलक केवल सम्पादक नही थे, वे समाज-सेवक तथा देश-सेवक भी थे और अन्यायका प्रतिकार करना अुनकी स्वाभाविक वृत्ति थी, जिसका अच्छा प्रमाण "क्राफर्ड प्रकरण" है।

"क्राफर्ड प्रकरण"

अूँचे अँग्रेज अफसरोके विरुद्ध जनताकी ओरसे तिलक सदा आन्दोलन चलाते रहते थे। "केसरी" अुनका प्रभावशाली हथियार था। अिस पत्रके

लेखोके प्रहारसे अँग्रेज अधिकारी और सरकार जर्जरित होते रहते थे। तिलकने क्राफर्ड नामक बम्बअीके अँग्रेज कमिश्नरके खिलाफ सन् १८८८ मे आन्दोलन प्रारम्भ किया जो 'क्राफर्ड प्रकरण' के नामसे प्रसिद्ध है। कमिश्नरपर मातहतो द्वारा रिश्वत लेने और लोगोको बहुत सतानेका आरोप था। वह होशियार था परन्तु अति आलसी भी। 'केसरी' ने अुसकी गति-विधिकी कडी आलोचना की। सरकार जाग्रत हुअी और क्राफर्ड तथा अुसके अन्य भारतीय साथियोपर, जो कि तहसीलदार और मामलतदार थे, रिश्वत लेनेके आरोप लगाअे गअे। आरोपोकी जाँचके लिअे अेक कमीशन बैठाया गया। कमीशनने क्राफर्डको तो बरी कर दिया, परन्तु अुनके साथियोको अपराधी ठहराया। तिलकने अिस अन्यायके विरुद्ध 'केसरी' तथा सार्वजनिक सभाओ द्वारा तीव्र आन्दोलन किया। मि० डिग्वी और ब्रेडला आदि ब्रिटिश पार्लमेन्टके सदस्योसे पत्र-व्यवहार करके अुन्होने अिस विषयको पार्लमेन्टमें भी अुपस्थित कराया। अिससे अिग्लैण्डमे बहुत खलबली मची। परिणाम यह हुआ कि भारत-सरकारने क्राफर्डको त्याग-पत्र देनेके लिअे विवश किया। तिलककी विजय हुअी। जनताको अैसा अनुभव होने लगा कि तिलक अुसके रक्षक और त्राता है।

अब 'केसरी' की बिक्री दुगनी होकर ६००० तक पहुँच गअी। तिलक कांग्रेसमे कार्य करना प्रारम्भ कर त्यागपूर्वक बहुमुखी सामाजिक सेवा करने लगे थे। अुनकी लोकप्रियताके साथ-साथ 'केसरी' की भी अुन्नति होती गअी। सन् १९०० मे अुसका प्रकाशन ९००० प्रतियो तक पहुँच गया, क्योकि सम्पादक तिलक देशके लिअे जेलमें डाल दिअे गअे थे। कारावाससे मुक्त होनेके पश्चात् तिलक 'लोकमान्य' बनकर कांग्रेसमें अुग्रदलके नेता बने। अतअेव सन् १९०५ में 'केसरी' की ११०४० प्रतियाँ बिकने लगी। 'केसरी' का हिन्दी तथा गुजराती भाषामे भी प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, क्योकि तिलकको अपने अुग्र राजनीतिक मतोका प्रचार अन्य भाषा-भाषियो तथा प्रान्तोमें भी करना आवश्यक प्रतीत हुआ। सन् १९०६ में नागपुरसे हिन्दीमें 'केसरी' प्रकाशित होने लगा। हिन्दी 'केसरी' के योग्य सम्पादक द्वय

अुनके पास केवल अेक ही कुर्ता था। गदा होनेपर अुसे रातमे ही धोते और सुखाते थे। अेक वार वर्षाके कारण चार दिनो तक अुसे साफ नही कर सके। अेक अध्यापक बिगडे और कहने लगे कि "गन्दे लडके, तू अपना जीवन गन्दा करेगा।" विद्यार्थी आगरकरने तत्काल अुत्तर दिया कि "मै आपकी तरह अेम. अे. पास करूँगा!" यह अुत्तर सुनकर अध्यापक दग रह गअे। आगे चलकर आगरकरने प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक परीक्षा अुत्तीर्ण की और फिर पूनाके डेक्कन कालेजमें प्रविष्ट हुअे। वे टयूशन करके कालेजकी पढाअी चलाते थे। आप अेकमात्र निर्धन विद्यार्थी थे, परन्तु स्वाभिमानकी कमी नही थी। किसीकी कृपा या अुपकारका ऋण लेना पसन्द नही था। बी. अे. प्रथम श्रेणीमें अुत्तीर्ण हुअे और फेलोशिप मिली। सन् १८८० मे दर्शनशास्त्रमे अेम. अे. की परीक्षा अुत्तीर्ण की और तिलकके साथ न्यू अिंग्लिश स्कूलमें अध्यापक हुअे। जब आपने अेम. अे की परीक्षा अुत्तीर्ण की तब बड़ोदाके गायकवाड महाराजने आपको ५०० रुपया मासिक वेतनपर बड़ोदा बुलाया, परन्तु आपने अिसे सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया तथा तिलकको दिअे हुअे वचनोका मृत्यु-पर्यन्त पालन किया। आप तिलकसे भी अधिक निर्धन परिवारमें पैदा हुअे, निर्धन रहे और सन् १८९५ मे क्षयरोगसे अल्पायुमे ही आपकी मृत्यु हो गअी। तिलकसे तीव्र मतभेद होनेपर आपने सन् १८८७ मे 'सुधारक' पत्रका सम्पादन किया और निर्भीकता तथा तर्कके बलपर सामाजिक सुधारोका समर्थन किया।

त्यागमूर्ति आगरकर

जब आप अेम. अे. अुत्तीर्ण हुअे तब आपने भावुकतासे ओतप्रोत अेक पत्र अपनी माताजीको लिखा। अुसका आशय यह था कि "पूज्य माताजी, आप अैसी आशा करती होगी कि मै अब अूंचा सरकारी अधिकारी बनूंगा और सैकड़ो रुपये वेतन पाअूंगा। मैने और मेरे लिअे आपने निर्धनताके जितने कष्ट अुठाअे और जितनी यातनाअे सहन की अब आप अुनकी समाप्ति देखना चाहती होगी जो स्वाभाविक भी है, किन्तु मुझे अैसा लगता है कि

सामान्य व्यक्तियोकी भाँति केवल भोग-अुपभोगके लिअे मैंने अूंची विद्या नही सम्पादन की है। मैं खूब धन और अूंचा पद प्राप्त कर सकता हूँ, किन्तु अुनके त्यागमे ही मुझे अधिक सात्विक आनन्द प्राप्त होता है। निर्धन रहकर समाज और देशकी आमरण सेवा करनेकी मैंने दृढ प्रतिज्ञा की है। अिस कार्यमे आपका आशीर्वाद चाहता हूँ।" अिस पत्रमे आगरकरके तेजस्वी, त्यागी और कर्मठ जीवनका सार भरा हुआ है।

सर्वांगीण क्रान्तिकारी आगरकर

वे बुद्धिवादी और तर्कवादी थे। अुन्होने पश्चिमी दर्शन-शास्त्र, समाज-शास्त्र और नीतिशास्त्रका गम्भीर अध्ययन किया था। जान स्टुअर्ट मिल, हर्वट स्पेन्सर, जान मोर्ले अित्यादि पश्चिमी प्रगतिवादी दर्शनशास्त्रियोके ग्रन्थोका आपने गहराअीसे मनन किया था जिससे आपके कुछ विचार नास्तिकतासे मिलते-जुलते थे। ग्रन्थ-प्रमाण और परम्परावादको बिलकुल ही नही मानते थे। हिन्दू समाजकी कुरीतियो तथा कुप्रथाओको तत्काल समाप्त करना चाहते थे। सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विषमताको शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट करनेके लिअे अुत्सुक थे। अग्रेज सरकारके तो आप कट्टर विरोधी थे, फिर भी आवश्यकता पड़नेपर समाज-सुधारके कार्योमे सरकारका हस्तक्षेप अनुचित नही मानते थे। अिस सम्वन्धमे आपका और तिलकका मतभेद होना अनिवार्य था। केवल वुद्धि और तर्कके वलपर ही आप रूढियो और धार्मिक प्रथाओको ध्वस करना चाहते थे। विधायकताकी अपेक्षा ध्वसपर आपका अधिक विश्वास था, किन्तु तिलक धीरे-धीरे विधायक कार्यो द्वारा समाज-सुधार करनेके पक्षपाती थे। वे धार्मिक ग्रन्थोको पूज्य मानकर कुप्रथाओको दूर करना चाहते थे। आगरकर सामाजिक और धार्मिक क्रान्तिके समर्थक थे तो तिलक राजनीतिक क्रान्तिके। सामाजिक सुधारके सम्वन्धमें तिलकके पाँच वुनियादी सिद्धान्त थे:— (१) परतन्त्र भारतवर्षमें सामाजिक सुधारोंकी अपेक्षा राजनीतिक सुधारो अर्थात् स्वराज्यका महत्व अधिक है, (२) सुशिक्षित लोगोको राजनीतिक सुधारोके लिअे पहले सचेष्ट

होना चाहिअे, (३) श्रम-विभाजनकी दृष्टिसे सामाजिक सुधारका आन्दोलन चलानेवाले और राजनीतिक आन्दोलन करनेवाले कार्यकर्ता भिन्न-भिन्न हो, (४) समाज-सुधारकोको अपने आचरण द्वारा अन्य लोगोके सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करना चाहिअे अर्थात् सामाजिक सुधारकोकी कथनी और करनी अेक-सी हो और (५) किसी भी सामाजिक सुधारका प्रचार लोक-शिक्षा द्वारा लोगोंके हृदय-परिवर्तन द्वारा होना चाहिअे न कि सरकारी कानूनके बलपर। अंग्रेजी सरकारका समाज-सुधारमे हस्तक्षेप अुन्हे पसन्द नही था। तिलक समाज-सुधारको घरेलू मामला मानते थे। वे सदा आगरकरसे कहते थे कि पहले घरपर कब्जा करो अर्थात् स्वतन्त्र हो जाओ फिर घरमे क्या और किस प्रकारके सुधार करना है, अिसके सम्बन्धमे प्रयत्न करो। समाज-सुधारके चक्करमे पडनेपर आपसी मतभेदके कारण सगठन क्षीण होता है और अंग्रेजोके खिलाफ लड़नेके लिअे निर्बलता अुपस्थित होती है। अिसलिअे वे राज-नीतिक आन्दोलनोपर अधिक बल देते थे। वे राजनीतिके क्षेत्रमे क्रान्तिकारी थे, किन्तु सामाजिक सुधारके सम्बन्धमे अुत्क्रान्तिवादी। आगरकर दोनो क्षेत्रमे क्रान्तिकारी थे, किन्तु सामयिकताके वशीभूत हो अुन्होंने सामाजिक कार्य पहले किअे और अल्पायुमे ही मरनेके कारण राजनीतिके क्षेत्रमें कार्य नही कर सके।

तिलकका आगरकरसे तीव्र मतभेद हुआ जिससे कुछ लोगोको भ्रम हुआ कि तिलक सनातनी और सुधार-विरोधी हैं। किन्तु यह बात बिलकुल गलत थी। तिलकने स्वय सन् १८८९ में पूनाके तुलसी बागकी विराट सभामें तुरन्त कभी समाज-सुधार करनेके लिअे जनतासे अनुरोध किया था, जैसे (१) लडकीकी शादी सोलहवे वर्षसे पहले न हो। (२) लडकेकी शादी बीस वर्षसे पहले न हो। (३) चालीस वर्षोंके बाद पुरुषका विवाह न हो, यदि हो तो विधवाके साथ। (४) शराबबन्दी हो। (५) दहेजकी प्रथा बन्द की जाय। (६) निजी धनका दसवाँ भाग सामाजिक कार्योंमें दिया जाय और (७) विधवाका मुडन न हो, अित्यादि। तिलक क्रियाशील सुधारक थे और वे चाहते थे कि हिन्दू-समाज स्वयं अपना सुधार करे। अुन्होने समय-समयपर सामाजिक

सुधार-परिषदोमे भी भाग लिया । सुधार सम्बन्धी कानूनोके विरोधी थे न कि सुधारोके । अकोलाके हरिजनोके मोहल्लेमे जाकर अुन्होने वहाँ पान-सुपारी ग्रहण की थी । वे कर्मसे वर्ण-व्यवस्था मानते थे न कि जन्मसे । "हिन्दू" शब्दकी आपने वडी अुदार व्याख्या की थी ।

प्रामाण्यबुद्धि वेदेषु । साधनानाम् अनेकता ॥
अुपास्यानामनियम । सः अेव हिंदुरिति स्मृत. ॥

तिलक वेदोको पूज्य ग्रन्थ मानते थे । अुनकी धारणा थी कि पूजा तथा अुपासनाके अनेक प्रकार हो सकते हैं । हिन्दू-धर्म तथा सस्कृतिको समन्वयात्मक मानते थे । अपने धर्ममे निष्ठा रखते हुअे वे अन्य धर्मोके प्रति सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार रखते थे । हिन्दू-धर्म-ग्रन्थो तथा दर्शनशास्त्रका आपने गम्भीर अध्ययन किया था । हिन्दू-समाजकी बुराअियोसे आप अच्छी तरह परिचित थे और अुनमे सुधार चाहते थे । अुधर हिन्दू-सस्कृतिकी अुदारता और हिन्दू दर्शनशास्त्रकी श्रेष्ठतामे आगरकरजीका विश्वास तो अवश्य था परन्तु वे हिन्दू-समाजकी प्रचलित सकीर्णता, अन्धश्रद्धा, विषमतापूर्ण रचना और अुसमे व्याप्त अनेक कुप्रथाओको मिटानेके लिअे सदा व्याकुल रहते थे । अिसके लिअे वे कोअी भी मार्ग ग्रहण करनेमे झिझक दिखाना पसन्द नही करते थे । परन्तु तिलक लोगोको साथ लेकर अुनका मत-परिवर्तन कर सुधार करना श्रेयस्कर मानते थे ।

सन् १८८७ मे तिलक "केसरी"के सम्पादक वने और आगरकरने अपने विविध सामाजिक क्रान्तिकारी विचारोका प्रचार करनेके लिअे "सुधारक" नामका साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया । अिसके द्वारा अुन्होने मराठीके निवन्ध साहित्यको वहुत सम्पन्न वनाया । अुनके सम्पादकीय लेख बहुत कलात्मक होते थे । वे निर्भीकतासे सत्यका प्रतिपादन करते थे । अुनकी रचना ओज-गुण-युक्त और प्रभावशाली होती थी । भाषा अलकृत और सस्कृत-समास प्रचुर होती थी । अुसमें सर्वांगीण विद्रोहका सन्देश निहित रहता था । आगरकर दृष्टा थे । पैंसठ वर्ष पहले आपने अस्पृश्यता-निवारण, सहशिक्षा

विधवा-विवाह, समाज-सत्तावाद, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य, स्त्रियोके समान अधिकार अित्यादि विषयोपर मार्मिक अेव तर्क-पुष्ट विवेचन किया। आप मराठीके श्रेष्ठ निबन्धकार, पत्रकार और साहित्यकार थे। "सुधारक" पत्रमे आपने अपने परम मित्र तिलक और "केसरी" पर कठोर वाग्बाण चलाअे। दूसरी ओरसे भी अैसा ही हुआ। आगरकरका समाजने बहिष्कार भी किया क्योकि आप क्रान्तिकारी सुधारक थे। आपकी आँखोके सामने ही आपकी शव-यात्रा निकाली गयी किन्तु आपने सन्तोकी भाँति क्रोधको पास नही फटकने दिया। आपका शरीर सदा दमासे पीड़ित रहता था। घरमें दरिद्रता थी। डाक्टरी अिलाजके लिअे पैसे नही थे, किन्तु आपने अपनी टेक निभाअी। अपने ध्येयपर अडिग रहे। अुन्तालीस वर्षकी अल्पायुमे ही आपकी दु:खद मृत्यु हुअी। मरते समय भी आप स्थितप्रज्ञ जैसे निर्विकार थे। आपकी मृत्युपर 'केसरी' में लेख लिखते समय तिलक रो पड़े। वे शोकसे अितने व्याकुल हो गअे कि पाँच घण्टोमें केवल दो कालम लिख पाअे। अितनी मित्रता और प्रेम होते हुअे भी प्रामाणिक मतभेदके लिअे तिलकने आगरकरजीका सदा विरोध ही किया। प्रेमपर सत्यनिष्ठा और कर्तव्य-बुद्धिने सदा विजय प्राप्त की। अिसमें दोनोकी ही लोकोत्तर विशेषता है। परन्तु तिलकपर अपने महान् चरित्रसे यदि किसीने प्रभाव डाला तो वे अेकमात्र गोपाल गणेश आगरकर ही थे।

सातवाँ प्रकरण

कांग्रेसका कार्य तथा अन्य विधायक समाज-सेवा

नाभिषेको न संस्कार: सिंहस्य क्रियते वने ।
विक्रमार्जित सत्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ।।

भारतकी राष्ट्रीय महासभा अर्थात् कांग्रेस भारतीय राजनीतिमे क्रान्तिकारी विचारोकी जनक है । अतअेव लोकमान्य तिलक अुससे कैसे अलग रह सकते थे ? कांग्रेसकी स्थापना सन् १८८५ मे हुअी । अुसके प्रथम चार अधिवेशनोमे अुपस्थित होकर भी लोकमान्य तिलकने अुसमे कुछ भी भाग नही लिया क्योकि वे सरकारमान्य कालेजमे प्राध्यापक थे और शिक्षा तथा समाचार-पत्रोके कार्यमे अत्यन्त व्यस्त थे । अुनकी धारणा थी कि शिक्षा-क्षेत्रमे कार्य करनेवालेको राजनीतिमे भाग नही लेना चाहिअे । दूसरा कारण यह था कि तिलक स्वभावसे ही सक्रिय कार्यकर्ता थे । सन् १८८९ में जब कालेजसे अलग हुअे तब आपने कांग्रेसके कार्यमे सक्रिय रूपसे हाथ बटाना प्रारम्भ किया । अिसी वर्ष आप बम्बअीके कांग्रेस-अधिवेशनमें सम्मिलित हुअे । अिस अधिवेशनके लिअे अुन्होने पूनामे चन्दा अेकत्र किया । अधिवेशन सप्ताहमे 'केसरी' दैनिक पत्र बना और अुसने तहलका मचा दिया । वे कांग्रेस-अधिवेशनमे कौंसिल चुनाव सम्बन्धी अेक प्रस्तावपर बोले और अिस प्रकार कांग्रेस मंचपर पहली बार चमके । कांग्रेसकी प्रान्तीय राजनैतिक परिषद्मे भी आप प्रमुख भाग लिया करते थे । अुसके पाँच वार्षिक अधिवेशनोमें सम्मिलित होकर तिलकने जनतापर अपना प्रभाव डाला । धीरे-धीरे वे महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेसके प्रधान-मन्त्री बने । अुनका दौरा प्रान्तके कोने-कोनेमे होने लगा और अपनी लगन तथा कार्य-कुशलतासे वे महाराष्ट्रके प्रिय कांग्रेस-कार्यकर्ता तथा नेता बन गअे । फिर तो

आपका आत्मविश्वास तथा अुत्साह अितना वढ़ा कि आप पूनामें कॉंग्रेस-अधिवेशन करानेके लिअे व्यग्र हो अुठे । वास्तवमे कॉंग्रेसकी स्थापनाके समय पहला अधिवेशन (सन् १८८५ के दिसम्बरमे) पूनामे होनेवाला था, परन्तु वहॉ अेकाअेक हैजेका प्रकोप होनेके कारण वाधा अुपस्थित हो गअी और अघिवेशन बम्बअीमे हुआ । सन् १८८९ मे वम्बअी प्रान्तमे कॉंग्रेस-अधिवेशन करना निश्चित हुआ । तिलक तथा अन्य कार्यकर्ताओने यह अधिवेशन पूनामे करानेकी भरसक चेष्टा की, परन्तु बम्बअीवालोके अुत्साह तथा चार्लस ब्राअुलकी अुपस्थितिके कारण अुन्हे अपनी अुत्कट अिच्छा दवानी पड़ी और अधिवेशन बम्बअीमे ही हुआ । तत्पश्चात पूना-निवासियोने अपने नअे तथा तेजस्वी कार्यकर्ताओके सहयोगसे राष्ट्रीय महासभाका अधिवेशन सफलतापूर्वक पूनामे करनेकी अुत्सुकता प्रकट की और सन् १८९५ का कॉंग्रेस-अधिवेशन पूनामे होना निश्चित हुआ ।

पूनामे कॉंग्रेसका अधिवेशन

प्रान्तीय कॉंग्रेस कमेटीने तिलकको अिस अवसरपर प्रधान-मन्त्री चुना और अुनकी सहायताके लिअे अन्य दो मन्त्रियोकी नियुक्ति की । व्यवस्था सब कुछ ठीक हुअी, परन्तु अिसी समय पूनामे मतभेद पैदा हुआ क्योकि गत सात वर्षोसे वहॉं अुग्र समाज सुधारक और सौम्य समाज-सुधारकोमे काफी सघर्ष चल रहा था । बीच-बीचमे अेक तूफान-सा खड़ा हो जाता था । मलवारी सेठका सम्मत्ति वय सम्बन्धी विधेयक और ग्रामण्य प्रकरण, जिसमे तिलकपर भी सनातनियोने प्रायश्चितके लिअे दबाव डाला, अित्यादि अैसी घटनाअे थी कि पूनामे दो दल होना स्वाभाविक था । तिलकका दल राजनीतिमे अुग्र विचारका था । वे ही अनायास अुसके नेता वने । 'मुखरस्तत्र हन्यते' न्यायसे अुन्हे लेखो अेव भाषणो द्वारा अुग्र समाज सुधारकोका विरोध करना पड़ा । ज्यो-ज्यो अुनकी प्रतिष्ठा बढती गअी त्यो-त्यो अुनके विरोधियोका विरोध भी तीव्र होता गया । अुधर कॉंग्रेस-अधिवेशनके साथ अुसी मण्डपमे समाज-सुधार-परिषद्का वार्षिक अधिवेशन

भी गत आठ वर्षोंसे होता चला आ रहा था। पूना तथा अन्य नगरोके समाज-सुधारकोने अिस प्रथाके अनुसार यहाँ भी कॉग्रेस-मण्डपमे समाज-सुधार-परिषद्के अधिवेशनका आयोजन करना निश्चित किया। पूनाके राजनैतिक सुधारकोने, जिसके नेता तिलक थे, अिसका विरोध किया। अुनका कहना था कि समाज-सुधार-परिषद्का अधिवेशन कॉग्रेसके मण्डपमे न हो। दुर्भाग्यसे काँग्रेस-स्वागत-समितिमे अुनका अल्पमत था। अन्य दो मन्त्री भी अुग्र सुधारवादी थे। अतअेव राष्ट्रीय सभाका मण्डप समाज-सुधार-परिषद्को दिया जाय अथवा नही अिस विपयपर विवाद छिडा और शहरमे तनातनी बढने लगी। तिलक स्वय सन्तुलित विचारके थे। अुनकी निजी राय थी कि काँग्रेस-मण्डपमे समाज-सुधार-परिषद्का अधिवेशन न हो क्योकि वे समाज-सुधारको राजनीतिसे अलग रखना चाहते थे, परन्तु मन्त्रीके नाते अुन्होने यह निश्चय किया कि अिस समय अपने साथिओकी परवाह न कर अुग्र सुधार-वादियोके साथ मिलकर कॉग्रेस-अधिवेशनकी तैयारीका कार्य पूर्ण किया जाय। अुन्होने अिस दृष्टिसे 'केसरी' द्वारा प्रचार भी किया। अुन्होने कॉग्रेसकी महानता तथा प्रतिष्ठाकी रक्षा करनेके लिअे अपने अनुयायिओका आवाहन किया और अुसका अपेक्षित प्रभाव भी पडा। परन्तु अुग्र समाज-सुधारको और राजनीतिक सुधारकोमें कहा-सुनी हो गअी। किसीने-किसीके प्रति क्रोधमे अभद्र शब्दोका व्यवहार किया और तनातनी बढती गअी। परिणाम यह हुआ कि पूनाके सुधारकोने, जिनके नेता न्यायमूर्ति रानडे तथा स्व. गोपालकृष्ण गोखले थे, काँग्रेस-अधिवेशनके लिअे चन्दा देना-दिलाना बन्द कर दिया और यह कहना शुरू किया कि जबतक तिलक काँग्रेसके मन्त्री है तबतक हम सहयोग नही देगे। अुधर राजनैतिक सुधारकोमे भी अिसकी प्रतिक्रिया हुअी। सघर्षने अुग्र रूप धारण किया और अैसा प्रतीत होने लगा कि काँग्रेस-अधिवेशन भग होगा, परन्तु तिलकने अपने मनकी महानताका बहुत ही अच्छा परिचय दिया। अुन्होने अिस अधिवेशनको सफल बनानेके लिअे अेडीसे चोटी तकका पसीना अेक कर दिया और विरोधियोको सन्तुष्ट करनेके लिअे मन्त्री-पदका भी परित्याग कर दिया। साथ ही अुन्होने दूसरे

प्रकारसे सहयोग देकर कॉग्रेस-अधिवेशनको सफल बनाया। बगालके सिह सुरेन्द्रनाथ बैनर्जीके सभापतित्वमे अधिवेशन निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय महासभा समाप्त होते ही तिलकका प्रभाव पूनामे और भी घना हो गया।

सार्वजनिक सभापर अधिकार

अिसी समय अुन्हे पूनाकी सार्वजनिक सभाका नेतृत्व करना पडा। अिस सस्थामे अुनके अनुयायिओका बहुमत हुआ। वास्तवमें यह सस्था समाज-सुधारको तथा याचनावादिओकी बपौती थी। न्यायमूर्ति रानडे अुसके प्रमुख सस्थापक तथा आधार-स्तम्भ थे और गत २५ वर्षोसे अिस सस्थापर अुनका पूरा अधिकार था। अिसके अतिरिक्त वे चाहते थे कि अुनके प्रिय तथा योग्य राजनैतिक शिष्य गोपालकृष्ण गोखले सस्थाके प्रधान-मन्त्री बने जिससे अुनके दलका अधिकार अक्षुण्ण बना रहे, परन्तु तिलकने बाजी मार ली। समाज-सुधारक निराश हुअे और न्यायमूर्ति रानडे तथा गोखलेने 'डेक्कन सभा' नामक दूसरी सस्थाकी स्थापना की। तिलक नही चाहते थे कि अल्प मतवाले सस्थासे अलग हो। वे स्वय प्रजातान्त्रिक प्रणालीके समर्थक तथा अनुयाअी थे और किसी भी सस्थामे अल्पमतमे रहकर कार्य करनेके लिअे तत्पर थे। अुन्होने न्यायमूर्ति रानडे तथा स्व. गोखलेसे विनती की कि वे सार्वजनिक सभाका त्यागकर दूसरी सस्थाकी स्थापन न करे क्योकि अुनका यह कार्य जनताके समक्ष बहुत गलत अुदाहरण अुपस्थित करेगा। न्यायमूर्ति रानडे तथा गोखले स्वयं अँग्रेजी प्रजातान्त्रिक ढंगकी प्रशसा करते रहते थे, परन्तु अुन्होने तिलककी यह प्रार्थना स्वीकार नही की।

बहुजनोके नेता

जब तिलकका प्रभाव बढने लगा और अेक-अेककर सब सार्वजनिक सस्थाओपर वे अनायास अधिकार जमाने लगे, तब नरम दलके नेताओने अुनके विरुद्ध वातावरण निर्माण करना आरम्भ किया। परन्तु बहुमतके

बलपर लोकमान्यका प्रस्ताव या कार्यक्रम तुरन्त मान्य हो जाता था और नरम दलके नेता मुँह ताकते रह जाते थे। नरम दलके नेताओ अर्थात् भूतपूर्व विचारपति म गो. रानडे और गो. कृ. गोखलेका प्रान्तीय काँग्रेसमे भी अल्पमत होनेकी सम्भावना थी, अिसलिअे वे तिलकको अपढ लोगो का नेता कहकर आलोचना करने लगे और कहने लगे कि तिलक बहुमत (Brute Force) के बलपर बाजी मारते है। तिलकने अुन्हे तुरन्त अुचित अुत्तर दिया। अुन्होने कहा कि जो नेता बहुमतको "ब्रूट फोर्स" अर्थात् पशुबल मानते है, वे यथार्थमे नेता ही नही, अधिनायक या डिक्टेटर है और स्वार्थ अेक अधिकारसे सम्पन्न होकर लोगोपर हुकूमत चलाते है। आरामसे कुर्सियाँ तोडनेवाले अिने-गिने सुख-जीवी, स्वार्थरत तथा लोकहित-पराङ्मुख डिग्री होल्डरोका नेता बनना तिलकको कतअी पसन्द न था। वे राजनीतिके क्षेत्रमे मनोविनोद तथा सामाजिक प्रतिष्ठाके लिअे नही आअे थे। वे तो जनताका दुःख दूर करने और सरकारसे लोहा लेनेपर अुतारू थे। फिर नरम दलसे अुनका मेल कैसे बैठता? तिलकको अुग्रवादी नेता बनानेका श्रेय वास्तवमे नरम दलके नेताओको ही था। वे स्वय अपनेको अुग्रदलवादी कभी नही कहते थे। वैसे ही विरोधियोको भी नरमदलीय कहकर नीचा दिखाना या अुनकी आलोचना करना अुन्हे पसन्द न था।

बम्बअी विधान-सभा तथा पूना म्युनिसिपल बोर्डके सदस्य

सन् १८९५ मे तिलक पूना म्युनिसिपल बोर्डके लोक-निर्वाचित सदस्य बने। अुन्होने शहरके स्वास्थ्य और शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान दिया। वे स्वय सुबह अुठकर अपने मोहल्लेकी (वार्डकी) स्वच्छता देखते थे। जनता पर अिससे अुनका अच्छा प्रभाव पड़ा। जनताने यह भली-भाँति जान लिया कि तिलक केवल आफिसकी कुर्सीपर बैठकर हास-परिहासमे समय बिताने-वाले प्रतिनिधि नही है। परिणाम यह हुआ कि सन् १८९५ मे वे बम्बअी धारा-सभाके सदस्य चुने गअे। चुनावमे अुनके विरुद्ध नरम दलने अेक बड़े धनी और मशहूर वकीलको खडा किया था किन्तु जनता अर्थात् लोकल-

दो नअे सार्वजनिक अुत्सव

अन्तमे तिलकने यह निर्णय किया कि हिन्दुओको अपना सगठन कर बल बढाना चाहिअे और समय आनेपर अुन्हे अपनी रक्षाके लिअे अुसका अुपयोग भी करना चाहिअे। तिलक हिन्दू सभावादी या हिन्दू सगठक नही थे, किन्तु समयकी माँग देखकर अुन्होने हिन्दुओको संगठित रूपसे 'गणपति अुत्सव' तथा 'महाराजा शिवाजीकी जयन्ती' मनानेकी प्रेरणा दी और अुसमें सफल भी हुअे। 'गणपति-पूजा' जो अब तक घरेलू धार्मिक विधि मात्र थी, अुसे अुन्होने सार्वजनिक अुत्सवका स्वरूप दिया। अिस अुत्सवमे प्रवचन, व्याख्यान तथा कीर्तन होने लगे और हिन्दुओमे राष्ट्र, समाज, धर्म तथा संस्कृतिके प्रति श्रद्धा बढने लगी। महाराष्ट्र भरमे अिसका व्यापक प्रचार हुआ जिससे हिन्दुओमे जागृति पैदा होने लगी। अिसी प्रकार सन् १८९६ मे रायगड़पर जहाँ महाराजा शिवाजीका राज्यभिषेक हुआ था, अुनकी पहली जयन्ती बड़े अुत्साहके साथ मनाअी गअी। वहाँ अेक योग्य स्मारक भी बनाया गया। यह अुत्सव भी महाराष्ट्रमें बहुत लोकप्रिय हुआ क्योकि महाराजा शिवाजी महाराष्ट्रके राष्ट्र देव माने जाते है। अिस अुत्सवमे भी अितिहासके आधारसे राजनैतिक विषयोंपर विचार, विवाद और भाषण आदि होते थे। महाराजा शिवाजी स्वराज्यके सस्थापक थे। अुनके आदर्शोको ग्रहणकर तिलकने जनताको पुन. स्वराज्य प्राप्त करनेके लिअे अुत्तेजित और सचेष्ट किया। तिलककी यह अुत्कट अिच्छा थी कि 'शिव जयन्ती' के समारोहको राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त हो और अुसमे मुसलमान भाअी भी सम्मिलित हो, क्योकि महाराज शिवाजीने अपने राज्यमे मुसलमानोके प्रति हिन्दुओके समान ही व्यवहार किया था तथा अुनके धार्मिक स्थानोंकी रक्षा भी की थी। तिलकके शुद्ध तथा धर्म-निरपेक्ष राष्ट्रीयताके विचार अुनके "क्या शिवाजी राष्ट्रीय वीर नही थे?" लेखसे स्पष्ट होते हैं। अुन्होने लिखा था कि मानवी स्वभावमें वीर पूजा गहरी जड़ जमाअे हुअे है। हमारी राष्ट्रीय आकाक्षाओको अुन सब शक्तियोकी आवश्यकता है, जो वीर-पूजासे स्फुरित होती हैं। अिस अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे भारतीय अितिहासमें

केवल शिवाजी ही अेक अैसे वीर मिलेंगे। शिवाजी अुस समय पैदा हुअे थे जब सारा देश दुशासनसे अपना छुटकारा चाहता था। अुन्होंने अपने कार्योंसे यह दिखला दिया कि भारतवर्ष विधाता द्वारा अुपेक्षित नही है। यह बात सच है कि अुस समय मुसलमान और हिन्दू विभक्त हो रहे थे और शिवाजीको, जोकि अिस्लाम धर्मका आदर करते थे, मुगल शासनके विरुद्ध लड़ना पड़ा था। मुगल शासन लोगोके लिअे असह्य हो गया था। पर अिसका यह अर्थ नही कि अब हिन्दू और मुसलमान, जो दोनो ही शक्तिहीन हो गअे हैं, और जो आज समान नियमो और कानूनोके द्वारा शासित हो रहे है, अपने समयमे अत्याचारके खिलाफ खडे होनेवाले वीर शिवाजीको अपना राष्ट्रीय वीर स्वीकार न करे। हम यह नही कहते कि शिवाजीकी कार्य-पद्धति भी स्वीकार की जाय। शिवाजीकी पद्धतिको अगीकार करनेका यह समय नही है, परन्तु अुसका तत्व ग्रहण करना अनुपयुक्त न होगा।"

× × × ×

अुन्होंने यह भी कहा, "शिवाजी अुत्सव मुसलमानोका दिल दुखानेके लिअे नही किया जा रहा है। समय बदल गया है और राजनैतिक स्थितिको देखते हुअे हिन्दू तथा मुसलमान अेक ही नावपर सवार हैं तथा अेक ही प्लेटफार्मपर खड़े है। क्या हम शिवाजीके जीवनसे कुछ प्रेरणा नही ग्रहण कर सकते? यही अेक सवाल है, जिसके निर्णयकी जरूरत है। अगर अिसका जवाब 'हां' है तो फिर अिसका कोअी महत्व नही कि शिवाजीका जन्म महाराष्ट्रमें हुआ था। बगालके 'बगाली' और 'अमृतबाजार पत्रिका' जैसे दो सुप्रसिद्ध पत्रोने भी अिसी मतका अनुमोदन किया है। हम अकबर तथा अितिहासके पुराने किसी अन्य वीरका अुत्सव जारी करनेके विरोधी नही है। अुन अुत्सवोका भी कुछ मूल्य होगा। 'शिवाजी-अुत्सव' का समस्त देशके लिअे--विशेष मूल्य है। हरअेक मनुष्यको यह देखना चाहिअे कि अिस अुत्सवकी अुपेक्षा न हो तथा अिसे कोअी असत्य रूपमें न ग्रहण करे। प्रत्येक वीर, चाहे हिन्दू हो या युरोपियन, समयके अनुसार काम करता है। अगर जिस तत्वको ध्यानमें

रखकर हम शिवाजीके जीवनको देखेंगे तो अुसमे अपवादजनक कोअी वात नही मिलेगी। परन्तु हमें अिस सम्बन्धमें बहुत गहरे अुतरनेकी आवश्यकता नही। हमे तो केवल अितना ही कहना है कि अिस समय शिवाजीको अुनके कार्योंके कारण नही, वरन भावोंके कारण राष्ट्रीय वीर मानना चाहिअे।"

× × ×

"देशकी परिस्थितिके अनुसार शिवाजीका जन्म हुआ था और शिवाजी महाराष्ट्रमे जन्मे थे। पर भावी नेता हिन्दुस्तानमे कहाँ जन्मेगा, अिसका कोअी ठिकाना नही। क्या आश्चर्य अगर यह भावी नेता मुसलमान हो। यही अिस प्रश्नकी ठीक व्याख्या है।"

अिस प्रकारके धार्मिक तथा अैतिहासिक अुत्सवो द्वारा सामयिक राजनैतिक आन्दोलन और जागृतिको प्रोत्साहन देनेका अुन्होने सफल प्रयास किया। ब्रिटेनके मशहूर वक्ता तथा राजनीतिक लेखक वर्कने अपने "रिफलेक्शन्स ऑन फ्रेंच रिवोल्यूशन" "फ्रान्सकी राज्य-क्रान्तिपर मेरे विचार" नामक ग्रन्थमे राजनीतिके नेताका प्रमुख लक्षण यह बताया है कि वह "सामयिक परिस्थितियोसे अधिक-से-अधिक लाभ अुठाता चले।" यदि तिलकको अिस सिद्धान्तकी कसौटीपर कसा जाय तो वे जनताके सच्चे नेता सिद्ध होंगे।

अकालमें कार्य

सन् १८९६ में महाराष्ट्रमे भीषण अकाल पडा। लगातार दो वर्षों तक वर्षा नही हुअी। जनता त्रस्त थी। तिलकने 'केसरी' द्वारा अकाल-पीडितोकी सहायताके लिअे आन्दोलन किया। वे ग्राम-ग्राममे सार्वजनिक सभाअे करते, कार्यकर्ता भेजकर लोगोकी अन्नादि द्वारा सहायता करते, अुन्हे संगठित होकर परस्पर सहायता करनेका अुपदेश देते, स्थान-स्थानपर सस्ते अनाजकी दूकाने खुलवाते तथा स्वय गाँव-गाँवमे घूमकर अनाजका बटवारा करते या सस्ते अनाजकी दूकानोमे तौलनेका कार्य करते थे। सरकारकी अक्षम्य अुदासीनताकी तीव्र आलोचना कर वे गवर्नरके पास 'सार्वजनिक सभाका' अेक प्रतिनिधि-मण्डल ले गअे और 'फेमिन बोर्ड' मे सुधार करनेके

लिअे अुन्हे बाध्य किया । अिस प्रकार अकाल-पीडितोंकी सहायताके लिअे अुन्होने कुछ भी अुठा नही रखा ।

प्लेग मे कार्य

अभी अकालसे छुटकारा नही मिला था कि अगले वर्ष सन् १८९७ मे सारे महाराष्ट्रमे जोरका प्लेग फैल गया । शायद भारतमे यह पहला प्लेग था । लोगोको अिसका पता नही था कि अिससे बचनेके लिअे क्या करना चाहिअे । लोकमान्य तिलक स्वय गरीबोके घर जाकर दवा-पानी देते, शुश्रूषा करते, शव ढोते और दिन-रात जन-सेवामे रत रहते । अुन्ही दिनो अुनका बडा लडका केशव जिसकी अवस्था १५ वर्षकी थी और जो सचमुच होनहार था, प्लेगका शिकार हुआ तथा अुसकी दुःखद मृत्यु हो गअी । परन्तु वे विचलित न हुअे । अुन्होने धैर्यके साथ कहा "सार्वजनिक होलिकामें मेरी भी गोबरीका जलना स्वाभाविक था ।" अुन्होने अुस दिन "केसरी" का सम्पादकीय लेख भी लिखा । अैसे स्वार्थ-त्याग, स्थितप्रज्ञता तथा निस्वार्थ-सेवाकी मूर्ति लोकमान्य ही हो सकते थे । प्लेगके आतकसे ग्रसित असहाय गरीब जनताकी सेवामे वे अितने निमग्न थे कि अुन्हे अपने घरकी परवाह ही नही थी । समस्त पूना नगर अुनका घर बन गया था । सरकारने प्लेगका फैलाव रोकनेके लिअे "क्वारण्टीन" बैठाअी और लागोको घरोसे निकालनेके लिअे पुलिसके अतिरिक्त गोरे सैनिकोसे भी काम लिया । ये पुलिस और सैनिक ग्रामीण जनताके साथ दुर्व्यवहार करते थे । अुनसे अैठनेके लिअे नाना प्रकारसे सताते थे । अुनका सामान और घरेलू चीजे बेमतलब फेक देते और घरोमे घुसकर चोरी करते थे । कही-कही तो स्त्रियोसे छेडछाड़ करनेकी भी शिकायतें सुनी गअी थी । जनतामें अत्याचारी सरकारी अधिकारियोके विरुद्ध अितनी तीव्र घृणाकी भावना फैली कि श्री चाफेकर नामके अेक क्रान्तिकारी युवकने प्लेग-कमेटीके चेअरमैन मि० रैण्डका खून कर डाला । सर्वत्र सनसनी फैल गअी । कअी निरपराधी युवकोको जेलमें बन्दकर दिया गया । अकारण जनतापर आक्रमण होने लगे । नागरिकोके

अधिकारीका अपहरण किया गया तथा पूनामे भयसे श्मशान जैसी शान्तिका वातावरण छा गया। भारतवर्षमे यह पहली राजनीतिक हत्या थी। पूनामे जहाँ-तहाँ सैनिकोका डेरा लगा दिया गया। तिलकने भयोत्पीडित अेव त्रस्त जनताकी ओरसे सरकारी अत्याचारोकी बडी निर्भीकतासे तीव्र आलोचना तथा भर्त्सना की। लोगोको धीरज बँधाकर अुन्हे वैधानिक ढगसे आन्दोलन करनेके लिअे प्रोत्साहित किया। वे सभल गअे और सरकारी अफसर भी होशमे आअे। तिलक भयग्रस्त निहत्थी जनताके त्राता बने। अुन्होने लोगोके हृदयमे सम्मानका स्थान प्राप्त किया। वे अपनी जानको खतरेमे डालकर जनताकी सहायता करते और अँग्रेज सरकारसे लोहा लेते थे। वे जितने लोकप्रिय हुअे अुतने ही सरकारके अप्रिय भी बने। सरकारकी आँखोमे अुनका नेतृत्व काँटोकी तरह चुभने लगा। वह अुनके धैर्य, साहस तथा निर्भीकताको कैसे सह सकती थी।

आठवाँ प्रकरण

राजद्रोही लोकमान्य तिलक

"My position among the people depends upon my character and if I am cowed down by the prosecution, living here is as good as living in the Andamans. I think in me they will not find a *katchha* reed."

Tilak's letter to Motilal Ghosh

फर्ग्युसन कालेजसे त्यागपत्र देनेके बाद तिलकने अँग्रेज सरकारकी शासन नीतिकी ओर दृष्टिपात किया और शासन-नीतिकी मूलगामी सूक्ष्म गति-विधियोका अध्ययन कर 'केसरी' के सम्पादकीय लेखोमे अुसकी सप्रमाण आलोचना प्रकाशित करना प्रारम्भ की। प्रारम्भमे हिन्दू मुसलमानोके दगे सम्बन्धी सरकारकी पक्षपातपूर्ण नीतिका रहस्य प्रकट कर आपने अिस दुष्ट नीतिसे बचनेकी भारतीयोको समुचित चेतावनी दी। तत्पश्चात् आपने 'केसरी' द्वारा 'अकाल-निवारक-आन्दोलन' चलाया। आपने अपने लेखो द्वारा अकाल-ग्रस्त किसानोको सलाह दी कि वे सामुदायिक माँग द्वारा जमीनके लगानमे छूट करानेका प्रयत्न करे। अुधर आपने सरकारकी अकाल-निवारक नीतिकी भी कडी आलोचना कर कुछ विधायक सूचनाअे दी। बम्बअीके 'टाअिम्स' पत्रने तिलकके अिस आन्दोलनको 'नो रेन्ट कम्पेन' अर्थात् 'लगान बन्दीका आन्दोलन' कहकर सरकारको तिलकके प्रति सावधान रहनेका संकेत किया। अिस समाचार-पत्रको तिलक 'आयरिश लीग' के सम्पादक वैं पार्नेलके समान प्रतीत हुअे। सन् १८९६ के अकाल-आन्दोलनमें ही तिलकपर अभियोग लगाअे जानेकी सम्भावना थी, परन्तु वह टल गअी। फिर प्लेगके समय सर-कारकी असहनीय कारवाअियोको लेकर सरकारके साथ तिलककी भारी

भिडन्त हुअी । तिलकने अपने सम्पादकीय लेखो द्वारा सरकारकी नीतिकी तीव्र आलोचना की, परन्तु समयकी गति पहचानकर अुसने सब बरदाश्त कर लिया ।

सरकार जानती थी कि अिस सम्बन्धमे वह अधिक दोषी है और यदि किसी प्रकार यह सिद्ध हो गया कि प्रजा भूखके कारण मर रही है तो अुसकी बदनामी हुअे बिना न रहेगी । अुसने यह भली भाँति जान लिया था कि यह नया नेता तिलक हमारा शत्रु है और हमारे मर्मस्थान पर अचूक आघात करनेमे निपुण है । तिलकका नाम अँग्रेज सरकारकी काली बही (ब्लेक रजिस्टर) मे लिखा गया जो अुनकी मृत्यु तक बराबर बना रहा । अकालके बाद ही रैण्ड साहबकी हत्या हुअी थी । अिसी समय तिलकने सरकारी दमनका कडा विरोध किया और सरकारको सावधान करनेके लिअे "राज्य करनेका अर्थ लोगोसे भयानक बदला लेना नही" शीर्षक तर्कयुक्त तथा अत्यन्त प्रभावकारी सम्पादकीय लेख भी लिखा । अिसके पश्चात् तिलकने "क्या अँग्रेज सरकार पागल बनी है ?" नामक अेक दूसरा व्यग्यपूर्ण सम्पादकीय लेख 'केसरी' मे लिखा । जब तिलक जैसा विद्वान्, नीतिमान् और लोकप्रिय नेता अैसे वाग्बाण फेंकने लगा तब सरकारको गहरी चोट लगी । सरकारका रोष धधकने लगा । अैसे समयमेही तिलकने 'शिव-जयन्ती-अुत्सव'मे अेक बड़ा मार्मिक और प्रभावशाली भाषण दे डाला । वे स्वय वकील थे और कानूनी बारीकियोसे भली भाँति परिचित थे । अपने भाषणमे अनेकानेक अुदाहरण देकर अुन्होने सरकारके राक्षसी दमनकी भर्त्सना की और अुसे अिस बातकी भी चेतावनी दी कि वह शासनका कार्य कानूनी ढगसे चलाये । अुन्होने सरकारको मदोन्मत्त पागल हाथीसे अुपमा दी जो अुन्मत्त होकर जनताके प्राणो तथा वित्तका ध्वस कर रहा हो । अिस भाषणने जलेपर नमक छिड़कनेका काम किया । अिधर जनतामे धैर्य और चेतना अुत्पन्न हुअी तो अुधर सरकार आग-बबूला हो गअी । तिलकके लेखो और भाषणोका अग्रेजीमें अनुवाद पढकर ब्रिटिश पार्लमेन्टके साम्राज्यवादी सदस्योने अुनके सम्बन्धमें "क्या यह राजद्रोह नही है ?" प्रश्न पूछा ।

अन्ततोगत्वा भारत सरकारने ता २७ जुलाओ १८९७ को दफा १२४ अ के अनुसार तिलकको कैद किया। अुस समय तिलक कार्यवश बम्बअीमें ही थे। अेक अुच्च अंग्रेज अधिकारी कअी सैनिकोंको साथ लेकर रातके ग्यारह बजे तिलकको गिरफ्तार करने पहुँचा और अुन्हें जेलमें बन्द कर दिया गया।

राजद्रोहका अभियोग

दूसरे दिन सेशन कोर्टमें तिलकपर राजद्रोहके अपराधका अभियोग आरम्भ हुआ। लगभग तीन हजार लोग अभियोग सुननेके लिअे अेकत्र थे। तिलक ५० हजारकी जमानतपर रिहा किअे गअे। कोर्टके बाहर आते ही जनताने अुनका अभूतपूर्व स्वागत किया। सैकड़ों मालाअें पहनाअी गअीं। 'जय-जयकार'के नारे लगाअे गअे। सरकारने भली भाँति जान लिया कि तिलक लोगोंके सच्चे नेता हैं। अभियोग अेक महीने बाद फिर चालू होनेवाला था अिसलिअे अिस बीच तिलक पूना चले गअे।

डिफेन्स फण्ड (बचाव-निधि)

अिस समय तिलक अितने लोकप्रिय हो गअे थे कि जनताने स्वेच्छासे अुनके मुकदमेकी पैरवीके लिअे ५० हजार रुपयोंका 'डिफेन्स फण्ड' अेकत्र किया। अिसमें बंगाल प्रान्तका भी हिस्सा था। बैरिस्टर दावर जैसे बम्बअीके सुविख्यात वकील तिलककी ओरसे पैरवी कर रहे थे। जनताने अिस समय स्वेच्छापूर्वक जो आर्थिक सहायता प्रदानकी अुसके लिअे तिलकने अुसके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। तिलककी आर्थिक स्थिति बहुत ही साधारण थी। कालेजसे त्यागपत्र देनेके पश्चात् अपने जीवन-यापनके लिअे आपने अेक निजी ला क्लास चलाया था। अुसके प्राध्यापक यशस्वी और लोक-प्रिय विद्वान् होनेके कारण ला क्लासकी अितनी तरक्की हुअी कि अन्य तीन-चार सहायक प्राध्यापकोंकी नियुक्ति अनिवार्य हो गअी। तिलक हिन्दू ला पढाते थे। कुल खर्च निकालकर अुन्हें १५० रुपया प्रति मास बचता था। 'केसरी' सम्पादककी हैसियतसे अुन्हें कुछ भी नहीं मिलता

था। परिवारका खर्च प्रति वर्ष बढता जा रहा था। नेता वन जानेपर वह और भी अधिक बढा। कुछ मित्रोकी सलाह और सहायतासे अुन्होंने लातुरमे अेक काटन फैक्टरीकी स्थापना की। अिसमे अुनका हिस्सा अेक तिहाअी था,· परन्तु सार्वजनिक कामोमें व्यस्त रहनेके कारण अुनका वहाँ पहुँचना भी सम्भव न था। अत., वहाँसे प्राप्तिकी भी आशा नही थी। अिस अनिश्चित आर्थिक दशामे ही अुनपर मुकदमेकी विपत्ति आ पड़ी, किन्तु विपत्तिमें फँसानेवाला और सहायता करनेवाला परमेश्वर अेक ही होता है। अुसीने जनता जनार्दनको तिलककी सहायता करनेके लिअे प्रेरित किया।

बाबू मोतीलाल घोषको तेजस्वी अुत्तर

कलकत्ताके प्रसिद्ध समाचार-पत्र 'अमृतबाजार पत्रिका' के यशस्वी सम्पादक बाबू मोतीलाल घोषने अपने मित्र तथा व्यवसाअी-बन्धु तिलकसे प्रार्थना की कि वे सरकारसे माफी मॉगकर अपनेको मुक्त करा ले। तिलककी जेल सम्बन्धी कठिनाअियाँ सुनकर घोष बाबूको दुख हुआ था और मित्र-प्रेमके वशीभूत होकर ही अुन्होंने वह सुझाव दिया था। परन्तु भूख लगनेपर भी क्या सिंह घास खाता है? मानी पुरुषोके लिअे तो मानहानि मृत्युसे भी अधिक दुःखद होती है। गीतामें भगवानने कहा है "सभावितस्यचाकीर्तिमरणा-दतिरिच्यते।" तिलक मानधन पुरुष थे। अुन्होने घोष महाशयको अुत्तर दिया कि "मेरी सामाजिक प्रतिष्ठा मेरे आचरणपर निर्भर है। यदि मैं अभियोगसे भयभीत होकर हार मान लेता हूँ और फिर देशमे रहता हूँ तो मेरा यहाँ रहना अन्दमानमे रहनेके बराबर ही होगा। मैं कच्चे गुरुका चेला नही हूँ। अग्रेज सरकारको भी अनुभव करना पडेगा कि मैं पक्के गुरुका अत्यन्त पक्का चेला हूँ।"

'राजद्रोह' और डेढ़ सालकी सख्त सजा

सितम्बर मासमे मुकदमा पुनः चलने लगा और सरकारकी ओरसे अेडवोकेट जनरलने कहा कि "अिस बातको सिद्ध करनेकी कोअी आवश्यकता

नही प्रतीत होती कि 'केसरी' के लेखो द्वारा किसी व्यक्तिके मनमे अग्रेज सरकारके प्रति सक्रिय घृणा पैदा हुअी क्योकि केवल असकी सम्भावनासे ही हमारा काम चल सकता हे। तिलक अेक प्रतिष्ठित सम्पादक हैं। 'केसरी' की सात हजार प्रतियाँ विकती हैं। केवल वम्वअीमें असकी नौ-सौ प्रतियाँ आती हैं। असिसे स्पष्ट है कि 'केसरी' पत्र कितना लोकप्रिय तथा प्रभावशाली है। अैसे पत्रके सम्पादकीय लेखोका प्रभाव असके पाठकोपर पडे विना नही रह सकता। 'केसरी' अग्रेज सरकारको 'विदेशी' कहता है और कहता है कि जनता सरकारके अन्यायके कारण त्रस्त है। तिलकने असीलिअे 'शिवाजी अुत्सव'को राजनीतिक स्वरूप दिया है और असके बहाने अग्रेज सरकारके प्रति जनतामें घृणा पैदा करनेकी भरसक चेष्टा की है। अग्रेजी राज्यमे रहनेवाले प्रत्येक भारतवासीके हृदयमे सरकारके प्रति असन्तोष पैदा कर 'केसरी' खोया हुआ स्वराज्य पुन. प्राप्त करनेके लिअे जनताको अुभाडता भी है। असलिअे राजद्रोहके अपराधमे तिलकको अुचित दण्ड मिलना परमावश्यक है।" वैरिस्टर दावरने तिलककी पैरवी की, परन्तु व्यर्थ। अन्ततोगत्वा नौ ज्यूरिओमेंसे छै ने तिलकको राजद्रोही घोषित किया और विचारपति स्ट्रेचीने अुसे स्वीकार किया। असके पश्चात् न्यायमूर्तिने तिलकको कुछ कहनेकी आज्ञा दी। तिलक शान्त चित्तसे खड़े हुअे। अुनके अुद्गार सुननेके लिअे दर्शक अत्यन्त अुत्सुक थे। कोर्टमें सन्नाटा छाया था। तिलकने गम्भीरतासे कहा कि "यद्यपि ज्यूरीने मुझे दोषी सिद्ध किया है तो भी मै अपने आपको निर्दोष ही समझता हूँ। मैने ये लेख राजद्रोहके अुद्देश्यको सामने रखकर नही लिखे थे और मै समझता हूँ कि अुनका प्रभाव राजद्रोह अुत्पन्न करनेमे सहायक न होगा। मेरे लेखोमें प्रयुक्त शब्दोका सही अर्थ करनेके लिअे सरकारकी ओरसे ही मराठी भाषाके किसी विद्वानको वुलाना चाहिअे था जो नही हुआ।" तिलककी दलीले न्यायमूर्ति स्ट्रेचीको कैसे जँच सकती थीं। अुन्होने तो डेढ वर्षकी सश्रम कारावास-सजा सुना ही दी। अपना निर्णय सुनाते हुअे विचारपतिने यह भी कहा कि तिलकने प्लेगके समय जो अथक लोक-सेवाकी असके लिअे मै अुनकी प्रशसा करता

हूँ, किन्तु राजद्रोहके अपराधसे वे मुक्त नही किअे जा सकते। तिलकने वडे धैर्यसे सजाका हुक्म सुना। अुनके कअी मित्र तथा अनुयाअी पसीज अुठे, परन्तु वे टससे-मस न हुअे क्योंकि वे अिसके लिअे पहलेसे ही तत्पर थे।

तिलकके मित्रोने लदनकी प्रिवी कौन्सिलमे अपील दायर की। वहाँ अुदारदलके नेता मि. आस्क्विथने तिलककी पैरवी की। न्यायमूर्ति स्ट्रेचीने अपने जजमेन्टमे कहा था कि तिलकने जनतामे अँग्रेज सरकारके प्रति घृणा पैदा की, "Disaffection means lack of affection which amounts to lack of loyalty." "घृणाका अर्थ प्रेम अर्थात् राज्यनिष्ठाका अभाव है।" न्यायमूर्ति स्ट्रेचीने तिलकपर राजद्रोहका अपराध स्वय येनकेन प्रकारेण मढ़ा। अिस अपीलका महत्व अिस दृष्टिसे भी था कि अिण्डियन पिनल कोडकी दफा १२४ अ को स्पष्ट करनेका यह पहला अवसर लंदनकी प्रिवी कौन्सिलके समक्ष अुपस्थित हुआ। बै. आस्क्विथने वडी बुद्धिमानीसे पैरवी प्रारम्भ की, परन्तु प्रिवी कौसिलके विचारपति अुस समय अिस वडे अुत्तरदायित्वके भारको वहन करनेके लिअे तैयार न थे। किसी भी मार्गसे वे पिण्ड छुड़ानेकी सोचने लगे। न्यायमूर्तिगण अैसे कार्योमें वहुत निपुण होते हैं। अुन्होने कुछ देरतक बै. आस्क्विथका कथन सुना और अेक कानूनी शका अुपस्थित कर दी कि अपील प्रिवी कौंसिलमें मजूर हो सकती है या नही। सरकारी वकीलने अुनका अुद्देश्य ताड़ लिया और प्रार्थना की कि तिलककी अपील प्रिवी कौसिल मजूर न करे। अपने विचारके समर्थनमें अुसने कअी दलीले भी पेश की। अन्ततोगत्वा न्यायमूर्तिओकी मनचाही हुअी और अपील नामजूर कर दी गअी। कुछ भी हो तिलकके अिस मुकदमेने अुस समय अैतिहासिक स्वरूप धारण किया था। अिसीलिअे डा० पट्टाभि सीतारामय्याने कॉंग्रेसके अितिहासमें लिखा है कि तिलककी वजहसे अिण्डियन पिनल कोडकी दफा १२४ अ तथा १५३ अ मे विस्तार किया गया ताकि राजद्रोहके अभियोगका क्षेत्र व्यापक बने। अुन्होने लिखा है कि "Because of him sections 124 A and 153 A were added to the *Penal Code so as to amplify the scope of*

the offences" तिलकको तुरन्त ही येरवडा-सेन्ट्रल जेलमे भेजा गया। वहाँ बारह महीनोमे अुनका वजन ३० रतल घटा। अुस समयका कारावास-जीवन अत्यन्त कष्टप्रद था अिसलिअे वे शरीरसे क्षीण हुअे किन्तु मनसे अधिक बलवान बने।

अँग्रेज महापंडित प्रो० मेक्समूलरकी सहानुभूति

तिलककी सजाका समाचार सुनते ही प्राच्यविद्या पडित प्रो० मेक्स-मूलरको अति दु:ख हुआ। तिलकपर अुनकी प्रगाढ निष्ठा थी। अुनकी विद्वत्ताका वे बहुत आदर करते थे। अुन्होने ब्रिटिश और भारत सरकारसे तिलककी रिहाअीके लिअे अनुरोध किया। आवेदन-पत्रपर कअी अँग्रेज तथा भारतीय विद्वानोके हस्ताक्षर थे जिनमे प्रो० मेक्समूलरके अतिरिक्त सर लुअीत्यम हार, सर रिचार्ड गर्थ, विलियम केन, दादाभाअी नौरोजी तथा रमेशचन्द्र दत्त आदि मुख्य थे। हस्ताक्षर करनेवाले समस्त अँग्रेज महापडित तिलकके 'ओरायन' अर्थात् 'वेदकाल निर्णय' नामके ग्रथसे बहुत प्रभावित थे। अिस आवेदन-पत्रपर अेक वर्ष पश्चात् भारत सरकारने अपना अनुकूल मत प्रकट किया।

कांग्रेसमें आदर प्रदर्शन

सन् १८९७ के दिसम्बरमे कांग्रेसका अधिवेशन अमरावतीमे हुआ। सरकारने तिलकके प्रति जो अत्याचार किया था अुसकी अध्यक्ष सर शकरन् नायरने कडी निन्दा की। बंगालके सिह सुरेन्द्रनाथ बैनर्जीने भी अपने प्रभावशाली भाषणोमे तिलकके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुअे सरकारकी कड़ी आलोचना की। अुन्होने अत्यन्त व्यग्रचित्तसे यहाँ तक कहा कि "मेरा शरीर यहाँ है, परन्तु मेरी आत्मा यरवदा जेलमे है।" कांग्रेस-अधिवेशनमें तिलककी 'जयजयकार' हुअी और सरकारी नीतिकी घोर भर्त्सना की गअी। अिसके पूर्व किसी भी भारतीय नेताकी 'जयजयकार' कांग्रेस-मण्डपमें नही हुअी थी।

लन्दनकी 'ओरिअेन्टल असोसिअेशन' के प्रयत्नोके कारण, जिसके अध्यक्ष प्रकाड पडित प्रो० मेक्समूलर थे, तिलकको सजाकी पूरी अवधिसे छै मास पूर्व ही मुक्त कर दिया गया, परन्तु सरकारने अपनी टेकपर दृढ रहते हुअे अुनकी छै मासकी सश्रम सजा मुलतबी रखी। अग्निसे तपकर स्वर्णके समान अधिक शुद्ध अेव तेजस्वी होकर तिलक जेलसे बाहर आअे। जनताने अुनका हार्दिक अेव भव्य स्वागत किया। हजारोकी सभाओमे तिलकका जहाॅ-तहाँ अभिनन्दन होने लगा। 'जयजयकार'से आकाश गूंज अुठा। अुनपर फूलोकी वर्षा हुअी और किसीने अुन्हे स्फूर्तिवश 'लोकमान्य' कहकर गौरवान्वित किया। यह विशेषण यथार्थ होनेके कारण लोकप्रिय भी बन गया और तिलक सचमुच लोकमान्य सिद्ध हुअे।

नवाँ प्रकरण

काँग्रेसमें अुग्रदलके नेता

"Ever since 1896 Tilak was trying to induce the Congress to show a little more grit."

History of I. N Congress.

लोकमान्य तिलक जब १८९७ में जेल गअे, तब बम्बअी धारा-सभा तथा पूना म्युनिसिपल बोर्डके प्रमुख सदस्य तथा सार्वजनिक सभा अेव प्रान्तीय काँग्रेस कमिटीके सेक्रेटरी भी थे। वे कारावाससे क्षीण शरीर लेकर मुक्त हुअे, फिर भी पुनश्च "हरि· ॐ" करके पहलेसे भी अधिक अुत्साहके साथ "केसरी" का सम्पादन करने लगे और काँग्रेसके कार्यमे भी अुनका सहयोग अधिक बढ गया। "केसरी" की बिक्री अितनी बढी कि तिळकको बडा छापाखाना खरीदना पड़ा। काँग्रेस कार्यकर्ताओमे नअी चेतना अुत्पन्न हुअी। कुछ महीनो बाद सन् १८९८ में कॉग्रेसके मद्रास-अधिवेशनमे लोकमान्य तिलकके अध्यक्षीय मचपर पदार्पण करते ही सभी दर्शकोने अुनका करतळ ध्वनिसे स्वागत किया। काँग्रेसके सभापतिने भी अुन्हे "लोकमान्य" कहकर काँग्रेसकी ओरसे स्वागत किया। लोकमान्यने भी गद्‌गद् कण्ठसे जनता-जनार्दनकी वन्दना की। जनता नअे नेताकी खोजमें थी। नरमदलवालोकी वैधानिक नीति बेकार सिद्ध हो चुकी थी। लोकमान्यने यह बात अच्छी तरह समझ ली थी और वे काँग्रेसमे अपना बहुमत बनानेके प्रयत्नमे सलग्न थे। बहुमतके बलपर प्रजातान्त्रिक ढगसे वे काँग्रेसपर कब्जा करना चाहते थे। यही समयकी माँग थी क्योकि घमडी लार्ड कर्जन, भारतके बड़े लाट अर्थात् गवर्नर जनरल बनकर आ चुके थे। वे भारत भूमिपर श्मसान-सी शान्ति स्थापित करना चाहते थे। नव अंकुरित राष्ट्र-चेतनाको समूल नष्ट करना अुनका ध्येय था। अुनकी यह प्रबल धारणा थी कि

भारतवर्षमे सब कुछ कठोर शासनके बलपर हो सकेगा। अैसे विषम समयमे लोकमान्य जैसे लौह नेताकी परम आवश्यकता थी। भारतकी भावी राजनैतिक दलबन्दीका बीज तो पूनामे सन् १८९६ को सार्वजनिक सभामे ही बोया जा चुका था। न्यायमूर्ति रानडेके राजनीतिक प्रशिष्य गो कृ गोखले और कॉंग्रेसके प्राय: सभी पुराने नेता, जैसे सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, मेहता, वाच्छा अित्यादि लोकमान्य तिलकको अुग्र राजनीतिक लोकनेता कहकर अुनसे मतभेद रखते थे। लोकमान्य तिलक कॉंग्रेसमे अपना अुग्रदल वलशाली बनानेमे जुट गअे। वे कट्टर अनुशासनवादी थे। अपने सिद्धान्तोपर अुनका पूरा विश्वास था। चन्द वर्षोमे ही कॉंग्रेसमे अपना बहुमत बना लेनेकी दृढ आशासे प्रोत्साहित होकर वे तन-मन-धनसे कॉंग्रेसके कार्यमे जुट गअे और अनेक बार अपने प्रयत्नोमे असफल होनेपर भी विचलित नही हुअे।

सन् १८९९ मे कॉंग्रेसका अधिवेशन लखनअूमे हुआ। सर रमेशचन्द्र दत्त सभापति थे। गोखले, फिरोज़ शाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, वाच्छा आदि नरमदलके नेता सदलबल वहॉं अुपस्थित थे। लोकमान्य तिलक भी अपने चन्द साथियोके साथ पहुँचे। लोकमान्य तिलकने बम्बअीके गवर्नर लार्ड सैंडहर्स्टके राजशासनकी भर्त्सना तथा कडी आलोचना करनेवाला प्रस्ताव प्रस्तुत किया, क्योकि अुनके शासनकालमे महाराष्ट्रमें प्लेग तथा अकालका प्रकोप हुआ और सरकारी जुल्मोके कारण जनता त्रस्त हुअी। नरमदलके अध्यक्षने अिस प्रस्तावको अुपस्थित नही होने दिया, क्योकि सरकारके अत्याचारोकी भर्त्सना करनेका वे साहस नही रखते थे। लोकमान्य तिलकने बहुत समझाया अेव वादविवाद भी किया, किन्तु अुस समय कॉंग्रेसमे अुनका दल अल्पमतमें था अिसलिअे असफल रहे। कॉंग्रेसके अितिहासमे डा॰ पट्टाभि सीतारामय्याने लिखा है· "In 1899 Lokmanya wanted to move a resolution condemning the regime of Lord Sandhurst. A storm of opposition was raised. He challanged the delegates to prove that his regime had not been ruinous. He quoted misdeeds of bureaucracy but

the president threatened his resignation." लोकमान्यकी दलीलोसे नरमदलवाले विरोधी भी अवाक् हो गअे, परन्तु सभापतिकी त्यागपत्र देनेकी धमकीने तिलकको स्तब्ध कर दिया ।

चार महीनोके वाद सातारामे महाराष्ट्र प्रान्तीय काँग्रेसका अधिवेशन हुआ । वहाँ भी नरमदलके रथी-महारथी गोखले, मेहता, वाच्छा और सेटलवाड आदि सदलवल पहुँचे । अुनका हेतु लोकमान्य तिलकको परास्त करना था । लोकमान्य तिलक भी सदलबल पहुँच गअे । अुग्रदलकी शक्ति दिन-प्रति-दिन वढ रही थी । विषय-निर्धारिणी समितिमे तिलककी हार हुअी, किन्तु खुले अधिवेशनमे स्वय लोकमान्यने वम्बअीके गवर्नरकी भर्त्सना करनेवाला प्रस्ताव प्रभावशाली भाषणके साथ प्रस्तुत किया । काफी देरतक विवाद हुआ और अन्ततोगत्वा प्रस्ताव भारी बहुमतसे स्वीकृत हुआ । नरमदलके प्रमुख नेता फिरोज शाह मेहताने अिस प्रस्तावका कड़ा विरोध किया था । लोकमान्य तिलककी 'जयजयकार' हुअी और यहीसे काँग्रेसमे नरमदलकी हारका श्रीगणेश आरम्भ हुआ । धीरे-धीरे तिलकका प्रभाव वढा और महाराष्ट्रमे नरमदल फीका पड़ा ।

सन् १९०० मे काँग्रेसका अधिवेशन लाहौरमे हुआ । लोकमान्य तिलक सदलवल वहाँ पहुँचे । अध्यक्षने अुन्हे अपने पास मंचपर वैठाया । जिस प्रकार मद्रास-अधिवेशनमें अुनकी 'जयजयकार' हुअी थी, वैसे ही यहाँ भी हुअी । अिस समय काँग्रेसके सस्थापक और भूतपूर्व अध्यक्ष दादाभाअी नौरोजी, वेडरवर्न तथा ह्यूम अित्यादिने काँग्रेसको वडे प्रेरक सन्देश भेजे थे । अुन्होने काँग्रेसको कुछ सक्रिय आन्दोलन चलानेकी सलाह दी थी जिससे अुन्हे विलायतमे भारतके सम्वन्धमें कुछ कार्य करनेके लिअे वल प्राप्त हो । लोकमान्य तिलकने अिन मुनित्रयके विचारोका हार्दिक अभिनन्दन किया और काँग्रेसको सक्रिय तथा वलवती वनानेके लिअे वहुमतके नरम-दलवादी नेताओसे अत्यन्त करुणार्द्र प्रार्थना की, परन्तु अुन्होने अुनकी वात नही सुनी । लोकमान्य विचलित नही हुअे । अुन्हे यह पक्का आत्मविश्वास था कि वहुमतके वलपर अेक दिन वे काग्रेसपर प्रभाव स्थापित कर लेगे ।

केवल धारासभामें विरोध करनेसे न बनेगा

सन् १९०१ के प्रारम्भमे वम्वअीकी धारा-सभामे सरकारने जमीन महसूल सम्वन्धी अेक विधेयक अुपस्थित किया, जिसके अनुसार जमीन मालिक कर्जके बदलेमे साहूकारको अपनी जमीन नही वेच सकता था। सरकारका कहना था कि जमीन वेचकर या गिरवी रखकर छोटे-छोटे जमीदार कर्ज लेते है और अन्ततोगत्वा अुनके कर्जका वोझ वढता ही जाता है। यह कानून बढती हुअी कर्जदारीको रोकनेके लिअे पेश किया गया है। अिसका परिणाम यह होता कि महाजन लोग छोटे-छोटे जमीदारोको कर्ज नही देते और अुनकी (जमीदारोकी) हालत अत्यन्त गअी-वीती हो जाती। अुधर सरकारने को-आपरेटिव सोसायटीज स्थापित कर अुनके द्वारा छोटे-छोटे जमीदारोको कर्ज देनेकी भी कोअी व्यवस्था नही की। मि. वेडर्नवर्न और दिनशा वाच्छा जैसे काग्रेसके भूतपूर्व सभापतियो तथा अर्थ-शास्त्रियोने सरकारसे निवेदन किया कि पहले को-आपरेटिव सोसायटीज द्वारा कर्ज देनेका प्रवन्ध किया जाय, फिर अैसा कानून वने, परन्तु सरकारने अपनी नीति परिर्वतित करनेसे साफ अिन्कार कर दिया। मि वाच्छाकी (जो लोकमान्य तिलकके विरोधी थे) आँखे खुली। अुन्होने वम्वअीमें विराट् सभाका आयोजन किया जिसमे नरमदलके सिरमौर फिरोजशाह मेहताने भी सरकारी नीतिकी आलोचना कर सरकारसे प्रार्थना की कि वह अुस कानूनको अुपस्थित न करे। मि. दिनशा वाच्छा, सर फिरोज शाह मेहता. स्व गोपाल-कृष्ण गोखले आदि नरमदलके प्रमुख नेता अिन दिनो वम्वअी-धारासभाके सदस्य थे। अुन्होने अपनी प्रभावकारी वाग्मितासे अिस कानूनका कड़ा विरोध किया, परन्तु सरकार अपने निश्चयपर अटल रही। अन्ततोगत्वा अपना विरोध प्रदर्शित करनेके लिअे नेताओने कौन्सिल-हालका परित्याग किया। लोकमान्य तिलकने अिस साहसपूर्ण विरोधका सम्पादकीय लेखमें हार्दिक अभि-नन्दन किया। आपने अिस कानूनको 'मर्ज रोकनेकी अकसीर दवा मृत्यु' कहकर मजाक अुड़ाअी और सरकार को-आपरेटिव सोसायटीजकी स्थापना करनेकी

विधायक सूचना भी दी। अन्य नेताओंके समान आपने भी सार्वजनिक सभामें अिसका विरोध किया, परन्तु व्यर्थ। अन्तमें आप अिस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जनताकी शक्ति जाग्रत किअे विना सरकार अपनी मनमानी नीतिसे विचलित नहीं होगी। आपने अनेक अैतिहासिक तथ्योंके आधारपर नरमदलके नेताओंसे निवेदन किया कि वे केवल धारासभामें विरोध करनेपर अत्यधिक जोर न दें वरन् कॉंग्रसके द्वारा जनताका वल जागृत कर प्रभावशाली संगठनका निर्माण करें। फिर भी नरमदलके बुद्धिमान नेता तिलकके मार्गदर्शन पर चलनेके लिअे तैयार नहीं हुअे।

आदर्श मृत्यु-लेख

अिसी समय या अिसके कुछ आगे-पीछे, प्रकाण्ड पश्चिमी विद्वान प्रोफेसर मेक्समूलर (जिनको तिलक भट्ट मोक्षमूलर कहते थे), विख्यात पश्चिमी दार्शनिक हर्वर्ट स्पेन्सर तथा न्यायमूर्ति म गो. रानडेकी शोचनीय मृत्यु हुअी। तिलकने अुनके सम्बन्धमें हृदयद्रावक संवेदनासूचक लेख लिखे। अुन्होंने अिन मनीषियोंका अनुकरण कर भारतकी विचार तथा ज्ञान-परम्परामें वृद्धि करनेका भारतीय नव शिक्षितोंको अुपदेश दिया। न्या. रानडेके प्रति आपने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की और अुनको भारतका महान राजनीतिक तथा सामाजिक विचारक अेवं सुधारक कहकर गौरवान्वित किया। अिन लेखोंमें मतभेदकी वू छू तक नहीं गयी थी। तिलकका कहना था कि मतोंकी अपेक्षा व्यक्तिके स्वार्थ-त्याग तथा प्रत्यक्ष आचरणसे ही अुसके वड़प्पनको पहचानना चाहिअे। अिस अुदार अेवं सहिष्णुतापूर्ण सिद्धान्तके आधारपर ही वे लिखते और आचरण करते थे। सन् १९०१ में कांग्रेसका अधिवेशन कलकत्तामें हुआ। नरमदलके नेता श्री दिनशा वाच्छा सभापति थे। अिस समय महामना पं मदनमोहन मालवीयने शिक्षा-कमीशन सम्बन्धी अेक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें सरकारी नीतिकी भर्त्सना और आलोचना की गअी थी, क्योंकि नअे शिक्षा-कमीशनमें अेक भी भारतीय नहीं था। लोकमान्य तिलकने वड़ा तर्कयुक्त अेवं प्रभावशाली

अेक वार दिसम्वरके अन्तिम सप्ताहमे अिकट्ठा होकर कुछ भाषण देना और कुछ प्रस्ताव स्वीकारकर नम्रतापूर्वक अँग्रेज सरकारसे अनुरोध करना ही काँग्रेसका कार्यक्षेत्र नही होना चाहिअे। काँग्रेसका अधिवेशन वडे-व्रड़े वैरिस्टर, वकील और सुखजीवी लोगोका अड्डा बन गया है जो जनताके दु खोके प्रति अुदासीन हैं। कॉंग्रेसका कार्य तो निरन्तर किसी-न-किसी रूपमे चलता रहना चाहिअे। अध्यक्ष सर हेनरी काटनकी सूचना थी कि काँग्रेसको भारतवर्ष तथा विलायतमे वैधानिक आन्दोलन प्रारम्भ करना चाहिअे जिससे जनता सदा जागृत रहे और जनताकी आशा-आकाक्षाओके प्रति दोनो सरकारोका ध्यान आकर्पित हो। लोकमान्यने अिस सुझावका समर्थन किया, किन्तु नरमदलका गढ़ होनेके कारण वम्वअीमे किसी प्रकारकी योजना नही वनाअी जा सकी। लोकमान्य निराश नही हुअे। लाला लाजपतरायने अिसी अधिवेशनमे कॉंग्रेसका विधान वनानेका प्रस्ताव रखा, क्योकि अव तक काँग्रेसका कोअी विधान ही नही था। लालाजीने प्रस्ताव प्रस्तुत किया और लोकमान्यने अुसका हार्दिक अनुमोदन किया। वम्वअीके सिंह फिरोज शाह और पजावके सिंह लालाजीमे झड़प हुअी जिससे वातावरण गरम हो गया तथा लालाजीको अपना प्रस्ताव वापस लेना पडा। अिस समयसे काँग्रेसमे विधिवत् सघर्ष प्रारम्भ हुआ। प्रतिवर्ष तिलकका प्रभाव वढता गया। विरोधियोपर भी अुनका प्रभाव पडा। सर तेजवहादुर सप्रूने अिस समय लोकमान्य तिलकके सम्वन्धमे कहा था कि "अुनमें राजनीतिज्ञकी असामान्य योग्यता है। अुनकी देशभक्ति, अुनका साहस तथा अुनके व्यक्ति-निरपेक्ष विचार अतुलनीय हैं और अिसीलिअे विरोधियोके मनमें भी अुनके प्रति आदरभाव रहता है।" लोकमान्य समयसे वीस वर्ष आगे थे। वे दूरदृष्टा थे और राजनीतिके क्षेत्रमे आत्मनिर्भर होकर काँग्रेसमें आगे वढ रहे थे।

नरमदल और अुग्रदलकी नीतिमे मूल-भेद

अव तक काँग्रेस पर नरमदलवादियोका पूरा अधिकार था, वे व्रिटिश शासनको अीश्वरकी देन मानते थे किन्तु अुग्रदलके सस्थापक लोकमान्य

तिलकने असे अस्वाभाविक बताया। नरमदलवादी ब्रिटिश शासनकी शान्ति, व्यवस्था अेव पाश्चात्य संस्कृति आदिसे अत्यन्त प्रभावित थे, किन्तु अुग्रदल-वादी अुसके लाभोको स्वीकार करते हुअे भी भारतके राष्ट्रीय चरित्र और सभ्यतापर पडनेवाले अुसके कुप्रभावोकी ओर विशेष रूपसे सजग थे और अपने अतीत गौरवका स्मरण कर जनताके नैसर्गिक अधिकारोकी माँग प्रस्तुत कर रहे थे। नरम राजनीतिज्ञोकी राय थी कि अिग्लैण्डमें प्रतिनिधि-मण्डल भेजकर कानूनकी मर्यादामे पत्रोमे हलचल मचाकर प्रस्तावो अेव व्याख्यानो आदि द्वारा अँग्रेज सरकारकी मनोवृत्तिमे अनुकूल परिवर्तन किया जा सकता है। वे धीरे-धीरे राजनीतिक सुधारोकी प्राप्तिमे भी विश्वास रखते थे। अिसके विरुद्ध अुग्रदलवादी स्वावलम्बनके पक्षमे थे। वे विदेशी नौकर-शाहीपर जनताका दबाव डालकर औपनिवेशिक स्वराज्य (होम रूल) प्राप्त करना चाहते थे। आवश्यकतानुसार यह दल सरकारका शान्तिपूर्वक विरोध भी करना चाहता था। अुसका मूलमन्त्र स्वावलम्बन था। लोकमान्य तिलकके मतानुसार अुद्देश्यके कारण नही, वरन् अुसकी प्राप्तिके मार्गोके कारण अुनके दलको अुग्रवादियोकी अुपाधि मिली थी। अुग्र राजनीतिज्ञ लोकमान्य तिलक और नरमदलके नेताओकी नीतिमे यही मूलभूत अन्तर था।

वंग-भंगका आन्दोलन

लार्ड कर्जन भारतमे अिस प्रतिज्ञाके साथ राज्य-कार्य चला रहे थे कि अुनके प्रयत्नो द्वारा अँग्रेजी सत्ता सदा अक्षुण्ण बनी रहेगी। किसी प्रकारकी जागृति अथवा राजनीतिक आन्दोलन अुन्हे असह्य थे। सन् १९०५ की जनवरीमे बम्बअी-कॉंग्रेसके मनोनीत सभापति सर हेनरी काटनने अुनसे मिलनेकी तिथि तथा समय निर्धारित करनेकी प्रार्थना की। अध्यक्षके नाते वे अुनके सम्मुख कॉंग्रेसकी माँग अुपस्थित करना चाहते थे, किन्तु साम्राज्यवादी कर्जनने अुनकी प्रार्थना ठुकरा दी और कहा कि "कॉंग्रेसका सभापति गवर्नर जनरलके बंगलेके कम्पाअुण्डमें भी प्रवेश करने योग्य नही है।" "I shall not allow him to cross the fringe of my

bungalow." भारतकी राष्ट्रीय जागृतिको बुरी तरहसे कुचलनेके लिअे अुन्होने बग-भगकी कूटनीतिक योजना तैयार की। बगाल प्रान्तमे राष्ट्रीय जागृति दिन-पर-दिन बढ रही थी। अँग्रेजी शिक्षाका पर्याप्त प्रचार होने और पश्चिमी देशोके अितिहास पढनेसे शिक्षित लोगोमे समानता, स्वतन्त्रता तथा विश्वबन्धुत्व अित्यादिके अुच्च तत्वोके प्रति आदर अेव निष्ठा अुत्पन्न हो गअी थी। वहाँसे लोग काँग्रेसमे अधिकाधिक सख्यामे सम्मिलित हुअे। बगालमें सभाओ तथा पत्रोके सम्पादकीय लेखोमे सरकारी व्यवस्थाकी बडी कडी आलोचना होने लगी। अिधर बम्बअीके अधिवेशनमे अध्यक्ष सर हेनरी काटन और लोकमान्य तिलकने काँग्रेसको कुछ-न-कुछ सक्रिय कार्य करनेके लिअे चेतावनी दी। अिस सूचनाका बगालके प्रतिनिधियोने सहर्ष स्वागत किया। अैसा दिखाअी देने लगा कि बगाल प्रान्त भारतीय राजनैतिक आन्दोलनका अगुवा बनेगा। कर्जनने बग-भगकी कुल्हाडी बंगाल पर चलाअी और कहा कि शासनकी सुविधाकी दृष्टिसे बगाल प्रान्त दो हिस्सोंमे बाँटा जा रहा है। असम और चार पूर्वी जिले मिलाकर पूर्वी बंगाल बनाया गया और शेषका पश्चिमी बगाल। अुनका वास्तविक अुद्देश्य यह था कि पूर्व बगालमें मुसलमानोकी बहुसंख्या होनेसे वह प्रान्त राजनैतिक जागृतिमे पिछडा रहे और मुसलमान अँग्रेजोके प्रति राज्यनिष्ठ बने रहे। अिस प्रकार मुसलमानोके हाथोमे पूर्वी बंगाल जानेपर हिन्दू और मुसलमानोमे सदा सघर्ष चलता रहता और अुनकी राजनीतिक अेकता अशक्य हो जाती। कर्जनने देशमे हिन्दू-मुसलमानोमे फूट पैदा कर शासन चलाने अेव भारतीय राष्ट्रीय नवचेतनाको क्षति पहुँचानेके अुद्देश्यसे ही सन् १९०५ के जुलाअी मासमें वगभगकी विषैली योजना कार्यान्वित की। अुनके अिस कार्यने वंग-भूमिके हृदयपर तलवारके जख्मका काम किया। समस्त वग प्रदेश क्षुब्ध हो अुठा। जातीय अभिमान जागृत हुआ। जैसे साँप पुरानी केचुल फेंक देनेसे अतीव चचल और फुर्तीला हो जाता है, वैसे ही वंगभंगकी कुल्हाडीके आघातसे वगभूमिमे चेतना तथा देशभक्तिका स्रोत बहने लगा। सारा वग-प्रदेश विरोधमें अुठ खडा हुआ। बगालके प्रमुख पत्र 'अमृतबाजार पत्रिका' ने

अिस समाचारको मोटी काली रेखाओंके बीच मृत्यु समाचारके समान प्रकाशित किया। विद्यार्थी, शिक्षक, किसान, जमीदार, अशिक्षित तथा सुशिक्षित सभीने अिस जहरीली योजनाका तीव्र विरोध किया।

अेक राष्ट्रीयताकी भावनाका सूत्रपात

लोकमान्य तिलकने अपने समाचार-पत्र 'केसरी' द्वारा बग-भाअियोके प्रति सम्वेदना प्रकट की और अिस योजनाका सक्रिय विरोध करनेके लिअे अुन्हे प्रोत्साहित भी किया। अुन्होने लार्ड कर्जनकी कुटिल नीतिकी तीव्र निन्दा कर 'बगभग' का निर्णय कार्यान्वित न करनेकी चेतावनी सरकारको दी। महाराष्ट्रमे दौरा कर अिस सम्बन्धमे जनताको जागृत किया और बगीय भाअियोको आश्वासन दिया कि वे स्वय तथा महाराष्ट्रकी जनता अुनकी सहायक है। अवसर पाते ही जनतामें अँग्रेज सरकारके विरुद्ध असन्तोषका निर्माण करना लोकमान्य अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानते थे। परन्तु बेमौके वे कुछ भी नही करते थे। वे बगालके प्रति हमदर्दी, सहानुभूति तथा भ्रातृभाव निर्माण करनेके साथ अखिल भारतीय राष्ट्रीयताकी भावना भी प्रबल करते थे, क्योकि लार्ड कर्जन तथा अँग्रेज सरकार यह समझती थी कि भारतवर्षमे राष्ट्रीय अेकता न होनेके कारण बगालका प्रश्न अखिल भारतीय स्वरूप नही ग्रहण कर सकता। अिनकी दृष्टिमें भारतने अतीत कालमे कभी भी अेक राष्ट्र होनेका परिचय नही दिया। लोकमान्यकी प्रखर राष्ट्रीयता तथा दूरदर्शिताने अँग्रेज सरकारकी यह कूटनीति नष्ट-भ्रष्ट कर दी। लोकमान्यने अन्य प्रान्तोके नेताओका ध्यान बगालकी गभीर समस्याकी ओर आकर्षित किया। अुन्होने बडी बुद्धिमानी, तर्क तथा अैतिहासिक तथ्योके बलपर सिद्ध किया कि यह प्रहार भारतवर्षकी राष्ट्रीय भावना, अधिकार और आत्मापर है। लोकमान्यके निर्भीक प्रयत्नो तथा साहसपूर्ण प्रचारने भारतवर्षमे राष्ट्रीयताकी लहर दौड गअी। जिस प्रकार अिटलीमे जोसेफ मैजिनीने राष्ट्रीयताकी भावनाका निर्माण किया, जार्ज वाशिगटनने अुत्तरी अमेरिकामे राष्ट्रीय अैक्य पैदा किया, प्रिन्स

bungalow." भारतकी राष्ट्रीय जागृतिको बुरी तरहसे कुचलनेके लिअे अुन्होने वग-भगकी कूटनीतिक योजना तैयार की। वगाल प्रान्तमे राष्ट्रीय जागृति दिन-पर-दिन वढ रही थी। अँग्रेजी शिक्षाका पर्याप्त प्रचार होने और पश्चिमी देशोके अितिहास पढनेसे शिक्षित लोगोमे समानता, स्वतन्त्रता तथा विश्ववन्धुत्व अित्यादिके अुच्च तत्वोके प्रति आदर अेव निष्ठा अुत्पन्न हो गअी थी। वहाँसे लोग कॉंग्रेसमे अधिकाधिक सख्यामे सम्मिलित हुअे। बंगालमे सभाओ तथा पत्रोके सम्पादकीय लेखोमे सरकारी व्यवस्थाकी वडी कडी आलोचना होने लगी। अिधर वम्वअीके अधिवेशनमे अध्यक्ष सर हेनरी काटन और लोकमान्य तिलकने कॉग्रेसको कुछ-न-कुछ सक्रिय कार्य करनेके लिअे चेतावनी दी। अिस सूचनाका वगालके प्रतिनिधियोंने सहर्ष स्वागत किया। अैसा दिखाअी देने लगा कि वगाल प्रान्त भारतीय राजनैतिक आन्दोलनका अगुवा वनेगा। कर्जनने वग-भगकी कुल्हाडी वगाल पर चलाअी और कहा कि शासनकी सुविधाकी दृष्टिसे बंगाल प्रान्त दो हिस्सोमे बाँटा जा रहा है। असम और चार पूर्वी जिले मिलाकर पूर्वी बंगाल वनाया गया और शेषका पश्चिमी वगाल। अुनका वास्तविक अुद्देश्य यह था कि पूर्व वगालमें मुसलमानोकी वहुसंख्या होनेसे वह प्रान्त राजनैतिक जागृतिमे पिछडा रहे और मुसलमान अँग्रेजोके प्रति राज्यनिष्ठ वने रहे। अिस प्रकार मुसलमानोके हाथोमे पूर्वी बंगाल जानेपर हिन्दू और मुसलमानोमे सदा सघर्ष चलता रहता और अुनकी राजनीतिक अेकता अशक्य हो जाती। कर्जनने देशमे हिन्दू-मुसलमानोमें फूट पैदा कर शासन चलाने अेव भारतीय राष्ट्रीय नवचेतनाको क्षति पहुँचानेके अुद्देश्यसे ही सन् १९०५ के जुलाअी मासमे वगभगकी विषैली योजना कार्यान्वित की। अुनके अिस कार्यने वंग-भूमिके हृदयपर तलवारके जख्मका काम किया। समस्त वंग प्रदेश क्षुब्ध हो अुठा। जातीय अभिमान जागृत हुआ। जैसे साँप पुरानी केंचुल फेक देनेसे अतीव चचल और फुर्तीला हो जाता है, वैसे ही वंगभंगकी कुल्हाडीके आघातसे वगभूमिमें चेतना तथा देशभक्तिका स्रोत वहने लगा। सारा वंग-प्रदेश विरोवमे अुठ खडा हुआ। वगालके प्रमुख पत्र 'अमृतवाजार पत्रिका' ने

अिस समाचारको मोटी काली रेखाओंके बीच मृत्यु समाचारके समान प्रकाशित किया। विद्यार्थी, शिक्षक, किसान, जमीदार, अशिक्षित तथा सुशिक्षित सभीने अिस जहरीली योजनाका तीव्र विरोध किया।

अेक राष्ट्रीयताकी भावनाका सूत्रपात

लोकमान्य तिलकने अपने समाचार-पत्र 'केसरी' द्वारा बंग-भाअियोंके प्रति सम्वेदना प्रकट की और अिस योजनाका सक्रिय विरोध करनेके लिअे अुन्हे प्रोत्साहित भी किया। अुन्होने लार्ड कर्जनकी कुटिल नीतिकी तीव्र निन्दा कर 'बंगभंग' का निर्णय कार्यान्वित न करनेकी चेतावनी सरकारको दी। महाराष्ट्रमे दौरा कर अिस सम्बन्धमे जनताको जागृत किया और बंगीय भाअियोको आश्वासन दिया कि वे स्वयं तथा महाराष्ट्रकी जनता अुनकी सहायक हैं। अवसर पाते ही जनतामे अँग्रेज सरकारके विरुद्ध असन्तोषका निर्माण करना लोकमान्य अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानते थे। परन्तु बेमौके वे कुछ भी नही करते थे। वे बंगालके प्रति हमदर्दी, सहानुभूति तथा भ्रातृभाव निर्माण करनेके साथ अखिल भारतीय राष्ट्रीयताकी भावना भी प्रबल करते थे, क्योंकि लार्ड कर्जन तथा अँग्रेज सरकार यह समझती थी कि भारतवर्षमे राष्ट्रीय अेकता न होनेके कारण बंगालका प्रश्न अखिल भारतीय स्वरूप नही ग्रहण कर सकता। अिनकी दृष्टिमे भारतने अतीत कालमे कभी भी अेक राष्ट्र होनेका परिचय नही दिया। लोकमान्यकी प्रखर राष्ट्रीयता तथा दूरदर्शिताने अँग्रेज सरकारकी यह कूटनीति नष्ट-भ्रष्ट कर दी। लोकमान्यने अन्य प्रान्तोके नेताओका ध्यान बंगालकी गंभीर समस्याकी ओर आकर्षित किया। अुन्होने बडी बुद्धिमानी, तर्क तथा अैतिहासिक तथ्योंके बलपर सिद्ध किया कि यह प्रहार भारतवर्षकी राष्ट्रीय भावना, अधिकार और आत्मापर है। लोकमान्यके निर्भीक प्रयत्नो तथा साहसपूर्ण प्रचारसे भारतवर्षमे राष्ट्रीयताकी लहर दौड गअी। जिस प्रकार अिटलीमे जोसेफ मैजिनीने राष्ट्रीयताकी भावनाका निर्माण किया, जार्ज वाशिंगटनने अुत्तरी अमेरिकामे राष्ट्रीय अैक्य पैदा किया, प्रिन्स

विस्मार्कने जर्मनीमे अेक राष्ट्रीयताकी भावना जागृत की, वैसे ही लोकमान्य तिलकने भी भारत भरमे अिस समय यह कार्य कर दिखाया। अुन्होने समस्त भारतको अेक राष्ट्रदेवकी आरती अुतारनेके लिअे तैयार किया। अिससे बगाली भाअियोका अुत्साह दुगुना बढ़ गया। अुन्हे यह विश्वास हो गया कि लोकमान्य तिलकका महाराष्ट्र तथा समस्त भारत अुनका समर्थक है। आन्दोलनमे अुग्रता आअी। ७ अगस्तको बगालमे सरकार-विरोधी हड़ताल हुअी। शोकका दिन मनाया गया। कलकत्ताके टाअुन हालके मैदानपर अेक विराट् सभा हुअी जिसमे अेक लाख श्रोता अुपस्थित थे। काँग्रेसके भूतपूर्व सभापति सुरेन्द्रनाथ वेनर्जी, महाराजा भूपेन्द्र बोस, विपिनचन्द्र पाल अित्यादि प्रभावशाली नेताओके कड़े और गम्भीर भाषण हुअे तथा सरकारी कुटिल नीतिकी तीखी आलोचना की गअी। आन्दोलन प्रखर होनेपर अँग्रेजी (विलायती) मालका बहिष्कार करना निश्चित हुआ। जहाँ-तहाँ विलायती कपड़ोकी होलियाँ जलने लगी और विलायती कपडो तथा विलायती-मालकी दूकानोपर स्वयसेवको द्वारा पिकेटिंग (धरना) शुरू हुअी। स्वदेशी माल तथा स्वदेशी कपडेको प्रोत्साहन मिलने लगा अेवं स्वदेशीकी भावनाको शक्ति प्राप्त हुअी। लोकमान्य तिलक जैसा चाहते थे वैसा ही हुआ। वे स्वय, अिस प्रकारके बहिष्कारके समर्थक थे, क्योकि सन् १८८० मे सर्वप्रथम नवयुवक तिलक पर भी स्व सार्वजनिक काकाके स्वदेशी सम्बन्धी विचारोका प्रभाव पड़ा था, जिसे कार्य-रूपमे परिणित करनेका अुन्हे यह अच्छा अवसर मिला।

काशीकी कॉग्रेसमें

सन् १९०५ मे काशीमे कॉग्रेसका अधिवेशन श्री गोपालकृष्ण गोखलेकी अध्यक्षतामे हुआ। वास्तवमे आप पक्के नरमदलवादी थे, परन्तु आपने भी अिस समय सरकारकी भर्त्सना कर स्वदेशीका समर्थन किया। दर्शकोको अैसा आभास हुआ कि गोखले अुग्र तिलककी ओर झुक रहे है। अिस अधिवेशनमें लोकमान्यने बगालके प्रति सहानुभूतिका प्रस्ताव प्रस्तुत किया

और वह स्वीकृत हुआ। दूसरे प्रस्तावमे अुन्होने काँग्रेसकी ओरसे युवराजका स्वागत करनेका कडा विरोध किया। लाला लजपतरायने अुनका समर्थन किया। अिस प्रकार तिलक धीरे-धीरे काँग्रेसको अुग्र बनानेमे समर्थ हो रहे थे। मि व्हलटाअीन चिरोलने अपनी, 'Unrest in India' (अनरेस्ट अिन अिंडिया) नामक ग्रन्थमे तिलकको "The father of Indian unrest" 'भारतीय असन्तोषका जनक' कहा हे। अिस अधिवेशनके सम्बन्धमे अुस ग्रन्थमे लिखा गया हे कि —"In the two memorable sessions of Congress held at Benaras in 1905 and the other at Calcutta in 1906, when the agitation over the partition of Bengal was at its height Mr. Tilak's personality was the dominant not at the tribune but at the lobby. Even Mr. Gokhale played into his hands and from the presidential chair at Benaras commended the boycott as a political weapon used for definite political purpose."

अिससे लोकमान्य तिलकके दिन-पर-दिन बढनेवाले नेतृत्वका पता चलता है। महात्मा गाधीने बहिष्कारकी अिसी कल्पनाका सन् १९२० मे अुग्र विकास किया जिससे देशका बल बहुत अधिक बढा।

हिन्दी राष्ट्रभाषा और नागरी लिपिसे राष्ट्रीय अेकता

अिसी समय काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभाने अपने भवनमे अन्य नेताओके साथ लोकमान्य तिलकका स्वागत किया। नागरी-प्रचारिणी-सभाके कार्यकी प्रशसा करते हुअे लोकमान्य तिलकने कहा कि "यद्यपि मै भी अुन लोगोमे हूँ जो कहते है कि भारतकी भावी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होनी चाहिअे, परन्तु दुर्भाग्यवश हिन्दी न बोल सकनेके कारण मै अँग्रेजी ही मे अपने भाव प्रकट करता हूँ।" राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमे अपने, विचार व्यक्त करते हुअे आपने कहा कि सबसे पहली और सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात, हमे यह स्मरण रखना चाहिअे कि यह आन्दोलन केवल अुत्तरीय भारतमें

सर्वसामान्य लिपि कायम कर देने तक ही परिमित नही हे । यह अेक महान् आन्दोलन है । मै तो कहूँगा कि यह अेक राष्ट्रीय आन्दोलन है, जो सारे भारतवर्षमे अेक सर्वसामान्य भाषा स्थापित करना चाहता है । राष्ट्रीयताकी दृष्टिसे भारतमे सर्वसामान्य भाषाका होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है । सर्व-सामान्य भाषा के द्वारा ही हम अेक-दूसरेसे विचार-विनिमय कर सकते है । भगवान् मनुने ठीक कहा है कि वाक् अर्थात् भापा ही से हरअेक बात बोली या समझी जाती है । अतअेव अगर आप राष्ट्रको अेकताके सूत्रमे बाँधना चाहते हैं तो अिसके लिअे अेक राष्ट्रीय भाषाके अतिरिक्त कोअी दूसरा प्रबल माध्यम नही हो सकता ।

"यह अुद्देश्य किस प्रकार सिद्ध हो सकता है ? हमे याद रखना चाहिअे कि हमारा अुद्देश्य केवल अुत्तर भारत ही के लिअे सर्वसामान्य भापा स्थापित करना नही है । हम चाहते हैं कि सारे भारतमे (मद्रास तकके लिअे) अेक सर्वसामान्य भाषा कायम हो । अिसमे सन्देह नही कि जिस परिमाणमें हमारा अुद्देश्य विस्तृत होता जायगा, हमारी कठिनाअियाँ भी अुतनी ही बढ़ेगी । पहले हमे अुन कठिनाअियोका सामना करना होगा, जिन्हे हम अैतिहासिक कठिनाअियाँ कह सकते हैं । प्राचीन कालमे आर्योमे जो झगड़े हुअे और बादमे हिन्दू-मुसलमानमे जो लडाअियाँ हुअी, अुनसे हमारे देशकी भाषा सम्बन्धी अेकता टूट गअी । अुत्तरीय भारतमे जो भाषाअे बोली जाती हैं, वे सस्कृतसे निकली हैं । अिसके विपरीत जो भाषाअे ठेठ दक्षिणमे बोली जाती है, वे द्राविड़ी भाषाअे है । अिन भाषाओमे जो फर्क है, वह केवल शब्दो ही का नही, अुन अक्षरोका भी है, जिनसे शब्द बनते हैं । अिससे आगे बढकर आजकल हिन्दी और अुर्दूके भेदका भी प्रश्न खड़ा हो रहा है । अिस प्रश्नकी चर्चा ज्यादातर अिस प्रान्तमें है । हमारी ओर (महाराष्ट्र देशमे) मोडी नामकी अेक शीघ्र-लिपि है । यह देवनागरी और बालबोधसे, जिसमें मराठी किताबे साधारण तौरसे छापी जाती हैं, भिन्न हैं । पहले हमे अुन्ही भाषाओको हाथमे लेना चाहिअे जो आर्य भाषाअे हैं, अर्थात् जो सस्कृतसे निकली हैं । ये भाषाअे हिन्दी, बगाली,

मराठी, गुजराती और गुरुमुखी हैं। और भी कअी अुपभाषाअें हैं, पर मैंने खास-खास भाषाओंका नाम लिया है। ये सब भाषाअें संस्कृतसे निकली हैं और जिन लिपियोंमें लिखी जाती हैं, वे लिपियाँ भारतकी प्राचीन लिपियोंका परिवर्तित रूप हैं। समयके साथ-साथ अिन भाषाओंके व्याकरण, अुच्चारण और लिपिकी विशेषताअें बढ़ने लगीं, पर अिन सबकी वर्ण-मालाओंमें समानता बहुत कुछ पाअी जाती है।"

आपने नागरी-लिपिके सम्बन्धमें यह भी कहा कि 'नागरी-प्रचारिणी-सभा' सब आर्य भाषाओंके लिअे अेक सर्वसामान्य लिपि कायम करना चाहती है, जिससे कि अुस लिपिमें छपी हुअी पुस्तकें आर्य भाषा-भाषी आसानीसे पढ़ सकें। मेरा खयाल है कि अिस बातमें हम सबकी राय अेक होगी, हम सब लोग अिसकी अुपयोगिताको स्वीकार करेंगे। अतअेव हमें सब आर्य भाषाओंके लिअे नागरी लिपि स्वीकार करना चाहिअे।

"नागरी लिपि ही क्यों?" अिस सम्बन्धमें अपने विचार व्यक्त करते हुअे आपने कहा कि "मेरा खयाल है अिस प्रश्नको हम केवल अैतिहासिक दृष्टिसे ही हल नहीं कर सकते। अगर आप प्राचीन शिला-लेखोंको देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि अशोकके जमानेसे जुदा-जुदा समयमें कोअी दस तरहकी लिपियाँ प्रचलित थीं। ब्राह्मी अिन सबसे पुरानी समझी जाती है। बादमें धीरे-धीरे अक्षरोंमें परिवर्तन होता गया। हमारी वर्तमान सब मौजूदा लिपियाँ पुरानी लिपियोंका परिवर्तित रूप हैं। अिसलिअे मेरे ख्यालसे केवल प्राचीनताकी दृष्टिसे सर्व-सामान्य लिपिके सवालको हल करना ठीक न होगा।"

रोमन लिपिके सम्बन्धमें अपना मत व्यक्त करते हुअे आपने बताया कि "लिपि सम्बन्धी प्रश्नको टालनेके लिअे हमें अेक समय यह कहा गया था कि हम सब रोमन लिपिको स्वीकार करलें। अिसके समर्थनमें अेक युक्ति यह दी गअी थी कि अिससे केवल भारत ही में नहीं, अेशिया और यूरोपके बीच भी अेक सर्वसामान्य लिपि कायम हो जायगी। यह बात मुझे निरी भ्रमात्मक जान पड़ती है। रोमन लिपि बड़ी ही दोषपूर्ण है और

वह अुन स्वरोके लिअे अनुपयुक्त है, जिन्हे हम बोलते हैं। अँग्रेज वैयाकरणोने भी अिसकी सदोपता और अपूर्णताको स्वीकार किया है। कही-कही दूसरे किसी अक्षरके तीन-तीन या चार-चार अुच्चारण होते है और कही किसी अुच्चारण या स्वरके लिअे अिसके दो-तीन अक्षर लिखने पड़ते हैं। यदि हमे सर्वसामान्य लिपिकी जरूरत है तो हमे अुस लिपिको स्वीकार करना चाहिअे जो रोमन लिपिसे अधिक पूर्ण और सागोपाग हो। यूरोपके सस्कृत पण्डितोने प्रकट किया है कि देवनागरी वर्णमाला अुन सब अक्षरोसे पूर्ण है, जो आजकल यूरोपमे प्रचलित हैं। अतअेव अैसी हालतमे आर्य भाषाओके लिअे सर्वसामान्य लिपिकी खोजमें दूसरी जगह जाना आत्म-घातक है। अिसके आगे भी मै तो यह कहूँगा कि हमारे यहाँके अक्षरो और स्वरोके विभाजन (क्लासीफिकेशन) जिसपर कि हमारे प्राचीन विद्वानोने बहुत परिश्रम किया और जिन्हे हम पाणिनिके ग्रन्थोमे पूर्णता पर पहुँचा हुआ देखते है, अितने पूर्ण हैं कि ससारकी किसी भाषामे अितना पूर्ण और अुत्कृष्ट विभागीकरण नही मिलेगा। यह भी अेक कारण है कि हम जिन स्वरोको काममे लाते हैं, अुन्हे प्रकट करनेके लिअे देवनागरी लिपि ही सबसे ज्यादा अुपयुक्त है। यदि आप 'सैक्रेड बुक आफ दी ओीस्ट' (पूर्वके पवित्र ग्रन्थ) नामक ग्रथमालासे प्रकाशित प्रत्येक पुस्तकके अन्तिम भागपर दी हुअी भिन्न-भिन्न लिपियाँ देखेंगे तो आपको मेरी बातपर विश्वास हो जायगा। हमारे यहाँ अेक-अेक अक्षरका अेक-अेक स्वर अर्थात् अुच्चारण है और प्रत्येक स्वरके लिअे अेक-अेक अक्षर है। मै नही जानता कि अिस विषयमे कोअी मतभेद रहा होगा कि हमे कौन-सी वर्णमाला स्वीकार करनी चाहिअे। देवनागरी वर्णमाला ही में अिस बातकी पूरी योग्यता है। अब प्रश्न लिपिका या लेखनके अुस रूपका रहा जो कि भिन्न-भिन्न प्रान्तोमे वर्णमालाके अक्षर धारण करते हैं और मै आपसे पहले कह चुका हूँ कि यह प्रश्न केवल प्राचीनताकी बुनियादपर हल नही हो सकता।"

आपने यह भी कहा कि "लार्ड कर्जनके निर्दिष्ट समय (स्टैंडर्ड टाअिम) की भाँति हम निर्दिष्ट या प्रामाणिक लिपि चाहते हैं। अगर लार्ड कर्जन हमे प्रामाणिक समयके बजाय राष्ट्रीय ढगपर प्रामाणिक लिपि देते तो वे हमारे विशेष आदरके पात्र होते। पर अुन्होंने अैसा नही किया। हमे प्रान्तीयताको छोडकर विचार करना चाहिअे। बगाली लोग स्वभावतया ही बगाली भाषा पर अभिमान करते हैं। अिसके लिअे मैं अुन्हे दोष नही देता। कोअी गुजराती भाअी भी यह कह सकता है कि गुजराती लिपि लिखनेमे सुगम है, क्योकि अुसके अक्षरोपर शिरोरेखा नही रहती। महाराष्ट्रके लोग भी यह कह सकते है कि मराठी अैसी लिपि है, जिसमें सस्कृत लिखी जाती है, अिसलिअे वही भारतकी सर्वसामान्य लिपि होने योग्य है।"

अिस प्रश्नपर व्यवहारिकताकी दृष्टिसे विचार करनेका अनुरोध करते हुअे आपने कहा कि, "मैं अिन विचारोके तत्वको पसन्द करता हूँ, पर हमें अिस सवालको हल करना चाहिअे और अिसके व्यवहारिक रूपपर विचार करना चाहिअे। हम चाहे जो लिपि स्वीकार करे, पर वह अैसी होनी चाहिअे जो लिखनेमे सुलभ हो, आँखोको सुन्दर दिखे और जल्दीसे लिखी जा सके। जिन अक्षरोका आप प्रयोग करे, वे अैसे हो जो सब आर्य भाषाओके भिन्न-भिन्न स्वरोको व्यक्त कर सके तथा द्रविडियन भाषाके स्वर भी बिना किसी प्रकारके चिह्न लगाअे अुसमे लिखे जा सके। हरअेक स्वरके लिअे अेक-अेक अक्षर हो।"

नागरी-प्रचारिणीके प्रयत्नोकी जिक्र करते हुअे आपने कहा कि, "आपने अिस अुद्देश्यके लिअे कमेटी नियत की और सर्वसामान्य नागरी लिपिको खोज निकाला। पर मेरी समझमे अब हम लोगोको सरकारके पास जाना चाहिअे और अिस आवश्यकताकी ओर अुसका ध्यान खीचना चाहिअे। अुससे प्रार्थना करनी चाहिअे कि प्रत्येक प्रान्तकी देशी भाषाओकी पाठ्य-पुस्तकोमे अिस लिपिके कुछ पाठ जोड दिअे जाअें, जिससे भावी सन्तान अपने स्कूली-जीवनमे ही अिस लिपिसे परिचित हो जाअे।"

सेवकोके स्वाभाविक नेता बने। अुग्रदलवादी नअे कार्यकर्ताओमे काँग्रेस-कमेटियोपर अधिकार प्राप्त करनेकी स्पर्धा पैदा हुअी। अेक ओर पुराने कार्यकर्ता अपना अधिकार नही छोडना चाहते थे और दूसरी ओर जनताकी अिच्छानुसार वे आगे कदम बढानेको भी तैयार नही थे। कॉंग्रेस पर अपना अधिकार जमाये रखनेके लिअे वे हर प्रकारसे प्रयत्न करने लगे। लोकमान्यके नेतृत्वमें अुग्रदल और फिरोज शाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी अेव गोपालकृष्ण गोखले अित्यादिके पुराने नरमदलके बीच काँग्रेसकी सत्ताके लिअे सघर्ष अनिवार्य हो गया, क्योकि लोकमान्य तिलक कॉंग्रेस जैसी अखिल भारतीय राजनीतिक संस्थाको ही साधन बनाकर अँग्रेज सरकारसे लोहा लेना चाहते थे। वे पक्के लोकतन्त्रवादी थे। अुन्हे यह विश्वास था कि समयानुकूल आगे बढ़ने पर ही वे जनताके सच्चे प्रतिनिधि हो सकेगे और जनता स्वयं अुन्हे अपना नेता बनाअेगी। अिस विश्वासके आधारपर ही वे काग्रेसमे प्रविष्ट हुअे और प्रतिवर्ष अुनका प्रभाव बढ़ता ही गया। अब वे अितने आगे बढ़ चुके थे कि बगालके लब्धप्रतिष्ठ नेता और प्रख्यात वक्ता विपिनचन्द्र पालने अुनका नाम कलकत्तामें होनेवाले काग्रेस-अधिवेशनके अध्यक्षपदके लिअे प्रस्तावित किया। प्रत्येक प्रान्तसे अिस प्रस्तावको समर्थन प्राप्त हुआ। नअी परिस्थितिमे नअे साहस और नअी दृष्टिके सभापतिकी आवश्यकता थी। काग्रेस-अध्यक्षपदके लिअे लोकमान्य तिलकका नाम सुनते ही अुग्रदलके सहस्रो कार्यकर्ता आनन्दसे विभोर हो अुठे। नरमदलवादी नेताओका धैर्य भग हुआ। अुनका अुत्साह जाता रहा और अुनके चेहरे फीके पड़ गअे। अुन्होने लोकमान्य तिलकके विरुद्ध वातावरण फैलाना आरम्भ किया। लोकमान्य तिलक सदा निजी स्वार्थ और आत्मप्रतिष्ठासे परे रहते थे। वे तत्त्वके पुजारी थे न कि आत्मप्रतिष्ठाके। यदि वे चाहते तो तीव्र संघर्ष कर काग्रेसके सभापति बन जाते, किन्तु अैसा करनेसे काग्रेस दुर्बल होकर समाप्त हो जाती। अुन्हे यह स्वीकार नही था। वे तो काग्रेसको अधिकाधिक प्रबल और प्रभावशाली बनाकर अुसके द्वारा स्वतन्त्रताके लिअे अंग्रेज सरकारका मुकाबला करना चाहते थे।

लोकमान्यकी सफल युक्ति

अपने साथियोके वार-वार अनुरोध करनेपर भी अुन्होने अपना नाम सभापति-पदके लिअे प्रस्तुत नही होने दिया, किन्तु अुन्होने मध्यवर्ती राह सोची। अुन्होने दलवन्दीसे पृथक् रहनेवाले प्रतिनिधियो द्वारा कलकत्ता-कांग्रेसके सभापति-पदके लिअे लण्डनस्थित राष्ट्र-प्रपितामह दादा भाअी नौरोजीका नाम प्रस्तावित करवाया। दादा भाअी कांग्रेसके सस्थापकोमे प्रमुख थे तथा अिसके पूर्व दो वार सभापति रह चुके थे। अिसके अलावा ८५ वर्षोकी वृद्धावस्थामे भी वे विलायतमे कांग्रेसकी ओरसे भारतको अधिकाधिक राजनीतिक अधिकार प्राप्त करानेके लिअे प्रयत्नशील रहते थे। अिधर व्रिटिश सोशलिस्ट पार्टीके नेता हाअिड मनसे अुनकी मैत्री थी और अिस पार्टी द्वारा सचालित सभाओमे अुन्होने प्रगतिवादी तथा अुग्र विचार भी प्रकट किअे थे। लोकमान्य तिलकने अुनके विचारोमें होनेवाले परिवर्तनोका निरीक्षण वहुत वारीकी और मार्मिकतासे किया था। दादा भाअी नौरोजीका नाम सूचित होते ही लोकमान्यके विरोधी नेताओने अुसका सहर्ष समर्थन किया। वे मानते थे कि अतिवृद्ध तथा क्षीणकाय दादा भाअी नवयुवकोके नव स्थापित अुग्रदलकी नीतिका स्वप्नमे भी समर्थन नही कर सकते। अिसके अतिरिक्त दादा भाअीने व्रिटिश पार्लमेण्टका सदस्य वनकर अभी तक वैधानिक तरीकेसे ही भारतकी सेवा की थी। अुनसे अवैधानिक अुग्र मार्गके समर्थनकी किसी प्रकार आशा नही की जा सकती थी। यदि वे चाहते तो भी अुनका कृश शरीर अुन्हे अैसा नही करने देता।

दोनो दलके नेता सदलवल कलकत्ता पहुँचे। कलकत्ताका यह अधिवेशन क्रान्तिकारी तथा युग-प्रवर्तक होने जा रहा था, क्योकि वग-भगके पश्चात् कांग्रेसमें दो विरोधी दल स्थापित हो चुके थे और दोनो अपनी-अपनी शक्ति वढानेमे सलग्न थे। अेक दल याचनावादी था और दूसरा अधिकारवादी। पहला नरमदल था तो दूसरा नया अुग्रदल। दोनो कॉंग्रेसपर अधिकार जमाना चाहते थे। मनोनीत सभापति दादा भाअीका अभूत-पूर्व स्वागत किया गया, क्योकि अुनसे दोनो दल अपने विचारोके समर्थनकी

अपेक्षा रखते थे। काँग्रेस-मण्डपमे जिधर देखिअे अुधर स्वदेशी, वहिष्कार, स्वराज्य और राष्ट्रीय शिक्षा अित्यादिके सम्बन्धमे आदर्श वाक्य आकर्षक ढगसे सुनहरे अक्षरोमे लिखे दिखाअी देते थे। कॉग्रेसका मण्डप नअे तेज और नअे अुत्साहसे भरपूर था। दादा भाअी नौरोजीने अपना अन्तिम तथा क्रान्तिकारी भाषण पढा। अिस भाषणका स्वरूप पुराने सभापतियोके भाषणोसे सर्वथा भिन्न था। पुराने सभापति आलकारिक भाषामे, वडे दरवारी ढगसे अँग्रेज सरकारसे भारतवर्षको अधिकाधिक राजनीतिक अधिकार प्रदान करनेकी विनम्र प्रार्थना करते थे। अुनके भाषणोमे नवनीत जैसी मृदुता रहती थी। अँग्रेजोकी कृपासे वे आगे वढ़ना चाहते थे। अिस परम्पराको त्यागकर वृद्ध दादा भाअीने अति सरल, स्पष्ट तथा निर्भीक भाषामे कॉग्रेसके सम्मुख स्वराज्यका ध्येय अुपस्थित किया। अिस ध्येयकी प्राप्तिके लिअे स्वदेशी वहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा अित्यादि साधनत्रयीका आपने प्रभावशाली अुपदेश दिया। आपने व्यथित हृदयसे कहा कि स्वराज्यकी प्राप्ति स्व-शक्तिसे होती है न कि याचनावृत्तिसे। अपना अनुभव वतलाकर आपने यह भी कहा कि नवयुवको द्वारा नया ठोस कार्य किअे विना केवल वैधानिक तरीकेसे स्वराज्यकी प्राप्ति असम्भव है। तपे हुअे दादाजीके भाषणोसे अुग्रदलको प्रोत्साहन प्राप्त हुआ तो पुराने नरमदलवादी निराश हुअे।

लोकमान्य तिलककी विजय

विषय-निर्वाचिनी-समितिमें अुग्रदलकी ओरसे स्वदेशी तथा वहिष्कारका समर्थन करनेवाला प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। वगालके अुग्रदलीय नेता वावू विपिनचन्द्रपालने प्रभावशाली समर्थन किया और अुद्देश्योका विस्तृत रूपसे स्पष्टीकरण भी किया। वम्वअीके सिंह फिरोज शाह मेहताने प्रस्तावका कडा विरोध किया। कअी वक्ताओके भाषण हुअे, परन्तु लोकमान्य तिलकका भाषण अति गभीर और तत्व-प्रतिपादक रहा। अुसमें अुनकी वुद्धिकी चमक-दमक भरी हुअी थी। अुन्होने कवि कुलशेखर कालिदासकी यह सूक्ति वहाँ सुनाअी :—

'वागर्थाविव संपृक्तो वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगत पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।'

अर्थात्–"जैसे वाणीसे अर्थ अलग नही किया जा सकता, वैसे स्वदेशीसे वहिष्कारको अलग नही किया जा सकता । जैसे नटेश्वरके शरीरमें पुरुष तथा स्त्रीके अग अभिन्न होकर रहते हैं, वैसे ही स्वदेशी और वहिष्कार भी अभिन्न है।" अुन्होंने अिटली, अमेरिका और आयर्लैण्डके अितिहासके अुदाहरण देकर यह प्रमाणित किया कि विदेशी वस्तुओके वहिष्कारका मार्ग अपनाये विना स्वदेशीका प्रचार नही हो सकता । अुन्होने नरमदलके सव आक्षेपोका मुँहतोड़ अुत्तर दिया और स्वदेशीका व्रत चलानेमे स्वार्थत्यागकी हँसी अुडानेवाले फिरोज शाह मेहताको चुनौती दी कि क्या किसी देशमें स्वार्थत्याग विना स्वदेशी तथा वहिष्कारका आन्दोलन सफल हुआ है ? अुन्होने डकेकी चोट यह भी कहा अव स्वार्थत्यागसे परहेज करनेवालोके दिन लद चुके हैं । देश और जनता जागृत हो चुकी है और वह स्वराज्यके मार्गपर आगे वढना चाहती है । अत याचनावादी क्षीणबल भाअी अुसे आगे वढनेसे न रोके । लोकमान्य तिलकके भाषणका अपेक्षित प्रभाव पड़ा और अुनका प्रस्ताव भारी वहुमतसे पारित हुआ । नरमदलपर लोकमान्य तिलककी यह पहली विजय थी । अिससे अधिक तीव्र वाद-विवाद वहिष्कारके दूसरे प्रस्तावपर हुआ । अुसमे कहा गया कि भारतकी प्रचलित राज्यशासन-व्यवस्थामे जनताकी ओरसे भेजी हुअी अर्जियोपर सरकार सहानुभूतिके साथ विचार या निर्णय नही करती, अिसलिअे वंगालमे प्रारम्भ किअे गअे वहिष्कार आन्दोलनको कॉंग्रेस मान्यता देती है और अुसे वैधानिक भी मानती है । प्रस्ताव कॉंग्रेसकी नीतिमे क्रान्तिकारी परिवर्तन करानेवाला था, अिसलिअे नरम-दलकी ओरसे अुसका विरोध श्री गोपाल कृष्ण गोखले और महामना पडित मदनमोहन मालवीयने कलामयी वाणी द्वारा किया । दोनो ओरसे कअी वक्ताओके लम्वे-चौडे भाषण हुअे । परन्तु अिस प्रस्तावपर वोलते हुअे अुग्रदलके नेता लोकमान्य तिलकने वडी वैधानिक सूझ तथा पैनी दृष्टिका

परिचय दिया और प्रस्ताव बहुमतसे स्वीकृत हो गया। अपने भाषणके अन्तिम अशमे लोकमान्य तिलकने यह वैधानिक चेतावनी दी कि जब कोअी प्रस्ताव बहुमतसे स्वीकृत होजाता है तब अुसका यह अर्थ नही होता कि केवल अुसके समर्थकोपर ही अुसका बन्धन रहे और विरोधी अुसे कार्यान्वित न करे, अथवा अुसकी अुपेक्षा करे। अुन्होने कहा कि वाद-विवादके पश्चात् बहुमतसे स्वीकृत प्रस्ताव सस्थाका नियम बन जाता है। अतअेव अुसका पालन करना सस्थाके सभी सदस्योके लिअे आवश्यक है। यदि कोअी सदस्य अैसा नही करता तो वह संस्थाका अनुशासन भग करता है। यदि कॉंग्रेसको बलशाली सस्था बनाकर अुसे स्वराज्य-प्राप्तिकी ओर बढाना है तो कॉंग्रेसका अनुशासन अक्षुण्ण रखना आपका परम कर्तव्य है। अनुशासनहीन संस्था कभी कामयाब नही हो सकती। लोकमान्य तिलकके अिस भाषणने कॉंग्रेसमे नव-चेतना पैदा की, अुसका कायापलट किया और ब्रिटिश साम्राज्य-वादका मुकाबला करनेके लिअे वह अनुशासनशील सस्था बनकर खड़ी हो गअी। अिस प्रकार कलकत्ता कॉंग्रेसमे अुग्रदलकी सर्वतोमुखी विजय हुअी। बहुमतने लोकमान्य तिलकका नेतृत्व मान लिया।

नअे अुग्रदलकी नीति तथा सिद्धान्त

कॉंग्रेस-अधिवेशन समाप्त होनेके पश्चात् कलकत्ताके मैदानमे बाबू विपिनचन्द्र पालकी अध्यक्षतामे लोकमान्य तिलकका भाषण नअे अुग्रदलके सिद्धान्तोके सम्बन्धमे हुआ। अिस भाषणमे अुन्होने जनताके सम्मुख अपने हृदयका निचोड जोरदार शब्दोमें प्रस्तुत किया। आपने अितिहासके आधार-पर प्रमाणित किया कि आजका अुग्रदलवादी भविष्यका नरमदलवादी है। आपने बताया कि समय परिवर्तनशील है, अतअेव राजनीतिज्ञोको अपनी नीतिमे समयके अनुकूल प्रगति अेव परिवर्तन करना चाहिअे। जो समयका रुख नही पहचानता वह राजनीतिज्ञ नही। दादाभाअी नौरोजी, अुमेशचन्द्र बैनर्जी, डिग्बी, हेनरी काटन अित्यादि हमारे पुरखो अेव कॉंग्रेसके सस्थापकोने वैधानिक तरीकोंसे अिस देशकी काफी सेवा की है, किन्तु समय अुनको

पीछे छोड गया और अब अुनके तरीके बेतुके तथा निकम्मे हो गअे हैं। हम अुनके प्रति कृतज्ञ हैं, क्योंकि अपने समयके अनुकूल अुन्होंने देशकी सेवा की है। अुनके अनुभवके बलपर हमें आगे बढ़ना है। आत्मनिर्भरताकी साधनत्रयी--स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षाके आधारपर हम स्वराज्यका ध्येय प्राप्त करना चाहते हैं। स्वार्थ-त्याग हमारा प्रभावशाली हथियार है और जनताका बल हमारा बल है। मदोन्मत्त अँग्रेज सरकार जनताके बलके बिना हमारी राजनैतिक माँगे कदापि स्वीकार नही करेगी। हमारे पास वैज्ञानिक शस्त्रास्त्र नही। हमारी रायमें अुनकी आवश्यकता भी नही, क्योंकि हमारे पास अुनसे भी अधिक प्रभावशाली शस्त्र है, जिसका नाम है बहिष्कार। यही हमारा अन्तिम राजनीतिक शस्त्र है। हम यह भली-भाँति जानते हैं कि हमारे सहयोगसे ही मुठ्ठीभर अँग्रेज यहाँ राज्य कर रहे हैं। अिस राज्यकी बागडोर अनेक भारतीय अफसरोंपर निर्भर है। यदि भारतीय जनता अँग्रेज सरकारसे असहयोग कर दे तो अँग्रेजोको राज्य चलाना मुश्किल हो जाय। मुझे पूरा विश्वास है कि हम भारतीय शासनके लिअे योग्य हैं। शासनके सब अधिकार हमे तुरन्त मिलने चाहिअे। मैं अपने घरकी तालीपर अधिकार जमाना चाहता हूँ, फिर भले ही अिने-गिने अँग्रेज मित्रके नाते यहाँ रहे। स्वराज्य हमारा साध्य है। अिसकी प्राप्तिके लिअे सशस्त्र प्रतिकारकी आवश्यकता नही। स्वार्थत्याग और आत्म-सयम हमारे नैतिक हथियार हैं। अुन्हे ही मैं बहिष्कार-योग कहता हूँ। अिस बहिष्कार-योगका दूसरा तथा महत्वका व्यावहारिक अग है लगान वसूल करने तथा राज्यशासन चलानेमे परदेशी सरकारसे सहयोग न करना। हम न्याय-विभागसे सम्बन्ध-विच्छेद करे अेव अपनी अदालते स्थापित करे। हम भारतीय सेनासे हटे और अँग्रेजोकी सत्ता तथा साम्राज्य दृढ करनेके लिअे लडना छोड दे। समय आनेपर हम लगान न देनेका आन्दोलन भी छेडेंगे। सक्षेपमे हम आत्मनिर्भर होकर सरकारसे मुकाबला करेंगे। सरकार जो राजनीतिक अधिकार या सुधार हमे प्रदान करेगी, अुनको स्वीकार कर हम स्वराज्यके लिअे दुगने अुत्साहसे लडते रहेंगे।

लोकमान्य तिलकका अुक्त भाषण अुनकी अुग्र राजनीतिका तत्व है। नरमदलकी नीतिसे अुनकी नीति मूलत: किस रूपमे भिन्न थी, अिसका अिससे तुरन्त पता चलता है। यदि अुनका वस चलता तो कॉग्रेस द्वारा सन् १९२१ में राष्ट्रपिता महात्मा गॉधीने जो असहयोग आन्दोलन चलाया, अुसका प्रारूप सन् १९०७ मे ही दिखाअी पड जाता।

दसवाँ प्रकरण

मित्रताका आदर्श

ते वन्द्यास्ते कृतिन श्लाघ्या तेषाहि जन्मनोत्पत्ति ।
येरुज्झितात्मकार्यैं सुहृदामर्था हि साध्यन्ते ॥

लोकमान्य तिलकका सार्वजनिक जीवन जितना अुदात्त, निस्वार्थ, विशाल और आदरणीय था अुतना ही अुनका व्यवहार तथा व्यक्तिगत आचरण भी स्निग्ध अेव मृदु था । कविकुल गुरु कालिदासने सज्जनोका हृदय-वर्णन करते समय लिखा है, "वज्रादपि कठोराणि मृदूनिकुसुमादपि" अर्थात् "सज्जनोका हृदय वज्रसे भी अधिक कठोर होता है, साथ ही फूलसे अधिक मृदु भी ।" लोकमान्य तिलकका जीवन अिसका प्रत्यक्ष अुदाहरण है । श्री वासुदेव सदाशिव वापट कालेजमे आपके सहपाठी मित्र थे । वे वडे बुद्धिमान, दक्ष और कार्यकुशल व्यक्ति थे । दरिद्रताके कारण वी.अे. तक नही पढ सके । वीचमे ही अुन्हे वडौदा रियासतमे ७५) मासिक की नौकरी मिल गअी । वुद्धिमान और कार्यकुशल तो थे ही । अँग्रेज अधिकारी अुनपर प्रसन्न हुअे जिससे अुनकी यथेष्ट अुन्नति हो सकी । दस वर्षोमे ही वे सर्वे सेटलमेन्ट-विभागके प्रमुख अधिकारी वन गअे और साढे सात सौ रुपया मासिक वेतन पाने लगे । अिस अवधिमे अुनका और तिलकका प्रेम-सम्वन्ध पूर्ववत् वना रहा । दोनो अेक-दूसरेके अुत्कर्षमे दिलचस्पी लेते और आनन्दित होते, परन्तु दोनोका आपसमे पत्र-व्यवहार वहुत नही होता था । दोनोके दिल साफ थे और मित्रता निर्हेतुक थी । दोनोके मार्ग परस्पर विरोधी थे । अिधर श्री वापट रियासतमे वडे अधिकारी वने तो तिलक वडे राजद्रोही नेता । सन् १८९४ में श्री वापट पर अेकाअेक आपत्तिके वादल मँडराने लगे । वडौदाके दीवान अुनका अुत्कर्ष न देख सके । अत महाराजा गायकवाडकी अनु-

लोकमान्य तिलकका अुक्त भाषण अुनकी अुग्र राजनीतिका तत्व है। नरमदलकी नीतिसे अुनकी नीति मूलत: किस रूपमे भिन्न थी, अिसका अिससे तुरन्त पता चलता है। यदि अुनका वस चलता तो कॉंग्रेस द्वारा सन् १९२१ में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीने जो असहयोग आन्दोलन चलाया, अुसका प्रारूप सन् १९०७ मे ही दिखाअी पड जाता।

दसवाँ प्रकरण

मित्रताका आदर्श

ते वन्द्यास्ते कृतिनः श्लाघ्या तेषांहि जन्मनोऽर्थवन्ति ।
येरुज्झितात्मकार्यैः सुहृदामर्था हि साध्यन्ते ॥

लोकमान्य तिलकका सार्वजनिक जीवन जितना महान, निःस्वार्थ, विशाल और आदरणीय था अुतना ही अुनका व्यवहार तथा व्यक्तिगत आचरण भी स्निग्ध अेव मृदु था। कविकुल गुरु कालिदासने सज्जनोंका हृदय-वर्णन करते समय लिखा है "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" अर्थात् "सज्जनोका हृदय वज्रसे भी अधिक कठोर होता है, साथ ही फूलसे अधिक मृदु भी।" लोकमान्य तिलकका जीवन जिसका प्रत्यक्ष अुदाहरण है। श्री वासुदेव सदाशिव बापट कालेजमें आपके सहपाठी मित्र थे। वे बडे बुद्धिमान, दक्ष और कार्यकुशल व्यक्ति थे। दरिद्रताके कारण बी.अे. तक नही पढ सके। बीचमें ही अुन्हें बडौदा रियासतमें ८५) मासिक की नौकरी मिल गयी। बुद्धिमान और कार्यकुशल तो थे ही। अंग्रेज अधिकारी अुनपर प्रसन्न हुअे जिससे अुनकी यथेष्ट अुन्नति हो गयी। दस वर्षोंमें ही वे सर्वे सेटलमेन्ट-विभागके प्रमुख अधिकारी बन गये और साढे सात सौ रुपया मासिक वेतन पाने लगे। अिन अवधिमें अुनका और तिलकका प्रेम-सम्बन्ध पूर्ववत् बना रहा। दोनो अेक-दूसरेके अुत्कर्षमें दिलचस्पी लेते और आनन्दित होते, परन्तु दोनोका आपसमें पत्र-व्यवहार बहुत नहीं होता था। दोनोंके दिल साफ थे और मित्रता निर्हेतुक थी। दोनोंके मार्ग परस्पर विरोधी थे। अिधर श्री बापट रियासतमें बडे अधिकारी बने तो तिलक बडे राजद्रोही नेता। सन् १८९५ में श्री बापट पर अेकाअेक आपत्तिके बादल मंडराने लगे। बडौदाके दीवान अुनका अुत्कर्ष न देख सके। अतः महाराजा

परिस्थितिमे अुन्होने वहाँके पोलिटिकल-अेजेन्टसे सम्बन्ध स्थापितकर श्री बापटके विरुद्ध अेक भयकर षड्यन्त्र रचा। श्री बापट अपने कार्यमे सलग्न रहते थे अिसलिअे अुन्हे अिस विरोधी वातावरणका काफी समय तक पता भी नही चला। अेक दिन अेकाअेक पोलिटिकल-अेजेन्टने अुन्हे बुलवाया और अुनके सम्मुख अुनके विरुद्ध दायर की गअी सैकडो अर्जियोके बण्डल रख दिअे। श्री बापट सन्न रह गअे। अुनकी आँखोके सामने अँधेरा छा गया। अुनसे कुछ अुत्तर देते न बना। अुत्तर देनेसे लाभ भी क्या होता? पोलिटिकल अेजेन्टने अुनसे कहा कि आपके विरुद्ध जो आक्षेप है अुनकी जाँचके लिअे अेक कमीशन नियुक्त करता हूँ। वही कमीशन अुचित कार्यवाही करेगा। आप अपनी सफाअी और बचावका यथाशक्ति प्रयत्न कीजिअे। अेजेन्टकी वाणी मीठी छुरी थी। श्री बापटके सामने भविष्यका भयकर परिणाम अुपस्थित हो गया और अुन्होने अपने सहपाठी मित्र तिलकको पत्र लिखकर सहायताकी माँग की। तिलक कुशल वकील तो थे ही। अुन्होने तत्काल जोशी नामके अेक परिचित अेव प्रतिष्ठित व्यक्तिको बडौदा भेजा और बापटको किस ढगसे पूना लाया जाअे यह युक्ति भी बता दी। तिलककी तरकीब कामयाब हुअी और बड़ौदाके गुप्तचरोके रहते हुअे भी बापट पूना पहुँच गअे। तिलकने अुन्हे अेक मास तक अज्ञात स्थलमे सुरक्षित रखा और अुनसे सब जानकारी प्राप्त करली। बड़ौदा-रियासतके पुलिस-अधिकारी बापटकी खोज पूनामे करते रहे, परन्तु अुनका प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुआ। डेढ मासके पश्चात् तिलकने बड़ौदा स्टेटके पोलिटिकल अेजेन्टको पत्र लिखा कि बापट मेरे यहाँ है और अपने कानूनी बचावके लिअे बडौदामे अुपस्थित होना चाहते है, बशर्ते कि अुन्हे गिरफ्तार न कर कानूनी सहूलियते दी जाअे। पोलिटिकल अेजेन्टने तिलककी शर्त मान ली। तिलक स्वय अपने मित्रको साथ लेकर बडौदा पहुँचे और वहाँ अेक धर्मशालामे पाँच महीने तक ठहरे। अुनकी सलाहसे बम्बअीसे अेक सुविख्यात बैरिस्टर बुलवाया गया। तिलक दिन-रात जगकर केस तैयार करते और पैरवी करनेमे बैरिस्टरकी मदद करते। तिलकके कानूनी ज्ञान और अुनकी बुद्धिमत्ता देखकर वे आश्चर्यसे मुग्ध हो

जाते थे। असलमे केस लडते थे तिलक, परन्तु अुन्होने कमिश्नर पर प्रभाव डालनेके लिअे अेक वैरिस्टरको हजार रुपया देकर पैरवीके लिअे खडा किया था। अन्तमें सत्यकी विजय हुअी और वापट निर्दोप सिद्ध हुअे। अिस प्रकार तिलकने पाँच महीने तक खून-पसीना अेक कर मित्रकी सहायता की और अुन्हे आपत्तिसे वचाया।

अिसी प्रकार जव सन् १८९७ के अगस्त मासमे अुन पर चलाअे गअे राजद्रोहके पहले अभियोगकी सुनवाअी वम्वअीमे प्रारम्भ हुअी तव अुन्हे जमानत पर मुक्त किया गया। वे किसी आवश्यक कामके लिअे पूना गअे थे। वहाँ अुन्हे समाचार मिला कि अुनके मित्र श्री वावा साहव कालराके शिकार हुअे हैं और मरणासन्न अवस्थामें हैं। मित्रके अन्तिम दर्शनके लिअे तिलक वहाँ दौडे। भेंट होते ही वावा साहवने अुन्हे मृत्यु-पत्र लिखनेको कहा। तिलकने लिखा और वावा साहवके निकट सम्वन्धियोके तीन नाम सरक्षको (ट्रस्टी) मे लिखे, परन्तु ट्रस्टियोमे जो पहला नाम लिखा गया था अुसे हटाकर वावा साहवने अुसके स्थानपर तिलकको अपना नाम लिखनेके लिअे कहा। तिलक ट्रस्टीकी कानूनी जिम्मेदारीसे पूर्णतया परिचित थे। अुन्होने वहुत कार्यव्यस्त होनेके कारण अिससे अपनी अनिच्छा प्रकट की, परन्तु जव मरणासन्न वावा साहवने व्याकुल हृदय अेव अश्रुपूरित नेत्रोसे तिलककी ओर देखा और अत्यन्त विकल वाणीमें अपनी अन्तिम अिच्छा दुहराअी तो तिलकके सामने ट्रस्टी-पद स्वीकार करनेके अतिरिक्त और कोअी अुपाय न था। निस्पृह मित्र तिलक अपने मित्रकी अन्तिम अिच्छाको कैसे ठुकरा सकते थे? वे ट्रस्टी वन गअे। राजद्रोहके अभियोगकी तलवार अुनपर पहलेसे ही लटक रही थी। फिर अुनपर यह नअी नाजुक जिम्मेदारी आ पडी। तिलकपर राजद्रोहका अभियोग चला और अुन्हे डेढ सालकी सश्रम सजा हुअी। जेलसे छूटते ही अुन्होने मृत वावा साहवकी युवती विधवा ताअी महाराजको औरगावादके जगन्नाथ नामक अेक होनहार लडकेको गोद लेनेकी सुविधा दी। तिलकके विरोधियोने जिनमे कअी राजनीतिक क्षेत्रके विरोधी भी थे, ताअी महाराजको भडका दिया और तिलकपर यह आरोप लगवाया कि अुन्होने

परिस्थितिमे अुन्होने वहाँके पोलिटिकल-अेजेन्टसे सम्बन्ध स्थापितकर श्री बापटके विरुद्ध अेक भयकर षड्यन्त्र रचा। श्री बापट अपने कार्यमे सलग्न रहते थे अिसलिअे अुन्हे अिस विरोधी वातावरणका काफी समय तक पता भी नही चला। अेक दिन अेकाअेक पोलिटिकल-अेजेन्टने अुन्हे बुलवाया और अुनके सम्मुख अुनके विरुद्ध दायर की गअी सैकडो अर्जियोके बण्डल रख दिअे। श्री बापट सन्न रह गअे। अुनकी आँखोके सामने अँधेरा छा गया। अुनसे कुछ अुत्तर देते न बना। अुत्तर देनेसे लाभ भी क्या होता? पोलिटिकल अेजेन्टने अुनसे कहा कि आपके विरुद्ध जो आक्षेप है अुनकी जाँचके लिअे अेक कमीशन नियुक्त करता हूँ। वही कमीशन अुचित कार्यवाही करेगा। आप अपनी सफाअी और बचावका यथाशक्ति प्रयत्न कीजिअे। अेजेन्टकी वाणी मीठी छुरी थी। श्री बापटके सामने भविष्यका भयकर परिणाम अुपस्थित हो गया और अुन्होने अपने सहपाठी मित्र तिलकको पत्र लिखकर सहायताकी माँग की। तिलक कुशल वकील तो थे ही। अुन्होने तत्काल जोशी नामके अेक परिचित अेवं प्रतिष्ठित व्यक्तिको बडौदा भेजा और बापटको किस ढगसे पूना लाया जाअे यह युक्ति भी बता दी। तिलककी तरकीब कामयाब हुअी और बड़ौदाके गुप्तचरोके रहते हुअे भी बापट पूना पहुँच गअे। तिलकने अुन्हे अेक मास तक अज्ञात स्थलमे सुरक्षित रखा और अुनसे सब जानकारी प्राप्त करली। बड़ौदा-रियासतके पुलिस-अधिकारी बापटकी खोज पूनामे करते रहे, परन्तु अुनका प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुआ। डेढ़ मासके पश्चात् तिलकने बडौदा स्टेटके पोलिटिकल अेजेन्टको पत्र लिखा कि बापट मेरे यहाँ है और अपने कानूनी बचावके लिअे बडौदामे अुपस्थित होना चाहते है, बशर्ते कि अुन्हे गिरफ्तार न कर कानूनी सहूलियते दी जाअें। पोलिटिकल अेजेन्टने तिलककी शर्त मान ली। तिलक स्वय अपने मित्रको साथ लेकर बडौदा पहुँचे और वहाँ अेक धर्मशालामे पाँच महीने तक ठहरे। अुनकी सलाहसे बम्बअीसे अेक सुविख्यात बैरिस्टर बुलवाया गया। तिलक दिन-रात जगकर केस तैयार करते और पैरवी करनेमें बैरिस्टरकी मदद करते। तिलकके कानूनी ज्ञान और अुनकी बुद्धिमत्ता देखकर वे आश्चर्यसे मुग्ध हो

जाते थे । असलमे केस लडते थे तिलक, परन्तु अुन्होने कमिश्नर पर प्रभाव डालनेके लिअे अेक बैरिस्टरको हजार रुपया देकर पैरवीके लिअे खडा किया था । अन्तमे सत्यकी विजय हुअी और बापट निर्दोप सिद्ध हुअे । अिस प्रकार तिलकने पाँच महीने तक खून-पसीना अेक कर मित्रकी सहायता की और अुन्हे आपत्तिसे बचाया ।

अिसी प्रकार जब सन् १८९७ के अगस्त मासमे अुन पर चलाअे गअे राजद्रोहके पहले अभियोगकी सुनवाअी बम्बअीमें प्रारम्भ हुअी तब अुन्हे जमानत पर मुक्त किया गया । वे किसी आवश्यक कामके लिअे पूना गअे थे । वहाँ अुन्हे समाचार मिला कि अुनके मित्र श्री बाबा साहब कालराके शिकार हुअे हैं और मरणासन्न अवस्थामें हैं । मित्रके अन्तिम दर्शनके लिअे तिलक वहाँ दौडे । भेट होते ही बाबा साहबने अुन्हे मृत्यु-पत्र लिखनेको कहा । तिलकने लिखा और बाबा साहबके निकट सम्बन्धियोके तीन नाम सरक्षकों (ट्रस्टी) मे लिखे, परन्तु ट्रस्टियोमे जो पहला नाम लिखा गया था अुसे हटाकर बाबा साहबने अुसके स्थानपर तिलकको अपना नाम लिखनेके लिअे कहा । तिलक ट्रस्टीकी कानूनी जिम्मेदारीसे पूर्णतया परिचित थे । अुन्होने बहुत कार्यव्यस्त होनेके कारण अिससे अपनी अनिच्छा प्रकट की, परन्तु जब मरणासन्न बाबा साहबने व्याकुल हृदय अेव अश्रुपूरित नेत्रोसे तिलककी ओर देखा और अत्यन्त विकल वाणीमें अपनी अन्तिम अिच्छा दुहराअी तो तिलकके सामने ट्रस्टी-पद स्वीकार करनेके अतिरिक्त और कोअी अुपाय न था । निस्पृह मित्र तिलक अपने मित्रकी अन्तिम अिच्छाको कैसे ठुकरा सकते थे ? वे ट्रस्टी बन गअे । राजद्रोहके अभियोगकी तलवार अुनपर पहलेसे ही लटक रही थी । फिर अुनपर यह नअी नाजुक जिम्मेदारी आ पडी । तिलकपर राजद्रोहका अभियोग चला और अुन्हे डेढ सालकी सश्रम सजा हुअी । जेलसे छूटते ही अुन्होने मृत बाबा साहबकी युवती विधवा ताअी महाराजको औरगाबादके जगन्नाथ नामक अेक होनहार लडकेको गोद लेनेकी सुविधा दी । तिलकके विरोधियोने जिनमे कअी राजनीतिक क्षेत्रके विरोधी भी थे, ताअी महाराजको भडका दिया और तिलकपर यह आरोप लगवाया कि अुन्होने

अुनकी अिच्छाके विरुद्ध जगन्नाथ महाराजको गोद लिवाया है। अिसके अतिरिक्त विधवा ताअी महाराजने कोल्हापुरके बाला महाराज नामक गृहस्थको गोद लिया और बाला महाराज अपने परिवारके साथ पूनामे मृत बाबा साहबके निवास-स्थानपर रहने लगे। तिलकने ताअी महाराज और अुनके नअे दत्तक पुत्रको समझानेकी चेष्टा की। अुनको कानूनी भय भी बताया, किन्तु तिलकके विरोधियोने बेहद जाल फैला रखा था। कहा जाता है कि कोल्हापुरके महाराज नअे दत्तकके पक्षमे थे और वे तिलकके कट्टर विरोधी थे, क्योकि तिलक अँग्रेजी राज्यके विद्रोही नेता थे। जब समझौता नही हो सका तब प्रमुख सरक्षककी हैसियतसे तिलकने बाला साहबको निवासस्थान छोडनेके लिअे नोटिस दिया और अपने द्वाररक्षक नियुक्त किअे। आग भडकने लगी। विधवा ताअी महाराज पूनाके डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० अस्टनसे भेट करनेके लिअे अुनके बगलेपर गअी और अुन्होने तिलकके विरुद्ध बहुत विषाक्त बाते कही। मि० अस्टन भी दो-तीन बार ताअी महाराजके निवास-स्थानपर चाय-पार्टीके लिअे आअे। तिलक अपने निश्चय पर डटे रहे। तिलकके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा गया और ताअी महाराजने मि० अस्टीनके पास तिलकके बन्दीवाससे अपनी मुक्तिके लिअे प्रार्थना-पत्र प्रेषित किया। मि० अस्टीन तो राजद्रोही तिलकको सतानेके लिअे अुतावले ही हो रहे थे, अिसलिअे अुन्होने पुलिस भेजकर ट्रस्टियोके पहरेदारोको हटवाया और सरक्षकोका भत्ता रद्द कर दिया। तिलकने हाअीकोर्टमें अपील की और फिरसे ट्रस्टियोका भत्ता दिलवाया तथा पहरेदारोकी पुनः नियुक्ति कराअी। तिलककी विजय हुअी। स्वर्गीय बाबा साहबका निवास-स्थान छोड़कर बाला साहबको कोल्हापुर लौटना पड़ा। अिसी बीच मि० अस्टीनकी दुष्टतासे तिलकपर सरकारकी ओरसे फौजदारी अभियोग प्रारम्भ हुआ। अुनपर सात आरोप लगाअे गअे, जिनमे धोखा देना, मृत बाबा साहबके धनका दुरुपयोग करना और झूठी गवाही देना अित्यादि मुख्य थे। तिलक टससे मस नही हुअे। अुन्हे भविष्यका भयंकर स्वरूप पहलेसे ज्ञात था।

सरकारने अिस अभियोगकी कानूनी कारवाअीके लिअे मि० क्लेमन्टस नामक स्पेशल मैजिस्ट्रेटकी नियुक्ति की। स्पेशल मैजिस्ट्रेटने लगातार ५८

दिनो तक अिस फौजदारी मुकदमेकी सुनवाअी की। तिलककी ओरसे अुनके मित्र श्री खरे पैरवी करते थे और तिलक स्वय अुन्हे कानूनी मदद देते थे। तिलकके सव मित्र चिन्ताग्रस्त थे, क्योकि यह समय अुनके चरित्र अेव शीलकी अग्नि-परीक्षाका था। यदि वे फौजदारी अदालतमे अपराधी सिद्ध हो जाते तो अुनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा और नेतृत्वको धक्का लगता। परन्तु स्थितप्रज्ञ तिलक शान्त थे। "सत्यमेव जयते" अुनका अटल सिद्धान्त था। परमेश्वर पर अुनका पूरा भरोसा था। अन्तमे स्पेशल मैजिस्ट्रेटने १८४ पन्नोका लम्वा-चौडा निर्णय सुनाया। मैजिस्ट्रेटने लिखा कि "तिलकका हेतु निस्वार्थ हे, परन्तु झूठी साक्षी देनेके आरोपमे अुन्हे डेढ वर्षकी सश्रम सजा दी जाती हे, और अिसके अलावा १००० रुपया जुर्माना किया जाता हे।" दुर्भाग्यसे तिलक फौजदारी गुनहगार सिद्ध हुअे। मित्रो तथा जनताको यह जानकर सन्तोष हुआ कि स्पेशल जजने तिलकके निस्वार्थ हेतुका आदर किया। अुसी दिन जमानत पर अुनकी रिहाअी हुअी। वादमे सेशन कोर्टने भी तिलकको दोषी ठहराया, किन्तु सजा अेक वर्षसे घटाकर केवल छह मासकी कर दी। तत्काल ही कोर्टमे तिलकके हाथोमे हथकड़ियाँ डाल दी गअी तथा मामूली फौजदारी अपराधीकी भाँति अुन्हे येरवड़ा सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। अुनके अनेक मित्रोके नेत्रोसे आँसू वहने लगे। सामान्य जनता शोकमे डूव गअी। चार-पॉच दिन तक जेलमे रखनेके पश्चात् वे जमानतपर छोड दिअे गअे। अुन्होने हाअीकोर्टमे अपील की और अगले महीनेमे ही हाअीकोर्टने अुन्हे पूर्ण रूपसे निर्दोष ठहराया।

विराट् सभामें स्वागत

१९०४ के मार्चकी २२ तारीखको महर्षि अण्णासाहेव पटवर्धनकी अध्यक्षतामे रेमार्केटके मैदानमे पूनाकी जनताने तिलकका हार्दिक स्वागत किया। लगभग बीस हजार श्रोताओने अुनके प्रति खडे होकर आदर व्यक्त किया, 'जयजयकार' की। अुन्होने जनताकी वन्दना स्वीकार की और गम्भीरतासे कहा— "आनन्दके समय हँसना और दु खके समय रोना अज्ञानके लक्षण हैं। सुख तथा दु ख और निन्दा-स्तुतिकी चिन्ता न कर अपने कार्यपर डटे रहना ही पुरुषार्थका लक्षण है। अतअेव आप सच्चे पुरुषार्थी

बननेका प्रयत्न कीजिअे। परमेश्वर आपको अुचित वल दे, मेरी अुससे यही प्रार्थना है।"

अटल अुदार वृत्ति

लोकमान्य तिलक दोषमुक्त हुअे, परन्तु जगन्नाथ महाराज और वाला महाराजके वीच दुश्मनो-सी स्पर्धा चल पडी और दीवानी दावा बम्वअी हाअीकोर्टसे लन्दन स्थित प्रिवी कौसिल तक गया। जैसे मलेरियाका बुखार बार-बार रोगीको सताता है, वैसे ही यह दीवानी मुकदमा सन् १९१९ तक समय-समय पर तिलकको सताता रहा, परन्तु तिलकने बडी सहनशीलता और लगनसे सफलता प्राप्त की। अन्तमे अुन्हे अिसके लिअे प्रीवी कौसिलके समक्ष लदन जाना पडा। जब लदन जाने लगे तब जगन्नाथ महाराजने बड़ी नम्रतासे अुनसे अनुरोध किया कि अिस मुकदमेमे जो खर्च हुआ है, अुसे स्वीकार करे और भावी लदन-यात्राका खर्च भी ले। तिलकने हँसकर अुत्तर दिया--"क्या आप अपनी अिस्टेट मेरी अिस्टेटसे अलग मानते है? मै आपको अपना तीसरा पुत्र मानता हूँ। अतः आपसे (पुत्रसे) खर्च लेनेका मुझे नैतिक अधिकार नही है।" यह अुत्तर सुनकर जगन्नाथ महाराज मौन रह गअे। वे तिलककी आर्थिक स्थितिसे पर्याप्त परिचित थे, अतअेव अुन्होने धैर्यके साथ कहा कि "यह व्यवहारकी बात है अतअेव आप व्यय हुआ धन अवश्य स्वीकार करनेकी कृपा करे।" तिलकने गम्भीर होकर स्वीकृति प्रदान की और कहा कि "आप अपना बगला और बगीचा मुझे दे दीजिअे, क्योकि अुन्हे मुझे 'न्यू पूना कालेज' को दान करना है। यदि अिनका मूल्य तीस हजार रुपया है तो अिसके अलावा मै अितनी ही और रकम आपको अपना तीसरा पुत्र मानकर दान देता हूँ।" जगन्नाथ महाराज अवाक् हो गअे। मानसिक तथा शारीरिक कष्टके अलावा अिस मुकदमेमे तिलकने अपने पाससे लगभग साठ हजार रुपअे व्यय किअे, किन्तु मृत मित्रके पुत्र या पत्नीसे अेक पैसा भी स्वीकार नही किया। क्या यह अुपनिपद्के "मा गृध· कस्यचिद्धनम्" सिद्धान्तका जीता-जागता अुदाहरण नही है?

बाओी ओरसे—लाला लाजपतराय, लोकमान्य तिलक और विपिनचन्द्र पाल

ग्यारहवाँ प्रकरण

सूरतमें संघर्ष

अेकोऽहमसहायोऽह कृशोऽहमपरिच्छद. ।
स्वप्नेप्येवंविधा चिन्ता, मृगेन्द्रस्य न जायते ॥

The great indomitable Tilak would break but not bend.
—Pandit J. Nehru

कलकत्तेमे कॉंग्रेस द्वारा लोकमान्य तिलकके स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षाका चतु सूत्रीय कार्यक्रम स्वीकार किये जाने पर नरमदल-वादी नेता चिढ-से गअे, क्योकि अुन्हे अैसा प्रतीत होने लगा कि कॉंग्रेस पर हमारा अेकाधिपत्य समाप्त हो रहा है । कलकत्ता-अधिवेशनमे बहिष्कारके प्रस्तावपर बड़ा कडा और तीखा विवाद हुआ, जिसमे प्रस्तावका समर्थन लोकमान्यने किया और सर फिरोज शाह मेहताने अुसका खण्डन करनेकी भरसक कोशिश की । अन्तमें लोकमान्य तिलककी ही विजय हुअी । अिस अवसरपर सर फिरोज शाहने लोकमान्य तिलकका व्यग्य भरा अभिनन्दन करते हुअे कहा था कि "श्री तिलक यह बम्बअी नही है, अिसलिअे आपने बहुमत प्राप्त कर लिया ।" अुसपर गो. कृ. गोखले जो कि मेहताके पक्ष-पाती थे अेकाअेक बोल अुठे—"श्री मेहता ! आप तिलककी शक्तिकी महिमा नही जानते ।" तिलक केवल मुस्कराकर रह गअे । वे यह भी ताड गअे कि भविष्यमे अुन्हे नरमदलसे अन्तिम तथा करारा सग्राम करना होगा क्योकि कोअी भी धनसम्पन्न तथा चिरअधिकारारूढ दल अपनी पराजयसे अेकाअेक क्षीण नही होता । तत्पश्चात् दोनो दल अपनी-अपनी शक्ति बढानेमें लग गअे । महाकोशलके रायपुर स्थानमे प्रान्तीय षद् हुअी जिसमे नरमदलवादी नेताओने अुग्रदलवादियोको पराजित

कॉंग्रेसमें पारित प्रस्तावोंमे अपने अनुकूल परिवर्तन करवा लिअे। यही हाल सूरतकी बम्बअी प्रान्तीय परिषद्में हुआ। लोकमान्य तिलकके सम्मिलित न होनेसे सर फिरोज शाह मेहताने वहाँ वहिष्कारका प्रस्ताव पेश ही नही होने दिया। अन्य प्रस्तावोंपर भी नरमदलकी नीतिकी पूरी छाप पडी। मेहताका अुत्साह दुगुना हुआ। अब अुन्होंने अेक नअी चाल चली। अुन्होंने नागपुरके नरमदलवादियोको भड़काया और कॉंग्रेस-अधिवेशनका अुनसे आमन्त्रण दिलवा दिया। आगामी अधिवेशन नागपुरमे होना तय हुआ। महाकोशल तथा नागपुरके नरमदलवादियोंने सर मेहताको पूरा आश्वासन दिया था कि वे वहाँ बाजी मार लेंगे। अुधर लोकमान्य तिलकने भी कमर कसी। कॉंग्रेसकी स्वागत-समितिके २४०० सदस्य बने जिनमेंसे १५०० तिलकके पक्षपाती थे। नागपुरमें अपूर्व अुत्साह छा गया। लोकमान्य तिलकके कॉंग्रेसका सभापति होनेकी सम्भावना दिखाअी देने लगी। सर फिरोजशाह मेहता और अुनका नरमदल घवड़ा गया। मेहताने आल अिण्डिया कॉंग्रेस कमिटीसे कॉंग्रेसका आगामी अधिवेशन नागपुरके बजाय अपने गढ सूरतमें करानेका निश्चय करवा लिया। लोकमान्य तिलकने विरोध किया किन्तु व्यर्थ।

कौन सभापति होगा ?

सर फिरोज शाह मेहताके नरमदलने सभापतिके पदके लिअे अपने कट्टर अनुयाअी डा रासविहारी घोषका नाम प्रस्तावित किया और अवैधानिक ढगसे अुसे स्वीकृत भी करवा लिया। लोकमान्य तिलकने अिस अवैधानिक कारवाअीका स्पष्टतया विरोध किया क्योंकि कॉंग्रेसका सभापति चुननेका अेकमात्र अधिकार कॉंग्रेसके प्रतिनिधियोको ही था। सयोगसे अिसी समय मण्डाले जेलसे पजावसिंह लाला लाजपतरायकी रिहाअी हुअी, जहाँ वे चार महीनो तक विना किसी अपराधके कैद थे। लालाजीके प्रति लोकमान्य तिलकका आदरभाव था अिसलिअे अुन्होंने लालाजीका नाम सभापति-पदके लिअे प्रस्तावित किया। वे किसी तपे हुअे देशभक्तको कॉंग्रेसका सभापति वनाना चाहते थे। लालाजी अेक ओर सरकारके

कोपभाजन थे तो दूसरी ओर जनताके प्रेम अेवं आदरके पात्र। तिलकको अैसे ही प्रखर देशभक्तकी आवश्यकता थी न कि सुखजीवी अुच्च न्यायालयके न्यायाधीशो और डाक्टरोकी। काग्रेसके केन्द्रीय कार्यालयने तिलकका प्रस्ताव स्वीकार नही किया। तिलकने 'केसरी' तथा 'मराठा' मे 'महान् देशभक्त लाला लाजपतरायको सभापति वनाओ' शीर्षक लेखमाला लिखी। अुसमे लालाजीकी बुद्धिमत्ता, वाग्मिता, निरपेक्ष सेवावृत्ति, धैर्य और अुग्रदेशभक्ति अित्यादि गुणोकी सराहना की गअी। आपने काग्रेस-प्रतिनिधियो तथा अधिकारियोसे वार-वार प्रार्थना की कि वे लालाजीको सभापति वनाकर अग्रेज सरकारको मुँहतोड अुत्तर दे। लालाजीको अध्यक्ष वनाकर वे सरकारी दमन-नीतिकी सक्रिय भर्त्सना भी करना चाहते थे और साथ ही काग्रेसके प्रजातान्त्रिक स्वरूपकी रक्षा भी, परन्तु नरमदलवादी टससे मस न हुअे। तिलकने सैकडो तार डा० रासविहारी घोषके पास प्रति-निधियोसे भेजवाअे और अुनसे प्रार्थना की कि लालाजी जैसे समयानुकूल सभापतिके लिअे आप स्वय अपना नाम वापिस लेले, परन्तु व्यर्थ।

लाल-बाल-पालकी लोकप्रिय त्रिमूर्ति

वास्तवमे सन् १९०७ मे पजावसिह लालाजी, लोकमान्य तिलक और वगसिह विपिनचन्द्र पाल अखिल भारतवर्षके लोकप्रिय नेता थे। अुनके नाम नवयुवको और सामान्य जनताकी जिह्वापर खेलते थे। देशके कोने-कोनेमे अुनकी 'जयजयकार' की जाती थी। नवोदित अुग्रदलके तीनो लब्धप्रतिष्ठ नेता थे। अतअेव देशकी भलाअीकी दृष्टिसे लालाजीका सभापति होना अुचित था। किन्तु काग्रेसपर अधिकार जमाअे रखनेकी चिन्तामे नरमदलके नेता मनचाहा अेव अवैधानिक आचरण करने लगे। लोकमान्य तिलकने घोषित किया कि वे सूरतकी विषय-निर्धारिणी-समिति या खुले अधिवेशनमे सभापतिके लिअे प्रस्ताव अुपस्थित करेगे और प्रजातान्त्रिक ढगसे सभापतिका चुनाव कराअेंगे। अुनकी अिस घोषणासे देशभरमे सनसनी फैल गअी। नरमदलके गढोमे घवराहट पैदा हुअी और अुग्रदलवादियोमें अुत्साहकी विजली

दौड़ गअी। अुधर सर फिरोज शाह् भी अपनी मूंछोपर बल देने लगे। चाहे जैसे हो वे लोकमान्य तिलकको पराजित करनेपर तुले थे। दोनो दलोके प्रतिनिधि दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमे सूरतमे अेकत्र होने लगे। देशकी आँखे सूरतकी ओर लगी। काग्रेस भग होनेकी आशका दिन-प्रति-दिन प्रबल होने लगी। दोनो दल अन्तिम सग्रामके लिअे सन्नद्ध होगअे।

लोकमान्य तिलकका भव्य स्वागत

दिसम्बरकी २३ तारीखको लोकमान्य तिलक सदलबल सूरत पहुँचे। स्वागत-समितिने अुनके आगमनकी अुपेक्षा की, परन्तु स्टेशन पर दस हजार दर्शकोने अुनका हार्दिक स्वागत कर बडा लम्बा जुलूस निकाला। अुधर मनोनीत सभापति डा० रासबिहारी घोपके स्वागतके लिअे स्टेशनपर डेढ सौ से भी अधिक व्यक्ति अुपस्थित नही थे। तिलकके स्वागत और जुलूसने काग्रेसके तथाकथित सभापतिका स्वागत फीका कर दिया। सायकाल विराट् सभा हुअी जिसमे ५० हजारसे अधिक श्रोता अुपस्थित थे। लोकमान्य तिलकने अिस सभामें अपने कार्यक्रमका विस्तारपूर्वक विवेचन किया। अुन्होने जनतासे अनुरोध किया कि गत वर्ष कलकत्तेमे जो कार्यक्रम कॉग्रेस द्वारा मान्य किया गया था अुसपर अटल रहनेमे ही देशका कल्याण है। अुन्होने नरमदलकी अवैधानिक नीतिकी तीव्र आलोचना की और नरमदलके नेताओसे प्रार्थना की कि वे अपनी भूल सुधारकर कॉंग्रेसकी रक्षा करे। अुन्होने अपनी सौगन्ध खाकर घोषित किया कि वे कॉंग्रेसको भग नही करना चाहते वरन् अुसे अधिक प्रबल बनाना चाहते है। अुग्रदलकी स्थापना अँग्रेज सरकारसे लोहा लेनेके लिअे हुअी है न कि अपने देश-भाअी नरमदलवादियोका विरोध करनेके लिअे। अुनकी यह अुत्कट अिच्छा थी कि कॉग्रेसका कार्य वैधानिक ढगसे आगे बढे और अिसी कारण अुन्हे विवश होकर सघर्षके लिअे सन्नद्ध होना पडा। अुन्होने सूरतकी जनतासे सहायताके लिअे अनुरोध किया। जनताने अुनकी प्रार्थना स्वीकार की और लोकमान्य तिलककी "जयजयकार" से आकाश

गूंज अुठा। लोकमान्यने नरमदलके नेताओसे फिर प्रार्थना की कि वे खुले दिलसे चर्चा कर सघर्ष टालनेमे सहयोग दे। डा० पट्टाभि सीतारामय्याने कॉंग्रेसके अितिहासमे लिखा है कि :—"A frank discussion among the leaders of the two parties ought to have been sufficient to clear the position and the question could have been dealt with on merits. But this could not take place, possibly on account of pique on the part of some moderate leaders." अर्थात्, "यदि श्री तिलककी प्रार्थनाके अनुसार दोनो दलोके नेता खुले दिलसे चर्चा करते तो सूरतका सघर्ष टल जाता, परन्तु नरमदलके कुछ नेताओके हठसे अैसा नही हो सका।" विवश होकर स्वय लोकमान्यको कलकत्तेमें स्वीकृत स्वराज्य प्रस्ताव कायम रखने तथा प्रजातान्त्रिक ढगसे कॉंग्रेसका कार्य चलानेके लिअे सघर्ष करनेका निश्चय करना पडा।

संघर्षका पहला दिन

कॉंग्रेसका अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। लगभग सोलह सौ प्रतिनिधि सम्मिलित हुअे थे जिनमे केवल सौ अुग्रदलवादी थे। स्वागताध्यक्षका भाषण शान्तिपूर्वक सुना गया। प्रचलित परिपाटीके अनुसार सभापतिके-पदके लिअे नाम प्रस्तुत हुआ। प्रस्ताव प्रस्तुत होते ही सभा-मण्डपमे हलचल मच गयी। सुविख्यात वक्ता सुरेन्द्रनाथ बेनर्जीने अपनी अूंची आवाज और प्रभावशाली वाणीमें प्रस्तावका समर्थन करना प्रारम्भ किया। परन्तु मण्डपमे हल्ला-शोरगुल अितना बढ गया कि सुरेन्द्रनाथका शखनाद अुसमें डूब गया। दोनो दलोके प्रतिनिधियोमे धक्का-मुक्की होने लगी। अुग्रदलके प्रतिनिधि बुरी तरहसे पीटे गअे क्योकि वे अल्प सख्यामे थे। कअी प्रतिनिधियोके शरीरपर जख्म हुअे और अुनके वस्त्रोपर रक्तके छीटे दिखाअी देने लगे। सभाका नियन्त्रण करना असम्भव हो गया। सभा-स्थलको रण-क्षेत्रका स्वरूप प्राप्त हो गया। अधिवेशनकी कारवाअी दूसरे दिनके लिअे स्थगित हो गअी। लोक-मान्य तिलकने अिस अनुचित मुठभेड तथा मारपीटकी तीव्र भर्त्सना और

'आत्म कहानी' मे लिखा है कि "महा धैर्यमेरु तिलक आत्मसमर्पणकी अपेक्षा वलिदान होना अधिक पसन्द करते थे।" अिधर तूफान अधिक अुग्र बनता जा रहा था। किसी नरमदलवादी प्रतिनिधिने अपना नया जूता वड़े वेगसे तिलककी ओर फेंका, किन्तु निशाना गलत होनेसे वह गोखलेकी गोदमे गिरा। लोकमान्य निर्विकार चित्तसे शिल्पमूर्तिके समान मचपर खडे थे। अुनकी ओर भी कुर्सियाँ फेंकी गअी। अन्ततोगत्वा कॉंग्रेस-अधिवेशन भग हुआ। प्रतिनिधियो तथा दर्शकोको पुलिस द्वारा मण्डपके वाहर निकलवाया गया। जो घटना नही होनी चाहिअे थी और जिसे टालनेके लिअे तिलकने अपमान निगलकर अथक प्रयत्न किया था वह वुरी तरहसे घटी। नरमदलके दुराग्रहसे कॉंग्रेस भग हुअी। किन्तु अुल्टा चोर कोतवालको डॉंटे की नीतिके अनुसार वे तिलकपर भद्दे आरोप करनेमें नही चूके। तिलकने चुनौती स्वीकारकर अुसी दिन शामको होनेवाली अुग्रदलकी 'विधान-परिषद' (कान्स्टीटयूशन कनवेशन) मे अुनसे सम्मिलित होनेकी प्रार्थना की।

यह सच्चा पुरुष सिंह है

शामको विधान-परिषद्मे लगभग डेढ घण्टे लोकमान्यका प्रभावशाली भाषण हुआ। जनताने वह भाषण शान्ति तथा श्रद्धासे सुना। लोकमान्यने अपने वैधानिक ज्ञान तथा राजनीतिक आदर्शोका निचोड जनताके सम्मुख स्पष्ट रूपसे अुपस्थित किया। आपने वताया कि आपका सघर्ष व्यक्तिगत नही सैद्धान्तिक है। आपने अनेक देशोकी राजनीतिक सस्थाओके अितिहासके आधारपर यह सिद्ध किया कि अिस प्रकारके सघर्ष अस्वाभाविक नही है। वामी-युद्धके वाद जर्मन महाकवि गेटेने कहा था कि "मुझे वडी प्रसन्नता है कि मै नअे मनुका अुदय देख रहा हूँ।" अिसी तरह लोकमान्य तिलकने कहा कि "अिस सघर्षने नअे प्रगतिवादी युगको जन्म दिया है। दुख या शर्मकी कोअी वात नही।" आपने जनतासे पूछा कि क्या वह कॉंग्रेसको आराम-तलव लोगोके विचार-विमर्शका क्लव वनाना चाहती है? जनताने अुत्तर दिया 'नही'। अितने अशान्त तथा आशकित वातावरणमे तिलक

कर्मयोगीकी भाँति निश्चल भाषण दे रहे थे जिसे देखकर अँग्रेजी पत्रकार तथा 'न्यू स्प्रिट अिन अिण्डिया' के ग्रन्थकार मि. नेव्हिनसनने कहा था कि "दैट अिज दि मैन" अर्थात् "वह सच्चा पुरुष-सिह है।" मि. नेव्हीनसन प्रजातान्त्रिक शासन-प्रणालीके समर्थक थे और आपने कअी देशोमे भ्रमण किया था। ब्रिटेनमे वे अुग्रदलके चोटीके नेता माने जाते। आपने कअी महान् देशभक्तोके चरित्र लिखे, किन्तु लोकमान्यकी लोकोत्तर अलौकिकतापर अत्यन्त लट्टू हो गअे थे। आपके मुखसे अुक्त वाक्य सहज ही प्रवाहित हो गया था। आपने अेक अन्य वाक्यमें तिलककी जोवनीका सार भर दिया है। वह वाक्य है "For Mr. Tilak battlefield was paradise" अर्थात् "तिलकके लिअे रणागण स्वर्गके समान था।" सचमुच ही सघर्ष जितना कठोर या तीव्र होता था तिलक अुतने ही अूँचे अुठते थे।

विजयके पश्चात् विनय

लोकमान्य तिलक व्यक्ति या दलकी अपेक्षा सस्थाको अधिक महत्व देते थे अत· अितनी विजय-सम्पादन कर बीतीको विसार कर आपने पुन: नरमदलवादियोसे अनुरोध किया कि वे अुनके साथ समझौता करनेके लिअे तत्पर हैं, बशर्ते कि कलकत्ता-कॉग्रेसके प्रस्ताव अुसी रूपमे मान्य किअे जाअे। अिसके बदलेमे वे डा रासबिहारी घोषका सभापति होना भी स्वीकार करनेको अुद्यत थे। वे विरोधियोको स्पष्टतया बताना चाहते थे कि वे सूरतमे डा रासबिहारीके व्यक्तिगत विरोधके लिअे नही वरन् सिद्धान्तके लिअे लडे थे। परन्तु नरमदलवादी तो अिस तेजस्वी पुरुषसे किसी प्रकारका सम्पर्क नही रखना चाहते थे। अुन्होने तिलकका अनुरोध फिर ठुकरा दिया। पजाबसिह लालाजीने स्वय लिखा है कि "In 1908 at the request of Lokmanya Tilak I made several attempts to bridge the gulf that had been created between his party and the moderates by the events of Surat but without any success." "अर्थात् लोकमान्यके अनुरोधसे मैंने स्वय कअी दफे दोनो दलोमे

मेल करानेका प्रयत्न किया परन्तु वह व्यर्थ हुआ।" सूरतसे लौटते समय प्रत्येक स्टेशनपर लोकमान्य तिलककी 'जयजयकार' सुनाअी देती थी। लोकमान्य तिलक विजयी सेनापतिकी भाँति पूना लौटे।

संयुक्त कॉंग्रेसके हिमायती

नरमदलके दुराग्रहसे विवश होकर लोकमान्य तिलकने अपना अुग्र राष्ट्रीय दल कॉंग्रेससे पृथक् किया, परन्तु अवसर मिलनेपर वे सदा सयुक्त कॉंग्रेसका समर्थन करते थे और सदैव सम्मानपूर्ण प्रजातान्त्रिक समझौतेके लिअे अुद्यत रहते थे। अुनका अटल ध्येय था कि कॉंग्रेस भारतीयोकी अेक-मात्र प्रतिनिधि सस्था बने और अुसमे अेकाधिक दलोको अुचित स्थान मिले। सन् १९०८ के दिसम्बर मासमे लोकमान्य तिलकने नागपुरमें अुग्रदलकी पृथक् कॉंग्रेस करनेकी घोषणा की। अखिल भारतवर्षमे चेतनाकी लहर पैदा हुअी। अुनपर अभिनन्दनके तारो तथा पत्रोकी वर्षा होने लगी। कोने-कोनेसे समर्थन अेव आश्वासन मिलने लगा। नअी कॉंग्रेसकी प्रसूतिकी वेदनाअें प्रारम्भ अी। अिन वेदनाओंने नरमदलको बेचैन किया। अन्ततोगत्वा अँग्रेज सरकारने नरमदलकी प्राण-रक्षा की।

बारहवाँ प्रकरण

वज्राघातका अन्त

संपदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो रणेच धीरत्वम्।
त भुवनत्रयतिलकं जनयति जननी सुत विरलम् ।।

लोकमान्य तिलक विजयी सेनापतिकी भाँति सदलवल पूना लौटे। आपके साथ अरविन्द घोष भी थे। सायकाल विराट् सभामे तिलकने श्री अरविन्दका हार्दिक स्वागत किया क्योकि वडोदा रियासतमे अत्युच्च अमात्य-पदको त्यागकर अरविन्द वंगालके नवयुवकोके नेता वने थे। प्रभावशाली वक्ता वाबू विपिनचन्द्र पाल तिलकके दाहिने हाथ थे। पूरा वगाल प्रान्त तिलकका आदर करता था। तिलक स्वय गम्भीर प्रवृत्तिके आध्यात्मवादी थे। अरविन्द भी अुनके प्रति गहरी आदर-भावना रखते थे। महर्षि अरविन्दकी जीवनीमे तिलकके विषयमे लिखा गया है —

"Shri Aurobindo's choice of Tilak as the leader of the Nationalists had behind it a deeper understanding of the great soul. In 1918 Shri Aurobindo also wrote, Shri Tilak stands today as one of the two or three leaders of the Indian people who are in their eyes the incarnations of the National endeavour and God given Captains of National aspirations."

महर्षि अरविन्दकी आध्यात्मिक महानता तथा तेजस्वी वुद्धिमत्ताने अुनके प्रति तिलकको आकृष्ट किया था। कर्मयोगी और योगी दोनोका अनूठा मेल था। अग्रेज सरकार यह नही सह सकी। अिसके अतिरिक्त लोकमान्य तिलकके प्रभावसे चकित नरमदलवादी अुनके विरुद्ध कानाफूसी करने लगे।

भारतमे असन्तोष

अग्रेज सरकारने बगभग कर वंगालमे अुग्र राष्ट्रीय जागृति पैदा की थी। अिस जागृतिका विकास अितना अधिक हुआ कि सन् १९०६ मे काग्रेसने देशकी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिअे स्वराज्य, स्वदेशी, वहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षाका चतु.सूत्री कार्यक्रम स्वीकार कर लिया। काग्रेसमे लोकमान्य तिलक तथा बाबू विपिनचन्द्र पालके अुग्र राष्ट्रीय दलकी विजय हुअी। अुक्त कार्यक्रमको कार्यान्वित करनेके लिअे बगाल तथा महाराष्ट्रमे विशेष रूपसे आन्दोलन आरम्भ हुआ। बगालमे जहाँ-तहाँ राष्ट्रीय विद्यालयोकी स्थापना हुअी। अैसे ही अेक राष्ट्रीय कालेजके प्रिन्सिपल महर्षि अरविन्द थे। विदेशी कपडोकी होलियाँ जलने लगी। विदेशी मालका बहिष्कार होने लगा। सरकार चिढ गअी और अुसका दमनचक्र जोरोसे चला। सैकडों देशसेवकोको जेलमे वन्द किया गया। "वन्देमातरम्" गीतका गाना भी अपराध घोषित किया गया। ज्यो-ज्यो दमनकी हवा चली त्यो-त्यो आन्दोलनकी प्रवृत्ति भी तीव्र होती गअी। निरकुश गवर्नर जनरल लार्ड कर्जनके समय बगालके नअे गवर्नर फील्ड फूल्लर थे। अुन्होने अेक सभामें कहा था "मुसलमान जमात मेरी प्यारी औरत है (फेवरेट वाअिफ) क्योकि वह राज्यनिष्ठ है और प्राय: राजनीतिक असन्तोषमें योग नही देती।" जनतामे अिस वक्तव्यकी तीव्र आलोचना हुअी। अिधर सरकारी दमनचक्र, जनताको निष्ठुरतासे पीसनेमे सलग्न था। बारिसालमें वग प्रान्तीय कॉंग्रेसका अधिवेशन हो रहा था। सरकारका दिमाग भडक गया और अुसने वहॉ सैकडो गुरखा सैनिक तथा अँग्रेज अफसर अेकाअेक भेज दिअे। अधिवेशन अति कठोरतासे भग किया गया। जनताने तीव्र प्रतिकार किया अतअेव सैकडो देश-सेवक कैद कर लिअे गअे। असन्तोषकी ज्वाला भडक अुठी। अिधर लोकमान्य तिलकने अपने भाषणो तथा सम्पादकीय लेखो द्वारा सरकारी दमन-नीतिकी तीव्र भर्त्सना की और सरकारको चेतावनी दी कि वह वैधानिक तथा शान्तिप्रिय आन्दोलनोका मुकाबला सैनिको द्वारा जनताको पिटवाकर न करे अन्यथा देशकी हालत अधिक विगड जायगी।

वीरनवालीपर बलात्कार

अिसी समय रावलपिंडी स्टेशनपर वीरनवाली नामक हिन्दू कुमारीपर अँग्रेज स्टेशन मास्टर द्वारा बलात्कार करनेका समाचार फैला। बेचारी वीरनवालीके पिताने अुस अँग्रेजके खिलाफ कोर्टमे फरियाद दाखिल की, परन्तु वह निर्दोष ठहराया गया। समस्त भारतमे अिसका घोर विरोध हुआ। लोकमान्य तिलकने अपने सम्पादकीय लेखमे अँग्रेज सरकारकी भेद-युक्त न्यायनीतिकी कठोर आलोचना की और निर्भीकतासे कहा कि अिस अँग्रेजी राज्यमे न्यायकी आशा करना पत्थरसे दूध निकालनेके सदृश है। वीरनवालीपर किअे गअे बलात्कारका समाचार सुनकर लोकमान्य तिलक अितने बेचैन हुअे कि अुस रात वे घण्टेभर भी नही सो सके। अपने अेक निकटस्थ मित्रसे अुन्होने कहा था कि "क्या हम भारतीय लोग अितने गअे-बीते हो गअे है कि अपनी माँ-बहिनोकी अिज्जत भी सुरक्षित नही रख सकते? अैसे अपमानित जीवनपर धिक्कार है!" अिससे अुनके हृदयकी कसकका पता चलता है।

पूनामें लोकमान्यका राज्य

अिसी समय पूना जिला-सभाका वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमे स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षाके कार्यक्रमको शीघ्रातिशीघ्र कार्यान्वित करनेपर विशेष जोर दिया गया। अिसके अतिरिक्त शराबबदीके लिअे सरकारी शराबकी दूकानोपर पिकेटिंग करना भी तय हुआ। पूना तथा महाराष्ट्रमे यह कार्य तत्परतासे किया जाने लगा। सरकारने पिकेटिंग करनेवाले सैकडो स्वयसेवकोको कैद किया। लोकमान्य तिलक स्वय अिस आन्दोलनका सचालन कर रहे थे। पिकेटिंग अितनी शान्ति तथा अनुशासित ढगसे हुअी कि सरकारको भी अचभेमे पड जाना पडा। पूनाके आबकारी कमीश्नरने अपनी रिपोर्टमे लिखा कि "गत दो सप्ताहसे पूनामें लोकमान्य तिलकका शासन चल रहा है।" क्या यह तिलकके नेतृत्वकी विजय नही थी? क्या यह महात्मा गाधीके भावी सत्याग्रहका बाल स्वरूप नही था?

अिस आन्दोलनसे अँग्रेजोके व्यापारको बडी गहरी चोट पहुँची । सरकार तिलकपर मन-ही-मन क्रुद्ध हुअी क्योकि अुसकी दृष्टिमे अुन्होने शान्ति और सुव्यवस्थामे बाधा अुपस्थित की थी ।

लार्ड मोर्लेकी आलोचना

बगालमे बग-विच्छेद रद्द करवानेका आन्दोलन चल ही रहा था कि सन् १९०७ की जूनमे भारत-मत्री लार्ड मोर्लेने अेक वक्तव्य प्रकाशित किया जिसमे अुन्होने जोर देकर कहा कि "बग-विच्छेद वज्रलेप है, वह होकर ही रहेगा । मै दूरतक देख सकनेवाली दूरबीनसे देखता हूँ, परन्तु मुझे भारतके स्वराज्यका चाँद नही दिखाअी देता । अतअेव मेरा विश्वास है कि भविष्यमे काफी समय तक भारतमे निरकुश शासन कायम रहेगा । राजनीतिक आन्दोलन तथा असन्तोप अुत्पन्न करनेवाले अँग्रेजी साम्राज्यके शत्रु है ।" अिस वक्तव्यने धधकती हुअी आगमे घीका काम किया । असन्तोपकी आग और अधिक प्रज्जवलित हुअी । लोकमान्य तिलकने अपने तीन सम्पादकीय लेखोमे मोर्ले साहबके वक्तव्यकी कटु आलोचना की । आपने लिखा कि मोर्ले साहब दूरबीनसे वास्तविकताको ठीक प्रकारसे कैसे देख सकते है, क्योकि पीलिया रोगसे पीडित व्यक्तिको कोअी भी वस्तु साफ और यथार्थ रूपमे नही दिखलाअी देती । अुन्होने सरकारको गम्भीर चेतावनी दी कि वह समझदारीसे कार्य करे अन्यथा देशकी हालत नियत्रणके परे हो जायगी । देशके सच्चे कार्यकर्ताओने तिलकका साथ दिया ।

अिधर बगालमे हालत बहुत ही खराब हो गअी । जनताको पूर्ण निराशा हुअी । अुसका अँग्रेजोकी न्यायबुद्धिपरसे विश्वास हट गया । बहिष्कारका आन्दोलन तीव्र होने लगा । सरकारी अफसरोको मोर्ले साहबके वक्तव्यसे प्रोत्साहन मिला । वे अधिक मदोन्मत्त हुअे । दमनचक्र तीव्र गतिसे चल रहा था । जुलूस निकालना, सभा करना सब गैर कानूनी ठहराया गया । अैसी नाजुक स्थितिमे गुरखा सैनिको और पुलिसके जवानो द्वारा देश-सेविकाओंपर किये गये अत्याचारोका समाचार देशके अेक कोनेमे दूसरे

कोने तक हवाके समान फैल गया। बगालके नवयुवकोमे असतोपकी अग्नि प्रज्वलित हो अुठी। वे वैधानिक तथा प्रकट तरीकोसे सरकारी नीतिका प्रतिकार करनेमे असमर्थ थे क्योकि सरकारने नागरिकोके मूल अधिकारोपर प्रहार किया था। विवश हो बगालके नवजवानोने षडयन्त्रका गुप्त मार्ग अपनाया और अवसर प्राप्त होते ही जुल्मी कलेक्टर, कमिश्नर तथा गवर्नरकी हत्याका अुग्र क्रान्तिकारी आन्दोलन प्रारम्भ किया। ढाकाके कलेक्टरकी हत्या हुअी और शहीद खुदीराम बोसने मुजफ्फरपुरके सेशन जजपर बम फेककर अुसकी हत्या कर डाली। समूचे बगालमे क्रान्तिकारियोके षडयन्त्रका जाल-सा बिछा गया। यह जाल महाराष्ट्रमे भी फैला था। शैतानके समान सरकार भी दमनपर अुतारू थी। अपराध सिद्ध किअे बिना ही सैकडो नवयुवकोको जेलमें बन्द कर दिया गया था।

निर्भीक सम्पादक

लोकमान्य तिलक जैसा सत्यनिष्ठ तथा तेजस्वी सम्पादक भला अैसी विषम परिस्थितियोमे जलमे कमल जैसा अछूता या निर्विकल्प कैसे रहता ? देशके असन्तोषका सरकारसे सच्चा कारण निवेदन करना अुसका धर्म था। वे अपने अिस धर्मका पालन कर रहे थे। अिधर सरकार भी तिलकपर पजा मारनेकी ताकमे थी। अुसे अवसर प्राप्त हुआ और लोकमान्य तिलककी गिरफ्तारीकी अफवाह फैलने लगी। तिलक अपने देशभक्त सम्पादक मित्र स्व शि. म पराजपेकी, जिनके विरुद्ध सरकार राजद्रोहका अभियोग चला रही थी, सहायता करने बम्बअी गअे। किसी हितचिन्तकने अुनसे कहा कि "आप तुरन्त पूना लौट जाअिअे क्योकि यहाँ आपकी गिरफ्तारीका वारन्ट निकलनेकी अफवाह जोरोपर है।" लोकमान्यने हँसकर अुत्तर दिया कि "मै सदा अेक पैर जेलमे रखकर ही कार्य करता हूँ। जहाँ पूरा भारत जेल है, वहाँ छोटा-सा जेल मुझे क्या डरा सकता है ? जेलमे जानेका अर्थ बडे घरसे छोटे घरमे जाना है।" अुत्तर सुनते ही अुनका हितचितक मौन हो गया। अल्पावधिमे ही 'यत्र धूमस्तत्र तत्र वन्हि.'

अर्थात् ‘जहाँ धुवाँ है, वहाँ अग्निका अस्तित्व होना ही चाहिअे,’ न्यायसे वह अफवाह सत्य सिद्ध हुअी और तारीख २२ जून सन् १९०८ को सरकारने लोकमान्य तिलकको वम्वअीमें गिरफ्तार कर लिया। अुधर पूनामें अुनके घर तथा ‘केसरी’–कार्यालयकी कडी तलाशी ली गअी। सैकड़ो पुलिसवालोने अुनके घर तथा ‘केसरी’–कार्यालयको दस घण्टोतक घेर रखा। पूनामें सनसनी फैली और दफा १४४ के अनुसार जुलूसो तथा सभाओ अित्यादिपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। आश्चर्यकी वात यह थी कि लोकमान्य तिलकका गर्मीके दिनोमे रहनेका सिंहगढका घर भी पुलिसने अपने अधिकारमें कर लिया। कुछ कागजात जब्त किअे किन्तु कानूनकी दृष्टिसे अुनका कुछ भी महत्व नही था। पुलिसकी मेहनत व्यर्थ सिद्ध हुअी।

राजद्रोहका दूसरा गम्भीर अभियोग

लोकमान्य तिलकके ‘देशका दुर्भाग्य’ और ‘ये अुपाय स्थाअी या लाभदायक नही हैं’ नामक दो लेखोको लेकर अुनपर दफा १२४ अ और १५७ अ के अन्तर्गत राजद्रोहका आरोप लगाया गया। देशके दुर्भाग्यके अतिरिक्त लोकमान्य तिलकका भी वडा दुर्भाग्य था। जिन वैरिस्टर दावरने पहले सन् १८९७ मे लोकमान्य तिलककी पैरवी की थी, वे अिस समय सरकारी कृपाके भाजन वनकर सेशन जज हो गअे थे और अुनकी कोर्टमे ही तिलकपर राजद्रोहका अभियोग चल रहा था। न्यायाधीश दावरने अपनी राज्यनिष्ठा व्यक्त करनेकी दृष्टिसे तिलकके प्रति अति कडा रुख धारण किया। अुन्होने अुनको जमानतपर मुक्त करनेसे अिन्कार कर दिया। समय-समयपर छोटी-छोटी वातोमें अुनका अपमान करनेकी भी चेष्टा करने लगे। अुन्होने किसी प्रकारकी भी वैधानिक सुविधा नही दी। लोकमान्य तिलकने तत्काल ताड लिया अतअेव वे स्वय अपनी पैरवी करनेको सन्नद्ध हुअे। अुन्होने स्पेशल जूरीकी नियुक्तिका विरोध किया परन्तु व्यर्थ। आश्चर्यकी वात तो यह है कि अिन नौ स्पेशल जूरिओमें मराठी भाषाकी जानकारी रखनेवाला अेक भी नही था। अिसमें सात अंग्रेज और

अभियोगकी कारवाअी

तारीख १३ जुलाअीसे अभियोगकी कानूनी कारवाअी प्रारम्भ हुअी। सरकारी अेडवोकेटने दो घण्टे तक भाषण कर पहले दिन कोर्टको लोकमान्य तिलकके मराठी लेखोका अंग्रेजी भाषामे अनुवाद सुनाया और अदालतसे प्रार्थना की कि तिलकपर दफा १२४ (अ) और १५३ (अ) के अन्तर्गत राजद्रोहका आरोप लगाया जाय। न्यायाधीशने लोकमान्य तिलकसे पूछा कि आपको आरोप मान्य है या नही ? लोकमान्यने स्थिर चित्तसे दृढतापूर्वक अुत्तर दिया कि 'मै दोषी नही हूँ।' सरकारी वकीलने कोर्टके सम्मुख आवश्यक प्रमाण प्रस्तुत किअे। सरकारी ओरियन्टल अनुवादककी गवाही ली गअी। न्यायाधीशने तारीख १४ को तिलकको अपने बचावके लिअे पैरवी करनेको कहा। तिलकने प्रारम्भमे कहा "मुझे बडा हर्ष है कि जिस बैरिस्टरने मेरे पहले अभियोगमे मेरी बहुत अच्छी पैरवीकी थी, अुसी बैरिस्टर न्यायाधीशके सम्मुख मै आज स्वय अपनी पैरवी कर रहा हूँ। मै मँजा हुआ वकील नही हूँ, तो भी अपनी कानूनी जानकारीके अनुसार मै अिस गम्भीर आरोपका अेक सप्ताह तक विवेचन करूँगा। मुझे आशा है कि न्यायाधीश तथा जूरी भी शुद्ध न्यायबुद्धिका परिचय देगे।" आपने कहा कि "पहली बात यह है कि मेरे मराठी लेखोका अंग्रेजी अनुवाद बहुत गलत और भ्रमोत्पादक हुआ है।" तत्पश्चात् तिलकने कअी वाक्योका अनुवाद पढा और सिद्ध किया कि व्याकरण, भाषा, शैली और मुहावरोकी दृष्टिसे वह कितना गलत है। अिस प्रकार पहले दिन लगातार पाँच घण्टे तक अुन्होने पैरवी की। अुस समय सबको अुनके सस्कृत, मराठी तथा अंग्रेजी भाषाओके गम्भीर ज्ञानका परिचय मिला। सरकारी अनुवादकसे अुन्होने अितनी मार्मिक जिरह की कि बेचारेसे अुत्तर देते न बना। अनुवादककी अक्ल गुम-सी हो गअी।

तीसरे दिन चार घण्टे तक तिलकने राजद्रोहकी सविस्तर व्याख्या की। ब्रिटेनके सन् १७८२ के लायबेल अेक्टके अनुसार 'राजद्रोह' की व्याख्या कैसे परिवर्तित हुअी और प्रकाण्ड वक्ता अेव मनीषी बर्क तथा फाक्सने अिसकी कैसी व्याख्या की, आयरलैण्डमे राजद्रोहका स्वरूप क्या माना जाता है,

अित्यादि कानूनी तथ्योके आधार पर अुन्होने यह सिद्ध किया कि वे राजद्रोही नही है ।

चौथे दिन अुन्होने चार घण्टे तक स्टेट (राज्य) और गवर्नमेन्ट (सरकार) की व्याख्या की । कअी राजनीतिज्ञोके ग्रन्थोके प्रमाण प्रस्तुत किअे । तिलककी सर्वतोभिमुखी विद्वत्ताकी प्रशसा होने लगी । पॉचवे दिन पाँच घण्टे तक पैरवी कर आपने कहा कि "मै सरकारमे परिवर्तन कराना चाहता हूँ न कि राज्यका ध्वस । सरकार लोकाभिमुख बनकर लोकहितका कार्य करे तथा लोगोके चुने हुअे प्रतिनिधियोका अुसपर अधिकार हो । अिसके लिअे ही मै लोक-जागृति पैदा कर रहा हूँ । लोक-जागृति कर सरकारमे अनुकूल परिवर्तन करानेकी वैधानिक नीतिके अनुसार ही मैने लेख लिखे है, अतअेव मै राजद्रोहका दोषी नही हो सकता ।" छठे दिन आपने न्यायशास्त्रके अनुसार हेतु, प्रयत्न और परिणाम अित्यादिकी व्याख्या की और अनेक प्रमाण देकर सिद्ध किया कि मेरे लेखोका पाठकोपर अनिष्ट असर नही पडा है । अुन्होने बताया कि जनताके प्रति समाचार-पत्र सम्पादकोका क्या कर्तव्य होता है तथा अुसका अुन्हे किम प्रकार पालन करना चाहिअे । अुन्होने कहा कि "मै जनताकी यथाशक्ति सेवा करना चाहता हूँ न कि राज्य ध्वस करना ।" सातवे दिन चार घण्टे तक पैरवी कर अुन्होने प्रयाग, लाहौर तथा कलकत्ताके अुच्च न्यायालयोमे चलाअे गअे राजद्रोह-अभियोगोके फैसले अुपस्थित किअे । सब लोग आपकी अिस कानूनी जानकारीकी प्रशसा करने लगे । अन्तमे आपने अनेक प्रमाण प्रस्तुत कर दृढतासे कहा कि "मै हिंसात्मक दलका समर्थक नही हूँ यद्यपि क्रान्ति-कारियोकी ज्वलन्त देशभक्तिके प्रति मुझमे आदरकी भावना है ।"

अन्तिम चाह

अन्तिम अर्थात् आठवे दिन आपने केवल अेक ही घण्टे पैरवी की जिसमे जूरियोसे प्रार्थना करते हुअे आपने कहा कि "मै वकील नही हूँ । अपनी क्षुद्र बुद्धिके अनुसार मैने पैरवी की है । हो सकता है कि मेरी

भाषण-शैली सरल तथा नम्र न हो, किन्तु मुझे सन्तोष है कि मुझे जो कुछ भी कहना था वह मैंने यथा-विधि प्रस्तुत किया। मेरी यह प्रार्थना है कि अिंग्लैण्डमे सम्पादकोको जो स्वतन्त्रता दी जाती है वह स्वतन्त्रता आप यहाँ भी सम्पादकोको दे। अँग्रेजोको अपनी सर्वतोभिमुखी स्वतन्त्रतापर गर्व है और अुनका यह कथन है कि भारतवर्षकी भलाअीके लिअे ही वे यहाँ पधारे है। अैसी स्थितिमें मै आशा करता हूँ कि आप स्वतन्त्रताकी परम्परा स्थापित करनेका श्रीगणेश करेगे। मै अपने लिअे कुछ नही चाहता, क्योकि मै अब बावन वर्षका वृद्ध हूँ। मै अपने देशके लिअे लेखन-स्वातत्र्य तथा भाषण स्वातत्र्यकी माँग प्रस्तुत करता हूँ। चन्द वर्षो बाद मै मरूँगा और आप भी। परन्तु यदि आप भारतका अुपकार करेगे तो भविष्यकी कअी पीढियाँ आपके प्रति कृतज्ञ रहेगी। व्यक्ति मरता है, परन्तु देश अमर है। अत. आप जो अुचित समझे वही करे।"

अिसके पश्चात् सरकारी अेडवोकेट–जनरलका लम्बा-चौडा भाषण हुआ। लोकमान्य तिलकने लेखो द्वारा राजनीतिक असन्तोष जागृतकर राजद्रोह कैसे पैदा किया अिसका अुन्होने विवेचन किया। न्यायाधीशोने जूरियोको सक्षेपमें अभियोगोका कानूनी स्वरूप बतलाया और परस्पर परामर्शकर अेक घण्टेके भीतर अपनी राय प्रकट करनेका आदेश दिया। जूरी लोग अेक घण्टे तक अलग बन्द कमरेमे विचार-विमर्शकर अपने-अपने नियत स्थानपर विराजमान हुअे। न्यायाधीशने अुनसे पूछा कि 'आप आपसमें सहमत हुअे या नही।' अुत्तर मिला 'नही'। न्यायाधीशने पूछा, 'आप लोगोंके मतोकी स्थिति क्या है?' अुत्तर मिला, 'सात मतोसे दोषी और दो मतोसे निर्दोषी।' न्यायाधीशने अुनसे फिर अनुरोध किया कि 'वे अेक घण्टे तक फिरसे चर्चा कर सहमत होनेकी चेष्टा कर सकते है।' अुत्तर मिला, 'सबके सहमत होनेकी बिलकुल सम्भावना नही है।' अत. न्यायाधीशने कहा कि "मै जूरियोके बहुमतसे सहमत हूँ अर्थात् तिलक महोदयको राजद्रोही ठहराता हूँ।" यह वाक्य सुनते ही अुच्च न्यायालयके हालमें सन्नाटा छा गया।

कर्मयोगीकी अमर वाणी

हाअीकोर्टका हॉल जनताकी भीडसे ठसाठस भरा था। चीटी भी अिधर-अुधर नही जा सकती थी। दर्शनेच्छुक हजारोकी सख्यामे बाहर खड़े थे। सबके मुखोपर चिन्ता व्याप्त थी। शोक-निहित सन्नाटा चारो ओर छाया था। प्रत्येकको मन-ही-मन चिन्ता हो रही थी कि वृद्ध लोकमान्यको न जाने कौन-सी और कितनी लम्बी सजा दी जाय। अुनपर क्रान्तिकारियोको प्रोत्साहन देनेका भी आरोप लगाया गया था। अैसे नाजुक समय जख्मपर नमक छिडकनेके लिअे सरकारी वकील फिर खडे हुअे और अुन्होने न्यायाधीशको तिलकके पहले राजद्रोहके अभियोगकी याद दिलाअी तथा निवेदन किया कि अुस समयकी शेष छह मासकी सजा तिलकको अब भुगतनी चाहिअे। न्यायाधीशने 'हॉ' कहा। अुधर जनताका हृदय अधिक व्याकुल होने लगा। आघात-पर-आघात हो रहे थे। सामान्य जनताका कोमल हृदय कहॉ तक धैर्य रखता ? प्रत्येकके मुखपर शोक-छाया था। हरअेककी ऑखोसे ऑसू बह रहे थे। न्यायाधीश और जूरी गम्भीर थे। लोकमान्य तिलक स्थितप्रज्ञ जैसे विराजमान थे। तिलकने जनताकी ओर दृष्टि डाली। वे अुद्विग्न हुअे। अितनेमे ही न्यायाधीश दावरने अुनसे पूछा, 'यदि आप कुछ निवेदन करना चाहते हो तो कर सकते है।' तिलककी मनचाही बात हुअी। वे भगवानसे मन-ही-मन प्रार्थना कर रहे थे कि अुन्हे कुछ कहनेको समय मिले। लोकमान्यने केवल दो मिनटमे जनताको अमर अध्यात्मवादका सूत्रमय अुपदेश किया। अुनके अन्तिम शब्द सुननेके लिअे सब दर्शक अत्यन्त आतुर थे। अुनके गम्भीर मुखपर आध्यात्मिक आभा चमकने लगी। आपने पहले जनता जनार्दन और बादमे जूरियो तथा न्यायाधीशको प्रणाम किया। अुस प्रणामकी शान तथा गम्भीरता वर्णनके परे थी। अन्ततोगत्वा आकाशवाणी या देववाणी जैसी गम्भीरवाणी लोकमान्यकी मुखगगोत्रीसे प्रवाहित हुअी—

"Inspite of the Juries' verdict against me, I solemnly declare that I am not guilty. There are higher powers that govern the destinies of man and nation and if it be the wish

of the providence that the cause I stand for should progress by my suffering, I humbly accept it." अर्थात् "यद्यपि ज्यूरियोने मेरे विरुद्ध राय प्रकट की है तो भी मेरी अन्तरात्मा कहती है कि मैं निर्दोष हूँ। मानवी शक्तिसे परे दैवी शक्ति मनुष्य तथा राष्ट्रकी भाग्य-विधात्री है। यदि ओीश्वरकी अिच्छा है कि मेरे स्वतन्त्र रहनेकी अपेक्षा कारागृहमे रहने और कष्ट भोगनेसे मेरा कार्य आगे बढेगा तो अुसको मै सहर्ष स्वीकार करता हूँ।" अुन्होने अिस वक्तव्यसे मदोन्मत्त अँग्रेज सरकारकी व्यग्यभरी आलोचना की और अिस बातका प्रत्यक्ष अुदाहरण अुपस्थित किया कि भयानकसे भयानक शक्तिशाली मानुषी राजसत्ताके सम्मुख भी आध्यात्मवादी पुरुष अपना सिर कभी नही झुकाता। अुन्होने अिस व्यग्य द्वारा जनतापर प्रकट किया कि वे परमेश्वरकी अिच्छासे जेल जा रहे है न कि अँग्रेज सरकारके पाशविक बलसे और अिसका परिणाम देशके लिअे अच्छा ही होगा। स्वामी विवेकानन्दने कहा था—"The Lion when struck to the heart gives out his mightiest roar." अर्थात् वज्राघातसे वनराजसिंह कुत्तेकी भाँति रोता नहीं, अपितु अति भयावह गर्जना करता है। तिलकके बारेमे यही कहा जा सकता है। यह सजीवनी वाणी सुनते ही दर्शकोमे चेतनाकी लहर दौड गअी। शोकका अन्त हुआ और आशा तथा अुत्साहका वातावरण फैल गया।

छह वर्षके काले पानीकी कठोर सजा

रातके साढे नौ बजे थे। न्यायाधीशने बडी गम्भीरतासे तिलककी ओर देखा और फैसलेका निम्नलिखित वाक्य अुन्हे सुनाया "आपको कडी सजा सुनाते समय मुझे दु:ख होता है। परन्तु मुझे भी अपना कर्तव्य पालन करना है। आप अति बुद्धिमान है। आपका जनतापर काफी प्रभाव है। आप भारतके सामर्थ्य-सम्पन्न नेता है। परन्तु आपने अपने लेखो द्वारा जनतामे सरकारके प्रति असन्तोष और अप्रीति प्रसारित तथा जाग्रत कर राजद्रोहका गम्भीर अपराध किया है। आपके लेखोमे जहाँ-तहाँ क्रान्तिकारी दलके प्रति आदरका

भाव दिखाओी देता है । अिससे सिद्ध होता है कि आपके मनमे सरकारके प्रति द्वेष भरा हुआ है । द्वेषभरे लेखोंसे आप देशमे राजद्रोहकी विषाक्त वृत्ति फैलाते हैं । आप जैसा सम्पादक अिस देशके लिअे अभिशाप है । मैं दफा १२४ अ के अनुसार आपको बीस वर्षो तककी काले पानीकी कडी सजा दे सकता हूँ, परन्तु आपकी वृद्धावस्थाको ध्यानमे रखकर मैं आपको केवल छह वर्षोके लिअे कालेपानीकी और १०००) जुर्मानेकी सजा देता हूँ ।" अितना कहकर न्यायाधीश अपने स्थानसे अुठे और चल दिअे । अदालती काररवाओी समाप्त हुओी । जनता लोकमान्य तिलकके दर्शनके लिअे अुमड पडी । लोकमान्यने भी स्मित मुद्रासे सबको प्रणाम किया । पुलिसने तुरन्त भीडको हटाया और तिलकको मोटरमे विठाकर अेक अज्ञात तथा अपरिचित मार्गसे रेल्वे स्टेशन ले गओी ।

स्थितप्रज्ञकी झलक

अुसी रातको ग्यारह वजेके लगभग लोकमान्यको अेक स्पेशल ट्रेनमें वैठा, अगल-वगलमे अँग्रेजी सैनिकोके डब्बे जोडकर, अुन्हे अहमदावाद ले जाया गया । अचरजकी वात यह थी कि अितनी वृद्धावस्थामें अितनी लम्वी और कडी सजा मिलनेपर भी लोकमान्य तिलक रचमात्र चिन्ताग्रस्त नही हुअे । अुनका मन सागरकी भाँति शान्त और निर्विकार था । ज्योही ट्रेन वम्वओीसे चलने लगी त्योही तिलक महाराज सो गअे और जव ट्रेन अहमदावाद स्टेशनपर रुकी तव अुन्हे पुलिस-अधिकारियोने जगाया । अिस प्रकार लगभग दस घण्टे तक सोये । तिलकका कहना था कि वह मेरी सवसे अधिक लम्वी और सुखभरी नीद थी । अुनको कुछ दिनो तक सावरमतीके सेन्ट्रल जेलमे रखा गया, फिर गुप्त रूपमे अँग्रेज सैनिकोके सरक्षणमे व्रह्मदेशके मडाले सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया । वहीं अुन्होने अपनी छह वर्षकी सजा काटी ।

सजाकी अपूर्व प्रतिक्रिया

लोकमान्य सचमुच वडे लोकप्रिय नेता थे । अुस समय अुनके समान लोकप्रिय नेता अन्य कोओी नही था । अिसलिअे अुनको दी गओी सजाकी

समस्त भारतवर्षमें अपूर्व प्रतिक्रिया हुअी। भारतके कोने-कोनेमें हडताल मनाअी गअी। अुनकी फोटोके जुलूस निकाले गअे। सार्वजनिक सभाओंमें सरकारकी घोर भर्त्सना कर लोकमान्यका अभिनन्दन किया गया और अुनके दीर्घ आयु-आरोग्यके लिअे भगवानसे प्रार्थनाअें भी की गअी। विद्यार्थियोंने जहाँ-तहाँ स्कूल बन्द करवाअे और हड़ताल मनाअी। प्रत्येक शहर या गाँवमें दो अथवा तीन दिनो तक बाजार बिलकुल बन्द रहे। सबसे अधिक महत्वकी घटना थी बम्बअीके मिल मजदूरो द्वारा मनाअी गअी छह दिनोकी दीर्घ हडताल। यह अपूर्व हडताल मनाकर मजदूरोने अग्रेज सरकारके प्रति अपना तीव्र असन्तोष प्रकट किया। बम्बअीके या भारतके मजदूरोकी यही पहली राजनीतिक हडताल थी। मजदूरोमें अपूर्व जागृति पैदा हो चुकी थी। अुन्होने लोकमान्यके फोटोका विशाल जुलूस भी निकाला। पुलिसने जुलूस रोका। मजदूर अुत्तेजित हुअे। पुलिस चिढ गअी और अुसने निहत्थे मजदूरोपर लाठी चार्ज किया। परिणाम यह हुआ कि मजदूरोने भी कुछ पत्थर और अीटें पुलिसकी ओर फेंकी और अग्रेज सैनिकोने मजदूरोपर गोलियाँ चलाअी जिसमें लगभग ७५ मजदूरोकी निर्मम तथा निर्दय हत्या हुअी। लदनके 'टाअिम्स' पत्रने अिस घटनापर अुस समय निम्नलिखित मत व्यक्त किया था.—

"Among large sections of people Mr. Tilak enjoys a popularity and wields an influence that no other public man in India can claim to equal."

अर्थात् "लोकमान्यकी लोकप्रियताकी बराबरी भारतमें दूसरा कोअी भी नेता नही कर सकता।" यह सर्वसामान्य सिद्धान्त है कि अपना शत्रु ही अपनी योग्यता अथवा शक्तिका यथार्थ अनुमान लगा सकता है। क्या यह सिद्धान्त लोकमान्यके सम्बन्धमें खरा नही अुतरता ?

तेरहवाँ प्रकरण

कर्मयोगीका कारागृह-वास

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो य. स च मे प्रियः ॥

लोकमान्य तिलक मडालेके कारागारमे लगभग छह वर्षो तक राजवदी रहे । वे जैसे वाहर लोकप्रिय थे वैसे ही अन्दर भी । गुलावका फूल कहीं भी खिले असकी सुगन्ध बनी ही रहती है । भ्रमर असपर लट्टू होते ही हैं । अनेक कार्योमे व्यग्र रहनेके कारण तिलककी दिनचर्या अव्यवस्थित थी । वाहर वे प्राय सूर्योदयके पश्चात् जगते थे । किन्तु जेलमे ब्राह्म मुहूर्त अर्थात् सुबह साढे चार वजे जगने लगे । जगते ही सस्कृत स्तोत्रोका पाठ करते । प्रात.स्मरणके पश्चात् शौचादिसे निवृत्त होते और शुचिर्भूत होकर लगभग डेढ घण्टेकी समाधि लगाते । जेलके वार्डर्स तथा पहरेदार ध्यानस्थ तिलकके दर्शन करनेके लिअे अिकट्ठा होते थे । अेक समय जब आपकी समाधि भग होनेको ही थी अेक पहरेदारने आपके चरण छुअे तब अुन्होने अुसके हाथ पकडे और अुसको अपने जैसे क्षुद्र मानवके नही, परमेश्वरके चरण छूनेका अुपदेश दिया । वे सदा कहते थे कि हम सब विश्वनियताके बच्चे है, अतः हममें भ्रातृभाव होना चाहिअे । अुनकी आत्मौपम्य दृष्टि और अति पवित्र आचरणका प्रभाव अन्य कैदियो तथा जेलके अधिकारियोपर भी पडता था । अिसीलिअे वे तिलकको अवधूत, ऋषि, महात्मा अित्यादि विशेषणोंसे सबोधित करते थे । समाधिके पश्चात् चाय पीकर वे अध्ययन या लेखन-कार्यमें जुट जाते थे । दस बजे स्नान करनेके पश्चात् सध्या तथा मानस पूजामे सलग्न होते थे । वाहरके जीवनमे अुन्हे सन्ध्या या पूजा करते किसीने शायद ही देखा होगा । तब तो बडी मुश्किलसे भोजनके लिअे समय निकाल

पाते थे और भोज्य-पदार्थोकी बिना जानकारी प्राप्त किये तथा बिना स्वाद जाने भोजन समाप्त कर अुठ जाते थे। परन्तु जेलमे शान्त चित्तसे भोजन करने लगे। वे मधुमेहके रोगी थे। अुनका भोजन सत्तूकी तीन या चार रोटियॉ, हरी साक-भाजी और फलोका रस होता था। हॉ, भोजनके पश्चात् सुपाडी चवाना वे कभी नही भूलते थे। सुपाडी चवाना अुनका अेकमेव व्यसन था। यह व्यसन अुनके विद्यार्थी जीवनसे प्रारम्भ होकर कालान्तरमे बराबर बढता गया। अुनके कमरे तथा आलोमे सुपाडी और अुसे काटनेके लिअे सरौता पडा ही रहता था। अेक घण्टे बाद पुन. लिखने और पढनेमे जुट जाते थे। लगभग साढे तीन बजे शरबत या दूध पीकर कैदी रसोअियो, पहरेदारो और वार्डरसे दिल खोलकर बातचीत करते। अुनके प्रश्नोके अुत्तर देते और सशय या भ्रम दूर करते। वे अुन्हे रामायण और महाभारतके किस्से सुनाते, अेव अपना तथा अपने साथियोका चित्त प्रसन्न कर पुन. अध्ययनमे जुट जाते। दो-ढाअी घण्टोके मानसिक परिश्रमके बाद नीचे अुतरकर घूमनेका व्यायाम करते। दूसरी मञ्जिलपर तीन कमरोकी बैरकमे अुनका निवास था और नीचे १३० फीट लम्बा और ५० फीट चौडा अहाता था। अुसकी चहारदीवारी अूंची थी। आधे घण्टेतक चहारदीवारीके अन्दर ही घूमते थे। पश्चात् भोजन या फलहार करते थे। रातमे लालटेन न होनेसे, क्योकि जेलके नियमोके अनुसार कैदीको लालटेन नही दी जाती, वे पढ या लिख नही सकते थे। अतअेव तीन घण्टे तक चिन्तन या मननमें मग्न रहते थे। शय्यापर लेटनेके पूर्व पुन ध्यानस्थ होते और तत्पश्चात् नाम-संकीर्तन करते-करते निद्रावश हो जाते। अुनकी समस्त दिनचर्या नियमित तथा परम पवित्र थी।

प्रौढ़ ग्रन्थालय

तिलकका विद्याव्यासग अुनके सुपाडी चवानेके व्यसनसे भी अधिक तीव्र था। जैसे वे प्रतिदिन दो-तीन सुपाडी चबा डालते थे, वैसे ही छोटे-मोटे दो-तीन ग्रन्थोको भी पचा डालते थे। मण्डालेमें पहुँचनेके पश्चात् अपील

करनेपर बम्बअी अुच्च न्यायालयने अुनके सश्रम कारावासको बिना श्रमके कैदमें बदल दिया था। अतअेव जेलके नियमानुसार वे जितने चाहे राजनीतिके ग्रन्थ घरसे मँगवा सकते थे। अुनका गम्भीर ग्रन्थालय विभिन्न गम्भीर शास्त्रीय विषयोके लगभग पाँच सौ ग्रन्थोंसे परिपूर्ण था। अुसमे वेद, वेदाँग, भाष्य, अुपनिषद्, भगवद्गीता और अुसकी सब टीकाअें, ब्रह्मसूत्र, कअी स्मृतियाँ, अँग्रेजी विश्वकोश, सुकरात, प्लेटो, हीगेल, बेवर, नीत्से, बर्गसाँ, मिल्स, स्पेंसर, बेकन अित्यादि पश्चिमी दार्शनिको तथा ज्योतिर्गणित, भूस्तर-शास्त्र, व्याकरण अेव भाषाशास्त्र अित्यादिके ग्रन्थ समाविष्ट थे। वे सचमुच अन्वेषक शास्त्रज्ञ थे। जैसे बालक क्रीडामे रस लेता है, वैसे ही वे शास्त्राध्ययनमे रस लेते थे। वे कोअी अैसा ग्रन्थ लिखनेके लिअे व्याकुल थे जो ससारका बडा अुपकार कर सके तथा संसारके श्रेष्ठ अमर ग्रन्थोमें जिसे सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त हो। चन्द वर्षों बाद अुनके प्रयत्न फूले-फले। अर्थात् अुनके द्वारा 'भगवद्गीता रहस्य' अथवा 'कर्मयोगशास्त्र' की सृष्टि हुअी। यह बडे सयोगकी बात है कि गीताके अुपदेशक भगवान् श्रीकृष्णका जन्म बदी-गृहमे हुआ था और गीतापर लिखे गअे आधुनिकतम श्रेष्ठ भाष्य अर्थात् 'कर्मयोगशास्त्र' की रचना भी कारागारमें ही हुअी।

कअी भाषाओंके मर्मज्ञ बने

मडालेके कारागारमें लोकमान्य तिलकने जर्मन, फ्रेंच और पाली भाषाओका स्वय अध्ययन किया। वे संस्कृतके पडित थे, अत. अुनके लिअे पाली सीखना अत्यन्त सरल था। परन्तु पालीका गहरा अध्ययन अुन्होने बौद्ध धर्मके मूल ग्रन्थोका सशोधन करनेकी पैनी दृष्टिसे किया। अिसी प्रकार लोकमान्यने जर्मन भाषाका भी गहन अध्ययन किया। अुन्होने महान् दार्शनिक बेवर और नित्सेके ग्रथ पढे। फ्रासीसी तत्वज्ञोंके ग्रन्थोका भी गहन अध्ययन किया। अितनी वृद्धावस्थामें, तीन अपरिचित भाषाओका ज्ञान सम्पादन करना कोअी मामूली बात नही थी, परन्तु लोकमान्य तिलक कारागृह हो मे अनेक भाषाओके शास्त्रविद् तथा श्रेष्ठ ग्रन्थकार बने।

अेक पत्रमें कर्मयोगीका आत्मचरित्र

विदर्भ अमरावतीके सुविख्यात वकील और नेता श्रीमान दादा साहब खापर्डे तिलकके परम मित्र थे । आप तिलकसे बडे थे अिसलिअे तिलक आपको दादा साहब कहते थे । दादा साहबका भी तिलकपर अनुज-सा प्रेम था । दादा साहब अपनी कामधेनु जैसी वकालत त्यागकर प्रिवी कौन्सिलमें तिलककी अपील दायर करनेके लिअे लन्दन गअे । वहाँ लगातार दो वर्षो तक रहे । अपीलमें सजा कायम रही । दादा साहबने मित्रकी रिहाअीके लिअे कुछ अुठा न रखा । वे निराश हुअे । अन्ततोगत्वा मित्रकी रोगग्रस्त अवस्था देखकर पसीजे और अुन्होने तिलकको अैसा पत्र लिखा कि यदि आपकी अिच्छा हो तो मैं कुछ शर्तोंपर आपकी मुक्ति करवा सकता हूँ । यह पत्र लोकमान्य तिलकको मण्डाले केन्द्रीय जेलमें २८ मअीको मिला । आपने दूसरे ही दिन पत्रका स्वाभिमानपूर्ण ओजस्वी अुत्तर दिया जिसमें आपके अलौकिक चरित्रका रहस्य भरा है । आपने लिखा कि :—

मण्डाले सेन्ट्रल जेल,
२९ जून १९०९

मेरे प्रिय दादा साहब,

मैं अपमानकारी शर्तोंको स्वीकार कर कारावाससे मुक्त नही होना चाहता । अतअेव मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप मित्र-प्रेमसे विवश होकर अिस झझटमें न पडें । मेरी राय है कि कारावाससे मुक्त होनेके पश्चात् मैं अन्य स्वतन्त्र नागरिकोंके समान रह सकूँ । अभी मेरी सजाका अेक वर्ष व्यतीत हो चुका है और मुझे पूरी आशा है कि पाँच वर्षोके बाद आप लोगोके बीच स्वतन्त्र नागरिकके रूपमें अुपस्थित हूँगा । क्या आपकी यह अिच्छा है कि सरकार द्वारा प्रस्तुत की गअी शर्तोंको स्वीकार कर मैं अपनी सार्वजनिक तथा राजनैतिक आत्महत्या करवाँ लूँ ? अब मेरी अवस्था ५३ वर्षकी है और मुझे लगता है कि अधिक-से-अधिक दस वर्ष और जीवित रहूँगा । यदि मैं आपकी अिच्छानुसार शेष जीवनको सरकार द्वारा अुपस्थित

की गअी शर्तो पर मुक्त कराकर पाँच वर्ष तक और सार्वजनिक क्षेत्रमें कार्य कर सकूं तो यह समय मुझे सार्वजनिक या राजनैतिक दृष्टिसे मरे हुअे व्यक्तिके समान बदनामीके साथ व्यतीत करना पडेगा। सक्षेपमें कहता हूँ कि मै अैसा अपमानित जीवन बिलकुल पसन्द नही करता। यह ठीक है कि मेरा कार्य-क्षेत्र केवल राजनीति तक सीमित नही है और मै कुछ साहित्यिक कार्य कर सकता हूँ। मैंने अिसपर अच्छी तरहसे विचार किया है और मुझे अपनेको अिस प्रकार मुक्त कराना अुचित नही जान पडता। अैसा अपमानित जीवन स्वीकार कर मैं अब तकके किये-धरेपर पानी फेर दूंगा। आप अच्छी तरह जानते हैं कि अब तक मैं केवल अपना निजी स्वार्थ या अपने परिवारके कार्यमें ही व्यस्त नही रहा, अपितु मैंने लोक-सेवा या देश-सेवा करना अपना परम धर्म माना। यदि मै अपने व्यक्तिगत सुखके लिअे सरकारकी शर्ते स्वीकार करूँ तो अुसका भारतके सार्वजनिक जीवनपर कितना भयकर प्रभाव पडेगा ?

प्रिय दादा साहब, थिओसफिस्ट होनेके कारण आप परमेश्वरकी अगम्य शक्तिमे विश्वास रखते होगे और मुझसे अिस बातमे सहमत होगे कि परमेश्वरकी लीलासे कदाचित अगले पाँच वर्षोमे अैसी अनपेक्षित परिस्थिति निर्माण हो कि अनायास ही मेरी मुक्ति सम्भव हो जाय। यदि अैसा न हुआ तो भी मै स्वय भयकर-से-भयकर परिस्थितिका मुकाबला करनेके लिअे सहर्ष कटिबद्ध हूँ। आपने अपने मित्रके प्रति अपना कर्तव्य अच्छी तरहसे निभाया। भगवद्गीताका सिद्धान्त है कि कर्तव्य करना ही मानवका अधिकार है न कि अुसके फलकी प्राप्ति का। अिससे अधिक समुचित तत्व या सिद्धान्तका कथन कर मैं यह पत्र समाप्त नही कर सकता। अतीतमें अनेक महापुरुषोको अपने सिद्धान्तोके लिअे यातनाअें सहन करनी पडी हैं। अत, यदि मेरा भाग्य भी अुनके समान ही हो तो अुसे कौन टाल सकता है ?

भवदीय,

बालगगाधर तिलक

लोकमान्य तिलकने यह पत्र अतीव विषम, भयावह अेव निराशाजनक परिस्थितिमे लिखा था। अिसके द्वारा लोकमान्य तिलकके अुदार मनकी अूंचाअीका पता लगता है। अुत्साहजनक तथा आशापूर्ण परिस्थितिमें अूंचे आदर्शके विषयमे लिखना या वोलना सहज है, किन्तु प्रतिकूल परिस्थितिमें अैसा करना अलौकिक ही कहा जायगा।

धर्मपत्नीकी मृत्यु

श्रीमती सत्यभामा बाअी तिलक वडी कर्मठ और धर्मपरायणा महिला थी। पतिके जेल जानेके वाद कुटुम्बका सारा भार अुन्होने स्वय सँभाल लिया, परन्तु वे दिन-रात पतिके स्वास्थ्यके लिअे चिन्ताग्रस्त रहती थी। अुनके स्वास्थ्यपर चिन्ताका वुरा प्रभाव पडा और ७-६-१९१२ को अुनकी दुखद मृत्यु हो गअी। अुनकी अस्वस्थताकी जानकारी लोकमान्यको पहलेसे नही थी। कारण, व्यवहारनिपुण सत्यभामा बाअीने अुन्हे कभी अपने स्वास्थ्यके सम्वन्धमे कुछ नही लिखा क्योकि अिससे लोकमान्य जेलमे अधिक चिन्ताग्रस्त और दु खी होते। हिन्दू पतिव्रता अपने प्राणोकी अपेक्षा पतिके सुखकी अधिक चिन्ता करती है। अुनकी मृत्युका सवाद तिलकको तार द्वारा मिला। तार मिलते ही अुनके मनमे जो शोकयुक्त प्रतिक्रिया हुअी, अुसका वर्णन अुन्होने स्वय अपने पुत्रोको भेजे पत्रमे अिस प्रकार किया है --

"तार मिला। मेरे मनपर कठोर आघात हुआ। वास्तवमे आपत्ति-योका मुकावला मैं शान्त चित्तसे करता हूँ, परन्तु अिस दुखद समाचारने मुझे व्याकुल कर दिया। हिन्दू पतिव्रताकी दृष्टिसे यह वहुत अच्छी घटना हुअी, परन्तु मुझे अिस वातका अत्यधिक दुख है कि तुम्हारी माताकी मृत्युके समय मै लगभग तीन हजार मीलकी दूरीपर जेलमे था। मुझे अिस दुर्घटनाकी भयावह आशका पहलेसे ही सताती थी। भावी कौन टाल सकता है? मेरी अनुपस्थितिमे माताकी मृत्युने तुम पुत्र-पुत्रिओको वहुत ही दुखी किया होगा, परन्तु अपने आपको धैर्यसे सँभालना चाहिअे ताकि अध्ययनमें व्यतिक्रम न हो। तुमको यह वात भली-भाँति स्मरण रखना चाहिअे कि जव मेरी

माताकी मृत्यु हुअी थी तव मेरी अवस्था तुमसे भी कम थी । अैसी आपत्ति-योमे मानवको स्वावलम्बनका सहारा लेना चाहिअे । शोक या दु.ख मनानेमें व्यर्थ समय नही वरवाद करना चाहिअे । जो कुछ होता है वह भगवानकी कृपासे होता है । अुसे धैर्यसे सहना ही पुरुषार्थ है ।"

लोकमान्य तिलकने अिस पत्रमें अपने जीवनका तत्व भर दिया था । अुसमे भगवद्गीताके तत्वज्ञानका मर्म भरा था । पत्रका अुनके पुत्रोपर अपेक्षित प्रभाव भी पडा ।

मडाले जेलसे अुन्होने लगभग पचास पत्र लिखे क्योकि अुन्हे महीनेमें अेक पत्र भेजनेकी कानूनी सुविधा मिली थी । अिन पत्रोमें अुनकी अुच्च-न्यायालय तथा प्रिवी कौसिलमें दायर की गयी अपीलोंके बारेमें भी बहुत-कुछ विवरण था । अिसके अतिरिक्त अुनमे "केसरी" और "मराठा" के सचालन सम्बन्धी सामयिक सुझाव, नाअी महाराजका फौजदारी अभियोग, महाराजा शिवाजी-स्मारक-निधि और पुत्र-पुत्रियोके *अध्ययन सम्बन्धी* सुझाव भी समाविष्ट रहते थे । वे राजनैतिक वन्दी थे अिसलिअे राजनैतिक विषयोपर कुछ नही लिख सकते थे, परन्तु अुनके अन्य अैतिहासिक, सास्कृतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक कार्योंका क्षेत्र भी बहुत विशाल था जिनके सम्बन्धमें भी लिखा करते थे । दूरस्थ मडाले जेलमें भी अुन्हे सामाजिक कार्योंकी चिन्ता लगी रहती थी और वाहरके कार्यकर्ता अुनके पथ-प्रदर्शनकी बुरी तरहसे आवश्यकता अनुभव करते थे । अेक सवाददाताने लिखा था—"Lokmanya Tilak was conspicuous by his absence" अर्थात् "लोकमान्यकी अनुपस्थिति अधिक खटकनेवाली वात थी ।"

कअी किताबें लिखनेकी अिच्छा

लोकमान्य तिलककी डायरी पढनेसे पता चलता है कि मडाले-जेलमें 'गीतारहस्य' के अलावा आपका विचार निम्नलिखित अन्य विषयोपर भी छोटी मोटी पुस्तके तथा प्रौढ निवन्ध लिखनेका था । अिस सूचीमें आपकी सर्वतोभिमुखी प्रतिभाकी झलक दिखाअी देती है :—

(१) हिन्दू धर्मका अितिहास ।
(२) भारतीय राष्ट्रीयता ।
(३) शकराचार्यका दर्शन ।
(४) भारतके रामायण-कालके पूर्वका अितिहास ।
(५) हिन्दू (ला) कानून विधि ।
(६) म शिवाजीकी जीवनी ।
(७) खालडीया और भारत ।
(८) Principles of Infinitesimal Calculus.
(गणितशास्त्र विषयक)

राजनीति विषयक

(१) प्रान्तीय शासन ।
(२) हिन्दू राज्य और साम्राज्य ।
(३) मुसलमानोका भारतमें शासन ।
(४) मराठा साम्राज्य तथा सिख सत्ताका ह्रास ।
(५) ब्रिटेनका भारतपर आक्रमण ।
(६) भारतके राजनीतिक सुधार ।
(७) सभ्यता विषयक गम्भीर चिन्तन । अित्यादि ।

अचानक कारामुक्ति

सरकारने अेका-अेक ८ जून १९१४ को लोकमान्य तिलकको जहाजपर सवार कराकर मद्रास भेज दिया । वे अंग्रेज सैनिकोंके सरक्षणमें अत्यन्त गुप्त रूपसे मद्राससे पूना पहुँचाअे गअे । रातको दो बजे अँग्रेज सैनिकोसे घिरे हुअे अपने घरके दरवाजेपर अेका-अेक अुपस्थित हुअे । पुलिस अधिकारियोंने घरके पहरेदारको जगाया और जोर देकर कहा कि तेरे मालिक मि. तिलक आ गअे हैं, अुन्हे अन्दर जाने दे । बेचारा पहरेदार घबडा गया । कृश तथा क्षीण तिलकको पहचान नही सका । कुछ समय तक तो

सन्न-सा रह गया। अिस प्रकार छह वर्षोंके बाद लोकमान्यने पुन. अपने गृहमें प्रवेश किया। सरकारने यह कारवाअी अत्यधिक गुप्त रूपसे की थी, क्योंकि वह जनताको तिलक महाराजका स्वागत करनेका अवसर नही देना चाहती थी। परन्तु मुर्गेको डलियामे वन्द करनेसे सूरजका अुदय नहीं रोका जा सकता। लोकमान्यके आगमनका समाचार वायु-वेगसे फैल गया। तत्काल हो हजारो दर्शक अेकत्र हुअे और अुनके चरण छूने लगे। पूनामे आनन्दकी लहरे प्रवाहित होने लगी। दूसरे दिन दीपोत्सव मनाया गया और विशाल जुलूस निकालकर अेक विराट् सभामे अुनका हार्दिक स्वागत किया गया।

चौदहवाँ प्रकरण

आर्ष ग्रन्थकार

जयन्ति ते सुकृतिनो विचक्षण ग्रन्थकाराः ।
नास्ति येषा यशः काये जरामरणजं भयम् ।।

लोकमान्य सदा कहते थे कि मेरी अिच्छा कालेजमे गणितका प्रोफेसर वनकर शास्त्रीय ग्रन्थोकी रचना करनेकी है, परन्तु देशकी विषम परिस्थिति और दुर्दशाने मुझे विवश कर राजनीतिके क्षेत्रमें खीच रखा है। सचमुच लोकमान्य तिलकके आनन्दका स्वाभाविक स्रोत विद्याव्यासग ही था। अनेक बार जब अुनके बरामदेमे राजनीतिक वाद-विवाद तीव्रता तथा अूँचे स्वरमें होते रहते, तब वे अपने कमरेमे अकेले बैठे किसी शास्त्रीय-ग्रन्थके अध्ययनमें मग्न पाअे जाते। जैसे ब्रिटेनके भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री और विख्यात राजनीतिज्ञ ग्लैडस्टन अवकाश प्राप्त होते ही ग्रीस अर्थात् यूनान आदिके अति प्राचीन अैतिहासिक ग्रन्थोके अध्ययनमें डूब जाते थे, वैसे ही तिलक ज्ञान-प्राप्तिके लिअे बेचैन रहते थे। अपनी अिस स्वाभाविक प्रवृत्तिका सवर्द्धन अुन्होने भली-भाँति किया। विशेषता यह थी कि अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तिका विकास करते हुअे भी वे देशके अुपकारमे रत रहा रहते थे, समाजका हित करते थे। ग्रन्थकार वे अेकाअेक नही बने। कअी वर्षो तक सफल निबन्धकार तथा सम्पादक रहनेके पश्चात ही ग्रन्थकारके रूपमे वे प्रसिद्ध हुअे।

निबन्ध-लेखक कैसे बने ?

सन् १८८१ की बात है। न्यू अिंग्लिश स्कूलके अध्यापकोंने 'केसरी' तथा 'मराठा' समाचार-पत्रोका प्रकाशन करना निश्चित किया। श्री विष्णु-शास्त्री चिपलूणकरने श्री तिलक तथा श्री आगरकरके नाम सम्पादक-पदोके

लिअे प्रस्तावित किअे । परन्तु दोनो ही हिचकिचाने लगे क्योकि वे लेखन-कार्यसे पूर्णतया अनभिज्ञ थे । चिपलूणकरने अिन लोगोंसे अिसका कारण पूछा । दोनोंने डरते हुअे परन्तु नम्रताके साथ अुत्तर दिया कि "हम नही जानते कैसे लिखे और क्या लिखें ?" शास्त्रीजीने आवेशमें आकर अुनसे पूछा "क्या तुम लोगोके हृदयमें देश-हितके लिअे घुटन है ?" सरल हृदय युवकोने तुरन्त अुत्तर दिया, "हाँ, देशके लिअे हमारे हृदयमें घुटन है ।" शास्त्रीजीने शान्त चित्तसे कहा, "तब तो तुम अच्छी तरहसे लिख सकोगे । हृदयकी बेचैनी ही शब्दोको जन्म देती है, शब्द बेचैनीको नही पैदा करते । यह बेचैनी ही तुम्हे यशस्वी निबन्ध-लेखक बनायेगी ।" शास्त्रीजीका यह प्रेरक अुपदेश सुनकर तिलकको आत्मविश्वासकी अनुभूति हुअी और अुन्होने तुरन्त सम्पादक होना स्वीकार कर लिया । आगे चलकर सम्पादकके रूपमें अुन्होने मराठीका निबन्ध-साहित्य बहुत सम्पन्न तथा प्रौढ बनाया । वे मराठीके प्रतिष्ठित प्रौढ निबन्ध-लेखक माने जाते हैं । लोक-जागरणकी तीव्र अत्कठा, पाडित्य-युक्त शैली, सुभाषितोका समुचित तथा मार्मिक प्रयोग, स्वपक्षका तर्कयुक्त मडन, परपक्षका खडन, ओजस्वी तथा प्रभावशाली किन्तु सरल और अनलकृत भाषा शैली अित्यादि अुनके निबन्धोकी विशेषता है । आपने 'केसरी' में सैंकडो विषयोपर अुद्बोधक तथा रोचक निबन्ध लिखे, जिनमें राजनीति, चरित्र, काव्य, भाषाशास्त्र, ज्योतिष, गणित, शिक्षा और पुरातत्व अित्यादि विषयोका यथार्थ समावेश था । आपने ज्ञान-प्रचार तथा लोक-जागरण-पक्षको कला-विकास अेव लोक-रजन-पक्षकी अपेक्षा पुष्ट अधिक बनाया । आपके निबन्धोंके शीर्षक बडे आकर्षक तथा व्यग्यपूर्ण होते थे । जैसे—'प्रिन्सिपल शिशुपाल या पशुपाल ?', 'जनाव देहली तो बहुत दूर है', 'सवेरा हुआ परन्तु सूरज कहाँ ?', 'नअी गिल्ली नया खेल', 'कैसे ये हमारे गुरु ?', 'और क्या सरकार पगली बनी है ?' अित्यादि । आप शब्द या रचना-सौन्दर्यकी अपेक्षा विचार-सौन्दर्य या भाव-सौन्दर्यकी ओर अधिक ध्यान देते थे । आपके निबन्धोमें भावों और अनुभूतियोका अनूठा समन्वय दिखाअी देता है । संक्षेपमें आपकी कथनी तथा करनीमें जो अेकता तथा शुद्धता पाअी जाती

है, वही आपके निवन्ध-साहित्यकी आतमा है। शैली लेखकके व्यक्तित्वकी दिग्दर्शिका है, (स्टाअिल अिज दी मैन) यह सिद्धान्त लोकमान्यके सम्बन्धमें यथार्थ प्रतीत होता है। गम्भीर तथा प्रौढ निवन्धोकी सृष्टि करनेके पश्चात् लोकमान्य ग्रन्थ-रचनाकी ओर मुड़े।

'ओरायन' या 'वेदकाल निर्णय'

सन् १८९० में लोकमान्य तिलकने प्राच्यविद्याके महापण्डित डा० मैक्समूलरको लिखा था कि सार्वजनिक कार्योंसे अवसर मिलते ही मैं प्राचीन वैदिक वाङ्मयके अध्ययन तथा सशोधनमें जुट जाअूँगा। लोकमान्यके पूज्य पिताने ही अपने पुत्रके मनमें वेदोके प्रति श्रद्धा अुत्पन्न कर दी थी और वह श्रद्धा वाल्यावस्थासे बरावर वढती ही गअी। सन् १८९१ में आपने "वेदकाल-निर्णय" पर तीन खोजपूर्ण भाषण दिअे। अुनमेंसे अेक भाषण डेक्कन कालेजके वार्षिक-सम्मेलनमें दिया गया था। तिलकका आत्मविश्वास बढा और अुत्साह दूना हुआ, क्योकि आपके विद्वान् प्राध्यापकोने आपकी अन्वेषण-क्षमताकी वहुत प्रशसा की। सन् १८९३ में अधिक गहरा अन्वेषण कर आपने "ओरायन" याने "वेदकाल निर्णय" नामके ग्रन्थकी रचना समाप्त की और ग्रन्थ अँग्रेजीमें प्रकाशित हुआ। अिसी वर्ष "ओरायन" ग्रन्थका साराश ओरियन्टल कॉंग्रेस लन्दन अधिवेशनकी रिपोर्टमें प्रकाशित हुआ।

अिससे अिस ग्रन्थका महत्व शीघ्र वढ गया। ग्रन्थकी भाषा अँग्रेजी होनेके कारण पश्चिमी जगत्में अुसका तुरन्त आदर हुआ और वह पश्चिमी प्रकाण्ड पण्डितोकी, जिनमें डा० मैक्समूलर भी थे, प्रशसाका भाजन वना। लोकमान्यने अिस ग्रन्थमें वेदोके समय पर अभिनव प्रकाश डाला। कअी पश्चिमी प्रकाण्ड अन्वेपक अिस तेजस्वी प्रकाशसे चकित हो गअे, क्योकि अुससे अुनके अब तकके निर्णय निरर्थक और पूर्णतया भ्रमोत्पादक सिद्ध हुअे। लोकमान्य तिलक अेक प्रज्ञ तथा अन्वेषक ग्रन्थकारके रूपमें ससारके सम्मुख आअे। भारतवर्षके आधुनिक विद्वानोने आपकी अन्वेषक-वुद्धिका अभिनन्दन किया। ज्योतिर्गणितज्ञोने आपपर फूलोकी वर्षा की और आपके ज्योतिर्गणित

सम्बन्धी अन्वेषणोपर गर्व करने लगे। वे भारतीय सस्कृतिके अभिमानी फूले नही समाये, क्योकि अपनी अनूठी अन्वेषणा-क्षमतासे लोकमान्यने वेदोकी अुत्पत्ति ससारमे प्राचीनतम सिद्ध कर दी।

पश्चिमी विद्वानोने, जिनमें डा० मैक्समूलर तथा डा० हो प्रमुख थे, वेदोके कालनिर्णयके सम्बन्धमे दो साधनोका व्यवहार किया था। अेक साधन ज्योतिषका था और दूसरा भाषाका। अुन्होने भाषाके साधनको ही ज्योतिषकी अपेक्षा बहुत अधिक महत्व दिया था। अुनकी धारणा थी कि ज्योतिषका साधन अनिश्चित है और वेदोके कालमें 'सपात', 'अयन' अित्यादि ज्योतिषशास्त्रकी पारिभाषिक सज्ञाओकी यथार्थ जानकारी भारतीयो-को होना स्वाभाविक नही। अुनकी रायमे अितने प्राचीनकालमे भारतमे ज्योतिष-शास्त्रका विकास नही हुआ था। वे समझते थे कि अिस शास्त्रमे भारत पिछडा हुआ था। अत, भाषाके विकासके अनुसार डा० मैक्समूलरने वेदोका रचना-काल चार खण्डोमे विभाजित किया। जैसे छन्दकाल, मन्त्र-काल, ब्राह्मण-काल और सूत्र-काल। अुन्होने प्रत्येक कालकी अवधि दो सौ वर्षोकी निश्चित की। अुन्होने बताया कि महात्मा बुद्धके ८०० वर्ष पूर्व वेदोकी सृष्टि हुअी थी। डा० हो ने प्रत्येक काल-खण्ड ५०० वर्षोका मानकर वेदोकी सृष्टि अीसा २४०० वर्ष पूर्व बतलाअी। हाँ, जैकोबीकी यह धारणा अवश्य थी कि अीसासे लगभग ५००० वर्ष पूर्व वेदोकी रचना हुअी होगी। परन्तु साधन या प्रमाणोके अभावसे वे अपना यह निर्णय सिद्ध नही कर पाअे थे। जैकोबी पश्चिमी विद्वानोमे अपवाद थे। लोकमान्य तिलकको अुपरि-निर्दिष्ट विद्वानोका निर्णय खटका क्योकि अुस निर्णयसे भारतीय सस्कृति या सभ्यता यूनानी, अिजिप्सियन और आल्डियन सभ्यताओकी अपेक्षा अर्वाचीन ठहरती थी। लोकमान्यने पश्चिमी विद्वानोकी चुनौती स्वीकार की और ज्योतिर्गणित-शास्त्र तथा ऋग्वेदकी ऋचाओसे अैसे-अैसे प्रमाण प्रस्तुत किअे कि आपके निर्णयको भ्रामक सिद्ध करना पश्चिमी विद्वानोके लिअे असम्भव हो गया। वेदाग ज्योतिषके आधारपर आपने वेदोका काल अीसाके ४००० वर्ष पूर्व सिद्ध किया। आपने ग्रीक 'ओरायन' सज्ञाका स्रोत वैदिक 'आग्रायण'

सज्ञा वताओी अेवं प्रमाणो द्वारा सिद्ध किया कि भारतमे वैदिककालमे ज्योतिष-सम्वन्धी ज्ञानका कितना और कैसा विकास हुआ था। ऋग्वेदकी अनेक ऋचाओ तथा सूक्तियोका गूढ अर्थ कर आपने अपने निर्णयका प्रवल मण्डन किया। ऋग्वेदमें वसन्त सपात मृगशीर्ष (आग्रहायणी) अथवा ग्रीक औरायन नक्षत्रका अुल्लेख वता कर कालसूचक सारिणी अिस प्रकार वनाअी —

अदितिकाल	ओीसापूर्व ६००० से ४०००	पुनर्वसु वसत सपात मृगशीर्षमे जानेतक।
मृगशीर्षकाल	ओीसापूर्व ४००० से २५००	वसन्त सम्पात मृगशीर्षसे कृतिकामे आनेतक।
कृतिकाकाल	ओीसापूर्व २५०० से १४००	वसन्त सम्पात कृतिकासे भरणी नक्षत्र समीप आनेतक वेदाग ज्योतिष तक।

लोकमान्यकी अभिनव खोजसे पश्चिमी विद्वानोमे सनसनी फैल गअी। प्रो. मैक्समूलर, प्रो व्लूम फील्ड (अमेरिका), प्रो. वेवर (जर्मनी), प्रो व्हिटने तथा प्रो. ओ ह्यूम अित्यादि विद्वानोने मतभेद होते हुअे भी लोकमान्यका हार्दिक अभिनन्दन किया। डा मैक्समूलर अिस ग्रन्थके कारण लोकमान्यकी प्रतिभापर अितने लट्टू हुअे कि सन् १८९७ मे लोकमान्यको जेल-मुक्त करानेके लिअे आपने व्रिटिश सरकारपर दवाव डाला और अुनके प्रयत्नोका फल यह हुआ कि लोकमान्य निर्धारित समयसे छह महीने पूर्व मुक्त कर दिअे गअे। अिस ग्रन्थकी सफलतासे लोकमान्यका अुत्साह भी वढा और वे भौतिक शास्त्रोके आधारपर भारतीय सस्कृतिकी प्राचीनता तथा श्रेष्ठता सिद्ध करनेके लिअे सचेष्ट हुअे।

आर्योका मूल-स्थान

वास्तवमे "वेदकाल-निर्णय" और "आर्योका मूल स्थान" ये दो ग्रन्थ जुडवाँ वच्चेके समान हैं। साथ-साथ अुत्पन्न हुअे दो वच्चोमें जैसी समानता या सादृश्य दिखाअी पडता है, वैसा ही अिनमें है। दोनोंके प्रतिपादनका

विषय अेक ही है। केवल साधन और शैलीमे भिन्नता है। पहलेमें वेदोकी प्राचीनता ज्योतिपशास्त्रके आधारपर सिद्ध की गअी तो दूसरेमें भौतिक-शास्त्र और भूगर्भ-शास्त्रके दृश्य प्रमाणोके आधारपर आर्योंके मूल-स्थानका निर्णय किया गया है। तिलक गणित और ज्योतिर्गणितशास्त्रके विशेषज्ञ थे। पहले वे भूगर्भशास्त्रसे बिल्कुल अनभिज्ञ थे। परन्तु अुनकी प्रतिभा अद्वितीय थी। जिस नअे विषय अथवा शास्त्रकी पढाअी प्रारम्भ करते अुसमें अल्पकालमे ही निपुणता सम्पादन कर लेते। कवि कुलगुरु कालिदास अपनी सर्वोत्कृष्ट नाटचकृति 'अभिज्ञान शकुन्तल'में कहते हैं–"न खलु धीमता कश्चिद्विषयोनाम" यानी बुद्धिमानोके लिअे कोअी भी विषय ग्रहण करना कठिन नही। अतअेव आपने भूगर्भशास्त्रके पचासो ग्रन्थोका अध्ययन किया। प्रोफेसरोंसे विचार-विमर्ष किया। तीन वर्ष तक अिस विषयके अध्ययन के लिअे पागल-से जुटे रहे। अन्ततोगत्वा अधिकार प्राप्त कर आत्मविश्वाससे प्रेरित हो आपने वेदोकी कअी ऋचाओका भूगर्भशास्त्रानुकूल अर्थ प्रस्थापित कर यह सिद्ध किया कि आर्योंका-मूलस्थान अुत्तर ध्रुवका प्रदेश था। अिस ग्रन्थके प्रथम तीन प्रकरणोमें आपने भूगर्भ-शास्त्रकी दृष्टिसे वेदोकी ऋचाओका अर्थ किया और सप्रमाण सिद्ध किया कि अीसासे ६००० वर्ष पूर्व आर्य अुत्तरी ध्रुवमें, या अुसके निकट रहते थे क्योकि वेदकी कअी ऋचाओमें अुत्तरी ध्रुव-प्रदेशकी प्राकृतिक सुन्दरताका यथातथ्य वर्णन है। अिस ग्रन्थमें १३ प्रकरण हैं। चौथे प्रकरणमें विवेचन किया गया है कि ऋग्वेदमें देवका अेक दिन मानवके छह मासका होता है और अेक रात छह मासकी। अितने दीर्घ रात अेव दिन केवल ध्रुव-प्रदेशमें ही होते हैं। अिसलिअे देवोका निवास अुत्तर ध्रुवके सन्निकट ही होना चाहिअे। सक्षेपमें आपने अनेक प्रमाणोंसे सिद्ध किया कि आर्योंका मूल निवास अीसासे ५००० वर्ष पूर्व अुत्तरी ध्रुव-प्रदेशमें था।

लोकमान्य तिलक की सस्कृति-निष्ठा तथा देशभक्तिकी भावना अत्यन्त प्रबल थी। अपनी प्राचीन सम्पन्न सस्कृतिपर अुनको अत्यन्त अभिमान था।

अिस अभिमानकी अुत्पत्ति यथार्थ तथा तुलनात्मक अध्ययनसे हुअी थी। अुनका सस्कृति-प्रेम तथा देश-प्रेम ज्ञानाधिष्ठित था।

"गीता-रहस्य अथवा कर्मयोग शास्त्र"

हीरोमें जैसे कोहिनूरका महत्व है वैसे ही लोकमान्यके ग्रन्थोमे 'गीता-रहस्य'का महत्व है। यह लोकमान्यके तत्वचिन्तनका आलोक है। यह गीताके भाष्योमे सिरमौर और मराठी भाषामे तत्वज्ञानके ग्रन्थोका सिरताज है। हम अिसे आर्षग्रन्थ मानते हैं। 'गीतारहस्य'की प्रस्तावनामें आप लिखते है "जब मैं १६ वर्षकी अवस्थाका था (सन् १८७२) तब मेरे मरणोन्मुख पूज्य पिताने मुझे गीताका पाठ करनेको कहा। गीतासे यही मेरा पहला परिचय था। मैंने गीताके सस्कृत श्लोक तथा अुनकी टीका पिताजीको सुनाअी। मै अुस समय गीताका भावार्थ नही समझ सका। तो भी कुमारा-वस्थामे हुअे सस्कार प्राय: चिरकालीन होते हैं, अिसलिअे मुझमे गीताके प्रति जो पूज्य भाव अकुरित हुअे थे, वे बढते ही गअे। तत्पश्चात् मैंने गीताके सस्कृत भाष्यो, मराठी टीकाओ अेव अँग्रेजीमे लिखे आलोचनात्मक ग्रन्थोका बहुत अध्ययन किया। गीता सम्बन्धी जितने भी ग्रन्थ अुपलब्ध थे, अुतने ग्रन्थोका मैंने अध्ययन किया, परन्तु मेरे मनमे गीताके अुपदेशके प्रयोजन, प्रतिपादन तथा फलके विषयमे जो आशका अुत्पन्न हुअी थी, अुसका समाधान न हुआ। मेरी शका थी कि क्या गीतामे ब्रह्मज्ञान अथवा भक्तिसे मोक्षप्राप्तिके मार्गका ही प्रतिपादन है? क्या लडनेके लिअे आअे सशयग्रस्त वीर अर्जुनका समाधान केवल मोक्षधर्मके अुपदेशसे ही हुआ होगा? क्या सव्यसाची वीर अर्जुन मोक्षप्राप्तिके लिअे लडना छोडकर सन्यासी बननेको प्रवृत्त हुअे होंगे? ज्यो-ज्यो मैं सम्प्रदायनिष्ठ भाष्यो तथा टीकाओका अध्ययन करता गया त्यो-त्यो मेरी शकाअे बढती गअी और अुलझनोमे पड गया। क्योकि अिन सम्प्र-दायनिष्ट आचार्योंने गीताका अर्थ अपने मतके अनुकूल प्रतिपादित किया था। श्रीमद् आद्य शकराचार्यने अपने 'गीता-भाष्य'मे सिद्धान्त तथा सन्यासपर विशेष जोर दिया, रामानुजाचार्यने विशिष्टाद्वैत तथा भक्तिका विवेचन किया,

मध्वाचार्यने द्वैतमूलक भक्तिपर अत्यधिक जोर दिया और वल्लभाचार्य तथा निम्बार्काचार्यने भी अिसीका प्रतिपादन किया। सन्त ज्ञानेश्वरने अपनी "भावार्थ-दीपिका" मे पातजलि योग, भक्ति और कर्मका समन्वय किया तो दूसरी और प्रकाड पडित वामनने अपनी "यथार्थ-दीपिका" मे सब भार ज्ञानयुक्त सगुण भक्तिपर ही डाल दिया। अिस प्रकार सम्प्रदाय-निरपेक्ष कोअी भाप्य अुपलब्ध नही था। अतअेव गीताका सम्प्रदाय-निरपेक्ष अध्ययन कर अुसका सरल तथा स्पष्ट अर्थ प्रतिपादन करनेकी अुमग मेरे मनमे सन् १८७८ मे अुद्भूत हुअी और मैंने मौलिक दृष्टिसे गीताका अर्थ लगानेकी चेष्टा प्रारम्भ की। गीता अुपनिषदोका निचोड है। मैंने अुपनिपदोका गहरा अध्ययन किया। गीता महाभारतमे समाविष्ट है, अत. मैंने महाभारतका सम्यक् अध्ययन किया। यह अध्ययन कअी वर्षोतक जारी रहा। तत्वज्ञानका विवेचन करनेवाले सैकड़ो ग्रन्थोका परिशीलन किया। पश्चिमी दार्शनिकोके प्राय सब ग्रन्थ पढे। प्राच्य तथा पश्चिमी धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्रका तुलनात्मक अध्ययन किया। अिस विषयका चिन्तन लगभग ४० वर्षोतक होता रहा। अितने दीर्घकालीन विचार-मन्थनके पश्चात् मैंने जो सिद्धान्तरूपी नवनीत पाया अुसे "गीता-रहस्य अथवा कर्मयोग शास्त्र" मे भर दिया। यह ग्रन्थ मेरे ४० वर्षके निरन्तर अध्ययन, मनन, चिन्तन, अन्वेषण तथा विचार विमर्शकी मूर्ति है। मेरे मानव जीवन विषयक तत्वज्ञान तथा नीतिशास्त्रका निचोड है।"

"कर्मयोग-शास्त्र"के विषय प्रवेश नामक प्रकरणमे लोकमान्यने लिखा है कि गीताके तात्पर्य-कथनकी सम्प्रदायनिष्ठ दृष्टि सदोष है। मीमासकोने किसी भी ग्रन्थका तात्पर्य निकालनेकी शास्त्रीय पद्धति निम्नलिखित श्लोकमे प्रतिपादित की है :—

अुपक्रमोपसंहारो अभ्यासो पूर्वता फलम्।
अर्थवादोपपत्ती च लिङग तात्पर्य निर्णयम्॥

ग्रन्थके आरम्भ और अन्त कैसे होते हैं, अुनमे जहाँ-तहाँ क्या अुपदेश है, अुनकी अपूर्वता क्या है, अुनका प्रभाव या फल क्या हुआ, अित्यादिका

सुसगत अध्ययन कर ही ग्रन्थके महत्वका निर्णय करना चाहिअे। अिस दृष्टिसे गीताके आरम्भ और अन्तका निरीक्षण कीजिअे। महाभारतका युद्धारम्भ होनेके पूर्व रणागणमे अपने गुरु भीष्म पितामह तथा कुलबन्धुओको सम्मुख खडा देखकर सव्यसाची वीर अर्जुनको मोह अुत्पन्न हुआ और अपने धर्मके अनुकूल युद्ध करनेके महान कर्तव्यसे विचलित होने लगा। किकर्तव्य विमूढ होकर वह भगवान श्रीकृष्णकी शरणमे गया और अुनसे नम्रतापूर्वक निवेदन करने लगा कि मै नही लडना चाहता। मै अिन सुजनोका लडाअीमे वधकर राज्य सम्पादन करनेकी अपेक्षा सन्यास लेना अधिक पसन्द करता हूँ। भगवान श्रीकृष्णने सशयग्रस्त, किकर्तव्य विमूढ तथा धर्मसमूढ अर्जुनको लडनेको अुद्यत करनेके हेतु गीताका अुपदेश दिया। यही गीता आरम्भ है। श्रीकृष्णने वीर अर्जुनकी सभी शकाओका समाधान कर अन्तमे अुससे प्रश्न किया ?

कच्चिचदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिचदज्ञानसमोह. प्रनष्टस्ते धनंजय॥ ७२–१८

अर्थात् "हे पार्थ, क्या तुमने मेरा अुपदेश अपने अेकाग्रचित्तसे सुना ? क्या तुम्हारा अज्ञानजन्य मोह नष्ट हुआ ?"

वीर अर्जुनने प्रसन्नतासे अुत्तर दिया —

नष्टो मोह स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत।
स्थितोऽस्मिगतसन्देह. करिष्ये वचनं तव॥ ७३–१८

"हे भगवान श्रीकृष्ण, आपकी परम कृपासे मेरा मोह नष्ट हुआ और मेरी कर्तव्यधर्म-स्मृति पुन जागृत हुअी। मै अब सन्देहरहित हूँ। अत, आपके अुपदेशके अनुसार लडनेके लिअे सन्नद्ध हूँ।" वीर अर्जुन शूरतासे लड़ा और अुसने युद्धमें जय प्राप्त की। यही भगवद्गीताका अुपसहार है। सक्षेपमे गीताके अुपक्रम और अुपसहार कर्मण्यताके द्योतक हैं।

अब अभ्यासकी ओर मुड़िअे। गीतामें जहाँ-तहाँ भगवानने वीर अर्जुनको लड़नेकी ओर प्रोत्साहित किया। अुसकी प्रत्येक आशंकाका समाधान कर अुसे कर्तव्यकी ओर सचेत किया। "तस्मात्" और "अिसलिअे" अिस पदका बार-बार अुपयोग कर अुसे लड़नेके लिअे कहा। अुदाहरणके लिअे "तस्माद्युद्धस्व भारत", "अिसलिअे हे अर्जुन, तू लड", "तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय", "अिसलिअे हे कौन्तेय, तू लडनेका निश्चय कर", "तस्मादसक्त. सतत कार्य कर्म समाचर", "अिसलिअे तू आसक्ति त्याग कर कार्य कर (लड)", "कुरु कर्मैव तस्मात्त्व", "अिसलिअे तू लडनेका कर्म कर", "मामनुस्मर युद्ध च", "अिसलिअे तू मेरा स्मरण कर लड", "तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुक्ष्व राज्य समृद्धम्, मयैवैते निहत पूर्वमेव, निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्", "हे पार्थ, मैंने पहले ही अिन कौरवोको नष्ट कर रखा है, अत. तू निमित्त मात्र बनकर लड और जय प्राप्त कर। स्मृद्ध राज्यका अुपभोग कर।"

तस्माच्छास्त्र प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥२४-१६

"हे पार्थ, कर्तव्याकर्तव्यका निर्णय शास्त्रोके अनुसार करना चाहिअे। शास्त्रोको प्रमाण मानकर तुझे लडनेका कर्तव्य निभाना चाहिअे।" अिस प्रकार श्रीकृष्णने बार-बार अर्जुनको लडनेका अुपदेश दिया। अिसके अतिरिक्त अुपसहारमे "कर्तव्यानीतिमे पार्थ निश्चितमतमुत्तमम्" (६-१८) "हे पार्थ, मेरी निश्चित राय है कि ये कर्म तुझे करने ही चाहिअे।" अैसा मत प्रकट कर भगवान श्रीकृष्णने अर्जुनसे पूछा कि "तुम्हारा सन्देह नष्ट हुआ या नही ?" अत: "अभ्यास" की तीसरी कसौटी भी यह सिद्ध करती है कि गीताके अुपदेशोमे कर्मण्यशीलता ओतप्रोत है।

अब चौथी कसौटी "अपूर्वता" की है। गीताकी अपूर्वता "कर्मयोग" में निहित है। अिसका प्रतिपादन भगवद्गीताके दूसरे अध्यायमे अिस प्रकार किया गया है :—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।। ४७
योगस्थ. कुरु कर्माणि सगं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्धसिद्धयो समो भूत्वा समत्वं योग अुच्यते ।। ४८
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणः फलहेतव ।। ४९
बुद्धियुक्तो जहातीह अुभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योग कर्मसु कौशलम् ।। ५०

तेरा अधिकार कर्म करनेका है। कर्मके फलपर तेरा वश नही। अत: फल प्राप्तिके लिअे ही कार्य मत कर। दूसरी ओर कर्म न करनेका ही हठ तू मत कर। हे अर्जुन, कार्यसिद्धि हो अथवा न हो आसक्ति छोड कर हृदयमें समताकी भावना रखकर कार्य कर। अिस समताकी भावनाको कर्मयोग कहते हैं। क्योकि बुद्धिकी समताकी अपेक्षा बाह्य कर्म बहुत ही हीन या निकृष्ट है। अत. समत्वबुद्धिकी शरण जाना चाहिअे। कर्मफलकी अिच्छा रखनेवाले कृपण याने हीन होते हैं। जो साम्य बुद्धिसे युक्त होता है वह पाप तथा पुण्यसे मुक्त या अलिप्त रहता है। अत तू कर्मयोगका आश्रय ले। पाप तथा पुण्यसे अलिप्त रहकर कर्म करनेका कौशल ही कर्मयोग है। आसक्ति रहित कर्म करनेकी युक्तिको ही कर्मयोग कहते हैं न कि पातजलियोग अथवा सन्यासको। अिस कर्मयोगका विस्तृत प्रतिपादन करनेके लिअे मै अिस कर्मयोग-शास्त्रकी रचना कर रहा हूँ। यदि भगवान श्रीकृष्णकी अिच्छा होती कि सव्यसाची अर्जुन सन्यासी बने या भक्तिमे मग्न होकर रहे तो गीताका अुपदेश देनेकी आवश्यकता न थी। क्योकि अर्जुन स्वय सन्यासी बननेके लिअे व्याकुल थे। भगवान् तत्काल कहते—"अर्जुन, तेरी शका सही है। मेरी भी राय यही है। आ हम दोनो ही सन्यास ग्रहण कर अपनी आत्माओका कल्याण करे।" परन्तु

अर्जुनकी शकाके अनुकूल अुत्तर न देकर "क्लैब्य मास्म गम. पार्थ नैतत्वय्युपपद्यते । क्षुद्र हृदयदौर्बल्य त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ।। ३-२ कहा । अिस प्रकार वीर अर्जुनकी तीव्र भर्त्सना कर अुसे कृष्णने "नियत कुरु कर्मत्व" कर्म करनेका प्रेरक अुपदेश दिया । अिससे सिद्ध होता है कि गीताका तात्पर्य प्रवृत्तिवादी कर्मप्रवर है । भक्ति, ज्ञान या सन्यासमे लीन होकर अपने नियत कर्मोका त्याग करना गीताका अुद्देश्य नही । कर्मयोग ही गीताका सच्चा मर्म है । अेव विशुद्ध शास्त्रीय दृष्टि अपनाकर, सम्प्रदायनिष्ठ सकीर्णताका त्याग कर लोकमान्य तिलकने कर्मयोग-शास्त्रका मौलिक तथा तर्कयुक्त विवेचन किया । अिस महाग्रन्थके तत्वज्ञानका आवश्यक अग है—"नीतिका विवेचन करना ।" अिसलिअे लोकमान्य गीताको नीतिशास्त्र कहते थे ।

मराठीका महान अुपकार

मराठीका प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य भगवद्गीताके भाष्यो और टीकाओंसे सम्पन्न और भरापूरा है । सन् १२९० मे सन्त ज्ञानेश्वरने "भावार्थ-दीपिका" या ज्ञानेश्वरी पद्य-टीका रची । यह टीका तत्व-विवेचनकी अपेक्षा काव्य-सौष्ठव तथा काव्य-गुणके लिअे ही अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय है । निस्सन्देह यह मराठीका अपूर्व और सर्वोत्कृष्ट काव्य-ग्रन्थ है । सन् १६८० के लगभग प्रकाड पडित वामनने "यथार्थ-दीपिका" नामक पद्य टीका रची । यह टीका ज्ञानेश्वरीसे ढाअी गुनी बडी है । आपने सन्त ज्ञानेश्वरके मतका खण्डन कर ज्ञानयुक्त सगुण भक्तिका पाडित्यपूर्ण विवेचन किया । प्राय अिसी समय या अिसके कुछ वर्ष पूर्व कविश्रेष्ठ दासोपन्त देशपाडेने "गीतार्णव" पद्य टीकाकी रचना की । अिस ग्रन्थमे १ लाख अुवियाँ (दो चरणका छन्द) है । अिसमे भक्तिका प्रतिपादन किया गया है । भगवद्गीतापर अन्य कअी पद्य टीकाअें है । परन्तु गीतापर बृहत् तथा युगान्तरकारी गद्य-भाष्य लिखनेका श्रेय लोकमान्य तिलकको ही प्राप्त हुआ । अैसा प्रतीत होता है कि तिलकने अिसी कार्यको करनेके लिअे जन्म लिया था । आपके पूर्व अितना विशाल तथा सागोपाग अूहापोह करनेवाला गीताका

ाद्य-भाष्य नही लिखा गया । आपने मौलिक तथा सम्प्रदाय-निरपेक्ष दृष्टिसे गीताके अध्ययनको प्रोत्साहन दिया । अिसका प्रभाव यह हुआ कि 'कर्मयोग-शास्त्र' प्रकाशनके पश्चात् मराठीमे लगभग १२ विशाल तथा सूक्ष्म तत्व-विवेचन करनेवाले गद्य-भाष्योकी सृष्टि हुअी । दो या तीन भाष्यकारोने लोकमान्यके कर्मयोगका खण्डन कर भक्ति या सन्यासका भी समर्थन किया, किन्तु सभीने लोकमान्यकी बहुश्रुतता तथा तर्कयुक्त विवेचन-शक्तिके सम्मुख अपना सिर झुकाया । केवल मतभेद होनेसे किसी ग्रन्थ या व्यक्तिका महत्व नही घटता । "कर्मयोगशास्त्र" आधुनिक गद्य-भाष्योका स्रोत है । अिसकी रचनासे मराठी गद्यकी शैली सम्पन्न तथा प्रौढ हुअी, गोस्वामी तुलसीके सम्बन्धमे कहते हैं–"कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसीकी कला ।" अुसी प्रकार लोकमान्य तिलकके सम्बन्धमे कहा जा सकता है कि अुनकी रचनासे मराठी साहित्य गौरवान्वित हुआ । अिस महाग्रन्थमे लोक-मान्यने अपनी प्रतिभासे भारतीय तत्वज्ञानका समन्वय कर भारतीयता तथा ससारका बडा अुपकार किया ।

भारतीय दर्शन-शास्त्रके आधुनिक ग्रन्थोमे 'गीता-रहस्य' अपना विशेष स्थान रखता है। तत्वज्ञानको चिन्तन या बुद्धिका विलास माना गया है। कुछ लोगोका ख्याल है कि तत्वचिन्तन निष्क्रियता बढाता है । किन्तु अिन आरोपोका अुत्तर देनेवाला 'कर्मयोगशास्त्र' अद्वितीय ग्रन्थ है । यह लोक-मान्यका आध्यात्मिक या वैचारिक आत्मचरित्र है । लोकमान्यने देश-कार्य तथा राष्ट्रीय आन्दोलनोमे लगे रहनेपर भी अितनी अूंची आध्यात्मिक जानकारी तथा बहुश्रुतता प्राप्त की, यह सचमुच आश्चर्यकी बात है ।

पन्द्रहवाँ प्रकरण

स्वराज्य संघकी स्थापना

In 1915 Lokmanya Tilak should have been the uncrowned king not only of Maharastra but of the whole of India except for an unfortunate combination of forces to keep him out of what would legitimately have been his After his release strenuous efforts were made by him to start Home Rule Agitation and by well meaning friends to bring the two wings of the Congress together. Lokmanya Tilak *himself wanted sedulously to avoid offending the susceptibilities of the moderates* but *they did not respond* to his approaches. Tilak's three fold programme was (1) The Congress compromise (2) The reorganization of the Nationalist party and (3) The setting on foot of a strong agitation for Home Rule.

—The History of Indian National Congress.

लोकमान्य तिलकसे विचार-विमर्श करनेके लिअे सब प्रान्तोसे राष्ट्रीय दलके सैकडो कार्यकर्ता पूना पहुँचे। ता. २० जूनको सार्वजनिक सभाके मैदानमे महती सभामे अुनका हार्दिक स्वागत किया गया। जनताके स्वागतको नम्रतापूर्वक स्वीकारकर लोकमान्यने अेक सारगर्भित भाषण देते हुअे कहा कि सुख और दुःखमे बडा अन्तर है। दुःखमे साथी मिलनेसे वह बहुत कम हो जाता है, किन्तु सुखमे हिस्सा बटानेवाला मिलनेसे सुख दुगना होता है। आप लोगोके दर्शनसे प्राप्त मेरा सुख वर्णनसे परे है। मै आज ६ वर्षोके पश्चात् लौटा हूँ। मेरी मानसिक स्थिति 'रिपवान विकल' के समान है? जैसे अुने

कअी वर्षोकी दीर्घ निद्राके पश्चात् जगनेपर सृष्टि नअी मालूम होने लगी थी, वैसे ही मुझे भारतवर्षकी राजनीतिक दशा नअी प्रतीत होती है। आप मुझसे यह अपेक्षा रखते होगे कि मैं भावी कार्य या नीतिके सम्बन्धमे कुछ विचार प्रकट करूँ, किन्तु परिस्थितिका सम्यक् आकलन तथा गम्भीर विचार-विमर्श किअे बिना यह करना अुचित न होगा। "सहसा विदधीत न क्रियाम्। अविवेक: परेपदमापदाम्" सूक्तिके अनुसार ही कार्य होना चाहिअे। किन्तु अति सक्षेपमे मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आपसे मेरा जैसा सम्बन्ध ६ वर्ष पूर्व था वैसा ही भविष्यमे भी रहेगा। भेद केवल समयानुकूल साधनोका रहेगा। आपसे मेरी नम्र प्रार्थना हे कि आप मेरे प्रति पूर्ववत प्रेम रखे और पहलेकी भाँति ही मुझे स्वीकार करे।" सरकारने तिलककी लोक-प्रियताकी मशाल बुझानेके लिअे ज्यो-ज्यो चेष्टाअे की, त्यो-त्यो अुसकी शिखाअे अधिक प्रकाशमय होकर अूपरकी ओर बढती गअी।

नजरबन्दीका जाल

अिधर जनता अपने प्रिय नेताका हार्दिक स्वागत करनेमे रत थी, अुधर जाल फैलाकर सरकार लोकमान्यकी हलचलोको सीमित करनेके लिअे व्यग्र थी। पूनाके जिला-मैजिस्ट्रेटने अुनके घरके दोनो ओर पुलिस बिठलाअी और अुनसे मिलनेवालोके नाम, पते, मिलनेका कारण आदि लिखा जाने लगा। गणेश-अुत्सव तथा अन्य राजनीतिक अेव सामाजिक समारोहोमे अेक सालके लिअे लोकमान्यके भाषणोपर कानूनी प्रतिबन्ध लगाया गया। अिसके अतिरिक्त पूनाके गणेशोत्सवमे गणपतिके सिवा अन्य किसीकी "जयजयकार" करनेपर भी कानूनी रोक लगी। लोकमान्य तिलकके फोटोका प्रदर्शन रोका गया। स्वय तिलकके बदले "शिष्यापराधे गुरोर्दण्ड." न्यायसे सरकार पूनाकी जनतापर अपना रोष प्रकट करने लगी। लोकमान्यका निवासस्थान मडाले जेलका-सा बन गया। अन्तर अितना ही था कि यहाँ वे अपने घरमे बाल-बच्चोके साथ दिन काट रहे थे। महाराष्ट्र तथा समस्त भारतमे अिस सरकारी नीतिकी तीव्र भर्त्सना की गअी, परन्तु सरकारपर

अिसका कुछ भी असर नही हुआ। सयोगसे यूरोपमे पहला महायुद्ध प्रारम्भ हुआ। ब्रिटेनकी साम्राज्यवादी सरकारने आक्रमक जर्मनीके विरुद्ध लोहा लिया। अब युद्ध-कार्यमे भारतवर्षके सहयोगकी सरकारको अुत्कट आवश्यकता प्रतीत हुअी। अुसने सूचित किया कि क्रान्तिकारी अेव अत्याचारी दलोकी नीतिके प्रति विरोध व्यक्त करने तथा अिस आपत्ति-कालमे सहानुभूति प्रकट करनेपर तिलककी नजरबन्दी रद्द कर दी जायगी। तिलकने समयकी गतिविधि देखकर तत्काल अेक पत्र प्रकाशित किया जिसका आशय यह था कि "मै स्पष्टतया निवेदन करना चाहता हूँ कि सशस्त्र क्रान्तिकारी या हिसात्मक कार्योसे देशका लाभ होनेके बजाय हानि अधिक होती है अतअेव मै अैसे कार्योकी भर्त्सना करता हूँ। मुझे पूरी आशा है कि वैधानिक आन्दोलनो और आयर्लेंड के होमरूल दलकी नीति स्वीकार कर हम भारतमें पर्याप्त राजनीतिक सुधार प्राप्त कर लेगे। मै राज्यशासनमे लोकहितकारी परिवर्तन चाहता हूँ न कि राज्यका ध्वस। ब्रिटेनकी साम्राज्य सरकारने आक्रमक जर्मनीके विरुद्ध जो युद्ध छेडा है, अुसके लिअे मैं अुसको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और अिस महायुद्धमे अुसके न्यायपक्षकी विजयके लिअे मै यथाशक्ति अुसके साथ सहयोग करनेका आश्वासन देता हूँ।" लोकमान्यका यह पत्र प्रकाशित होते ही भारत सरकारने अपनी प्रसन्नता प्रदर्शित की और अुनकी नजरबन्दी तत्काल रद्द कर दी गअी। अिस पत्रसे अति अुग्रदलवादी असतुष्ट हुअे, परन्तु अनेक राष्ट्रीय कार्यकर्ताओने तिलककी समयानुकूल नीतिकी बडी प्रशसा की।

भारतवर्ष १९०८ से १९१४ तक

सन् १९०७ दिसम्बरमे कॉग्रेसमे सघर्ष हुआ और अुग्रदल या राष्ट्रीय दलने कॉग्रेससे सम्बन्ध विच्छेद किया। लोकमान्य तिलकके अनुरोधके विरुद्ध नरमदलके नेताओने अुनसे समझौता करना महा पाप समझा। विवश होकर लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय दलकी पृथक् कॉग्रेस स्थापित करनेके लिअे प्रयत्नशील हुअे। बीचमे सरकारने अुनपर राजद्रोहका अभियोग चलाकर

अुनपर ६ वर्षोके लिअे राजनीतिक आन्दोलनोमें भाग लेनेके लिअे प्रतिबन्ध लगा दिया। वास्तवमे वे अभी राष्ट्रीय दलका सगठन नही कर पाअे थे। भारत सरकारने बगाल, महाराष्ट्र, पजाब और मद्रास अर्थात् जिन प्रान्तोमें राष्ट्रीय दलके अड्डे थे, वहाँ कठोर दमन कर प्रमुख नेताओको बडी सजाअें दी। सन् १९०८ के दिसम्बरमे नागपुरमे राष्ट्रीय दलकी कॉंग्रेस होनेवाली थी, परन्तु सरकारने अुसपर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया। राष्ट्रीय दलके अनुयायी जहाँ-तहाँ बिखरे हुअे थे। बगालमे भयकर दमन तथा बाबू विपिन-चन्द्र पाल अेव महर्षि अरविंद घोषके गिरफ्तार होनेसे सन्नाटा छागया। यत्र-तत्र कभी-कभी पिस्तौल अुठाअे जाते थे या बम फेके जाते थे, जिसकी प्रतिक्रिया भयावह होती थी और सामान्य जनता अधिक निष्क्रिय अेव भय-भीत होती जाती थी। मद्रासमे राष्ट्रीय दलके नेता श्री चिद्म्बरम् पिल्लैंको ६ वर्षकी कडी सजा दी गअी और अुनके कअी अनुयायी दमनके शिकार हुअे। अुधर पजाबमे भी दमननीतिका प्रभाव दिखाअी देने लगा। जिन पजाबसिंह लाला लाजपतरायके प्रति लोकमान्यका आदर-भाव था और जिनको कॉंग्रेसका सभापति बनानेके लिअे अुन्होने सूरतमे सघर्ष किया, अधिवेशन समाप्त होनेपर गोखलेसे अुन लालाजीकी मित्रता अधिक घनिष्ठ होने लगी और वे राष्ट्रीय दलकी ओर अुपेक्षापूर्ण व्यवहार करने लगे। पजाबमे वे सरकारी अकृपाके शिकारतो नही बने, परन्तु जब अिग्लैण्ड गअे तब अुनपर भारत न लौटनेका कानूनी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अिसलिअे वे लगभग ६ वर्ष-तक अमेरिकामें रहे और पजाबमे राष्ट्रीय दल नही पनपने पाया। महर्षि अरविन्द जैसे अति अुग्रवादी नेताने राजनीतिसे सन्यास लेकर पाण्डेचरीकी ओर प्रस्थान किया जिससे बगालके राष्ट्रीय दलमे निराशाकी लहर फैल गअी।

सन् १९११ के दिसम्बरमे दिल्लीमे बडा वैभवशाली दरबार हुआ, जिसमे सम्राट् पचम जार्जका राज्याभिषेक किया गया। सम्राट्ने भारतीयोकी राज्यनिष्ठापर सन्तुष्ट होनेका स्वाग रचकर बग-विच्छेद रद्द करनेकी घोषणा की और भारतकी राजधानी दिल्ली बनाअी गअी। बगालमे जहाँ-तहाँ अिस शुभ घोषणाका स्वागत होने लगा। बगाली फूले नही समाअे। बगालमें

निष्ठ राजनीतिक सस्था होते हुअे भी प्रधानतया धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाकी भाँति काम करती थी, किन्तु सन् १९१२ मे वग-विच्छेदके रद्द किअे जाने तथा तुर्की और फारसके राष्ट्रीय आन्दोलनोके प्रभावसे मुस्लिम जनतामे नव जागृति अुत्पन्न हुअी। अँग्रेज सरकारके प्रति अुसकी जो दृढ राज्यनिष्ठा थी अुसमे दरार पैदा हुअी क्योकि सरकारने वग-विच्छेद रद्द कर लीगको धोखा दिया था। अुसे अँग्रेज सरकारकी दुविधापूर्ण नीतिपर आशका होने लगी। अुसकी धारणा थी कि सरकार कुछ दाने फेककर मुर्गियोको लडाना चाहती है। फलस्वरूप नव-जागृत मुसलमानोके कारण सन् १९१३ मे मुस्लिम लीगके अुद्देश्योमे अिस प्रकार सशोधन किअे गअे--(१) मुसलमानोके राजनीतिक तथा अन्य अधिकारोकी रक्षा करना। (२) भारतकी अन्य जातियो और सियासी सस्थाओमे मेल-जोल अेव मित्रता स्थापित करना तथा (३) वैध आन्दोलन द्वारा शासन-सुधार प्राप्त करना और राष्ट्रीय अेकताका परिवर्धन कर साम्प्रदायिक सहयोगसे भारतके लिअे अुपयुक्त स्वराज्य प्राप्त करना। सक्षेपमे मुस्लिम लीग पहलेकी अपेक्षा अधिक राष्ट्रीय अेवम् राजनीतिक सस्था बनी और अुसका वार्षिक अधिवेशन कॉग्रेसके साथ ही होने लगा। सन् १९१५ मे कॉग्रेस तथा मुस्लिम लीगके अधिवेशन अेक साथ सम्पन्न हुअे और मुस्लिम लीगने सर्व-सम्मतिसे कॉग्रेसके साथ राजनीतिक समझौता करनेका प्रस्ताव स्वीकृत किया।

लोकमान्यका चतुर्मुखी कार्यक्रम

सन् १९१४ के जूनमे भारतकी अवस्था बहुत विषम और निराशामयी थी। यूरोपमे प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ होने और साम्राज्य-सरकारके साथ भारत सरकार द्वारा मित्र राष्ट्रोका पक्ष लेनेसे हालत अत्यन्त नाजुक बन गअी थी। लोकमान्य तिलकने सन् १९०८ तक जिस राष्ट्रीय जागृति-गढका निर्माण किया था वह प्राय. ढह चुका था। सरकारी दमन और धूर्तताने राष्ट्रीय दलमें दरार पैदा की। देश निराशाके अन्धकारमे डूबने लगा।

परन्तु अिस हृदय-विदारक दशामे भी लोकमान्यको कार्य आगे बढाना था। प्रतिकूल परिस्थितियोपर विजय सम्पादन करनेमे महान् पुरुषोकी विशेषता निहित होती है। अतअेव प्रतिबन्धसे मुक्तिके पश्चात कुछ समयके लिअे लोकमान्य तिलकका चिन्ताग्रस्त होना स्वाभाविक था। अुन्होने तीन चार मास तक सामयिक परिस्थितिका गम्भीर अध्ययन किया। अनुयाअियोके साथ खुले दिलसे विचार-विमर्श किया। अुनका हेतु था देशका बल तौलकर भावी कार्यक्रम निर्धारित करना। वे सदा कहते थे कि अनुयाअियोका बल अेकाअेक जादुअी प्रयोगसे नही बढता और यदि तूफानके समान अेकाअेक बढता भी है तो तूफानकी तरह गिरता भी है। वे अपने प्राणोका बलिदान करनेके लिअे सदा सन्नद्ध रहते थे, परन्तु फल क्या हो सकता था? अुन्होने दो-तीन बार कहा था "यदि लोगोमे सशस्त्र विद्रोह करनेकी कुछ भी क्षमता हो तो शेषका अुत्तरदायित्व मैं स्वय स्वीकार कर क्रान्तिकी घोषणा कर दूँ, किन्तु जब जनता ही अुसके लिअे तैयार नही तब क्रान्तिकी बात करना निरी मूर्खता है।" सक्षेपमे वे प्रचलित परिस्थितिसे अधिकाधिक लाभ अुठाकर ही देशको अग्रसर करना चाहते थे। अिग्लैडके विख्यात मनीषी तथा वक्ता बर्कने अपने "माअी रिफ्लेक्शन्स ऑन फ्रेन्च रेवोल्यूशन"मे सच्चे राजनीतिज्ञकी व्याख्या करते हुअे लिखा है "A true leader is he who makes the best of the present situation. All other definitions of a leader are either vulgar in conception or dangerous in execution."

अर्थात् "सच्चा नेता वही है जो परिस्थितिका ठीक-ठीक लाभ अुठाता है। नेताकी अन्य परिभाषाअें या तो भद्दी कल्पनाअें हैं, अथवा कार्य रूपमे परिणत करनेके लिअे खतरनाक है। अिस व्याख्याकी कसौटीपर ही लोकमान्यका नेतृत्व परखना चाहिअे। वे सचमुच समयानुकूल नीति अपनानेवाले नेता थे। अुन्होने (१) नरमदलके साथ समझौता कर काग्रेसमे सम्मिलित होने, (२) राष्ट्रीय दलका पुन. सघटन करने, (३) स्वराज्य सघकी स्थापना

करने और (४) युद्धकालीन परिस्थितिसे यथाशक्ति लाभ अुठानेका चतुर्विध कार्यक्रम निर्धारित किया ।

वन्धन-मुक्तिके पश्चात् तुरन्त लोकमान्यने स्वयम् नरमदलसे पत्र-व्यवहार शुरू किया और दोनो दलोमे समझौता करानेकी राष्ट्रीय आवश्यकता प्रतिपादित की । "हम देशके लिअे लडे न कि अपने-अपने दलके लिअे" अुस समयकी यही अुनकी नीति थी। लोकमान्य तिलकके निवेदनपर डा अेनी बेसन्ट जैसी विदुषीने दोनोमें मेल करानेकी भरसक चेष्टा की, परन्तु नरम-दलके हठके कारण अुन्हे विफल होना पड़ा । नरमदलके अेक नेताने तिलकपर मनमाने आरोप किअे । लोकमान्यने अुन्हे अुत्तर देकर निरुत्तर कर दिया, परन्तु निरुत्तर होनेपर भी वे टससे मस नही हुअे ।

लोकमान्य तिलककी भारत-सेवक गो. कृ गोखलेसे भेट

देशके लिअे नम्र बनकर लोकमान्य स्वयम् गोखलेजीसे भेट करने अुनके घर गअे । गोखलेने अुनके विचारोका परिवर्तन जानना चाहा, परन्तु लोकमान्य गम्भीर थे, अत अुनकी थाह कैसे लगती । गोखलेने अुन्हे कांग्रेसमे सम्मिलित न होनेकी सलाह दी । लोकमान्यने तत्काल अुत्तर दिया कि "मै देशको जगाकर बहुमतके बलपर कांग्रेसमे प्रवेश करूँगा और अपना कार्यक्रम कांग्रेससे कार्यान्वित कराअूँगा, क्योकि मै कांग्रेसको भारतकी प्रतिनिधि सस्था मानता हूँ न कि दल विशेषकी बपौती ।" गोखले यह अुत्तर सुनकर चकित हो गअे । जब लोकमान्यके निकट मित्रोको यह मालूम हुआ तब वे अुनकी अिस असामयिक स्पष्टताकी निन्दा करने लगे । अुनको अदूरदर्शी कहने लगे । लोकमान्यने हँसकर अुत्तर दिया "मै छल या कपटनीतिमे विश्वास नहीकरता । अपने देशवासियोके साथ छलका व्यवहार क्यो किया जाय ? वे भी अपनी शक्तिके अनुसार देश-सेवा करते हैं । अिधर हम भी अपनी धुनके पक्के हैं । अतअेव भविष्यमे जो बहुमत प्राप्त करेगा वही कांग्रेसपर अधिकार जमाअेगा ।" लोकमान्य आपसी व्यवहार और राजनीतिमें प्राय. साधनोकी शुद्धिपर जोर देते थे । अुन्होने गदे, तथा छलयुक्त साधनोको कभी नही अपनाया ।

राष्ट्रीय दलका पुन संगठन

लोकमान्य तिलक निराश नही हुअे । अुन्होने अपना मोर्चा "राष्ट्रीय दल" को दृढ करनेकी ओर मोडा । वे शक्तिके अुपासक थे । शक्तिमें अुनका अटूट विश्वास था । शक्तिके अनेक रूप हैं–जैसे आध्यात्मिक, नैतिक, सैनिक, साघिक तथा पक्ष या दलकी शक्ति । ससारमें कही-कही अैसा भी देखा गया कि सत्पक्षकी शक्ति वढनेसे देशकी शक्ति बढी और देशका अुपकार हुआ । अिसके अतिरिक्त विरोधी दलपर अपने दलके वलका प्रभाव डालकर अुसे समझौतेके लिअे विवशकर कॉंग्रेसमें शानसे सम्मिलित होना लोकमान्यका ध्येय था । यह अुनकी खुली नीति थी और आशासे अधिक सफल हुअी । सन् १९१५ के मअी मे पूनामे राष्ट्रीय दलका पहला प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ । प्रान्तमें दलकी लोकप्रियता तथा प्रभाव देखकर लोकमान्य अुसे तुरन्त ही अखिल भारतीय रूप देना चाहते थे । वे पक्की और गहरी नीव डालकर अुसपर अूँचा और विशाल मदिर खडा करना चाहते थे । अिस अधिवेशनमें प्रान्तके कोने-कोनेसे अेक हजार प्रतिनिधि सम्मिलित हुअे । अिसकी तुलनामें कॉंग्रेसका वार्षिक अधिवेशन भी फीका था । लोकमान्यने अपने भावी कार्य-क्रमकी रूप-रेखा प्रस्तुत की । पहला प्रस्ताव था मित्र राष्ट्रोके अभिनन्दन तथा अुनकी सफलताकी प्रार्थनाका । स्वयम् लोकमान्यने यह प्रस्ताव अुपस्थित किया और अुसपर प्रभावशाली भाषण दिया । अुन्होने कहा "बेलजियम जैसे छोटे और स्वतन्त्र राष्ट्रपर आक्रमण कर अत्याचारी जर्मन राष्ट्रने अेकाअेक महायुद्ध प्रारम्भ किया है । हम भारतीय अपनी तथा अन्य राष्ट्रोकी स्वतन्त्रताका आदर करते हैं । जैसे हम स्वतन्त्र होना चाहते है, वैसे ही अन्य राष्ट्रोको स्वतन्त्र देखना चाहते हैं । अत मे जर्मन राष्ट्रकी तीव्र भर्त्सना करता हूँ तथा ब्रिटेनकी साम्राज्य सरकार और मित्र राष्ट्रोका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ, क्योकि अुन्होने न्यायका पक्ष लेकर आक्रमक जर्मनीके विरुद्ध जग छेडा है । मित्र राष्ट्रोका पक्ष न्यायका है । फिर भी मेरे प्रिय भारतके स्वराज्यका प्रश्न मेरी दृष्टिसे ओझल नही है । भारतके स्वराज्यको ध्यानमें रखकर मैं अुनकी सफलताकी कामना करता हूँ, क्योकि हमें ब्रिटेनकी

साम्राज्य-सरकारसे स्वराज्य प्राप्त करना है न कि आक्रमक जर्मनीसे।" अिस भाषणमे लोकमान्यकी अुदार तथा स्वतत्रताप्रिय परराष्ट्र नीतिका यथार्थ दर्शन हुआ। दूसरे प्रस्तावमे अखिल भारतीय कॉग्रेससे अनुरोध किया गया कि वह अपने संविधानमे प्रजातात्रिक ढगके अनुकूल परिवर्तन करवाकर कॉग्रेसका द्वार अन्य दलोके लिअे भी खोले। लोकमान्यने अिस प्रस्तावका भी समर्थन किया और कहा कि सयुक्त कॉग्रेसको भारतवर्षकी अेकमेव प्रतिनिधि सस्था बनाकर हम अुसके द्वारा स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे वैधानिक आन्दोलन चलाना चाहते है। सम्मेलनके सभापति, बै० बाप्टिस्टाने लोकमान्यकी सूचनानुसार निवेदन किया कि आवश्यकता होनेपर हम आयर्लेंड जैसी "होमरूल लीग" की स्थापना कर स्वराज्यके लिअे ठोस वैधानिक कदम अुठावेगे। हर्ष-ध्वनिसे अिस घोषणाका स्वागत किया गया। तिलकने अपने प्रान्तमे राष्ट्रीय दलको पुन सगठित किया, अिसकी अपेक्षित प्रतिक्रिया नरमदलपर भी पडी। नरमदलके नेताओने अपना बल तौलनेके लिअे पूनामे प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न किया। परन्तु दुर्भाग्यसे अुसमे सौ प्रतिनिधि भी सम्मिलित नही हुअे। अुसका अुद्घाटन करनेके लिअे बम्बअीके गवर्नर सपत्नीक पधारे, परन्तु मण्डप खाली था। अिसका अुचित प्रभाव नरमदलके नेताओपर पड़ा। अुन्होने भली भाँति जान लिया कि वे अब जनताके प्रतिनिधि नही रहे। परन्तु कोअी भी राजनीतिक दल किसी भी सस्थापर अपना अधिकार सरलतासे नही छोडता। नरमदल अिस सिद्धान्तका अपवाद कैसे हो सकता था? विवेककी अपेक्षा विवशता ही राजनीतिमें अधिक महत्वपूर्ण होती है। अल्पावधिमे अन्य प्रान्तोमें भी राष्ट्रीय दलकी शाखाअे फैली। लोकमान्यके अलौकिक व्यक्तित्वसे सैकडो तेजस्वी कार्यकर्ता अुनके प्रति आकृष्ट हुअे। वे पुन. अखिल भारतीय, लब्धप्रतिष्ठ और भारत-भाग्य-विधाता नेता बने। नरमदलके नेता भी परिस्थतिसे विविश हुअे। अुन्होने लोकमान्य तिलकसे सन् १९१५ के दिसम्बरमे बम्बअीमे होनेवाली कॉंग्रेसमें सम्मिलित होनेका अनुरोध किया और पन्द्रह दर्शक भेजनेका अधिकार प्रदान किया। लोकमान्यने नरमदलकी परिवर्तित नीतिपर सतोप व्यक्त किया,

परन्तु अुन्होने कॉंग्रेस-विधानके प्रजातान्त्रिक नियमोके अनुसार सुधार किअे बिना कॉंग्रेसमे सम्मिलित होनेमे अपनी असमर्थता प्रकट की। लोकमान्यके अुपयुक्त अुत्तरका कॉंग्रेसपर अनुकूल प्रभाव पडा और बम्बअी-अधिवेशनमे लोकमान्य तिलककी अिच्छानुसार काँग्रेसके विधानमें सशोधन किअे गअे। अिस प्रकार सम्मिलित न होकर भी अुन्होने अिच्छानुसार कॉंग्रेससे अपना कार्य करवाया। कॉंग्रेसके साथ-साथ मुस्लिम लीगका अधिवेशन भी हुआ और अुसने भी अिसी प्रकारके प्रस्ताव स्वीकार किअे।

स्वराज्य-संघकी स्थापना

बम्बअी-अधिवेशनमे कॉंग्रेसने अपने विधानमें सशोधन किया, किन्तु अुसकी कारवाअी अगले अधिवेशन तक स्थगित रही। लोकमान्यने अिसका हार्दिक स्वागत कर सदलबल कॉंग्रेसमें सम्मिलित होनेका निश्चय प्रकट किया, परन्तु बीचमे अेक सालकी अवधि थी। अतअेव सन् १९१६ के अप्रैलमें राष्ट्रीय दलका दूसरा अधिवेशन बेलगाँवमे किया गया। अिस अवसरपर स्वराज्य सघ (होमरूल लीग) की स्थापना की गयी। यह सघ डा० अेनीबेसेंटकी 'ऑल अिन्डिया होमरूल लीग' (अखिल भारतीय स्वराज्य सघ) की स्थापनाके छह मास पूर्व स्थापित हुआ था। जैसे आयर्लैंडमे "आयरिश होमरूल लीग" ने स्वराज्य प्राप्त करनेके लिअे वैधानिक आन्दोलन किअे और ब्रिटेनकी पार्लमेन्टमे लिबरल दलके नेता मि. ग्लेडस्टन द्वारा आयर्लैंडको स्वशासनका अधिकार प्रदान करनेवाला विधेयक अुपस्थित करवाया, स्वराज्य सघ भी वैसा ही करना चाहता था।

स्वराज्यकी व्याख्या

लोकमान्य तिलक स्वराज्य, होमरूल अर्थात् स्वशासन और सेल्फ गवर्नमेन्ट अर्थात् आत्मशासन तीनोका प्राय. समान अर्थमे व्यवहार करते थे। आपने स्वराज्यकी व्याख्या की थी "अपने घरका कारोबार स्वय सम्भालना।" स्वराज्यका अर्थ है, व्यवस्थापिका सभामे लोकपक्षके सभासदोका प्राबान्य

और कार्यकारिणीपर व्यवस्थापिका सभाका पूरा अधिकार होना। सक्षेपमें शासनकी चोटी जनताके हाथमे रहे यही स्वराज्य है। "अब होमरूल क्या है ?" "होमरूलका अथवा स्वशासनका अर्थ है प्रतिनिधि सत्तात्मक राज्य।" "अर्थात् वह सरकार जिसपर लोगोका अधिकार हो। अिसका अुद्देश्य भारत और अिग्लैण्डका सम्बन्ध तोडना नही था।" आत्मशासन (सेल्फ गवर्नमेन्ट) की परिभाषा है, "प्रतिनिधि सत्तात्मक शासन जिसमें लोकमतकी कदरकी जाती हो और जिसमे थोडेसे नौकरोके लाभके लिअे लोकमतकी अुपेक्षा न होती हो।" तिलक अिन तीनोका व्यवहार अेक ही अुद्देश्यको समझानेके लिअे करते थे। व्याख्या या परिभाषाकी अपेक्षा अुसके अुद्देश्यसे ही आपका अधिक सम्बन्ध था। परन्तु आत्मशासन और सुशासनमे आप स्पष्ट भेद मानते थे। आपका दृढ विश्वास था कि सुशासन स्वशासनकी बराबरी नही कर सकता बल्कि आपकी दृष्टिसे कुशासन भी पर-सुशासनसे बहुत अधिक अच्छा था। सक्षेपमे तिलक निरपेक्ष स्वराज्यवादी थे। अिसके विपरीत नरमदलवादी सुशासनवादी थे। दोनोकी धारणाओमे यह स्पष्ट अन्तर था। लोकमान्य तिलक जिसे स्वराज्य कहते थे अुसे ही सन् १९२८ में कॉंग्रेसने नेहरू रिपोर्टके आधारपर औपनिवेशिक स्वराज्य कहा। सन् १९३२ की दूसरी राअुंड टेबुल कान्फरेन्समें राष्ट्रपिता महात्मा गाधीने "स्वतन्त्रताका सार" कहकर अुसकी ही मॉंग की थी। लोकमान्य तिलकने अपने दलके विधायक कार्यके लिअे पूर्वोक्त शुद्ध राजनीतिक सस्था स्थापित की। अिस सघके तत्वाधानमे ही वे आन्दोलन या प्रचार करना चाहते थे और भविष्यमें अुन्होने वैसा किया भी। दूसरे प्रस्ताव द्वारा राष्ट्रीय दलको कॉंग्रेसमें सम्मिलित होनेका आदेश दिया गया। अिस प्रकार आठ वर्षकी दीर्घ अवधिके पश्चात् राष्ट्रीय दल और कॉंग्रेसमें सम्मानपूर्ण समझौता हो सका। सम्मेलन समाप्त होते ही लोकमान्य तिलकने स्वराज्य-सघके प्रचारार्थ दौरा प्रारम्भ किया। वे जहॉं-जहॉं जाते वहॉं-वहॉं हजारो नागरिक अुनका भव्य स्वागत करते और विराट् सभाओमें अुनके प्रभावशाली भाषण दत्तचित्त होकर सुनते। सन् १९१६ की मअीमें डा. अेनीबेसेन्ट पूना पहुँची और लोकमान्य तिलककी

अध्यक्षतामे अुनका वाग्मितापूर्ण भाषण हुआ। अुन्होंने भी स्वराज्य-सघकी आवश्यकतापर जोर दिया और जनतासे लोकमान्यको सहयोग देनेका अनुरोध किया। लोकमान्यकी नरम लोहेपर ही प्रहार करो याने "प्राप्त अवसरसे लाभ अुठाओ" नीतिकी अुहोने बडी प्रशसा की। अिस प्रकार दो महान् नेताओका मेल हुआ।

ब्रिटेनका सकट भारतका सुयोग

महायुद्धके समय लोकमान्य तिलकने मनमे यह बात ठान ली कि ब्रिटेनका सकट भारतके लिअे सुयोग है। वे चाहते थे कि जितना बन सके भारतीयोको अुससे अुतना लाभ प्राप्त हो। सार्वजनिक सभाओमे वे नवयुवकोको सेनामे शरीक होनेका अुपदेश देते थे और कहते थे कि यही अवसर है जब अँग्रेज सरकार आपको सम्मानके साथ सेनामे बुला रही है। आपको प्रगतिशील तथा अनुशासनप्रिय अँग्रेज अधिकारियोंसे सेना-सचालन तथा युद्ध-कौशलका ज्ञान प्राप्त करना चाहिअे जिससे भविष्यमे आप भारत-वर्षकी रक्षा करनेमे समर्थ हो। अँग्रेज सरकार साधारण समयमे भारतीयोको शस्त्र-विद्याकी शिक्षा नहीं देना चाहती थी, परन्तु जब अुसके संकटका समय आया है, तब हम हाथमें आअे हुअे अवसरका अपने राष्ट्रके लिअे क्यो न अुपयोग करें? राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी भी अिस समय अवैतनिक रिक्रूटिंग आफिसरका कार्य कर रहे थे।

अपूर्व हीरक जयन्ती-समारोह

सन् १९१६ के जुलाअी मासमे लोकमान्य तिलककी आयुके साठ वर्ष पूरे हुअे। जनताने अुनकी हीरक जयन्ती मनानेका आयोजन किया। अभी तक महाराष्ट्र या भारतके अन्य प्रान्तोमें किसी लोकनेताकी हीरक जयन्ती मनानेकी प्रथा प्रचलित नही हुअी थी। हाँ, भगवान रामचद्र और कृष्णचन्द्र जैसे अवतारी महामानवो तथा सन्त तुलसीदास, चैतन्य महाप्रभु, सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त तुकाराम, समर्थ रामदास जैसे भक्तोकी जयन्तियाँ

मनानेकी धार्मिक प्रथा अवश्य जारी थी। ता. २३ जुलाओीको पूनामे महती सभाका आयोजन किया गया। लोकमान्यको अूँचे सिंहासनपर बिठाया गया और जनताकी ओरसे अुन्हे सुवर्ण-नलिकामे अभिनन्दनपत्र समर्पित किया गया। अिस पत्रमे अुनके द्वारा तब तकके किअे गअे देशकार्यों तथा स्वार्थ-त्यागकी प्रशंसा करते हुअे अुनके दीर्घायुआरोग्यके लिअे शुभकामना की गअी। जनताने केवल दिखावटी अभिनन्दनपत्र द्वारा ही अपनी कृतज्ञता नही व्यक्त की वरन् अेक लाख रुपयोकी थैली भी अुनके चरणोमे अर्पित की। ये अेक लाख रुपअे लगभग दस हजार व्यक्तियोके पाससे अेकत्र किअे गअे थे। अिससे लोकमान्यके प्रति साधारण व्यक्तियोका अटूट तथा गहरा प्रेम प्रकट होता था। भारतवर्षके लिअे यह अपूर्व घटना थी। थैली अर्पण करते समय लोकमान्यसे अनुरोध किया गया था कि वे अुसका विनियोग निजी कार्योमे करे। अिसके अतिरिक्त लोकमान्यको शुभाशीर्वाद देते समय अेक वृद्ध तथा विद्वान् शास्त्रीजीने कहा—"मैं ओीश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि यहाँ अुपस्थित हुअे प्रत्येक व्यक्तिकी आयुका अेक दिन तिलककी आयुमे बढ जाय ताकि लोकमान्य तीन सौ वर्षो तक जीवित रहे और भारत तथा ससारकी सेवा करे।" कन्नड प्रान्तके वृद्ध तथा तपे हुअे देशभक्त श्री गगाधरराव देशपाण्डेने श्रद्धाजलि अर्पित करते समय कहा—"लोकमान्य तिलक अमर नही, परन्तु तिलक तत्व अमर है। आपत्तियोका डटकर मुकाबला करना और देशके लिअे बलिदान होना ही तिलक-तत्व है।" लोकमान्य तिलकपर फूलोकी वर्षा हुओी। अन्तमे लोकमान्य अुत्तर देनेके लिअे खडे हुअे। जनताका अपूर्व प्रेम देखकर अुनका हृदय गद्गद् हो गया। आँखोसे आँसू बहने लगे। किसी प्रकार अपनेको सँभालकर अुन्होने यह सारगर्भित भाषण दिया —

" राष्ट्रभक्त जनो,

मैं आपके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ क्योकि आपने मुझ जैसे क्षुद्र व्यक्तिपर अुपकारका अितना बोझ डाला है कि अगले सात जन्ममे भी अिसे अुतारना मेरे लिअे सम्भव नही। आपके द्वारा अर्पण किया गया यह अुपहार

मैं निजी कार्यके लिअे कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। अिसके लिअे मुझे क्षमा करिअेगा। मैं अपनी गरीब जेबसे अुसमें सौ रुपया जोडकर यह अेक लाख और अेक सौ रुपयोंकी निधि राष्ट्रीय कार्यके लिअे सानन्द समर्पित करता हूँ। अिसका ट्रस्ट बनाकर योग्य विनियोग किया जाअे। आपसे मेरा निवेदन है कि आप केवल मेरी क्षुद्र राष्ट्र-सेवापर सन्तुष्ट न रहें। आपमेंसे सैंकडोंको देश-सेवाके लिअे कमर कसना चाहिअे। राष्ट्रकी स्वतन्त्रताके लिअे सैंकडों बलिदानोंकी आवश्यकता होती है। आपसी मत्सर, द्वेष तथा क्षुद्र मानापमानकी संकीर्ण भावनाओंको त्याग कर हमें अविलम्ब देश-सेवामें जुट जाना चाहिअे। मुझे आशा है कि परमेश्वर आपको अिसी दिशाकी ओर मोडेगा।" अिस भाषणमें भगवद्गीताके अुपदेश तथा लोकमान्य तिलकके जीवनका सार भरा है। अिसमें आध्यात्मिक अूँचाअी तथा व्यावहारिक दक्षताका अनूठा समन्वय दिखाअी देता है। यह अुनके अनूठे स्वार्थ-त्यागका जीता-जागता अुदाहरण है।

सरकारकी निगरानी

लोकमान्य तिलकका जीवन धूप-छाँहका खेल था। अिधर जनता अुनकी हीरक जयन्ती मनानेमें निमग्न थी, अुधर अंग्रेज सरकार अुनके लिअे गिरफ्तारीका जाल फैला रही थी। अेक ओर जनताने अुन्हें विराट् सभामें अेक लाख रुपयोंकी थैली अर्पित की दूसरी ओर अुसी रातके बारह बजे कअी पुलिस-जवानोंको साथ लिअे पूनाके जिला मजिस्ट्रेट अुनके घरपर पहुँचे और अुन्हें सरकारकी ओरसे बडे अभिमानके साथ नोटिस रूपी कडा अुपहार भेंट किया। लोकमान्यने स्मित मुद्रासे अुसे भी स्वीकार किया। अिस नोटिसके अनुसार कानूनके विरुद्ध अेक वर्ष तक कोअी कार्य न करनेके लिअे अुनसे बीस हजार रुपयोंकी जमानत माँगी गअी थी। लोकमान्यको दूसरे ही दिन जिला मेजिस्ट्रेटकी अदालतमें अुपस्थित होकर यह जमानत देनी थी अन्यथा अुनके विरुद्ध तीसरे दिन शान्ति-भंग करनेके अभियोगमें फौजदारी मुकदमा चला दिया जाता। लोकमान्यने शान्त चित्तसे नोटिस पढा और

हँसते हुअे कहा "आज प्रात कालसे मै मीठा-ही-मीठा खा रहा हूँ अिसमें मेरे मुँहका जायका बिगड गया था और जी अूब गया था। भगवानने बडी कृपा की कि मुझे अिस नोटिसके रूपमें नमकीन भेजा, अिससे मेरे मुँहका जायका ठीक होगा।" यह अुद्गार सुनकर जिला मेजिस्ट्रेट दग रह गअे। कर्मयोगी तिलककी मुद्रापर हर्ष चमकने लगा। कुटुम्बी-जन तथा मित्रगण अिस अप्रत्याशित घटनासे दु:खी हुअे। लोकमान्यने विनोदमे कहा "यह रातका समय है। आप प्रकाशकी अपेक्षा कैसे करते है ?" लोकमान्य आपत्तिमे भी विनोद करनेवाले अलौकिक व्यक्ति थे। अुनका जीवन-वस्त्र सुख और दु खके तानेबानेसे बुना हुआ था।

स्वराज्यका प्रचार कानूनी अधिकार माना गया

दूसरे ही दिन लोकमान्यने अिस नोटिसके खिलाफ बम्बअी-हाअीकोर्टमे अपील दायर की। बैरिस्टर जिन्नाने अुनकी वकालत की और बडा अुत्साह प्रदर्शित किया। विचारपतिने निर्णय दिया कि "तिलकके स्वराज्य सघके प्रचार सम्बन्धी भाषणोमे, राजद्रोहका मसाला नही, अत. वे निर्दोष है।" लोक-मान्यने हाअीकोर्टमे अिस आशयका बयान दिया था कि "यदि स्वराज्यका प्रचार करना कानूनी अपराध है तो मै दोषी हू और भविष्यमे भी रहूँगा। सरकार मुझे चाहे जो दड दे।" परन्तु अँग्रेज विचारपतिने अपने फैसलेमे लिखा कि—"Independence is an ideal with which no true Englishman would quarrel." अर्थात् "स्वतन्त्रता अैसा पवित्र ध्येय है कि अिसके प्रति किसी भी सच्चे अँग्रेजको आपत्ति नही हो सकती।" तिलकको निर्दोषी ठहरानेके साथ ही अिस फैसलेके अनुसार स्वराज्य माँगना और अुसका प्रचार करना कानूनी अधिकार बन गया।

संकटको साधन बनानेका कौशल

लोकमान्य तिलकने अिस अभियोगके सम्बन्धमे अेक मार्मिक लेख "केसरी" में प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था "तिलक निर्दोषी ठहरे, आगे क्या ?" अुसमें लिखा था "मेरा अभिनन्दन करनेसे कुछ लाभ नही होगा। अब मै चन्द वर्षोका साथी हूँ, जनतामेंसे सैकडो कार्यकर्ता आगे आने चाहिअे।

स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे योजनाअें बनानी हैं, द्रव्य तथा मानव-बलका अुपयोग करना है, ब्रिटेनके पार्लियामेन्टमे भारतके स्वराज्यका मसविदा प्रस्तुत कराना है। आपको स्वराज्यकी साधनाके लिअे कमर कसना चाहिये। अनुकूल अवसर प्राप्त हो गया है, परन्तु दृढ तथा निर्भीक प्रयत्नोके बिना अुससे अुचित लाभ अुठाना असम्भव है। "नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।" अर्थात् "सोअे हुअे सिंहके मुखमे मृग स्वय प्रवेश नही करते", आजका प्रश्न मेरे जैसे क्षुद्र पुरुषकी मुक्तिका नही अपितु भारतकी मुक्तिका है। व्यक्ति मरणाधीन है, परन्तु राष्ट्र अमर है। आप अैसा अुज्जवल कार्य कीजिअेगा जिससे भविष्यकी पीढी आपके प्रति कृतज्ञ रहे। मुझे अैसा लगता है कि हम भारतीयोपर परमेश्वरकी असीम कृपा है और अुसका प्रमाण मेरा अुच्च-न्यायालयसे निर्दोषी ठहरना है।" तिलक अपने व्यक्तिगत सकटको जनतामें जागृति-निर्माणका साधन मानते थे। आत्मविस्मृति अर्थात् खुदको भूलना अुनके सार्वजनिक जीवनका आधार था। अुनके निजी सुख-दुख आम जनताके सुख-दुखमें दूधमे चीनी जैसे घुल गअे थे।

राजद्रोहके तीसरे अभियोगमें लोकमान्यके निर्दोषी ठहरनेके पश्चात् लोकमान्यने तुरन्त ही कन्नड प्रान्त तथा महाराष्ट्रमे व्यापक दौरा किया। अुनके दर्शन तथा भाषण सुननेके लिअे हजारो लोग अेकत्र होते थे। बेलगाँव, अहमदनगर और बम्बअीमे अुनका भव्य स्वागत हुआ। बम्बअी प्रान्तीय कॉंग्रेस कमेटीने अुनको आल अिन्डिया कॉंग्रेसका प्रतिनिधि चुना। नरमदलके जो सदस्य अुनके कट्टर शत्रु थे, अुन्होने ही अुनका नाम सुझाया और अुसका समर्थन किया। अिस प्रकार तिलकके विरोधी भी अुनके पुजारी बने। अुधर कलकत्तामें कॉंग्रेस तथा मुस्लिम लीगकी कार्यसमितियाँ आपसी समझौता सम्पन्न करनेमे व्यस्त थी। मेलमे थोडी झिझक या अडगा डाला जा रहा था। भारतवर्ष भरमे अुत्साह तथा आशाकी लहरोका प्रादुर्भाव हुआ था। ज्यो-ज्यों कॉंग्रेस-अधिवेशनका समय समीप आने लगा त्यो-त्यो सर्व दलके अनुयायियोमें अपूर्व चैतन्य तथा हलचल दिखाअी देने लगी। समस्त राष्ट्रकी आँखें अेकटक लखनअूकी ओर देखने लगी।

सोलहवाँ प्रकरण

दूरदर्शी राजनीतिज्ञकी विजय

'Lokmanya Tilak's part was always notable for liberality and large mindedness towards the Muslims. It may be asserted without any doubt that his generous gesture was a great factor in winning over the Mussalmans and inducing them to accept the proposals which formed the Lucknow pact. The introductory portion of his speech, when proposing the resolution embodying the pact in the open session of the Congress—"It has been said by some that we Hindus have yielded too much to our Mohameden brethren. I am sure I represent the sense of the Hindu community all over India, when I say that we could not have yielded too much"—breathes the only spirit in which a majority can win the complete confidence of a minority. His idea was that of United India—marching towards freedom.

Dr. M. A. Ansari

ex—President of I. N. Congress.

अपूर्व स्वागत

लोकमान्य तिलक आठ वर्षकी दीर्घ अवधिके पश्चात् कॉंग्रेसके अधिवेशनमें सम्मिलित होनेके लिये ता. २३ दिसम्बरको सदल-बल बम्बईसे

लखनअू रवाना हुअे। आपकी यात्रा स्पेशल ट्रेनसे हुअी। यह सौभाग्य तिलकका ही था। वैसे देखा जाय तो अिसके पूर्व दो बार अँग्रेजी सरकारने आपका प्रवास स्पेशल ट्रेनसे करवाया था, किन्तु राजद्रोही कैदीके रूपमे, न कि लोकप्रिय नेताके रूपमे। आपके साथ राष्ट्रीय दलके लगभग ५०० सदस्य थे जो प्रतिनिधि बनकर कॉंग्रेसमे सम्मिलित होने जा रहे थे। लोकमान्यकी ओर देखते ही अैसा प्रतीत होता था मानो कोअी विजयी सेनापति अपने बहादुर सैनिकोके साथ राजधानीमे प्रवेश करने जा रहा हो। अुस अवसरपर अुनका सम्मान तथा स्वागत प्रत्येक बडी स्टेशनपर किया गया। भोपाल स्टेशनपर हजारो मुसलमानोने आपपर फूलोकी वर्षा की और गलेमे मोटे-मोटे गुलाबके फूलोके हार पहनाअे। वहॉं तिलकने हिन्दू-मुसलमानोकी अेकतापर समयोचित संक्षिप्त भाषण दिया। बीच-बीचमें स्वागत आयोजन होनेसे ट्रेन पॉंच घन्टे लेट हुअी। लखनअूमे ज्यो ही ट्रेनने धीरे-धीरे प्रवेश किया त्यो-ही 'लोकमान्य तिलक महाराजकी जय' का गगनभेदी जयघोष प्रतिध्वनित होकर अैसा गूंजने लगा मानो कानोके पर्दे फाडकर अुन्हे बधिर बनाना चाहता हो। वहॉं तिलकके स्वागतके लिअे जन-सागर अुमड पडा। अुनपर फूलोकी वर्षा हुअी। अुनके लिअे फूल मालाओमे सजी मोटरकी सवारी लाअी गअी। लोकमान्य अुसमें सवार हुअे और खडे होकर दर्शकोके प्रणाम स्वीकारकर नम्रतासे जनता-जनार्दनका अभिवादन करने लगे। जनताकी अभिलाषा थी कि अुनका जलूस धीरे-धीरे आगे बढे, परन्तु प्रबन्धक वृद्ध तथा दुर्बल लोकमान्यको, जिन्हे लम्बी सफरके कष्ट अुठाने पडे थे, नियोजित विश्राम-स्थलपर शीघ्र पहुँचाना चाहते थे। जनताकी अिच्छा प्रबन्धकोकी अिच्छासे अधिक स्वाभाविक अेव प्रभावकारी सिद्ध हुअी। बीचमें ही किसी बुद्धिमानने चाकूसे मोटरका टायर काट दिया और तिलककी शीघ्रगामी सवारी बेकाबू हो गअी। अब लोकमान्यको धीरे चलनेवाली सवारीपर बैठना पडा। वे बग्घीपर सवार हुअे, परन्तु जनताका प्रेम अितना अुमड़ा कि दर्शकोने घोडोको अलगकर स्वयं लोकमान्यकी बग्घी खीचना प्रारम्भ कर दिया। सैकड़ो दर्शकोने

लोकमान्यके चरण छुअे । चारबागमें महामना मालवीयजीने अुनका स्वागत किया । तिलकने मालवीयजीको अपनी दाहिनी ओर बैठा लिया । चार घण्टोतक यह विशाल जलूस नगरमें घूमता रहा । दर्शकोमे हिन्दू-मुसलमान-पारसी आदि विभिन्न धर्मोके अनुयाअी थे । राष्ट्र-नेताका यह सच्चा राष्ट्रीय स्वागत था । लगभग तीन बजे जलूस अमीनाबादमे छेदीलालकी धर्मशालाके पास पहुँचा, जहाँ अुनके निवासकी व्यवस्था की गअी थी । दर्शकोकी भीड सागरके समान फैली थी, अतअेव लोकमान्य धर्मशालाकी छतपर खडे हुअे । भरे हुअे कण्ठसे अुन्होने जनताके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकटकर सबको धर्म, जाति अेव पन्थका भेद भुलाकर स्वराज्य प्राप्तिके लिअे प्रयत्नशील होनेका अुपदेश दिया । लखनअू शब्दकी श्रेष्ठात्मक व्याख्या कर अुन्होने कहा—"मुझे प्रबल आशा है कि कल आपके भाग्यवान (Luck-Now) शहर में स्वराज्यका झण्डा फहरायेगा ।" जिस धर्मशालामें अुनका निवास था अुसके सामने पाँच दिनतक दर्शकोका मेला-सा लगा रहा । अुन्हे बीच-बीचमें छतपर खडे होकर दर्शन देना पडता था ।

भारतके भाग्योदयकी योजना

बम्बअीमे कांग्रेस और मुस्लिम लीगके अधिवेशन साथ-साथ सम्पन्न हुअे थे और अुनमे अगले अधिवेशनमे मेल-मिलापकी योजना प्रस्तुत करनेका निर्णय किया गया था । बीचमें दो बार दोनो सस्थाओके प्रतिनिधि-मण्डलोमें मेलके सम्बन्धमे अिलाहाबाद तथा कलकत्तेमें काफी विचार-विमर्ष हुआ । विचार-विमर्षका झुकाव मतभेदकी अपेक्षा मेलकी ओर अधिक था । कलकत्तामे मेल-मिलापकी अेक योजना तैयार की गअी, परन्तु पजाब और बगाल जैसे मुसलिम-बाहुल्य प्रान्तोका सवाल खटाअीमें पड गया । दोनो सस्थाओमे मेल न होनेकी आशका राष्ट्रको भय-भीत करने लगी । फिर भी दोनो सस्थाओके नेता मेलके लिअे अिच्छुक थे और यही समयकी माँग थी । विषय-निर्वाचिनी-समितिमें जब अिसपर विचार होने लगा तब सबने लोकमान्यके सुझावोका हार्दिक समर्थन किया ।

फलत: कॉंग्रेस और मुसलिम लीगमें मेल हो गया। खुले अधिवेशनमें कॉंग्रेसके पूर्व सभापति तथा विख्यात वक्ता सुरेन्द्रनाथ बैनर्जीने बडा प्रभावशाली भाषण कर समझोतेकी योजना प्रस्तुत की। अुसका समर्थन लोकमान्य तिलकने किया। कहनेकी आवश्यकता नही कि महामना मदनमोहन मालवीय जैसे सुयोग्य वक्ताके विरोधी होनेपर भी योजना स्वीकृत हो गअी, जो सक्षेपमें अिस प्रकार थी —

(१) यह कॉंग्रेस ब्रिटिश सरकारसे निवेदन करती है कि वह तुरन्त भारतको स्वशासन (होमरूल) के पूर्ण अधिकार प्रदान करनेकी घोषणा करे।

(अ) ब्रिटिश साम्राज्यका पुनर्गठन करते समय भारतको स्वशासनके पूर्ण अधिकार प्रदान कर अुसका राजनीतिक दर्जा कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण-अफ्रिका जैसा करके अुसे साम्राज्यमें बराबरीका स्थान दिया जाय।

(२) कॉंग्रेस और मुसलिम लीगके आपसी समझौतेके अनुसार निम्न-लिखित सुझाव कार्यान्वित किअे जायें—

(अ) प्रान्तीय विधान सभामें ४।५ लोक निर्वाचित सदस्य हो और १।५ सरकार नियुक्त।

(ब) प्रान्तीय विधान-सभाके प्रतिनिधि समान और व्यापक मताधिकारसे चुने जायें।

(स) मुसलमानोके लिअे साम्प्रदाअिक प्रतिनिधित्वका सिद्धान्त स्वीकार कर भिन्न-भिन्न प्रान्तोमें अुनका प्रतिशत प्रतिनिधित्व अिस प्रकार हो—

पजाब ५०, सयुक्तप्रान्त ३०, बगाल ४०, बिहार २५, मध्यप्रान्त १५, मद्रास १५ और बम्बअी ३३।

समझौतेकी प्रमुख धाराअे यही थी। अुस समय कॉंग्रेसने अपने चिर-सस्थापित सयुक्त प्रतिनिधित्वके सिद्धान्तका बलिदान शायद अिस आशासे किया कि स्वराज्य प्राप्त करनेके पश्चात् दोनो सस्थाओका परस्पर सन्देह और अविश्वास दूर हो जाअेगा, और हिन्दू तथा मुसलमान अेक राष्ट्रके सदस्य होकर भारतको महान राष्ट्र बनानेमें सहायक होगे। किन्तु यह आशा व्यर्थ सिद्ध हुअी।

चुनौतीका अुत्तर

लोकमान्य तिलक की दृष्टि शुद्ध स्वराज्यवादी और भारतीय राष्ट्रीयतासे ओतप्रोत थी। अुन्होने खुले अधिवेशनमे डकेकी चोटपर कहा कि "आठ वर्ष पूर्व जिस बहिष्कारके प्रस्तावके लिअे मैं कॉंग्रेसमे लडा था अुससे यह मेलका प्रस्ताव कअी गुना अधिक महत्वपूर्ण है। आज अिस नगरने अपना लखनअू (Luck-now) नाम सार्थक किया। क्योकि यहाँ हिन्दू-मुसलमान, अुग्रदलवादी तथा नरमदलवादी अिकट्ठा हुअे है और अुन्होने आपसमे मेल स्थापित कर अँग्रेज सरकारको स्वराज्य प्राप्तिकी सर्वसम्मत योजना भेजनेकी प्रतिज्ञा की है। हमारे कअी भाअियोका यह आक्षेप है कि अिसमे मुसलमानोकी विजय और हिन्दुओकी पराजय है। यह तो हिन्दुओके मुसलमानोकी शरणमे जानेके समान है। परन्तु मैं स्पष्ट निवेदन करना चाहता हूँ कि यदि सरकार केवल मुसलमानोको ही स्वराज्यके अधिकार प्रदान करती तो भी मुझे अुसमे कोअी खटकनेवाली या आपत्ति-जनक बात नही प्रतीत होती। मेरा विश्वास है कि मैं यहॉ समस्त हिन्दुओकी वास्तविक भावनाको प्रकट कर रहा हूँ। यदि स्वराज्यके अधिकार केवल राज-पूतोको ही दे दिअे जाअे तो भी मुझे आनन्द ही होगा। ये अधिकार हमारे पिछडे हुअे हरिजन भाअियोको भी दिअे जाअे तो भी मुझे हर्ष ही होगा, क्योकि स्वराज्य-प्राप्तिके बाद झगडेका स्वरूप घरेलू बन जाअेगा। अँग्रेजोका तीसरा पक्ष समाप्त हो जाअेगा।" अँग्रेज सरकार स्वशासनका अधिकार देनेका स्वॉग रचकर बार-बार कहती है कि क्या करे, भारतकी समस्या आपसी मतभेदके कारण अुलझी हुअी है? भारतीय नेताओके लिअे यह अुलझी परिस्थिति चुनौती थी। लोकमान्यने अुस चुनौतीको स्वीकार किया और कॉंग्रेस तथा मुसलिम-लीगमे मेल करा दिया। अुस समय राष्ट्रीयताका सवाल ही मुख्य था। अिसलिअे लोकमान्यने साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व स्वीकार कर अुस अुलझनको सुलझाया। अुनकी राष्ट्रीयभावना स्वर्ण जैसी शुद्ध थी। अुसे प्रान्तीयता, धार्मिकता तथा वर्गवादिताकी सकीर्णता छू तक नही सकती थी। कट्टर हिन्दू धर्माभिमानी तथा सस्कृतिनिष्ठ विद्वान् ब्राह्मण होते हुअे

भी वे शुद्ध राष्ट्रवादी भारतीय थे। अिस शुद्ध तथा निर्भीक राष्ट्रीयताके बलपर ही वे कॉंग्रेसके सर्वश्रेष्ठ नेता और भारतके सिरताज बने।

लोकमान्य तिलकने बगाल और पजावके मुसलमानोका जो प्रतिशत प्रतिनिधित्व मजूर करवाया अुसकी छानवीन बुद्धिपूर्वक और शान्तचित्तसे की जानी चाहिअे। वास्तवमे बगालमे मुसलमानोकी प्रतिशत जन-सख्या ५२ थी और पजावमे ५७ के अूपर। अर्थात् ये वहुसख्यक मुसलिम प्रान्त थे। अुन्हे वगालमे ४० तथा पजावमे ५० प्रतिशत प्रतिनिधित्व दिया गया था। अिसका परिणाम यह था कि अिन दोनो प्रान्तोमे मुसलमानोका प्रान्तीय शासनपर बहुमतके बलपर मनमाना अधिकार न चलता था। मेलकी यह योजना मॉंटफोर्ड सुधारोमे समाविष्ट की गअी। सन् १९३५ के अनुसार मुसलमानोको बगाल तथा पजावमे अुनकी जनसख्याके अनुपातमे प्रतिनिधित्व मिला। अत. अुन वहुसख्यक मुसलिम प्रान्तमे प्रतिक्रियावादी तथा सकीर्णतावादी मुसलिम-लीगकी सरकारे कायम हुअी, जो लखनअू-समझौतेके अनुसार कभी नही हो सकती थी। मुसलिम-लीगके अेक कट्टर तथा बुद्धिमान नेताने मुझसे कहा था—"समझमे नही आता कि जिन्ना जैसा बुद्धिमान नेता लखनअूमे लोकमान्यके जालमें कैसे फँसा? यदि लखनअू-समझौता कायम रहता तो पाकिस्तानकी स्थापना नही होती।" सन् १९४०के मुसलिम-लीगके अधिवेशनमे जिन्नाने कहा था कि "बगाल, पजाव तथा सिन्धमे हमारी अथवा हमारी अनुकूल सरकारे कायम हुअी, अत. यह सिद्ध हुआ कि हिन्दुस्तानके अेक भागपर हम अक्षुण्ण राज्य कर सकते है। अेतअेव हम अव हिन्दुस्तानसे विच्छेदकी माँग करते है।" राजनीतिमे सिद्धान्तकी अपेक्षा तत्कालीन अथवा सामयिक आवश्यकताओको अधिक महत्व दिया जाता है। परन्तु लोकमान्य जैसे दूरदृष्टा और मनीषी राजनीतिज्ञके विचारोमे अतीतका अनुभव और भविष्यकी दृष्टि पाअी जाती है। वग-विच्छेदकी जो चाल सन् १९०६ मे अग्रेज सरकारने चली, अुससे प्रोत्साहन प्राप्त कर सकीर्णतावादी मुसलमानोने मुसलिम-लीगकी स्थापना की। अिन घटनाओपर लोकमान्य तिलकने सम्यक् रूपसे विचार किया था। वे भली-भाँति

जानते थे कि कूटनीतिज्ञ अंग्रेज किसी समय मुसलमानोको अधिक अधिकार देकर हिन्दुओसे पृथक् कर भारतकी अेकतापर विच्छेदकी कुल्हाड़ीसे घाव कर सकते ह। भविष्यमें किसी अेक प्रान्तमें सकीर्णतावादी मुसलमानोकी सरकार न बन पाअे यही अुनकी दूरदृष्टिका परिणाम था। अिस दूरदर्शितासे ही अुन्होने साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वकी व्याख्या स्वीकार की थी। बगाल तथा पजाबमें मुसलमानोको अल्पमत या समान मतमें लानेमें ही अुनकी विजय थी। अन्य प्रान्तोमे जैसे मद्रास, मध्यप्रान्त, बम्बअीमें अधिक मत देनेका सिद्धान्त स्वीकार कर मुसलमानोको अुनकी जनसख्याके अनुपातकी अपेक्षा अधिक प्रतिनिधित्व दिया गया था जो पजाब तथा बगालके बदलेमे स्वाभाविक था। अिन अत्यधिक हिन्दू-जनसख्यावाले प्रान्तोमें मुसलमानोको ५–१० अधिक प्रतिनिधि देनेसे अुनका बल नही बढ सकता था। भारतका दुर्भाग्य था कि सन् १९३३ के साम्प्रदायिक (कम्युनल अवार्ड) ने लखनअू-समझौतेकी समाप्ति कर पुन मुसलिम प्रान्तोके निर्माणका मार्ग प्रशस्त कर देशमें विभाजनका बीज बो दिया।

अखिल भारतीय स्वराज्य-सघ-परिषदमें

अिसी समय ता ३० दिसम्बरको लखनअूमें ही विदुषी डा. अेनी बेसेन्टके सभापतित्वमें अखिल भारतीय स्वराज्य-सघकी विराट् परिषद हुअी, जिसमें लगभग १५०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुअे। लोकमान्य भी सदलबल पहुँचे। वास्तवमें तिलकने महाराष्ट्रमें स्वराज्य-सघकी स्थापना तथा प्रचारका कार्य सात माह पूर्व ही शुरू कर दिया था। अिस दृष्टिसे वे भारतीय स्वराज्य-सघके जनक थे, परन्तु डा. अेनी बेसेन्टने जब अखिल भारतीय स्वराज्य सघकी स्थापनाकर अुनका सहयोग चाहा तब अुन्होने बिना हिचकिचाहटके अुसमें सहयोग दिया और लोगोको बताया कि दोनो स्वराज्य संघोके ध्येय तथा कार्यप्रणालियाँ समान हैं। वे अपने व्यक्तिगत अधिकार या नेतृत्वके लिअे सस्थाअें नही स्थापित करते थे। सस्थाओके द्वारा देश-सेवा करना अुनका अेक मात्र ध्येय था। सभापतिके अनुरोध पर अुन्होने

सारगर्भित भाषण दिया। अुन्होने कहा—"लखनअूमें दो महत्वपूर्ण घटनाअे घटित हुअी। अेक तो स्वराज्यका ध्येय निश्चित कर अँग्रेज सरकारसे अुसकी माँग की गअी, दूसरे हिन्दू और मुसलमानोमे राजनीतिक मेल हुआ। जैसे मुकदमा जीतनेके लिअे फरियादी होशियार वकीलको अपने जामिनका कुछ अधिक अश देता है, वैसे ही सही हो या गलत हमने मुसलमान भाअियोको कुछ अधिक देना स्वीकार किया है। यह बात सत्य है कि मुसलमानोंकी सहायताके बिना स्वराज्यका आन्दोलन प्रभावशाली तथा प्रतिनिधित्वपूर्ण नही हो सकता। जब तीन पक्षोमे युद्ध होता है तब दो पक्षोमे मेल किअे विना युद्धकी समाप्ति हो ही नही सकती। अँग्रेज सरकार चाहती है कि स्वराज्यकी लडाअी मुसलमान और हिन्दुओमे लड़ी जाय, अतअेव हमारी नीति यह होनी चाहिअे कि हम दोनो मिलकर अँग्रेजोके खिलाफ लड़े। स्वराज्यका अर्थ है अपने घरमे अपना राज्य। अतअेव अिसके लिअे प्रत्येक व्यक्तिको कमर कसना चाहिअे।" स्वराज्य-सम्पादनका आन्दोलन तीव्र करनेके लिअे वे सदा तत्पर रहते थे। डा० अेनीबेसेन्ट ने अुनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया और अुनकी अुदार दृष्टि तथा आत्म-निरपेक्षताकी बहुत प्रशसा की।

अिसी समय वहाँ अेक-दूसरे स्थानपर हिन्दू-महासभाका अधिवेशन हो रहा था। अुसके सचालकोने तिलकको अुसमें अुपस्थित होनेके लिअे आग्रह-पूर्वक आमन्त्रण दिया। लोकमान्यका स्वभाव सरल था। वे अुसमे भी सम्मिलित हुअे। अुस अधिवेशनमे काँग्रेस-मुसलिम लीग मेलकी कडी आलोचना की गअी। लोकमान्यने अुसे शान्त-चित्तसे सुना। हिन्दू-सभा अुनपर बहुत रुष्ट हुअी, परन्तु वे टस-से-मस न हुअे।

तिलक लखनअूसे कानपुर गअे। वहाँ अुनका अपूर्व जुलूस निकाला गया। कअी स्थलोपर आरती अुतारी गअी, अनपर फूलोकी वर्षा हुअी और हजारो दर्शकोने अुनके चरण छुअे। परेडके मैदानमें अुनका भाषण हुआ। काँग्रेस-अधिवेशनमें सम्मान तथा विजय प्राप्तकर लोकमान्य कलकत्ता गअे।

वहाँ आपके मित्र बाबू मोतीलाल घोष, जो 'अमृतबाजार पत्रिका'के सस्थापक अेव सम्पादक थे, आपकी राह देख रहे थे। बाबूजीकी अुत्कट अिच्छा थी कि मृत्युके पूर्व वे लोकमान्यसे अन्तिम बार मिल ले। मरणासन्न घोष बाबूकी अिच्छा पूरी हुअी। यहाँ भी लोकमान्यका भव्य स्वागत हुआ तथा विराट् सभामे भाषण भी। लोकमान्यने अपने पुराने साथी बाबू विपिनचन्द्र पालको सक्रिय राजनीतिमें खींचा। अिसी समय अुत्साही नवयुवक कार्यकर्ता बैरिस्टर चित्तरजनदासने भी अुनसे भेट की और लोकमान्यके अनन्य अनुयायी बने।

सत्रहवाँ प्रकरण

स्वराज्य मन्त्रका अुद्‌घोष और प्रचार

"Lokmanya Tilak was the uncrowned king of India during the Home Rule days. This position he attained by service and suffering."

—The History of Indian National Congress.

लोकमान्य तिलकके "केसरी" ने लखनअू-काँग्रेसकी सफलताकी कामना करते हुअे लिखा कि, "गोमती नदीके किनारे भारतीय स्वतन्त्रताका झण्डा फहराया गया। शुक्रवारको स्वीकृत किया गया काँग्रेस-मुसलिम-मेलका प्रस्ताव भारतकी राजनीतिक आकाक्षाओका सिरमौर है। अब जनताका परम कर्तव्य है कि वह अिस अूँचे आदर्शकी प्राप्तिके लिअे कटिबद्ध हो।" भारतीयोको अिसके लिअे प्रयत्नशील बनाना लोकमान्यके दौरेका अेकमात्र ध्येय था। कलकत्तेमें स्वराज्यका तीव्र प्रचार कर वे नागपुर पहुँचे। विदर्भ लोकमान्यका गढ था। यहाँके निवासी अुनके ही अनुयायी थे। लोकमान्य भी विदर्भपर पूरी ममता रखते थे। यहाँके शहरोमें यवतमाल, कारजा, दारव्हा और अकोला आदिमे अुनका जो अपूर्व सम्मान हुआ, वह अद्वितीय था। विराट् सभाओमे वे कहते थे—"जैसे वृक्षका मूल काटनेसे वृक्ष गिरता है न कि पत्तियोको तोडनेसे, वैसे ही स्वराज्यकी सक्रिय माँगसे अँग्रेज सरकार काँपती है न कि अधिकारोकी भिक्षा माँगनेसे। सरकार कहती है कि स्वराज्यकी माँग करो किन्तु नपी-तुली भाषामें। यह अुतनी ही विचित्र बात है जितनी कि किसीको फल देकर कहना कि बिना दाँत लगाअे अिसे खा जाओ। क्या स्वराज्य अगूरकी तरह है? महा नाटककार शेक्सपियरने अपने 'मर्चन्ट आफ वेनिश' नाटकमें शायलाकके विलक्षण स्वभावका चित्रण

किया है। हमारी अँग्रेज सरकार भी ठीक अुसी तरह भारतीय रगमचपर शायलाकका अभिनय कर रही है। हम सरकारकी कोमल भावनाओकी चिन्ता क्यो करे, जब वह हमारी भावनाओकी निर्दयतासे अुपेक्षा करती है ? हम स्वराज्य माँगते है अर्थात् अपने घरमे अपना अधिकार माँगते है ।" वे जगह-जगह अिसी प्रकारके विचारो द्वारा स्वराज्यका व्यापक प्रचार करते थे ।

ज्ञानी कौन ?

अिसी समय अकोलामे 'गीता-रहस्य' पर लोकमान्यका मार्मिक प्रवचन हुआ। यह प्रवचन राजनीतिसे अछूते रहनेवाले सरकारी नौकरो और होनहार विद्यार्थियोके लिअे था, क्योकि सरकारने अपने नौकरो तथा विद्यार्थियोपर लोकमान्यका राजनीतिक भाषण सुननेके लिअे गुप्त रूपसे प्रतिबन्ध लगा दिया था। तिलकने गीताके अनुसार ज्ञानी पुरुषकी कसौटीका विवेचन किया। अुन्होने गीताका आधार लेकर कहा कि ज्ञानकी कसौटी शुद्ध परोपकारी तथा निर्भीक व्यवहार है । जो ज्ञानी ससारके झझटोसे बचकर निष्क्रिय रहता है, अेकान्तवासके लिअे पलायन करता है, केवल ज्ञानान्दमें ही मग्न रहता है, वह समाजके प्रति अपने कर्तव्यसे विमुख होता है । ज्ञानीके लिअे सग्रह करना आवश्यक है। केवल ज्ञानयुक्त वाग्मिता ज्ञानीकी कसौटी नही। सबसे अच्छा चाकू वह जो पैसे यानी धातुको काटता है न कि जो मक्खन या पेन्सिल काटता है । जो परोपकारमे रत होता है, लोक-सग्रह करता है, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है । अुनके प्रवचनमे जनताको चैतन्य करनेकी क्षमता थी । वे स्वय चैतन्य-मूर्ति थे । अत. वे जहाँ जाते चेतना जागृत होती ।

देशकी रक्षा करना सीखो

अिसी समय भारत सरकारने सैनिक बनकर अपने देशकी रक्षा करनेके लिअे युवकोका आवाहन किया। तिलक सरकारी आह्वानोको देश-हितकी कसौटीपर परखकर ही स्वीकार करते थे। वे स्वराज्यकी प्राप्तिके लिअे जन-जागरणका आन्दोलन छेड़ना चाहते थे और भविष्यमें

मिलनेवाले स्वराज्यकी रक्षा करनेकी सक्रिय चिन्ता भी करते थे। पूनाकी सार्वजनिक सभामे अुन्होने भारतीय युवकोसे निवेदन किया कि "वे सैनिक बनकर आधुनिक वैज्ञानिक शस्त्र-विद्याका ज्ञान सम्पादन करे। कॉंग्रेस अपने जन्म अर्थात् सन् १८८५ से सैनिक शिक्षाकी मॉंग कर रही है, परन्तु सशयग्रस्त अँग्रेजी सरकारने अुसे स्वीकार नही किया। अब महायुद्धने सरकारको विवश कर दिया है। अुसने स्वय जनताका आह्वान किया है।" जब किसीने अुनसे पूछा कि क्या भारतीय युवकोको सेनामे वही अूँचे अधिकार या पद प्राप्त होंगे जो अँग्रेजोकी बपौती है, तब लोकमान्यने तत्काल अुत्तर दिया कि "जो मिले अुसे स्वीकार कर मै अधिकके लिअे आन्दोलन करनेकी नीतिका अनुयायी हूँ। आप सेवामे प्रवेश कीजिअे और वहाँ अपनी योग्यता दिखलाअिये। अपनी योग्यताके बलपर ही आप भविष्यमें अूँचे पदोकी मॉंग कर सकेगे। बाहरसे आपके लिअे हमसे जो बन सकेगा करेगे। आज अूँचे पद प्राप्त नही है, अिसलिअे सेनामे शरीक न होना भविष्यमे देशको धोखा देना है—कर्तव्यपराड्मुखता है। मानवको आकाक्षाओकी प्राप्ति कभी अेकाअेक नही होती। दूसरी तथा अधिक महत्वकी बात यह है कि हम स्वराज्य-प्राप्तिकी लम्बी-चौडी बकवास करते है, परन्तु भविष्यमे मिलनेवाले स्वराज्यकी रक्षा करनेकी क्षमता-सम्पादन करनेकी अुपेक्षा भी क्या बुद्धिमानी है?" लोकमान्य तिलकके अुपदेशका अपेक्षित प्रभाव पड़ा और लगभग ८०० युवकोने जिनमे १०० डिग्रीधारी थे, सैनिक बने। अिधर लोकमान्य जनताको सैनिक बननेका अुपदेश देते थे, अुधर सरकार अुनके प्रति अधिक संशययुक्त बनती जाती थी। वह पागलो जैसा व्यवहार करती थी। पजाब सरकारने तो अुनके दिल्ली तथा पजाब प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगा दिया था। वास्तवमे पजाबमे जानेका अुनका अिरादा भी नही था। परन्तु जैसे कसको हर जगह कृष्ण दिखाअी देते थे वैसे ही अंग्रेज सरकारको सर्वत्र तिलक-ही-तिलक दिखलाअी देते थे।

नि शुल्क तथा आवश्यक प्राथमिक शिक्षा

सन् १९१७ के अप्रैलमें स्वराज्य-सघके प्रचार-कार्यके लिअे तिलक कन्नड प्रान्त गअे। अिसी समय वहाँ वेलगाँव-जिला-मराठा-शिक्षा-परिषद हो रही थी। सचालकोके आग्रहपर वे अुसमें भी सम्मिलित हुअे। प्राथमिक शिक्षापर विचार प्रकट करते हुअे अुन्होने कहा--"मैंने अपनी देश-सेवा या समाज-सेवाका श्रीगणेश शिक्षा-सस्थाकी स्थापनासे किया, अतअेव शिक्षाका कार्य मेरी स्वाभाविक रुचिका कार्य है। देशमे सर्वत्र शिक्षाका प्रचार करना सरकारका प्रथम कर्तव्य है, परन्तु यह कर्तव्य स्वदेशी सरकारका है न कि परदेशी। लोगोके निजी प्रयत्नोकी सीमा होती है। अँग्रेज सरकार शिक्षासे होनेवाली सम्भावित जागृतिके भयसे शिक्षाका प्रचार नही करती, किन्तु हम तो स्पष्ट कहते हैं कि हमारा ध्येय शिक्षित वनकर राजनीतिक अधिकारोकी माँग करना है। यदि मैं स्वराज्यमे प्रधान-मन्त्री वनूँगा तो सर्व-प्रथम नि.शुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षाकी व्यवस्था करूँगा। अिधर सरकार शिक्षाका प्रचार नही करती और अुधर कहती है कि अज्ञानी होनेके कारण भारतवासी स्वराज्यके योग्य नही हैं। हमारे लिअे केवल अेक ही अुपाय है और वह है स्वराज्य प्राप्त करना। तत्पश्चात् सूर्य अुगते ही प्रकाश मिलनेकी भाँति शिक्षाका प्रचार सहज और सुगम हो जाअेगा।" तिलक स्वराज्यको सर्वतोभिमुखी अुन्नतिका मूल स्रोत मानते थे और अुसकी ओर अग्रसर होनेके लिअे सबको प्रेरणा देते थे।

स्वराज्य-संघका पहला जन्मोत्सव

सन् १९१७ की मअीमे पूनामें स्वराज्य-सघका पहला वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष वैरिस्टर वाप्टिस्टाने सघका वार्षिक विवरण पढा। अुन्होने निवेदन किया कि हमने सर्वप्रथम लोकमान्य तिलकके नेतृत्वमें भारतमें स्वराज्य-सघकी स्थापनाकर स्वराज्यकी माँग तथा प्रचार करना कानूनी अधिकार ठहराया। अेक वर्षमें सघके १६००० सक्रिय सदस्य वने, जिनमें ५३ प्रतिशत अब्राह्मण, ४२ प्रतिशत ब्राह्मण और शेष मुसलमान तथा पारसी

थे। अध्यक्ष बाप्टिस्टा स्वय पारसी थे। लगभग २५० महिलाअें भी सदस्य बनी थी। मक्षेपमें स्वराज्य-सघ भारतीय जनताकी प्रतिनिधि राजनीतिक सस्था थी। अुस समय जब जनता अँग्रेज सरकारकी साधारण पुलिससे भी डरती थी और लोकमान्य तिलकके विरोधी जनताको भडकाते भी थे, तव अेक वर्षमें अितने सदस्य बनना कम सफलताकी बात नही थी।

स्वतन्त्र भारतका संविधान

अिसी वार्षिक अधिवेशनमें लोकमान्यने अपनी कल्पनानुसार स्वतन्त्र भारतके सविधानकी निम्नलिखित रूपरेखा प्रस्तुत की —

" भारतमें सघ सरकार (फेडरल गवर्नमेण्ट) स्थापित होगी। संघ सरकार स्वायत्त प्रान्तोके लोक-निर्वाचित प्रतिनिधियोकी बनेगी। यह सरकार भारतकी रक्षा, यातायात, मुद्रा, वैदेशिक नीति अित्यादिके शासकीय विभागोंके सचालनपर अधिक जोर देगी। प्रान्तोकी सरकारे शासनके अन्य विभागोका सचालन करेंगी। "

अुनकी कल्पना स्थूल तथा बहुत मोटी थी। परन्तु स्वतन्त्र भारतके विधानका मानचित्र अुनके सम्मुख था और वे प्रजातान्त्रिक शासन-प्रणालीके लिअे सचेष्ट थे। लगभग अिसी प्रकारका सविधान सन् १९४७ के पश्चात् सविधान सभाने बनाया। अिसी समय अुन्होने स्वराज्य-सघके सदस्योको कॉंग्रेसके प्रति अनन्य निष्ठा रखनेकी सूचना दी, क्योकि सघ कॉंग्रेसके अन्तर्गत अेक दल था। आपने यह भी सूचित किया था कि निकट भविष्यमे स्वराज्य-सघकी ओरसे अेक प्रतिनिधि-मण्डल अिंगलैण्ड भेजा जायगा और वहाँके मजदूर तथा अुदार-दलकी सहानुभूति सम्पादन कर ब्रिटिश पार्लमेण्टमें भारतीय होमरूलका विधेयक अुपस्थित करवानेकी कोशिश करेगा। अुस वर्ष अुन्होने स्वराज्य-सघके ५० हजार सदस्य बनानेकी आत्मविश्वासयुक्त घोषणा भी की जिसका स्वागत करतल-ध्वनिसे किया गया। लंदनमें अेक कार्यालय स्थापित कर अध्यक्ष बैरिस्टर बाप्टिस्टा जैसे सुयोग्य नेताको वहाँ भेजनेका प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ। लोकमान्यकी भावी योजना सुनकर सदस्यो तथा दर्शकोका

अुत्साह दूना हुआ। अुनमे नअी चेतना तथा नअी दृष्टि अुत्पन्न हुअी। स्वराज्य-संघके साथ कॉंग्रेसका कार्य भी तीव्र गतिसे बढने लगा।

सरकारकी भर्त्सना और सत्याग्रह

विदुषी डा० अेनीबेसेन्टने लोकमान्यको अिस कार्यमें सक्रिय सहयोग दिया। वे स्वराज्य-संघके प्रचारका तूफानी दौरा करने लगी। जादू-सा प्रभाव डालनेवाली अुनकी वाग्मिताका प्रभाव जनतापर पड़ने लगा। सरकारको यह बात खटकी और अुसने डा० बेसेन्टको अुटकमन्डमे नजर-कैद कर रखा। समस्त देशमे सरकारकी घोर भर्त्सना कर डा० बेसेन्टका प्रकट रूपसे अभिनन्दन किया गया। लोकमान्यने डा० बेसेन्टको तार भेजकर अुनका व्यक्तिगत अभिनन्दन किया और अपने सम्पादकीय लेखमे अुनके धैर्य, देशभक्ति, साहस तथा बुद्धिमत्ताकी प्रशसा करते हुअे जनतासे निवेदन किया कि सरकारने अुनके प्रति जो अन्याय किया है, अुसका प्रतिकार करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। लोकमान्य केवल मौखिक सहानुभूति दिखानेवाले सुख-जीवी राजनीतिज्ञ नही थे। अुन्होने यह प्रश्न बम्बअी प्रान्तीय कॉंग्रेस कमेटीमें प्रस्तुत किया और सत्याग्रह और आन्दोलन प्रारम्भ करनेकी जो योजना डा० बेसेन्टके तेजस्वी अनुयायी मद्रासमे बना रहे थे, अुन्हे काग्रेस द्वारा अुत्साहपूर्वक सदेश भेजवाया तथा सत्याग्रहके सम्भावित आन्दोलनको प्रान्तीय कॉंग्रेस द्वारा मान्यता दिलाअी। अिस कार्यमे महात्मा गाँधीने भी लोकमान्यकी सहायता की।

लोकमान्यने कलकत्तामे होनेवाले काग्रेस-अधिवेशनके सभापति-पदके लिअे डा अेनी बेसेन्टका नाम प्रस्तावित किया। अिसका समर्थन सर्व-सम्मतिसे बम्बअीकी कॉंग्रेस कमेटीने किया। अन्य प्रान्तीय कॉंग्रेस-कमेटियोने भी अिस सूचनाका अनुमोदन किया और डा० बेसेन्ट सभापति निर्वाचित हुअी। यहाँ यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि अिस अधिवेशनकी स्वागत-समितिके अध्यक्ष देशबन्धु चित्तरजनदास स्वय चाहते थे कि लोकमान्य तिलक कॉंग्रेसके सभापति बने, परन्तु अुन्होने आत्मविस्मृति कर डा० बेसेन्टका

नाम प्रस्तुत किया। कारण, जो नेता सरकारकी अप्रीतिका भाजन होता था वह तिलकके आदरका पात्र बनता था। यही बात सन् १९०७ में पंजाबसिंह लालाजीके सम्बन्धमें हुअी थी। जनतामें विदेशी सरकारके प्रति असन्तोष निर्माण करना वे देशभक्तिकी स्थूल कसौटी समझते थे। बहादुरीकी प्रशंसा करना अुनका धर्म था।

स्वराज्य-संघकी ओरसे बाप्टिस्टाको लन्दन भेजकर अुन्हें वहाँ लखनअू काँग्रेसके प्रस्तावका प्रचार करनेका आदेश दिया गया। वास्तवमें बाप्टिस्टा गअे थे स्वराज्य संघके खर्चसे, परन्तु लोकमान्यकी देश-हित-दृष्टि अितनी अुदार थी कि अुन्होंने अुन्हें काँग्रेसका ही कार्य करनेको कहा। वे समयपर जिस प्रकार आत्मविस्मृतिके अभ्यस्त थे, वैसे ही दलको भी भूल सकते थे।

अिसी समय वे गुजरातके दौरेपर गअे। वहाँ गुजराती जनताने भरूचमें आपका विशाल सभामें स्वागत किया। आपके भाषणका अनुवाद छह वक्ता भिन्न-भिन्न स्थानोंपर खड़े होकर करते थे। अुन्होंने गुजराती जनताके स्नेहपूर्ण व्यवहारकी प्रशंसा की।

भारत-मन्त्री मान्टेग्यूसे स्पष्टोक्ति

सन् १९१७ के दिसम्बरमें मान्टेग्यू दिल्ली पधारे। अुन्होंने विभिन्न दलोंके प्रतिनिधियोंको आमन्त्रितकर मिलनेके लिअे बुलाया। लोकमान्य स्वराज्य-संघके प्रतिनिधि-मण्डलके नेता बनकर अुनसे मिले। अुनसे भारतके भावी राजनीतिक सुधारोंके सम्बन्धमें विचार-विमर्श हुआ, परन्तु मान्टेग्यू साहबको सन्तोष नहीं हुआ। अुन्होंने अुनसे (तिलकसे) व्यक्तिगत भेंट करनेकी अिच्छा प्रकट की। तिलकने तत्काल अुसे स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन ही अुनकी लम्बी मुलाकात हुअी। अन्तमें हँसते-हँसते मान्टेग्यूने अुनसे पूछा—"यदि सम्भावित सुधारोंसे आपको सन्तोष न हुआ तो आपकी क्या नीति होगी?" तिलकने तत्क्षण अुत्तर दिया—"जो मिलेगा अुसे स्वीकार कर अधिकके लिअे लड़ूँगा।" कहा जाता है कि

भारत-मन्त्री अिस अुत्तरसे चौंक गअे, परन्तु अिंगलैंड जाकर अपने मित्रोंमें अुन्होंने लोकमान्यके धैर्य, दूरदर्शिता, देशभक्ति, बुद्धिमत्ता तथा व्यवहारिक ज्ञानकी बडी प्रशंसा की। अुन्होंने स्पष्ट कहा था कि तिलक अेक अद्‌भुत व्यक्ति हैं।

भाषानुसार प्रान्तोंका पुनर्गठन

सन् १९१७ के दिसम्बरमें कांग्रेसका अधिवेशन कलकत्तामें बडी सफलतासे सम्पन्न हुआ। विषय निर्धारिणी-समितिमें आन्ध्रके प्रतिनिधियोंने भाषाके आधारपर प्रान्तोंका पुनर्गठन करानेका प्रस्ताव अुपस्थित किया। अिसपर तीव्र विवाद हुआ। डा० बेसेन्ट स्वयं अिस प्रस्तावके विरुद्ध थीं, परन्तु लोकमान्य तिलकने समर्थन कर प्रस्ताव स्वीकृत कराया। अुन्होंने कहा—"यदि भारतमें प्रजातान्त्रिक राज्य-प्रणाली स्थापितकर अुसे सफल बनाना है तो प्रान्तोंकी भाषाके आधारपर पुनर्रचना करना अनिवार्य है, अन्यथा सरकार और जनतामें सामंजस्य नहीं स्थापित होगा। सरकार जनताकी सच्ची प्रतिनिधि नहीं रहेगी। जनताकी सरकारको जनताकी भाषामें ही शासन करना होगा न कि अँग्रेज सरकारकी भाँति अन्य भाषामें।" अधिवेशन समाप्त होते ही आपने बंगालमें दौरा आरम्भ किया। फिर नागपुर लौटे।

अभूतपूर्व व्यापक दौरा

सन् १९१८ की फरवरीमें आपने विदर्भ तथा मध्यप्रान्तका व्यापक दौरा किया। लगातार २० दिन तक अिस शहरसे अुस शहर और देहातसे देहातमें भ्रमण कर स्वराज्यका तूफानी प्रचार करते रहे। २० दिनमें लगभग ३०० शहर तथा देहातोंमें पहुँचे। लगभग २०० सभाओंमें भाषण दिया और स्वराज्य-संघका कार्य चलानेके लिअे लगभग २ लाख रुपअेका चन्दा अिकठ्ठा किया। आप मधुमेह जैसे असाध्य रोगसे पीडित थे। आयु ६३ वर्षकी थी और दिन प्रतिदिन चिन्ता बढ रही थी। दाहिने पाँवपर घाव था और प्रति-दिन प्रातःकाल अुसका ड्रेसिंग होता था। रोगी होनेके कारण अुन्हें पथ्यसे

रहना आवश्यक था। अुन दिनो आजकलकी भाँति यातायातके द्रुतगामी साधन नही थे। सडके खराब थी और नदियोपर पुल नही थे। अिसलिअे रेल, मोटर अेव बैलगाडीमे यात्रा करनी पडी। यह दौरा मध्यप्रान्तके ९ जिलोमें हुआ। खडवा जैसे हिन्दी भाषी शहरमें अपनी टूटी-फूटी हिन्दीमें भाषण कर आपने स्वराज्यका प्रचार किया। खामगाँव या आकोटकी विराट् सभामें भाषण करते-करते अुनके मुखसे स्वराज्यका मन्त्र अनायास प्रवाहित हुआ। वह मन्त्र था—**"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम अुसे प्राप्त करके ही रहेंगे।"** यह मन्त्र सुनते ही श्रोताओमे चेतनाकी लहर दौड गअी और स्वराज्य-आन्दोलनके लिअे अेक अुत्साहवर्धक नारा प्राप्त हुआ। लोकमान्यसे पूर्व किसी अन्य नेताने अितना विशाल दौरा कर भारतके गाँवोमें जन-जागरणके लिअे ठोस कार्य नही किया था। जनताकी शक्ति अर्थात् स्वावलम्बनमें लोकमान्य तिलकका पूरा विश्वास था। स्वराज्यका मन्त्र अुन्हे गाँव-गाँवमें प्रचारित करना था जिससे जनता स्वराज्यके लिअे सामुदाअिक आन्दोलन छेडे। २१ दिनतक लगातार भ्रमण करनेके कारण वृद्ध लोकमान्य थक गअे और आवश्यक विश्रान्ति लेनेके लिअे पूना लौटे। चन्द दिनो तक विश्राम कर वे सोलापुरकी ओर दौरा करने गअे। वहाँसे भी लगभग २५ हजार रुपयेका चन्दा अेकत्र कर पूना लौटे।

मजदूरोंका अनूठा अपनापन

भारतका दौरा समाप्त कर आवश्यक सामग्री अेकत्र करके भारत मन्त्री मॉंटेग्यू लन्दन रवाना हुअे। वे लोकमान्य पहलेसे ही लन्दन जानेका विचार कर रहे थे। वहाँ वे मजदूर दलका सहयोग प्राप्त कर अुसके द्वारा पार्लियामेन्टमें होमरूल सम्बन्धी विधेयक प्रस्तुत करवाना चाहते थे। समय पूर्णतया अनुकूल था। स्वराज्य-सघके प्रतिनिधि-मण्डलका नेतृत्व स्वीकारकर लन्दन जानेके लिअे वे बम्बअी पधारे। वहाँ अछूत समाजकी परिषद हो रही थी, अुसमें सम्मिलित हुअे और अछूतोकी सर्वांगीण अुन्नतिके लिअे सहानुभूति प्रकट की। अिसी समय बम्बअीके मजदूरोने आपके

हुआ। वास्तवमे माटेग्यू साहव अभी भारतसे नही लौटे थे। वे भारतको निकट भविष्यमे दिअे जानेवाले सुधारोके कार्यमें व्यस्त थे। अैसे समयमें लोकमान्यका ब्रिटेनमे होना सरकारने खतरनाक समझा। मजदूर दलके नेताओसे लोकमान्यकी कुछ बातचीत होनेका समाचार पहले ही ब्रिटेनमे प्रचारित हो चुका था। स्वराज्य-सघके अध्यक्ष बैरिस्टर बाप्टिम्टा अेक सालसे अिग्लैडमे रहकर अिस दृष्टिसे कुछ प्रयत्न भी कर रहे थे और ब्रिटेनका काजरवेटिव दल, जिसके हाथमें साम्राज्यकी वागडोर थी, लोकमान्यकी अुपस्थितिसे भयभीत अेव आशकाग्रस्त हो रहा था। अिन्ही कारणोसे अुनके ब्रिटेन जानेपर प्रतिवन्ध लगाया गया।

स्वराज्य बिना स्वदेश-रक्षा कैसी ?

सन् १९१७ की अप्रैलमे वायसरायने दिल्लीमे युद्ध-परिषद सम्पन्न करवाअी। अिसमे सम्मिलित होनेका आमन्त्रण सब दलोके नेताओको भेजा गया, परन्तु खतरनाक तिलक नही बुलाअे गअे। वायसरायकी अध्यक्षतामे युद्ध-परिषद प्रारम्भ हुअी। अुन्होने भारतीय नेताओ तथा जनतासे सहायताकी माँगकी और अपने देशकी रक्षाके लिअे अुनका आवाहन किया। परिषद्मे महात्मा गान्धी, जो बिना शर्त अँग्रेज सरकारको सहायता देनेके पक्षमें थे, अेवं अवैतनिक रिकरुटिंग आफीसरका कार्य भी कर रहे थे, अेकाअेक खडे हो गअे और अुन्होने वायसरायसे निवेदन किया कि जब सरकार युद्ध-परिषदमें लोकमान्य तिलक और डा० अेनीबेसेन्ट जैसे लोकप्रिय नेताओकी अुपेक्षा कर रही है, तब भारतीय जनतासे युद्ध-कार्यमें सहायता पानेकी आशा अधिक नही की जा सकती। अतअेव मुझे यह परिषद व्यर्थ मालूम होती है। अितना कहकर वे परिषदके बाहर चल पडे। तिलक स्वय वहाँ नही जा सके, परन्तु अुन्होने अपनी राय अपने परम मित्र दादा साहब खापर्डे द्वारा बडी मार्मिकतासे प्रकट करवाअी। दादा साहब खापर्डेने अपनी व्यग्यभरी विनोद-युक्त वाणीमें कहा--"वायसराय साहब, युद्धमें सहायता करने तथा स्वदेशकी रक्षाके लिअे सब भारत-

वासी तत्पर हैं। अैसा कौन भारतवासी है जो मित्रराष्ट्रोंकी विजय नही चाहता और प्रतिदिन अुसके लिअे प्रार्थना नही करता ? परन्तु आप ही बताअिअे कि स्वराज्यके बिना स्वदेशकी रक्षा कैसे हो सकती है ? वायसराय साहब अेकाअेक चिढ गअे और अुन्होने दादा साहबको बीचमें ही रोका। दादा साहब भी चतुराअीसे चुप हो गअे क्योकि अुनका हेतु सिद्ध हो चुका था। अिस प्रकार दिल्लीकी युद्ध-परिषदका अन्त हुआ। महात्मा गान्धीकी भविष्यवाणी खरी सिद्ध हुअी। जनता युद्ध-सहायतामें अुदासीन हो गअी। भारत-सरकार पश्चात्ताप करने लगी। अुसने अपनी गलती सुधारनेकी नअी युक्ति सोची और जून मासमें पुन. युद्ध-परिषद बम्बअीमें करना निश्चित किया। अिस समय बम्बअीके गवर्नर लार्ड विल-गडनने बडी सजगतासे लोकमान्य तिलक तथा स्वराज्य-सघके अन्य नेता-ओको आमन्त्रण-पत्र भेजे। लोकमान्य तिलकने निमन्त्रण स्वीकार किया, परन्तु गवर्नर साहबसे यह निवेदन किया कि वे युद्ध-परिषदमें भाषण करना चाहेंगे। अपने मित्र द्वारा प्राप्त दिल्ली-परिषद्के अनुभवोसे तिलक सजग थे। गवर्नर साहबका नकारात्मक अुत्तर न मिलनेपर लोकमान्यने समझा कि अुनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गअी है। अतअेव वे सदलबल युद्ध-परिषदमें सम्मिलित हुअे। परिषदकी कारवाअी गवर्नरकी अध्यक्षतामें प्रारम्भ हुअी। कअी राज्यनिष्ठ वक्ताओके लम्बे भाषण हुअे, परन्तु लोक-मान्यकी अुपेक्षा ही रही। अन्ततोगत्वा किसी भले आदमीकी सिफारिशपर लोकमान्यको कुछ शब्द कहनेकी अनुमति दी गअी। लोकमान्य खडे हुअे। परिषदमें गम्भीर सन्नाटा छा गया। गवर्नर साहब तथा अुच्च अधिकारियोने अपनी भौहें सिकोडी। राजा-महाराजा तथा नवाबोने भयपूर्ण दृष्टि-निक्षेप करना प्रारम्भ किया। तिलकके प्रति घृणा युक्त नजर डाली। राज्यनिष्ठ नरम दलवाले मनमें आनन्दित हुअे, क्योकि अुनके खयालसे लोकमान्य राज्यनिष्ठा व्यक्त कर युद्ध-सहायताका आश्वासन देनेके लिअे खड़े हुअे थे। परन्तु स्वराज्य-सघके अिने-गिने आमन्त्रित सदस्य भली भाति जानते थे कि तिलक वहाँ क्या कहेंगे ? अुनके मुखपर आत्मविश्वास चमकने लगा। लोक-

मान्यने गम्भीर वाणीमें कहा--"गवर्नर साहव ! मै वडी नम्रतासे भारतीय जनताकी सच्ची आकाक्षा आपके सम्मुख निवेदन करता हूँ । मै भारतकी जनताकी ओरसे आपको आश्वासन देता हूँ कि यदि भविष्यमे भारतके विरुद्ध आक्रमण हुआ तो हम भारतके सुपुत्र अुसकी रक्षाके लिअे बलिदान होनेको कटिवद्ध हैं । किसी भी बाहरी आक्रमणका प्रतिकार करनेमे हम सरकारको सहयोग देनेमें पीछे नही हैं, परन्तु स्वराज्य और स्वदेश-रक्षाका अन्योन्याश्रय सम्वन्ध कैसे भग किया जा सकता है ?" "स्वराज्य" शब्द सुनते ही गवर्नर साहव आग-बबूला हो अुठे । अुन्होने वडे अदवसे कहा—"यहाँ राजनीतिक चर्चा अवाछनीय है ।" लोकमान्य भी सिद्धहस्त थे । वे "ये यथा मामप्रपद्यन्ते तास्तथैव भजाम्यहम्" तत्वके अनुयायी थे । अुन्होने तत्काल अुत्तर दिया--"अैसी अवस्थामें किसी स्वाभिमानी पुरुषका यहाँ अुपस्थित रहना सम्भव नही । अिसलिअे मै परिषदका परित्याग करता हूँ ।" अितना कहकर वे वहाँसे चल पडे । परिषद प्रभाहीन हो गअी ।

छह दिनोके पश्चात् १६ जूनको बम्बअीमे स्वराज्य-दिवसोत्सव मनाया गया । महात्मा गाधीकी अध्यक्षतामे विराट् सभा हुअी । महात्मा गाधीने कहा—"गवर्नर साहब द्वारा लोकमान्यके प्रति किअे गअे वर्तावका मै घोर विरोध करता हूँ । चूंकि लोकमान्यको युद्ध-परिषदमे भाषण करनेकी पूर्व अनुमति प्राप्त हो चुकी थी अतअेव वे अपना प्रामाणिक मत प्रकट कर रहे थे । अुनका बीचमे रोका जाना असभ्य अेव भर्त्सनीय है । अुनके अपमानसे साम्राज्यको बडी हानि होगी ।" तत्पश्चात् बैरिस्टर जिन्नाने कहा—"अैसे व्यवहारसे यह स्पष्ट होता है कि सरकार दिलसे जनताका सहयोग नही चाहती ।" अन्तमे लोकमान्यका सक्षिप्त भाषण हुआ । अुन्होने कहा— "अंग्रेज सरकार हमपर अप्रामाणिकताका आक्षेप करती है, परन्तु मेरे पास अुसकी अप्रामाणिकताके काफी प्रमाण हैं । यहाँ अैसा कौन व्यक्ति है जो देशकी पराधीनता बढाने तथा अुसे दृढ करनेवाले बन्धनोका स्वागत करेगा ? यदि सरकार सेनामें अूंचे पदोपर भारतीयोकी नियुक्ति करनेका आश्वासन देती है तो चन्द दिनोमें मै स्वय ५ हजार युवकोको सेनामें प्रवेश करवा सकता

हूँ। यदि मैं यह काम पूरा न कर सकूँ तो पाँच हजारमे जितनी सख्या कम होगी, अुतनीके लिअे प्रत्येकपर मैं १०० रुपयोका दण्ड देना स्वीकार करूँगा और अिसके लिअे महात्माजीके पास पचास हजार रुपयोकी निधि अमानत स्वरूप रखनेको तैयार हूँ। हाँ, पहला कदम सरकार अुठाअे।" अिससे स्पष्ट होता है कि वे युद्धजन्य परिस्थितिसे अधिक-से-अधिक लाभ अुठाना चाहते थे, परन्तु सम्मानके साथ।

सबेरा हुआ, परन्तु सूरज कहाँ है ?

जून मासके अन्तमे "माटफोर्ड-सुधार" की योजना प्रकाशित की गअी। लोकमान्यने बडी गम्भीरतासे अुसका अध्ययन किया। अुन्होने अिस योजनाकी मार्मिक आलोचना 'केसरी' के तीन लेखोमें की। अुन लेखोके शीर्षकोसे ही पता चलता है कि अुनमे कैसे आलोचनात्मक विचार प्रकट किअे गअे होगे। पहला लेख था, "सबेरा हुआ परन्तु सूरज कहाँ हे ?" दूसरा था, "जनाव, दिल्ली वहुत दूर है" और तीसरा था, "कवूल और नाकबूल।" सवपेपमे सरकार स्वशासनके कुछ अधिकार हमें प्रदान कर स्वराज्य देनेका स्वाग रच रही थी। जो कुछ दिया अुसमे भी विष-वीज वो दिअे गअे। कुछ सुधारोको हम स्वीकार करते हैं, परन्तु अन्य सुधारोको हम अस्वीकार कर अुनका निषेध करते हैं। सुधारोमे क्या और किस प्रकारसे परिवर्तन करना चाहिअे अिसका विवेचन अुन्होने अपनी दृष्टिके अनुसार किया। अुन्हें "मान्टफोर्ड-सुधार" कुल मिलाकर निराशाजनक तथा अपर्याप्त ही प्रतीत हुअे। फिर भी अुन्होने कहा कि—"मैं काँग्रेसके निर्णयका पूर्णतया पालन करूँगा। काँग्रेसमें अेकाधिक दल सम्मिलित होनेसे अुसका निर्णय सच्चा होता है, अत: काँग्रेसका निर्णय स्वीकार करनेमे कोअी राष्ट्रीय हानि नही। अनेक व्यक्तियो अयवा दलोकी अपेक्षा काँग्रेसकी प्रतिष्ठा वहुत अधिक माननी चाहिअे।" लोकमान्यके आलोचनात्मक लेख प्रकाशित होते ही वम्वअी-सरकारने अुनके भाषणोपर कानूनी प्रतिवन्ध लगा दिया। महात्मा गाधीने सरकारी कारखाअीका तत्काल विरोध किया और कहा कि सरकारकी अिस नीतिसे

मेरे रिक्रूटिंग कार्यमे वडी वाधा पहुँचती है। सरकारको तिलक परसे प्रतिबन्ध हटाना चाहिअे। सरकारपर कुछ भी असर नही पडा, परन्तु तिलकको निकट भविष्यमे बम्बअीमे होनेवाले कॉग्रेस-अधिवेशनमें भाषण देनेकी अनुमति मिल गअी। सरकार किसी प्रकारसे तिलकको चिढाना चाहती थी, ताकि भावावेशमे आकर वे कुछ कटु बोले या लिखे, परन्तु तिलकमे सागरोपम शान्ति तथा रुद्रताका स्वर्ण-सगम था। वे अच्छी तरहसे जानते थे कि तेजस्विताका अुपयोग कहाँ और कैसे करना चाहिअे।

बम्बअीमे कॉग्रेसका विशेष अधिवेशन

नरमदलवादी सयोगसे अिसी समय कॉंग्रेससे अलग हुथे थे। अुन्होने 'लिबरल फेडरेशन'की स्थापना कर अुसके द्वारा "मान्टफोर्ड-योजना" ज्यो-की-त्यो स्वीकार कर ली। अुन्होने यह भली-भाँति ताड़ लिया कि कॉग्रेसका निर्णय लोकमान्य तिलकके अिशारेपर ही होगा, अिसलिअे संघर्ष क्यो मोल लिया जाय? कालकी महिमा विचित्र होती है। जिन नरमदलीय लोगोने दस वर्ष पूर्व लोकमान्यको कॉग्रेससे बाहर निकालनेका षड्यन्त्र रचा था, लोकमान्यके बहुमतसे भयभीत होकर अब अुन्हे ही कॉग्रेससे स्वेच्छापूर्वक अलग हो जाना पड़ा। वास्तवमे लोकमान्यने पहले ही यह प्रकट कर दिया था कि वे काँग्रेसका निर्णय ज्यो-का-त्यो स्वीकार करेगे, परन्तु नरमदलवाले "मान्टेग्यू-सुधार" कार्यान्वित करनेके लिअे अितने आतुर थे कि अुन्हे लोकमान्यका साथ भी असह्य प्रतीत हुआ। कॉग्रेसके मुख्य प्रस्तावपर लोकमान्य तिलक, डा० अेनीबेसेन्ट तथा बाबू विपिनचन्द्र पालके भाषण हुअे। कॉग्रेसने लखनअूका प्रस्ताव दुहराया और कहा कि भारत स्वराज्यके लिअे योग्य है, अतः अिस दृष्टिसे "मान्टफोर्ड योजना" के सुधार अपर्याप्त, असमाधानकारक तथा निराशापूर्ण हैं। यदि अुन सुधारोमे अभीष्ट परिवर्तन या सशोधन हो जायँ तो कॉग्रेस अुनको स्वीकार करेगी और स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे अधिक प्रयत्नशील होगी। यह प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ। लोकमान्यने तुरन्त भारत-मन्त्री मान्टेग्यू साहबको अपनी मुलाकातके समय अुत्तर दिया था "I shall

accept what will be given but agitate further for more." यही कथन कॉंग्रेसकी निर्धारित नीति बना। वे सचमुच कॉंग्रेसके कर्णधार बने। अिसी अधिवेशनमें दूसरे प्रस्ताव द्वारा निश्चित हुआ कि कॉंग्रेसकी ओरसे अेक प्रतिनिधि-मण्डल लन्दन भेजा जाय। यह प्रतिनिधि-मण्डल, मान्टफोर्ड-सुधारके सम्बन्धमें कॉंग्रेसके सशोधनोसे पार्लमेण्ट तथा भारत-मन्त्रीको परिचित करावे। अिस प्रतिनिधि-मण्डलमें लोकमान्य तिलकको सम्मिलित किया गया और अुनकी अिच्छानुसार ही अन्य सदस्य चुने गअे जिसमें लोकमान्यके परम मित्र दादा साहेब खापर्डे, बाबू विपिनचन्द्र पाल, न. चिं. केलकर और श्री विट्ठल भाअी पटेल अित्यादि प्रमुख थे। यह प्रतिनिधि-मण्डल लन्दन गया और अुसने अपेक्षित कार्य किया।

मूक अध्यक्ष

अधिवेशन समाप्त होते ही लोकमान्य पूना लौटे। अुनके साथ बगालके प्रमुख नेता बाबू विपिनचन्द्र पाल, देशबन्धु चित्तरजनदास, अमृतबाजार पत्रिकाके तपे सम्पादक बाबू मोतीलाल घोष और मद्रासके नेता चिदम्बरम् पिल्ले आदि भी थे। अिन नेताओसे तिलकका बडा प्रेम था। पूनामें देशबन्धुदास तथा पाल बाबूके भाषण हुअे। अध्यक्ष लोकमान्य तिलक थे, परन्तु कानूनी प्रतिबन्धके कारण भाषण नही दे सकते थे और कानून भग कर अुस समय जेल भी नही जाना चाहते थे, क्योंकि अुनके सामने अन्य अधिक महत्वपूर्ण कार्य थे। अतअेव मूक अध्यक्ष बनकर अुन्होने सरकारको निरुत्तर कर सामयिक कार्यमें हाथ बँटाया। बाबू विपिनचन्द्र पालने भाषणके प्रारम्भमें अुन्हे "दैवीगुण सम्पन्न अध्यक्ष" कहकर प्रणाम किया।

लन्दनकी ओर प्रस्थान

अिसी समय लोकमान्य तिलकने लन्दनकी प्रीवी कौसिलमें अँग्रेजी लेखक सर वेलटाअिन चिरोलके विरुद्ध मानहानिका अभियोग चलाया। अुक्त लेखकने अपनी "अनरेस्ट अिन अिन्डिया" नामक पुस्तकमें तिलकको "दी फादर आफ अिन्डियन अनरेस्ट" अर्थात "भारतीय अशान्तिका जनक" कहा

था। वास्तवमे तिलक अिस सम्वोधनपर आपत्ति नही कर सकते थे, क्योकि प्रचलित राज्यशासनके विरुद्ध जनतामे असन्तोष जागृत करना वे अपना धर्म मानते थे। अिस सबोधनका व्यग्य-भरा अुपयोग कर अुक्त लेखकने अुनका सम्बन्ध सामयिक अत्याचारो तथा क्रान्तिकारियोसे जोड़कर अुनके विरुद्ध जो असत्य अेव विषाक्त प्रचार किया, अुसे वे वरदाश्त नही कर सके। अभियोगकी तारीख निकट थी। भारत-सरकारने बडी अुदारतासे अुनका पासपोर्ट मजूर किया, परन्तु अुसमे भी अेक टाँग अड़ाअी कि वे अिग्लैंड जा सकते है, बशर्ते कि वहाँ राजनीतिक भाषण न दे। अुन्होने अिस शर्तका विष भी निगल लिया। अुन्हे विश्वास था कि जैसा पहले दो बार हो चुका है, चन्द दिनोमे ही भारत सरकार अपनी गलती सुधारेगी और अुन्हे वहाँ अुचित स्वतन्त्रता दी जावेगी। वे अेकाअेक लन्दनके लिअे स्टीमरमे चल पड़े। असख्य मित्र तथा अनुयायियोने अुन्हे समारोहके साथ विदाअी देनेकी बात सोची थी, काफी व्यवस्था भी की थी, परन्तु लोकमान्यने अुसे अस्वीकार कर दिया।

पार्लियामेन्ट हाउस, लन्दनके समक्ष होमरूल प्रतिनिधि-मण्डल
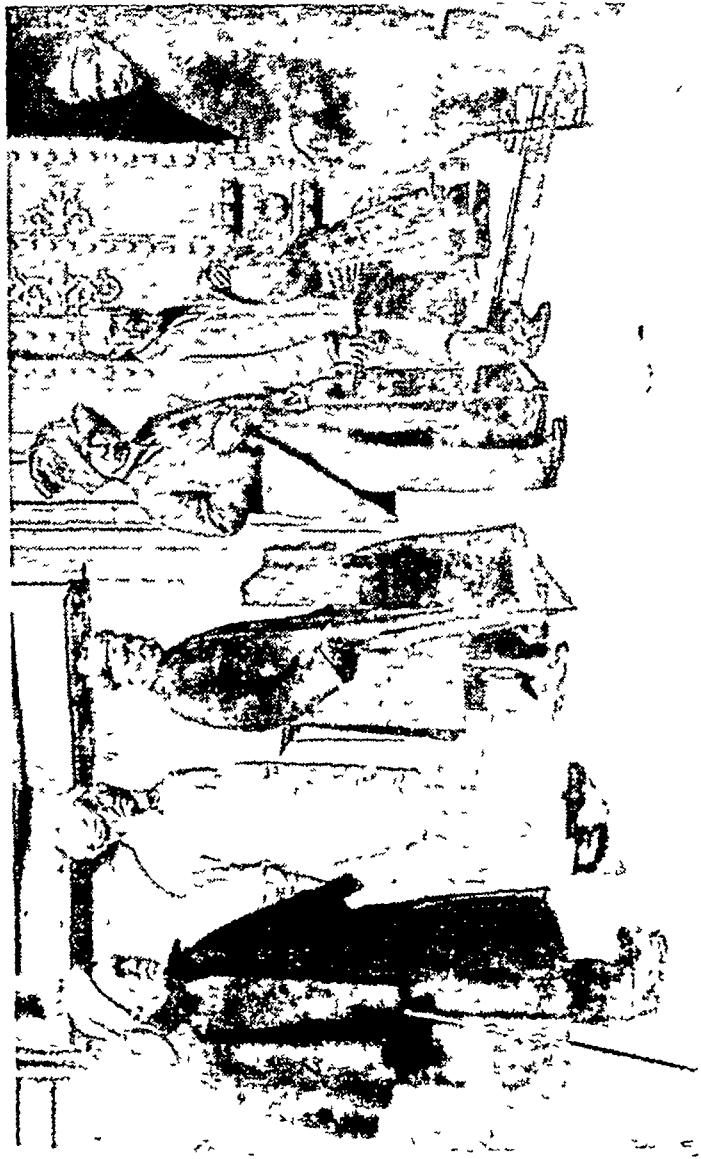
बाओ ओरसे—श्री विपिनचन्द्र पाल, डा पी जी. मेहता, लोकमान्य तिलक, माननीय खापर्डे, माननीय विट्ठलभाओ पटेल और श्री नृसिंह चिन्तामणि केळकर

अठारहवाँ प्रकरण

काँग्रेसके निर्वाचित सभापति
और
अिंग्लैंडमें स्वराज्यका कार्य

कोऽतिभार समर्थानां कि दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेश. सविद्यानां क. पर प्रियवादिनाम् ॥

लोकमान्य तिलक २३ सितम्बरको वम्बअीसे रवाना हुअे । अुस समय जल-प्रवास वडा भयावह होता था । अदन पहुँचनेमे अुनके स्टीमरको दस दिन लगे । भारतीय प्रवासी होनेके कारण किनारे पर नही अुतर सके । अिसी समय दिसम्बरके अन्तमें दिल्लीमे होनेवाले कॉग्रेस-अधिवेशनके आप सर्वसम्मतिसे अध्यक्ष चुने गअे । अुन्हे अिसका समाचार अदनमे मिला, परन्तु न कोअी हर्ष था, न खेद । तिलकके भाग्यमें कॉग्रेसके अध्यक्ष-पदपर विराजना नही लिखा था । सन् १९०७ मे अुनका नागपुरमे होनेवाली कॉग्रेसका अध्यक्ष चुना जाना प्राय निश्चित-सा था, परन्तु नरमदलने छल-नीतिसे वाजी मार ली और अधिवेशन नागपुरके वदले सूरतमे हुआ । पुनः सन् १९१७ मे कलकत्ता-अधिवेशनका अध्यक्ष चुना जाना भी लगभग निश्चित-सा था, क्योकि स्वागत-समिति तथा कॉग्रेस-कमेटियोका यही मत था । परन्तु अुन्होने स्वयम् अपना नाम वापस लेकर डा. अेनीवेसेन्टका नाम प्रस्तावित किया और वे अध्यक्षा वनी । वे नाम तथा पद या अधिकारके लिअे लालायित नही थे । अधिकार या पदको वे सेवाका साधन मानते थे । अिसलिअे काँग्रेसका सभापति चुना जाना अुनके लिअे विशेष हर्ष या गर्वकी घटना नही थी । यदि वे अिस सम्मानके लोभी होते तो दूसरे ही स्टीमर द्वारा अदनसे भारत लौटते और भारतकी राजवानीमे

अपना शाही जुलूस निकलवाकर 'जयजयकार' करवा, फूलोकी वर्षामें अध्यक्षीय मचपर विराजमान होनेकी अभिलाषा पूरी करते। किन्तु अुनकी स्थिति अैसे कर्मयोगी तथा स्थितप्रज्ञ की थी, जो कार्यके फल या कार्यसे प्राप्त यश अथवा सम्मानकी अपेक्षा कार्यको ही अधिक महत्व देता है। दूसरी विशेष महत्वकी बात यह थी कि अुनके द्वारा आरम्भ किया गया स्वराज्य-सम्पादन करनेका कार्य अभी अधूरा था। वे स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे ही ब्रिटेन जा रहे थे। अत, कार्य करनेका सात्विक आनन्द त्यागकर अध्यक्ष होनेका राजसी आनन्द अुन्हे आकर्षित न कर सका। फिर वे कॉग्रेसके निर्वाचित अध्यक्षके नाते अिग्लैण्ड जा रहे थे। अत. अुनका पलड़ा भारी था। अुनकी प्रतिनिधि होनेकी योग्यता बहुत बड़ी थी और वे अिससे लाभ अुठाना चाहते थे। वे जितने सिद्धान्तके पक्के थे अुतने ही व्यवहारके भी। लन्दन पहुँचनेमें अुन्हे चालीस दिन लगे। बीचमे जिब्राल्टरके पास धोखेकी आशका होनेसे स्टीमरके अधिकारी प्रवासी लोगोको 'लाअिफ बेल्ट' पहनने तथा 'लाअिफ बोट' चलानेकी शिक्षा देने लगे। बूढे तिलक नवयुवकोके जैसे अुत्साहसे यह शिक्षा लेते थे। अुनका अुत्साह अधिकारियोसे भी देखते बनता था। अुनके लदन पहुँचते ही महायुद्ध समाप्त हुआ और मित्र राष्ट्रोकी विजय हुअी। लोकमान्यने तत्काल अपनी तथा काग्रेसकी ओरसे ब्रिटनके तत्कालीन प्रधान अेव युद्ध-मन्त्री लायड जार्जको बधाअीका तार भेजा। फ्रान्सके प्रधान-मन्त्री तथा अमेरिकाके अध्यक्ष अुड्रो विलसनका भी तार भेजकर अभिनन्दन किया। चन्द दिनोमे ही ब्रिटिश सरकारने अुनपर लगी रोक बहुत थोडे प्रयत्नोसे हटा ली। अुन्होने पूनामें जो अपेक्षा की थी वही पूर्ण हुअी। धीरजका फल हमेशा अच्छा ही होता है। अब वे वह राजनीतिक हलचल करनेके लिअे मुक्त थे, जिसे मनमे रखकर बाहर आअे थे।

स्वराज्यका कार्य

मजदूर-दलसे सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्ध जोड़ना और अुसे पार्लमेण्टमें "भारतके स्वशासनका विधेयक" अुपस्थित करनेके लिअे तैयार करना

आपका प्रमुख हेतु था। अिस दृष्टिसे आपने पार्लमेण्टरी मजदूर-दलके नेता, रैम्से मेकडोनाल्ड, लंसबरी, वेजवुड वेन और वेनस्कूर आदिसे परिचय प्राप्त किया तथा अुन्हे भारतकी यथार्थ परिस्थिति अेव आकाक्षाओकी जानकारी दी और निकट भविष्यमे होनेवाले पार्लमेण्टके चुनावमे मजदूरदलकी सहायता करनेका आश्वासन दिया। मजदूर-दलका मुखपत्र "हैराल्ड" अुनके मतोका समर्थन करने लगा और अुसमे अुनके वक्तव्य प्रकाशित होने लगे। अुन्होने जान लिया था कि पार्लमेण्टमे आजका विरोधी पक्ष मजदूर-दल ही भविष्यमे सरकार बनाअेगा, क्योंकि वह प्रगति-प्रिय था। अनुदार-दलकी अपेक्षा भारतके प्रति अुसकी सहानुभूति अधिक थी। अिसलिअे मजदूर-दलसे राजनीतिक-गठबन्धन करना अुनका प्रमुख ध्येय था और कुछ सीमा तक वे अिसमे सफल भी हुअे। श्री न. चि. केलकरसे "अिन्डियाज केस फार होमरूल" पुस्तिका लिखवाकर अुसकी हजारो प्रतियाँ छपवाअी गअी तथा अुन्हे नि शुल्क ब्रिटेनमे बाँट दियागया ताकि सर्वसामान्य जनता भारत अेव अुसकी वास्तविक राजनीतिक आकाक्षाओसे परिचित हो। अिसकी प्रतियाँ सब दलोके नेताओ तथा कार्यकर्ताओको भेजी गअी। अिसके अतिरिक्त हजारो प्रतियाँ अमेरिकामे पजाबसिंह लाला लाजपतराय तथा डा हार्डीकरको गअी। अमेरिकामे अुन्होने अुनका अपेक्षित अुपयोग किया। तीसरी बात यह थी कि अुन्होने अपने तथा अन्य साथियोके भाषणो द्वारा स्वराज्यका प्रचार प्रारम्भ किया। सौभाग्यसे बैरिस्टर बाप्टिस्टा तथा पाल बाबू जैसे प्रभावशाली वक्ता अुनके निकटस्थ साथी थे। तिलक स्वयम् स्काटलैंड गअे और वहाँ ग्लासगो तथा अन्य शहरोमे प्रचार किया। अेडिन्बरामें अुनका दो-तीन जगह स्वागत तथा भाषण हुआ। ग्लासगोमे ट्रेड यूनियन काग्रेसकी ओरसे स्वागत किया गया। ट्रेड यूनियन कॉग्रेसके हालमें तिलकके प्रवेश करते ही हजारो दर्शक अुनके सम्मानमे खडे हो गअे। प्रसिद्ध मजदूर नेता और ब्रिटेनके भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री श्री रेम्से मेकडोनल्डने अुनके सम्बन्धमे आदरके अुद्‌गार व्यक्त किअे। अुन्होने कहा कि भारतवर्षमें सरकारके विरुद्ध जो असन्तोष है और जिसके कारण जनता यातना तथा कष्ट भोगनेके लिअे प्रस्तुत है, अुसकी

प्रत्यक्ष मूर्ति तिलक है। तिलकने भी भारतकी आर्थिक दुर्दशाका करुण चित्र खीचा और कहा कि स्वराज्य-प्राप्तिके विना भारतके मजदूरोकी बुरी दशा नही सुधर सकती। बीचमे अुनके कअी भाषण लन्दन तथा बर्मिघममे हुअे। अुन्होने अमेरिकामे प्रचार करनेके लिअे अिसी प्रकारसे विख्यात वक्ता लाला लाजपतरायको प्रोत्साहित किया और अुन्होने वहाँ बडी सफलतासे कार्य किया। चौथा महत्वका कार्य था ब्रिटिश कॉग्रेस कमेटीकी पुनर्व्यवस्था तथा पुन संगठन। तिलक वहाँ गअे तब अुन्होने देखा कि यह शाखा अपेक्षित कार्य ठीक ढगसे नही करती। यही नही अुसके कार्यकर्ता कॉग्रेसकी निर्धारित नीतिसे मतभेद रखते थे। अिस शाखाके द्वारा जो "अिण्डिया" नामक पत्र प्रकाशित किया जाता था, अुसमे कॉग्रेसकी नीतिकी आलोचना भी की जाती थी। अुन्होने कार्यालयकी पुनर्व्यवस्था की, "अिण्डिया" पत्रके सम्पादक मि० पोलकको कामसे पृथक् किया और मिस नार्मट्न तथा श्री न. चि. केलकरको सयुक्त-सम्पादक नियुक्त कर पुन अुसका प्रकाशन चालू किया। अिसके द्वारा कॉग्रेसकी अधिकृत नीतिका प्रभावशाली प्रचार प्रारम्भ हुआ। अिसकी प्रतियाँ अमेरिका जाने लगी। ब्रिटिश कॉग्रेस कमेटीका भी नव सगठन हुआ और सैकडोकी सख्यामे लोग अुसके सदस्य बने। पत्र-व्यवहारका सिलसिला नियमित किया गया। आफिसकी व्यवस्थामे अुचित सुधार हुअे। अुन्होने भारतमे सदेश भेजे कि महायुद्ध अभी समाप्त हुआ है, अत. कॉग्रेस तथा स्वराज्य-सघकी ओरसे अधिक-से-अधिक प्रतिनिधि-मण्डल तुरन्त अिंगलैंड आअे। अिस प्रकारके कार्योमे अुनके तीन-चार मास व्यतीत हुअे। अिसी समयपर वेलन्टाअिन चिरौलके विरुद्ध चलाअे गअे मानहानिके मुकदमेने रग पकडा, अत तिलकका बहुतेरा समय अुसमे लगने लगा।

चिरोलके विरुद्ध मानहानिका मुकदमा

हम पहले ही लिख चुके है कि "लदन टाअिम्स" के सवाददाता सर वेलन्टाअिन चिरोलने अपनी पुस्तकमे लोकमान्य तिलकको "भारतीय

अशान्तिका जनक" कहकर आपका सम्बन्ध राजनीतिक अत्याचारोसे जोडनेका निन्दनीय प्रयास किया था। लोकमान्य तिलकको यह बात खटकी और अुन्होने लदनकी अदालतमे मानहानिका मुकदमा दायर किया। लोकमान्यने "लदन टाअिम्स" के सवाददाता सर वेलन्टाअिन चिरोलके विरुद्ध मानहानिका मुकदमा अिस आशासे चलाया कि ब्रिटेनमे अुन्हे न्याय प्राप्त होगा। वे समझते थे कि यह अुनका व्यक्तिगत तथा निजी मामला है, परन्तु भारत-सरकार अुनका व्यक्तित्व अितना विशाल तथा भयावह मानती थी कि अुसके लिअे अिस मुकदमेमे अुनके व्यक्तिगत प्रश्नका सवाल ही न रहा। अुसने अितनी दिलचस्पी ली कि चिरोलकी सहायताके लिअे अेक विशेष अफसर तमाम सरकारी कागजात लेकर भारतसे विलायत भेजा गया। दूसरी ओर अँगरेजोने अिसे अपने देशकी प्रतिष्ठाका प्रश्न बना डाला। सर वेलन्टाअिन की पैरवी करनेके लिअे आयरलैडके विख्यात बैरिस्टर सर अेडवर्ड कार्सन आअे जो आयरलैडके होमरूल-आन्दोलनके कट्टर शत्रु थे और जिनका हृदय साम्राज्यवादी अहकारसे परिपूर्ण था। सर अेडवर्ड कार्सनने तिलकके विरुद्ध पैरवी करते समय न्यायाधीशसे कहा था कि "यदि अिस मुकदमेमे तिलक जीत गअे तो भारतमे ब्रिटिश सरकारकी बेअिज्जती होगी।" अिस प्रकार अेक होमरूल विरोधी साम्राज्यवादी बैरिस्टर भारतीय होमरूलके जनक तिलकके विरुद्ध कोर्टमे खडा हुआ। ब्रिटेनके अनुदारदलने भी सहायता की। अिधर तिलक भी अपनी बातके पक्के थे। अुन्हे आगे रक्खा हुआ कदम पीछे हटाना मजूर न था। अुन्होने अपनी औरसे विख्यात बैरिस्टर सर जान सायमनको नियुक्त किया और स्वय दिनरात कानूनका अध्ययन कर अुनकी सहायता करने लगे। परन्तु लन्दनकी अदालतमे न्यायकी आशा करना अुनके लिअे बालूमे तेल निकालनेके समान हास्यास्पद था। न्यायाधीशने चिरोलको निर्दोष ठहराया और मुकदमेका व्यय तिलकके जिम्मे डाला। तिलककी पूरी हार ही नही हुअी, वरन् अुन्हे वह हार लगभग दो लाख रुपयोकी भारी कीमत देकर खरीदनी पडी। क्या सोचा था और क्या हुआ। तिलकके मित्र बहुत दुखी हुअे, परन्तु वे स्वय धीर गम्भीर थे। अुनकी शान्ति रत्ती भर भी कम नही

हुअी। भारतमे अुनकी हारका समाचार फैलते ही सैकड़ो मित्र तथा अनुयायी दुखी हुअे। अुन्होने सरकारी नीतिका जवाव देनेका निश्चय किया और तत्काल अपने प्रिय नेता तिलकको तार भेजा कि "आप चिन्ता न करे, अपना स्वास्थ्य सम्भाले। हम चन्द दिनोमे दो लाख रुपये भेज रहे है।" यह तार मिलनेपर तिलकको कष्ट हुआ। अुन्होने तत्काल तारसे अुत्तर दिया कि यह मेरा व्यक्तिगत कार्य था। मैंने निजी जिम्मेदारीपर प्रारम्भ किया था। अुसका प्रायश्चित मुझे भुगतना चाहिअे न कि समाजको। आप चन्दा अिकट्ठा न करे। मै अेक दो वर्ष राजनीतिसे सन्यास लेकर ग्रथोकी रचना करूँगा और यह ऋण चुका दूंगा। आप मेरी प्रकृतिकी चिन्ता न करे। मै अिससे भी बुरे दिनोके बीच गुजर चुका हूँ। यदि अुनसे दब जाता तो आज जीवित न होता। अिस तारसे अुनके मित्रो तथा अनुयायियोका अुत्साह दुगुना हुआ। अिसी समय लन्दन-विश्वविद्यालयके ओरिअेंटल अिंस्टीटयूटके सस्कृत अध्यापक आचार्य कान्हेरे शास्त्री तिलकसे मिलने आअे। आपने आत्मीयतासे तिलकसे पूछा कि क्या वे बहुत निराश हुअे है। तिलकने तत्काल अुत्तर दिया कि "मेरे कोशमे निराशा शब्द मिलता ही नही। मै जय तथा पराजयकी परवाह नही करता। मेरा धर्म कार्य करना है।" शास्त्रीजी यह अुत्तर सुनते ही अवाक हो गअे। सम्राट् नेपोलियनके शब्द-कोशमें 'अशक्य' शब्द न था, अुसी तरह तिलकके कोशमे भी 'निराशा' शब्द न था। सर वेलटाअिन चिरोलने ही अपने 'अिन्डिया' नामक ग्रथमें, जो सन् १९२५ मे प्रकाशित हुआ, लोकमान्यके बारेमे प्रशंसाके अुद्गार व्यक्त किअे। अुन्होने लिखा कि "भारतवर्षमे बीसवी शताब्दीमें लोकमान्य तिलक जैसा लोकोत्तर पुरुष अन्य नही हुआ। कदाचित महात्मा गाधी ही अुनकी बराबरी कर सकते है। तिलक गाधीजी जैसे नम्र तथा सौम्य नही थे, परन्तु वे अधिक बुद्धिमान तथा गम्भीर राजनीतिज्ञ थे। अपने धर्मपर अुनकी अटल श्रद्धा थी। वे जन्मसिद्ध नेता थे। वे अँगरेजी भाषामें अच्छी तरह भाषण दे सकते और लिख सकते थे। अुन्होने यूरोपीय राजनीतिक आन्दोलनोका गहरा अध्ययन कर अुसका मर्म ग्रहण किया था। सच तो यह है कि अुन्होने

आयर्लैण्डके 'लैण्ड लीग' आन्दोलनका भरसक अनुकरण कर सन् १८९६ में महाराष्ट्रके अकाल-पीडितोका अनूठा अुपकार किया। अुन्हे देश-सेवाके लिअे कठोर प्रायश्चित भी भुगतना पडा। वे अपने प्रान्तमे जितने प्रिय थे अुतने ही अन्य प्रान्तोमे भी। जब वे डा. अेनीबेसेटके साथ लखनअू कॉंग्रेसके मचपर विराजे तब दर्शकोने सिर झुकाकर अवतारी पुरुषके समान अुनका स्वागत किया।

भारतीय जनता अपने नेताकी निस्वार्थ तथा निरपेक्ष नीतिसे भली-भाँति परिचित थी। वह तिलकसे अुपर्युक्त आशयके अुत्तरकी ही अपेक्षा करती थी, परन्तु वह अुदात्त हेतुसे अुत्तेजित थी। अुसने तथा नेताओने तार द्वारा तुरन्त लोकमान्यको अपने हेतुका स्पष्टीकरण भेजा। अुनका तार अिस आशयका था, "पूज्य लोकमान्यके चरणोमे, आपका अपेक्षित अुत्तर मिला। आपसे हमारा अिस विषयमे प्रामाणिक मतभेद है। हम अिसे आपका व्यक्तिगत मामला नही समझते। भारत-सरकार तथा ब्रिटिश सरकारने अिसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया और भारतीयोकी राष्ट्रीय भावनाको चुनौती भी दी। हम सरकारकी चुनौतीको स्वीकर कर अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निबाहना चाहते हैं। कृपया चिन्ताग्रस्त न हो।" निस्वार्थताकी मूर्ति तिलकका अिससे भी समाधान नही हुआ। वे मित्रोको चन्दा अेकत्र न करनेकी सलाह देते रहे, परन्तु मित्रोने अुनकी सलाह न मानी और तीन महीनेमे ढाअी लाखका "तिलक पर्स फड" अिकट्ठा किया। तिलकके परम मित्र दादा साहब खापर्डेने, जिन्हे वे बडा भाअी कहते थे, अुनपर प्रेमका दबाव डाला और लन्दनकी अदालतमे चिरोलके मुकदमेका व्यय अदा किया गया। अिस प्रकार तिलक अिस सकटसे मुक्त होकर राजनीतिक कार्यमें जुट गअे।

भारत-मंत्रीसे सुधार सम्बन्धी चर्चा

भारतसे प्रतिनिधि-मण्डल आनेमे कुछ विलम्ब हुआ। माटफोर्ड सुधारमें किन सशोधनोकी आवश्यकता है, अुसके सम्बन्धमें लोकमान्यने अपने

भाषणो द्वारा वहाँके राजनीतिक नेताओको परिचित कराया। लन्दनमे तीन-चार सभाअे हुअी। अेक सभामे श्री भूपेन्द्रने, जो कि नरमदलके नेता थे, माटफोर्ड-सुधारकी बडी प्रशसा की और भारत-मत्रीको धन्यवाद देते हुअे कहा कि भारतवासी अुसे विना हिचकिचाहटसे कार्यान्वित करेगे। सयोगसे लोकमान्य वहाँ अुपस्थित थे। अुन्होने अुपवक्ताके नाते दूसरा भाषण देकर माटफोर्ड-सुधारोको अपर्याप्त वतलाया तथा दिल्ली-कॉग्रेस द्वारा स्वीकृत सशोधनोका तर्क-युक्त विवेचन किया। अुनका भाषण अितना प्रभावशाली हुआ कि अुसी सभामे मजदूर दलके नेताओने, जिनमे सर्वश्री लॅन्सबरी, वेजवुड बेन, अुदर फोर्ड अित्यादि थे, अुनका समर्थन किया और कॉग्रेस द्वारा अुपस्थित किअे गअे सशोधनोको महत्व दिया। अिस प्रकार वे वहाँ भारतके अनुकूल वातावरण निर्माण करनेमे व्यस्त थे। यथासमय भारतसे चार-पाँच प्रतिनिधि-मण्डल लन्दन पहुँचे। तिलकने कॉग्रेस तथा स्वराज्य-सघके प्रतिनिधि-मण्डलोका नेतृत्व किया क्योकि दोनोके ध्येयकी समानता थी। अिसी वीच भारत-मन्त्री मान्टेग्यूने दो बार अुनसे व्यक्तिगत चर्चा की। अिन चर्चाओमे अुन्होने सभाव्य सशोधनोकी छानबीन की। तिलक वालकी खाल निकालनेमे निपुण थे। अुन्होने भारत-मन्त्रीको स्पष्ट वता दिया कि कॉग्रेस द्वारा अुपस्थित किअे गअे सशोधनोको सुधारोमे सम्मिलित किअे विना भारतवासियोका सुधारोसे समाधान नही होगा। भारत-मन्त्रीने कॉग्रेस द्वारा अुपस्थित किअे गअे लीग-मेलका साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व, अुसका विभिन्न प्रान्तोमें प्रतिशत प्रमाण तथा कही-कही सन्तुलनके लिअे कुछ अधिक प्रतिनिधित्व देनेके सिद्धान्त स्वीकारकर अुन्हे सुधारोमे सम्मिलित किया और सशोधनोपर सद्भावसे विचार करनेका आश्वासन दिया। अुसी समय वहाँ ज्वाअिन्ट पार्लमेन्टरी सब कमेटीकी कारवाअी प्रारम्भ हुअी। लोकमान्य तिलकको अुसके सम्मुख अपना वयान तथा सुझाव देने पडे। अुन्होने कॉग्रेस द्वारा समर्थित सुझावोपर ही जोर दिया। बीचमें अुनके पैरमे दर्द पैदा हुआ, जिसके कारण अुनसे चलते नही वनता था। अुन्हे कमरेसे मोटर तक सहायक नामजोशीके कन्धो

पर हाथ रखकर जाना पडता था, फिर भी अुन्होने कार्यमे रुकावट नही आने दी। अैसी हालतमे ही वे "ब्रिटेन अेन्ड अिन्डिया सोसायटी" मे भाषण देने गअे। सभामे अतीव भीड थी, जिसमे दो तिहाअी अँगरेज श्रोता थे। यह भाषण अुन्होने सर विलियम ड्यूकके भाषणके अुत्तरमे दिया। श्रोतागण अुसे सुननेके लिअे अुत्सुक थे। तिलकने निर्विकार चित्त तथा गम्भीरतासे ड्यूक साहबके भाषणकी तर्क-पटु आलोचना की। अुनका यह भाषण अितना प्रभावशाली तथा अुत्कृष्ट हुआ कि मिसेस सिम्सन नामक विदुषीने अुनको अेक अभिनन्दन-पत्र भेजा। अुसने लिखा कि 'आपका कलका भाषण अतीव अुत्कृष्ट था। अन्य वक्ता जिस शिष्टताकी मर्यादाका पालन नही करते, आप अुसका पालन करते हैं। मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुअी कि आप आन्दोलनोमे व्यक्तिगत मत्सर द्वेष तथा घृणाको अवसर नही देते। आप अिनके परे हैं। आपकी निर्विकार राष्ट्रीयताका मुझपर बडा असर पडा। वास्तवमे देश-सेवाके लिअे आपको काफी अुग्र तथा भयावह दण्ड भुगतना पडा, परन्तु अुसके प्रतिशोधमे थोडी भी विषाक्त भावना आपके हृदयमे स्थान नही रखती थी। यह आपकी महानता तथा दूरदर्शिताका द्योतक है।" लोक-मान्यकी वाग्मितासे अनेक अँगरेज विद्वान् प्रभावित हुअे। मिसेस सिम्सनने स्वय वैदिक वाङ्मयका गहन अभ्यास किया था, परन्तु तिलकको वह अपना "वैदिक गुरु" मानने लगी। अिधर 'पार्लियामेण्टरी सिलेक्ट कमेटी' की कारवाअी शुरू हुअी। तिलकने अुसके अनेकानेक प्रश्नोके मार्मिक अुत्तर दिअे। दिन-रात राजनीतिक सुधारोके बारेमे अुहापोह चलता था। लोकमान्य अुन सभाओके केन्द्र-पुरुष जैसे प्रतीत होते थे।

वास्तवमें अुनका बहुतेरा समय राजनीतिक अुत्सवोमें व्यतीत होता था, परन्तु अवसर मिलते ही वे ब्रिटिश म्यूजियमकी लाअिब्रेरी तथा अिण्डिया हाअुसके ग्रन्थालयमे भी जाते और वैदिक तथा खाल्डियन सस्कृतियोके सम्बन्धमे खोज करते थे। समय-समयपर वहाँके जियोलाजिस्ट "भूगर्भ शास्त्रज्ञो" के साथ पश्चिमी संस्कृतियोके सम्बन्धमे चर्चा भी करते थे। अुन्होने "रायल अेशियाटिक सोसायटी" में हुअी प्राच्य-विद्या परिषदमें भी

भाग लिया था। लोकमान्यके प्रति अिन पश्चिमी विद्वानोका आदरभाव सन् १८९६ से था जब अुनका पहला ग्रन्थ "ओरायन" अर्थात् "वेदकाल निर्णय" प्रकाशित हुआ।

आक्सफोर्ड तथा केंब्रिज विश्वविद्यालयमे

अवसर प्राप्त होते ही लोकमान्य आक्सफोर्ड तथा केंब्रिज विश्वविद्यालयोमे गअे। अुन्होने वहाँके प्राच्य-विद्या विभागोका सूक्ष्मतासे निरीक्षण किया तथा विभागोके अध्यक्षोके साथ अुपयुक्त चर्चा की। दोनो विश्वविद्यालयोमे भारतीय तथा अन्य विद्यार्थियोने आपका हार्दिक स्वागत किया। विद्यार्थियोके भावी जीवनपर आपके भाषण हुअे। आपने कहा—"ध्येयकी रुक्ष चर्चा करनेमे समयका अपव्यय करनेकी अपेक्षा युवकोको कुछ-न-कुछ ध्येय निश्चित कर अुसके लिअे सर्वस्व बलिदान करनेको सन्नद्ध होना चाहिअे। आप किसी भी प्रकारकी देश-सेवाका निश्चय कर यहाँसे बाहर प्रस्थान करे। आप जैसे शिक्षित तथा सभ्य युवकोसे ठोस देश-सेवाकी आशा की जाती है।"

पंजाबके अत्याचार

पजाबके हत्याकाण्डके विषयमे कॉग्रेसकी तरफसे जो जॉच-कमेटी बैठी, अुसने अपनी रिपोर्टमे लिखा कि पंजाबमे १२०० आदमी मरे, और ३६०० घायल हुअे। जब यह समाचार विलायत पहुँचा तो लोकमान्य तिलकने वहाँपर जगह-जगह सभाअे कर घोर आन्दोलन प्रारम्भ किया। ता २० अक्टूबर सन् १९१९ को लदनके केक्स्टन हालमे डा. जी. बी. क्लार्ककी अध्यक्षतामें पजाबके अत्याचारोका प्रतिवाद करनेके लिअे भारी सभा हुअी, अुसमे लोकमान्यने कहा—"क्योकि मार्शल ला जारी किया गया था, अिसलिअे वहाँ पर जरूर गदर हुआ होगा। ला हरकिशनलाल सरीखे लोगोने भी मार्शल ला की घोषणाके पहले सत्याग्रह-आन्दोलनका समर्थन किया था, अिसीलिअे अुन लोगोपर भी बागियोकी तरह मुकदमा चलाया गया।

अिस हत्या-काण्डको दो मास पूर्व ही सर ओडायरने पजाव-प्रदेशको सतोषी और शान्तिप्रिय बतलाया था। अधिकारियोको माफी मिलनेका कारण यदि यह बताया जाता है कि अुन्होने नेकनियतीसे काम किया तो मै कहता हूँ कि लोगोने भी नेकनियतीसे काम किया था और अिसीलिअे अुन्हे भी छोड देना चाहिअे। यदि हिन्दुस्तानियोपर केस चलाया गया है तो वाअिसरायपर भी लदनकी अदालतमे खुली तौरसे मामला चलाया जाना चाहिअे। मै कहता हूँ कि सर ओडायर पर तो यहाँकी अदालतमे अवश्य ही मामला चलाया जाय। भारत सरकारने खुद ही कह दिया है कि भारतमे गदर था तो अुसके द्वारा नियुक्त की गअी जाँच-कमेटी तो अुसीकी बातकी पुष्टि करेगी। भारतके लोगोने तो केवल अुपवास किया तथा अपनी दूकाने बन्द रक्खी। अगर अगरेज अपने कर्तव्यको भूल जाअेगे तो भारी खलबली मचेगी। हम साम्राज्यके भीतर रहकर ही स्वतन्त्रता चाहते है। यदि कोअी स्वेच्छाचारिणी सरकार वैध कार्योको ही गदर समझती है तो जो सहायता युद्धमें दी गअी वह सब व्यर्थ हुअी। भारतवर्ष अपनी स्वतन्त्रताके लिअे लडने और मार्गमे होनेवाले कष्टोको सहनेके लिअे तैयार है।"

शान्ति-परिषदका मार्मिक आवेदन-पत्र

सन् १९१८ की दिल्ली-काग्रेसने अपनी ओरसे लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गाधीको विश्वशान्ति-परिषदके लिअे प्रतिनिधि चुना। अिस समय सन्धि सम्पन्न होकर जेनेवामें शान्ति-परिषद् प्रारम्भ हुअी थी। भारतमे अेकाअेक विषम राजनीतिक परिस्थिति अुत्पन्न होनेसे, अर्थात् रोलट अेक्टके स्वीकृत होनेसे, महात्मा गाधी सत्याग्रह-आन्दोलनके सचालनमें सलग्न थे। अत, अुनके पहुँचनेकी सँभावना न थी। लोकमान्य लदनमें थे अिसलिअे आसानीसे पहुँच सकते थे और वास्तवमें वे अुसके लिअे अुत्सुक भी थे। परन्तु दोनो सरकारोने टाँग अडाअी और अुन्हे यूरोपमे प्रवेश करनेका पासपोर्ट नही दिया। लोकमान्यने यह पहले ही ताड लिया था। वे शान्त रहे। अुन्होने चतुराअीसे काम लेनेका निश्चय किया। बडी गुप्त रीतिसे शान्ति-परिषदके

सभापति जार्ज क्लेमेंकोके पास निम्न आशयका आवेदन-पत्र भेजा, जिसकी प्रतियाँ अमेरिकाके अध्यक्ष अुड्रो विल्सन और अन्य लब्धप्रतिष्ठ सदस्योको भी भेजी गअी, जिसका साराश यह था—

१ पेरिस सन्धि-परिषदमे बने नियम न ११ तथा दिल्ली-काग्रेसके प्रस्तावके अनुसार मै आपके सद्भावपूर्ण निर्णयके लिअे यह पत्र भेज रहा हूँ। मै स्वय वहाँ अुपस्थित होना चाहता था, परन्तु ब्रिटिश सरकारने मुझपर निषेध लगा रखा है।

२ जर्मनीके भयानक आक्रमणसे ससारकी मुक्ति कर अिस महायुद्धने "नअे युग" का अुद्घाटन किया है। अब किसी भी सभ्य देशपर अुसकी अिच्छाके विरुद्ध दूसरे देशका राज्य नही चलना चाहिअे। किसी भी देगपर अुपकारके बहानेसे बलात् शासन करना अन्तर्राष्ट्रीय विधानके विरुद्ध माना जाना चाहिअे। आत्मनिर्णयका सिद्धान्त लागू कर भारतको आपसी अुलझने सुलझानेका अवसर दिया जाना चाहिअे। किसी भी अन्य राष्ट्रके समान स्वराज्य भारतका भी जन्मसिद्ध अधिकार है। यह अधिकार प्राप्त हुअे बिना सुदूर पूर्वमे शान्ति स्थापित होना असभव है। यदि भारतको स्वराज्य दिया गया तो वह शान्तिका आधार-स्तम्भ बनेगा। विश्वशान्तिकी स्थापनाकी दृष्टिसे आस्ट्रेलिया, कनाडा और दक्षिणी अफ्रीकाके समान भारतको साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य दिलवाना राष्ट्र-सघका आदिका कर्तव्य है। मै आशा करता हूँ कि राष्ट्रसघ तथा आप जैसे विश्वशान्तिके समर्थक व्यक्ति भारतके सम्बन्धमें अनुकूल निर्णय करेगे।" अिस प्रकार तिलकने शान्ति-परिषद तथा राष्ट्रसंघमे भारतके स्वराज्यका प्रश्न अुपस्थित कर अुसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमे सम्मानपूर्ण स्थान दिलाया।

मातृभूमिकी ओर

अब लोकमान्यका लन्दनमे रहना अनावश्यक प्रतीत होने लगा, क्योकि पार्लमेन्टने माटफोर्ड सुधारोमे कुछ संशोधन स्वीकार कर अुनको अेक्टका स्वरूप प्रदान कर दिया था। अिधर भारतमे रोलट कानून स्वीकृत

हुआ और जनताने अुसका तीव्र विरोध किया। महात्मा गाधीने अुसके विरुद्ध सत्याग्रहका सक्रिय आन्दोलन चलाया। अमृतसरके जलियानवाला बागमे घृणित हत्याकाड हुआ। आसेतु हिमाचल राष्ट्रीय जागृति पैदा हुअी। सरकारी दमननीतिने भयावह ताडव-नृत्य किया। सन् १९१९ के अप्रैलमे सारा देश भयानक परिस्थितियोके बीचसे गुजर रहा था। यह सब समाचार सुनकर लोकमान्यका हृदय व्याकुल अेवं चिन्ताग्रस्त था। अुन्हे भारत भूमिका-वियोग असह्य जान पडता था। अतअेव वे बिछुडे हुअे बालककी भाँति भारत-माताके दर्शन करनेके लिअे लौट पडे।

अुन्नीसवाँ प्रकरण

कर्मयोगीका स्वर्गवास

स जीवति यशो यस्य कीर्तिर्यस्य स जीवति
अयशोकीर्तिसंयुक्तो जीवन्नपि मृतोपमः

लोकमान्य तिलक ता. २७ नवम्वरको वम्वअीमे भारतभूमिके तटपर अुतरे । अुनके स्वागतके लिअे हजारोकी सख्यामे लोग बन्दरगाहपर अुपस्थित थे । बम्बअी प्रान्तीय कॉग्रेस कमेटी तथा स्वराज्य-सघके सैकडो हिन्दू मुसलमान स्वयसेवकोने अुनका आदरपूर्वक अभिवादन किया । सागर जैसी भीड अुमड़ पडी । स्वयसेवकोको लोकमान्यकी रक्षा करना कठिन हो गया । शामको बैरिस्टर बाप्टिस्टाकी अध्यक्षतामे विराट् सभा हुअी जिसमे कन्नड सिंह गगाधरराव देशपाडेने जनताकी ओरसे लोकमान्यको अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया । अन्तमे लोकमान्यने कहा--"मै आप सबके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ । मैने अिग्लैण्डमे यथाशक्ति जो देशसेवा करनेकी चेष्टा की, वह मेरा कर्तव्य था । गत अप्रैल मासमे भारतमे जो अभूतपूर्व राजनीतिक आन्दोलन हुआ अुसके समाचार मै अति व्याकुलता तथा जिज्ञासासे पढता रहा । मुझे दुख है कि महात्मा गाधीने रोलट अेक्टके विरुद्ध जो सत्याग्रह आन्दोलन छेडा अुसमे योग देनेके लिअे मै यहॉ नही था । माटफोर्ड सुधार असतोषजनक और अपर्याप्त है, परन्तु हमे निराश होनेकी आवश्यकता नही, क्योकि पार्लमेन्टरी मजदूर-दलने भारतके होमरूल (स्वशासन) विधेयकको पार्लमिन्टमे प्रस्तुत करनेका मुझे आश्वासन दिया है । हमे जितना लाभ अिन सुधारोसे अुठाना है, अुतन। लाभ अुठाकर हम अधिक अधिकार प्राप्त करनेके लिअे लडेंगे ।" दूसरे तथा तीसरे दिन अनेक सार्वजनिक सस्थाओकी ओरसे अुनका स्वागत किया गया । वहॉ भी अुन्होने कॉग्रेसकी शक्ति वढानेका अुपदेश दिया । फिर पूनाके लिअे चल पड़े ।

पूनामें म्युनिसिपल कमेटीका अभिनन्दन-पत्र

पूनामे आपका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। 'म्युनिसिपल कमेटीने आपको अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया। भारतवर्षमे यह पहली घटना थी जब सरकारकी दृष्टिमे राजद्रोही तिलक जैसे सच्चे देशभक्तको सरकार-मान्य तथा सरकार-पोषित म्युनिसिपल कमेटीने यथाविधि अभिनन्दन-पत्र अर्पण कर अुनका सम्मान किया। अुस समयतक गवर्नर या अूंचे सरकारी अधिकारियोको ही अभिनन्दन-पत्र देनेकी प्रथा प्रचलित थी। अिस घटनासे सरकारी क्षेत्रमें सनसनी फैली। सरकारने म्युनिसिपल कमेटीके अिस कार्यपर आक्षेप किया और खर्च नामजूर करनेकी सूचना दी। म्युनिसिपल सदस्योने धैर्यसे अुत्तर दिया कि लब्धप्रतिष्ठ नागरिकका स्वागत करने तथा अुसे अभिनन्दन-पत्र भेट करनेका हमे अधिकार है, क्योकि हम जनताके प्रतिनिधि हैं, परन्तु अिस अभिनन्दन-पत्रका खर्च हमने व्यक्तिगत रूपसे किया है न कि म्युनिसिपलीटीके खजानेसे। परिणामस्वरूप म्यूनिसपल कानूनमे अुचित सशोधन किया गया।

मद्रासमें अभिनन्दन-पत्रोंकी वर्षा

लोकमान्य वृद्ध तथा क्षीण हो चुके थे। अुन्हे विश्रामकी आवश्यकता थी, परन्तु जनताके प्रति अुनका जो प्रेम था वह विश्राम नही लेने देता था। मद्रासके मित्रोके आग्रहपर वे वहाँ गअे। स्टेशनपर सभी दलोके कार्यकर्ताओं तथा मजदूर-सघके प्रतिनिधियो द्वारा अुनका स्वागत किया गया और जुलूस निकालकर विराट् सभाओमे अुन्हे कअी सस्थाओकी ओरसे सम्मानपूर्वक अभिनन्दन-पत्र भेट किअे गअे। मद्रास सूबेकी अब्राह्मण सभाने भी अुनका अभिनन्दन किया, और भारतके भिन्न-भिन्न दलोमे मेलकी आवश्यकताका अुल्लेख कर अुस कार्यके लिअे अुन्हे अीश्वरसे आरोग्य तथा दीर्घायु प्रदान करनेकी प्रार्थना की। विद्यार्थियोकी अेक सभामे भी अुन्हे भाषण देनेके लिअे बुलाया गया।

अमृतसर कॉंग्रेसमे

लोकमान्य तिलक सदलॆवल ता. २४ दिसम्बरको होमरूल स्पेशल ट्रेन द्वारा अमृतसर जानेके लिअे पूनासे रवाना हुअे। वास्तवमे अुनके पजाब प्रवेशपर सरकारी प्रतिवन्ध था और अुनका स्वास्थ्य भी गिरा हुआ था, जिससे डाक्टरोने विश्रामकी सलाह दी थी, परन्तु अुनका हृदय अुन्हे अमृतसरकी ओर खीच रहा था मानो वह सूचित कर रहा हो कि यह तेरे लिअे कॉंग्रेसका अन्तिम अधिवेशन है। अमृतसरकी स्वागत-समितिकी ओरसे अुन्हे आग्रहपूर्ण निमन्त्रण भी आया। अधिवेशनकी विशेषता यह थी कि जिस जलियानवाला वागमे गत ६ अप्रैलको अँगरेज सरकारने निहत्थी जनतापर गोलियाँ चलाअी थी, जिसमे लगभग १५०० भारतीयोकी आहुति पडी, अुसी स्थानपर कॉंग्रेस-अधिवेशनमे अुस दमननीतिकी घोर भर्त्सना कर स्वराज्य-प्राप्तिका निश्चय किया जानेवाला था। यह भारतीयोके जीवित होनेकी कसौटी थी। अिस अैतिहासिक महत्वने लोकमान्यको वेचैन किया और अुन्होने मित्रो तथा डाक्टरोसे कहा कि अमृतसरसे लौटनेके पश्चात् मैं विश्राम करूँगा। अुन्होने कॉंग्रेस-अधिवेशनमे सम्मिलित होनेकी सूचना पजाव-सरकारको तार द्वारा दी। अुनकी होमरूल स्पेशल ट्रेन बी. बी. अेन्ड. सी आय. के जिस मार्गसे गुजरती थी वही प्रत्येक वडे स्टेशनपर अुनका स्वागत होता था। दिल्ली स्टेशनपर अुन्हे पजाव-प्रवेशका प्रतिवन्ध हटानेकी सूचना दी गअी। बीचमे सम्राट् पचम जार्जकी ओरसे अेक सूचना-पत्र भी प्रकाशित किया गया जिसमे भारतीयोको माटफोर्ड-सुधारोको कार्यान्वित करनेमे सहायता देनेका आह्वान और पजाव तथा भारत-वर्षके अन्य प्रान्तोके सभी राजनीतिक कैदियोको तत्काल मुक्त करनेका आदेश था। ट्रेनमे लोकमान्यने ज्यो ही यह समाचार पढा त्योही सम्राट्को वधाअीका तार भेजा और सुधारोके कार्यान्वित करनेमे प्रतियोगी सहकारिताका आश्वासन दिया। अिसके पश्चात् यही प्रतियोगी सहकारिता लोकमान्यकी राजनीति वनी। जनताने अमृतसरके स्टेशन पर आपका भव्य तथा

हार्दिक स्वागत किया। स्वामी श्रद्धानन्द अिस अधिवेशनके स्वागताध्यक्ष थे और पण्डित मोतीलाल नेहरू सभापति। प्रतिनिधियो तथा प्रेक्षकोकी अुपस्थिति अपूर्व थी। स्वामी श्रद्धानन्दने अपने स्वागत-भाषणमे नेताओमे दो प्रबल पक्ष होनेका अुल्लेख कर मेल करनेकी प्रार्थना की। पण्डित मोतीलाल नेहरूके अध्यक्षीय-भाषणसे भी दो पक्ष स्पष्ट हुअे। माटफोर्ड-सुधार सम्बन्धी प्रस्तावपर विषय-निर्वाचनी समितिमे तीव्र मतभेद व्यक्त किअे गअे। अेक पक्षमे काग्रेसके सभापति स्वयम् प० मोतीलाल नेहरू, महात्मा गाधी तथा महामना प० मदनमोहन मालवीय अेव डा. अेनीबेसेन्ट थी तो दूसरे पक्षमे लोकमान्य तिलक, देशबन्धु चित्तरजनदास तथा श्री विपिनचन्द्र पाल थे। पहले पक्षका कहना था कि माण्टफोर्ड-सुधारोको "असमाधानकारी तथा अपर्याप्त" आदि आलोचनात्मक विशेषणोसे सबोधित न किया जाय। दूसरे पक्षकी राय थी कि चूँकि बम्बअी तथा दिल्ली-अधिवेशनोमे अिन विशेषणोका प्रयोग सोच-विचार कर किया गया था और वे बहुमतसे मान्य भी किअे गअे थे, अत अब अुनके हटानेकी कोअी आवश्यकता नही। सक्षेपमे लोकमान्य तिलक तथा देशबन्धु बम्बअी तथा दिल्ली-अधिवेशनोके प्रस्तावमे परिवर्तन करनेके विरोधी थे। दूसरी ओर दिल्ली-अधिवेशनके सभापति स्वय महामना मालवीय तथा कलकत्ता-अधिवेशनकी अध्यक्षा डा. अेनीबेसेन्ट तथा महात्मा गाधी प. मोतीलाल नेहरूकी सहायतासे परिवर्तन कराना चाहते थे। अिसके अतिरिक्त डा. अेनीबेसेन्ट सुधार प्रदान करनेके निमित्त भारत-मन्त्री माटेग्यूका अभिनन्दन भी करना चाहती थी जिसके देशबन्धुदास तीव्र विरोधी थे। विषय-निर्वाचनी समितिमे दोनो ओरसे प्रभावशाली भाषण हुअे। देश-बन्धुदासके विरुद्ध डा अेनीबेसेन्ट और महामना मालवीय जैसे आचार्य लड रहे थे, परन्तु देशबन्धुके सारथी थे कर्मयोगी लोकमान्य तिलक, जैसे योगेश्वर कृष्णके बिना सव्यसाची अर्जुनकी जीत सम्भव नही थी वैसे ही कर्मयोगी तिलककी सहायता तथा पथप्रदर्शनके बिना अमृतसरमे देशबन्धुकी जीत असम्भव थी। तीसरे दिन लोकमान्यने अतीव तर्क-पटु प्रभावशाली भाषण द्वारा देशबन्धुके प्रस्तावका समर्थन किया। आपने "असन्तोष श्रीयोमूलम्"

तत्वका रोचक विवेचन कर "असमाधानकारी तथा अपर्याप्त" विशेषणोकी अुत्तेजक स्पष्ट व्याख्याकी और प्रतिनिधियोसे निवेदन किया कि वे कांग्रेसकी निर्धारित नीतिमें परिवर्तन करनेकी चेष्टा न करे। हम अिन सुधारोको असमाधानकारी तथा अपर्याप्त कहकर भी अिन्हे अधिक अधिकार प्राप्त करनेकी दूरदर्शितासे कार्यान्वित कर सकते हैं।"

अुन्होने कहा कि "सुधारोकी स्वीकृति द्वारा अगरेजोकी कृपा-सम्पादन करनेकी अपेक्षा देशका अुपकार करनेकी भावनाको हम बहुत अधिक महत्व देते हैं। जितना बने अुतना देशका लाभ करना और आगे बढना हमारा ध्येय है। हमारे तथाकथित विरोधी भी अिन सुधारोको कार्यान्वित ही करना चाहते हैं। दोनोका अुद्देश्य अेक है। अुसे प्रकट करनेके शब्द मात्र भिन्न हैं। वास्तवमें वे भी अिनको पर्याप्त नहीं मानते। जो वस्तु पर्याप्त नही, वह समाधानकारी कैसे हो सकती है? अिस प्रकार अिन विशेषणोके लिअे वाद-विवाद करना व्यर्थ है।" लोकमान्यके अिस भाषणसे देशबन्धुका पलडा भारी हुआ। वे सघर्ष कर बहुमतके बलपर बाजी मारना चाहते थे। अिधर लोकमान्य अुदारता तथा सामजस्यसे सफलता पानेके लिअे प्रयत्नशील थे। आपका झुकाव मेलकी ओर अधिक था और वही समयकी माँग भी थी। अुन्होने महात्माजीसे विचार-विमर्श कर मेलका प्रस्ताव बनवाया। अिधर वृद्ध तथा थके-माँदे तिलकने युवक देशबन्धुको समझाया अुधर महात्मा गाधीने अति वृद्धा डा० अेनीबेसेन्टको। जीतनेका विश्वास रखनेवाले युवकोको समझाना बहुत कठिन था, परन्तु कठिन कार्य करनेमे लोकमान्य निपुण ही नही सिद्धहस्त थे। मेलका प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे विषय-निर्वाचनी समितिमे स्वीकृत हुआ, जिससे कॉग्रेसकी पुरानी नीति ज्यो-की-त्यो बनी रही। अिस अधिवेशनमे अेक अनूठा दृश्य भी दिखाअी दिया। कॉग्रेसके आकाशमे अेक साथ दो सूर्य चमक रहे थे। अेक पूर्वकी ओर अुदयाचलसे तेजीसे अूपर अुठ रहा था तो दूसरा पश्चिममें अस्ताचलकी ओर झुक रहा था। दूसरे सूर्यको दर्शक आदर तथा सम्मानसे अर्घ्य प्रदान कर रहे थे, तो प्रथमकी वे आशा तथा अुत्साहसे वन्दना कर रहे थे।

अिसी अधिवेशनमे महात्मा गाधीजीने अपने भावी "असहयोग" का शाब्दिक परिचय कराया था। लोकमान्यने विदेशोमे भारतके स्वराज्यका प्रचार कर सहानुभूति प्राप्त करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन किया और काँग्रेसने अुनके कथनके अनुसार अिस सम्बन्धमे प्रस्ताव स्वीकृत किया। यही नही लोकमान्यने स्वय "स्वराज्य-फण्ड" से लगभग पचीस हजार रुपअे श्री विट्ठलभाअी पटेलको भेजवाअे, जो अिस समय अिंग्लैंडमे प्रचार-कार्य कर रहे थे। अमेरिकामे प्रचार करनेके लिअे लाला लाजपतरायकी भी अुन्होने समय-समयपर सहायता की। अिस प्रकार लोकमान्य विदेशोमे प्रचारपर जोर देते थे। अधिवेशन समाप्त होनेके पश्चात् तिलक पूना लौटे और स्वास्थ्य सुधारनेके लिअे शहरके बाहर अेक बगलेमे अेक मास तक रहे। स्वास्थ्यमे कुछ सुधार होते ही फिर कार्यमे जुट गअे। फरवरी मासमे पूनामें स्वराज्य-सघकी कार्यकारिणी समितिकी बैठक हुअी। अुसमे भावी निर्वाचनकी दृष्टिसे लोकमान्यको अेक घोषणा-पत्र तैयार करनेका अधिकार सौपा गया।

ज्योतिष-सम्मेलन

अिसी मासमे साहित्य-सम्राट् श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरकी अध्यक्षतामे सागलीमें ज्योतिष-सम्मेलन हुआ। लोकमान्य तिलक प्रसिद्ध गणितज्ञ थे। आपने अिस विषयमे खोजका कार्य किया था। आप पचागोकी रचनामें समयानुसार कुछ सशोधन तथा सुधार करना चाहते थे। आपकी यह अिच्छा थी कि अगरेजी "नाटीकल" जैसे नौकागमनके लिअे अुपयुक्त होनेवाले नअे शुद्ध भारतीय पचागकी रचना की जाय। अितना ही नही अिस दृष्टिसे आपने विधायक कार्य भी प्रारम्भ किया। अेक नया और सशोधित "कारण ग्रथ" लिखवानेकी योजना बनवाअी और नागपुरके विद्वान् डा० भाअूजी दफ्तरी अिस मडलके अध्यक्ष नियुक्त हुअे। तिलक चाहते थे कि अखिल भारतमे अेक ही शुद्ध पंचाग माना जाय। आपने अेक शुद्ध पचाग भी बनवाया जिसे "शुद्ध तिलक पचाग" कहा जाता है। महाराष्ट्रमे कतिपय सुधारवादी तथा प्रगतिप्रिय लोग अिसीके अनुसार अपने धार्मिक विधि

तथा त्यौहार मनाते हैं । तिलक चाहते थे कि ब्रिटेनके ग्रीनवीचके समान भारतवर्षमे तीन या चार वेधशालाअे स्थापित की जायें और अुनके प्रयत्नो तथा सशोधनोके आधारपर अेक सर्वसम्मत अखिल भारतीय पचाग वनवाया जाअे । लोकमान्यकी दूरदर्शिताका महत्व स्वतन्त्र भारत सरकारने अनुभव किया है और अव सशोधित नया पचाग वनानेके लिअे ग्रहगणितज्ञोकी समिति भी स्थापित की है जो निकट भविष्यमे लोकमान्यका स्वप्न साकार करेगी ।

सिन्धमे दौरा

लोकमान्य अखिल भारतीय लोकप्रिय नेता थे । अबतक अुन्होने सिन्धको छोडकर भारतके सभी प्रान्तोमे स्वराज्यके प्रचारके लिअे दौरे किअे थे । सिन्धवासियोने बडे आग्रहपूर्वक अुन्हे निमत्रण दिया । अुनका स्वास्थ्य वरावर गिरता जा रहा था, परन्तु अुनकी मनोदशा अुन्हे भारतका पूरा दर्शन करनेके लिअे प्रोत्साहित कर रही थी । अत. अुन्होने सिन्धका दौरा करनेका निश्चय किया । बीचमे दिल्ली तथा अजमेरकी कॉग्रेस-कमेटियोने अुनसे वहॉ पधारनके लिअे आग्रह किया । वे दिल्ली गअे जहॉ अुनका हार्दिक स्वागत किया गया । जुलूस निकाला गया और विराट् सभामे अभिनन्दन-पत्र भेट किया गया । अुन्होने अपने भाषणमे अमृतसर-कॉग्रेस द्वारा स्वीकृत प्रस्तावोका प्रभावशाली विवेचन किया । दिल्लीसे अजमेर गअे । यहॉ भी अुनका अनुपम स्वागत हुआ । हजारोकी सख्यामे हिन्दू तथा मुसलमान नागरिकोने भापण सुना । समस्त अजमेर शहर सजाया गया था । मुसलमानोने अपने अति पवित्र ख्वाजा साहबकी दरगाहमे अुनका स्वागत किया और भारतकी आजादीके लिअे हिन्दुओका साथ देनेका आश्वासन दिया । यहॉ भी अुन्हे अभिनन्दन-पत्र भेट किया गया । अजमेरसे वे सिन्धके लिअे रवाना हुअे । आपके साथ दादा साहेव खापर्डे और विट्ठलभाअी पटेल भी थे । हैदरावाद-स्टेशनपर सैकडो हिन्दू-मुसलमान स्वयसेवको तथा हजारो नागरिकोने अुनका स्वागत कर प्रमुख मार्गोसे जुलूस निकाला । तिलक वग्घीमे वैठे थे, परन्तु अुसे घोडे नही जनता ही खीच रही थी । शामको मुस्लिम-लीग, हिन्द-स्वराज्य-सघ, कॉग्रेस तथा

खिलाफत कमेटीकी ओरसे अेक विराट् सभामे लोकमान्यको अभिनन्दन-पत्र भेंट किअे गअे। छह हजार रुपयोकी थैली भी अर्पित की गअी। अिसके पूर्व अितना विराट् स्वागत यहाँ किसी भी नेताका नही किया गया था। सक्खरमे भी यही हाल रहा। कराचीमें भी विराट् स्वागत हुआ तथा मुस्लिम लीग, काँग्रेस-कमेटी, नागरिक और विद्यार्थी-सघकी ओरसे अभिनन्दन-पत्र भी दिअे गअे। मीरपुर खास, ताडीव कोटी अित्यादि शहरोमे भी यही अुत्साह दिखाअी दिया। अप्रैल मास था। अवस्थासे क्षीण होनेके कारण गरमीसे बेचैनी मालूम होने लगी। वे बम्बअीके लिअे लौट पडे।

विरोधियोंपर अन्तिम विजय

दुनियामे अुदारताका अनुचित लाभ अुठाया जाता है। लोग अुदारताको दुर्बलता ही समझते हैं और सामजस्यकी ओटमे छलकी नीति अपनाकर अपना अुल्लू सीधा करना चाहते हैं। लोकमान्यने अमृतसरमे अुदारतासे काम लिया, परन्तु अुनके विरोधियोने अनुदारताका प्रदर्शन कर अुन्हे अपने प्रान्त महाराष्ट्रमे पराजित करनेका षड्यन्त्र रचा। मार्चमे जुन्नरमे तालुका-परिषद् हुअी और बेलगाँवमे जिला-परिषद्। अिन दोनोमे अुनके तथाकथित विरोधियोने अशिष्ट मार्गोसे भर्त्सना कर अुन्हे पराजित करनेका भरसक प्रयत्न किया, परन्तु अुनको करारी हारका सामना करना पडा। सोलापुरमे हुअे प्रान्तीय अधिवेशनमे नरमदलवादी तथा विषाक्त जातीयतासे पीडित विरोधियोने डा अेनीबेसेन्ट जैसी अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त विदुषी, काँग्रेसकी भूतपूर्व तथा अखिल भारतीय "स्वराज्य-सघ" की अध्यक्षाको बहुमतके भ्रममे डालकर वहाँ बुलवाया और अुनके बलपर तिलकको हरानेकी चेष्टा की। अमृतसरमे काँग्रेसने माटफोर्ड-सुधार सम्बन्धी जो प्रस्ताव स्वीकृत किया था, वही प्रस्ताव लोकमान्यने यहाँ स्वय प्रस्तुत किया। डा अेनीबेसेन्टने अुसमे अेक सशोधन प्रस्तुत किया। कडा वादविवाद हुआ। अब भी लोकमान्यका झुकाव सुलहकी ओर ही अधिक था, सघर्षकी ओर नही। परन्तु अुनके विरोधी सघर्षपर तुले हुअे थे। अन्ततोगत्वा प्रतिनिधियोके

बहुमतसे निर्णय हुआ। लोकमान्यके पक्षमें १७०० मत थे और विरोधियोंने बडा हल्ला मचाकर भी केवल ७०० मत प्राप्त किअे। अिस प्रकार अुनके विरोधियोकी करारी हार हुअी। अिस विजयसे वे स्वयम् भी दुखी हुअे, परन्तु राजनीतिमे अैसी ही विवशतासे सघर्ष कर अुन्हे कअी बार विजय प्राप्त करनी पडी।

पर्सफण्ड-समर्पण-समारम्भ

हम पहले ही लिख चुके है कि जब लोकमान्य लन्दनमे चिरोल-केसमें व्यस्त थे, तब अुनकी सहायताके लिअे भारतवर्षमे निधि अेकत्र की जा रही थी। परन्तु अभी तक लगभग तीन लाख रुपयोकी अिस निधिका समर्पण-समारम्भ सम्पन्न नही हुआ था। लोकमान्यके मित्रो तथा अनुयायियोने बडे अुत्साह तथा आदरके साथ ता २२ मअीको पूनामे पर्सफण्ड-समर्पण-समारम्भ किया। अिसमे स्वराज्य-सघ तथा कॉग्रेसके सैकडो कार्यकर्ता सम्मिलित हुअे। देशके विभिन्न प्रान्तोसे प्रतिनिधि आअे। पर्सफण्डकी विशेषता यह थी कि वह अधिक-से-अधिक व्यक्तियोके चन्देसे अिकट्ठा किया गया था। अर्थात् अेक-अेक रुपया चन्दा देनेवाले बहुत अधिक थे। अिससे लोकमान्य तिलककी लोकप्रियताकी कल्पना की जा सकती है। तिलकने गद्गद् कण्ठसे कहा कि "वास्तवमे चिरोल मुकदमेका स्वरूप व्यक्तिगत था, परन्तु सरकारने बलात अुसे राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया और आपने सरकारकी अिस चुनौतीको स्वीकार कर मुझे अतीव अुपकृत ही नही किया बल्कि खरीद लिया। अिस थकी-मॉदी अवस्थामे आपके ऋणसे मै कैसे मुक्त हो सकूँगा?" लोकमान्य तिलककी मृत्युके बाद 'केसरी' पत्रने प्राप्त धनसे अुक्त रुपया अेकत्रित करके जनताके लिअे 'ट्रस्ट' बना दिया। अिस प्रकार जनताका पैसा जनताको वापस लौटाया।

कॉग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टीका घोषणा-पत्र

दूसरे दिन स्वराज्य-सघकी परिषद् हुअी। अिसमें लोकमान्य द्वारा बनाया गया कॉग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टीका घोषणा-पत्र सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत

किया गया। वास्तवमे अिस घोषणा-पत्रके मुख्य सिद्धान्तोसे महात्मा गाधी, बै० जिन्ना, महामना मालवीय, पं. मोतीलाल नेहरू तथा लाला लाजपतराय भी सहमत थे। यही नही, महात्मा गाधी और बै० जिन्नाकी राय तिलकने पहले ही प्राप्त कर ली थी। नरमदलवाले या लिबरल्स अिसके विरोधी थे, क्योकि अुन्होने कांग्रेस त्यागकर लिबरल फेडरेशन नामक राजनीतिक सस्था स्थापित कर ली थी, परन्तु देशमे अुसके अनुयाअियोकी सख्या नगण्य थी। अिस घोषणा-पत्रकी प्रधान धाराअे ये थी—१. कांग्रेस प्रजा-तान्त्रिक दलकी नीतिका अच्छा परिचायक अुसका नाम ही है। कांग्रेसके प्रति अिस दलकी अटल निष्ठा है और प्रजातन्त्रमे अिसका दृढ विश्वास है। अिस दलकी रायमे भारतकी राजनीतिक समस्या प्रजातान्त्रिक ढगसे ही हल हो सकती है, बशर्ते शिक्षाका काफी प्रचार हो और मतदानका अधिकार विस्तृत किया जाय। अिसमें जातिभेद, वर्गभेद तथा धर्मभेद बाधक नही होना चाहिअे। धर्म-विषयक पूरी सहिष्णुता रखते हुअे यदि किसी नागरिकके धर्मपर आघात पहुँचता है तो अुसकी रक्षा करना सरकारका कर्तव्य है। खिलाफतकी समस्या मुसलमानोकी धार्मिक भावनाके अनुकूल तथा कुरानकी हिदायतोके अनुसार ही हल की जानी चाहिअे। यह दल भारतीय मुसल-मानोकी मॉगका पूरा समर्थन करता है। २ यह दल अिस सिद्धान्तको मानता है कि ससारमे भ्रातृभाव बढाकर मनुष्य मात्रकी अुन्नति करनेकी दृष्टिसे भारत ब्रिटिश-साम्राज्यमे बराबरीके हिस्सेदारके रूपमे रहे, परन्तु अपने राज्य-शासनपर अुसका पूरा अधिकार हो तथा ब्रिटिश-साम्राज्यके अन्य प्रत्येक देशमे अुसके निवासियोको बराबरीके अधिकार प्राप्त हो। जिन देशोमे ये अधिकार प्राप्त नही होगे अुसकी प्राप्तिके निमित्त भारत जैसेको तैसेकी नीतिका पालन करेगा। यह दल राष्ट्र-सघका हार्दिक स्वागत करता है और आशा करता है कि वह ससारमे अेक देशपर दूसरे अधिक प्रबल देशके द्वारा होनेवाले आर्थिक शोषण, स्वतन्त्रता-अपहरण तथा अन्य अन्यायपूर्ण आक्रमणोको रोककर शान्ति प्रस्थापित करेगा। ३. अिस दलका यह विश्वास है कि भारतके निवासी अपने देशका शासन प्रजातान्त्रिक ढगसे

करनेकी पूर्ण क्षमता रखते हैं। भारतमें राज्य-शासन-प्रणाली कैसी हो, कानून कैसे हो, यह निश्चित करनेका अधिकार केवल भारतवासियोंको हो और अिस अधिकारका अुपयोग स्वयनिर्णयके सिद्धान्तोंपर किया जाय। मान्टफोर्ड-सुधार अपर्याप्त निराशाजनक तथा असमाधानकारक हैं, तो भी ब्रिटिश पार्लमेण्टमें मजदूर-दल तथा लिबरल-दलकी सहायतासे अुसके दोष हटवाकर अुन्हें अधिक अुपयोगी बनानेकी यह दल-चेष्टा करेगा और यह दल भविष्यमें भारतको सम्पूर्ण स्वराज्यके अधिकार प्राप्त करानेकी दृष्टिसे अुन सुधारोंको कार्यान्वित करेगा। स्वराज्यसे अभिप्राय है—राज्यशासन, अर्थनीति, सेना तथा परराष्ट्रीय नीति पर भारत-वासियोंका अक्षुण्ण अधिकार होना। सभी भारतवासियोंको नागरिकताके नैसर्गिक अधिकार प्राप्त होना और अुन्हींका अपने देशका भाग्यविधाता बनना। अिस ध्येयकी प्राप्तिके लिअे दल राष्ट्रसंघके अन्य सदस्य राष्ट्रोंकी सहायता लेगा। देश तथा विदेशमें तीव्र आन्दोलन कर संगठन बनाना अिस दलका ध्येय होगा अित्यादि। अिसके अतिरिक्त यह दल प्रान्तीय तथा केन्द्रीय राज्यशासनमें तत्काल कौनसे संशोधन चाहता है, अिसकी विस्तृत सूची भी तैयार की गअी। संक्षेपमें लोकमान्यने यह घोषणा-पत्र कॉंग्रेसकी निर्धारित नीतिके अनुसार बनाया। अिस पत्रमें अुनकी सर्वतोमुखी राजनीतिक दूर-दर्शिता दिखाअी देती थी और परराष्ट्र-नीति भी स्पष्ट थी।

अिसमें धर्म-निरपेक्ष राज्यकी कल्पना भी स्पष्ट है। आज अिसी धर्म-निरपेक्षताकी मूर्ति हमारी भारत-सरकार है। लोकमान्यके चिरवाञ्छित प्रजा-तन्त्रका प्रत्यक्ष रूप आजका हमारा प्रजातान्त्रिक शासन है। लोक-मान्यकी अिच्छानुसार ही आज बालिग मतदानके आधारपर प्रतिनिधि चुने जाते हैं। अन्तिम वाक्यमें अुन्होंने अपना ध्येय-सूत्र गुम्फित किया था कि प्रचार करो, आन्दोलन छेड़ो और संगठन मजबूत कर स्वराज्यकी प्राप्ति करो। अर्थात् स्वराज्यकी प्राप्ति स्वावलंबनके बलपर की जाय। अुनकी मृत्युके पश्चात् सन् १९४७ तक कॉंग्रेसकी राजनीति अिसके अनुसार ही चलती रही। अिस प्रकार लोकमान्य तिलक आजके स्वतन्त्र भारतके द्रष्टा

थे। कॉंग्रेस-प्रजातान्त्रिक दलका घोषणा-पत्र ही भारतको अुनकी अन्तिम देन थी।

लोकमान्यका काशीमें सम्मान

सन् १९२० के मअीमे ता २९ को काशीमे अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटीका विशेष अधिवेशन हुआ। अुसमें सम्मिलित होनेके लिअे लोकमान्य पूनासे चल पडे। सयोगसे अुसी ट्रेनसे महात्मा गाधी भी काशी जा रहे थे। प्रत्येक स्टेशनपर दर्शकोकी भीड होती थी और 'लोकमान्य तिलककी जय' 'महात्मा गॉंधीकी जय' के नारोसे आकाश गूँजने लगता था। बनारस-अधिवेशनमे तय हुआ कि अगस्तमे कलकत्तामे अ भा. कॉंग्रेसका विशेष अधिवेशन हो, जिसमे महात्मा गॉंधीके असहयोग-प्रस्ताव पर निर्णय किया जाय। लोकमान्य तीन दिन तक काशीमे ठहरे। यहॉंकी विद्वत्परिषदकी ओरसे आपको गगा-घाटपर विराट् सभामे सस्कृत भाषामे अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया गया था, जिसका अुत्तर सस्कृतमे ही देकर आप पण्डितोके प्रशसा-भाजन बने। काशीके नागरिकोने भी भारतरत्न डा० भगवानदासकी अध्यक्षतामे टाअुन-हालके मैदानमे विराट् सभा कर आपको अभिनन्दन-पत्र अर्पित किया। आपने अध्यक्षकी सूचनानुसार "राजधर्म" विषय पर सारगर्भित भाषण कर काशी-निवासियोके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

भारतरत्न मनिषी डा. भगवानदासजीसे भेंट

अपने "भगवद्गीताका आशय और अुद्देश्य" नामक पुस्तिकामे डा० भगवानदास अिस भेटका वर्णन अिस प्रकार करते हैं—"प्रसिद्ध है कि साख्य-कारिकामें ७० कारिकाअे हैं, किन्तु ६९ मिलती हैं। गोडपाद भाष्यके शब्दोंसे तिलकने लुप्तकारिकाओको खोज निकाला। यह मैंने 'गीता रहस्य' के हिन्दी अनुवादमे पढा था। अब जो ७० वी कारिका मानी जाती है, अुसमे दर्शनकी बात कुछ नही, केवल गुरु-परम्परा ही है। तिलकसे मैंने कहा कि आपने नष्ट कारिकाओका अुद्धार किया है तो वे प्रसन्न हुअे, मुस्कराअे।

फिर आगस्ट कामरे आदिके दार्शनिक विचारोकी चर्चा हुअी। मै प्रणाम कर चला आया। तिलककी राजनीति सच्ची थी। प्रतिसहकारिताकी नीति व्यवहारत गाधीजीको भी माननी पड़ी, भले ही अुन्होने मुँहसे वैसा न कहा हो। प्राचीन महाभारतका अेक श्लोक गीताके आशयके अनुकूल है। अुसका तिलक अपने सार्वजनिक व्याख्यानोमे पुन.-पुन अुल्लेख किया करते थे और वह है "शठं प्रति शाठय कुर्यात् सादरं प्रति सादरम्।" यही तिलकके प्रति-सहकारिताका मर्म था। लोकमान्य महाभारतको हिन्दुओका राष्ट्रीय ग्रन्थ कहा करते थे और अुसमें प्रतिपादित नीतिका जहाँ तक हो सके वहाँ तक अनुसरण करते थे, परन्तु अुनका सास्कृतिक अभिमान या निष्ठा सकीर्ण न थी। अुसे आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयता, धार्मिक सहिष्णुता तथा सामाजिक समानताकी अुचित अेव विशाल नीव प्राप्त थी। अुनका जीवन प्राचीनता तथा आधुनिकताका सुन्दर समन्वय था। अुसमे आध्यात्म विद्या और वैज्ञानिक ज्ञानका पवित्र सगम था। अत. प्राचीन पडित तथा आधुनिक अूँचे डिग्री-होल्डर्स सभी अुनके समक्ष आदरसे सिर झुकाते थे।

अिस प्रकार प्राचीन भारतीय सस्कृतिकी नगरी वाराणसीमे सम्मान प्राप्त कर वे जवलपुर गअे। डाक्टर विश्राति लेनेके लिअे आपको समय-समयपर चेतावनी देते थे। आप अुनकी सलाहको कुछ अश तक मानते थे, फिर भी कार्य-व्यस्त रहते थे। जवलपुरमे जनताने आपका हार्दिक स्वागत किया। विराट् सभामे आपके दो भाषण हुअे। आपने काग्रेसकी नीतिका समर्थन किया। ये आपके अन्तिम सार्वजनिक भाषण थे।

अव आप पूना लौटे। कुछ दिनो तक विश्राम लिया। अैसा मालूम हुआ कि आपका स्वास्थ्य पुन अच्छा हो गया है। आपने स्वराज्य-सघके अन्तिम अधिवेशनमें कहा था कि कतिपय नेता मुझसे अनुरोध करते है कि मै चुनावमे अुम्मीदवारकी हैसियतसे सक्रिय भाग लूं और केन्द्रीय असेम्वलीमें काग्रेस-प्रजातान्त्रिक दलका नेतृत्व ग्रहण करूँ, परन्तु मुझे अिस वृद्धावस्थामें भीतरसे अैसा प्रतीत होता है कि मै दिन-प्रति-दिन क्षीण हो रहा हूँ और

किसी प्रकारका नया बोझ ढोनेकी मुझमे सामर्थ्य नही है। आपके ये दर्द-भरे शब्द सुनकर कअी कार्यकर्ता चिन्तामग्न हुअे थे। यह आपका अन्तर्ज्ञान था।

कर्मयोगीका स्वर्गवास

ता० १२ जुलाअी १९२० को आप पूनासे बम्बअी गअे। वहाँ हाअी-कोर्टमे ताअी महाराजका दीवानी दावा अभी भी चल रहा था। यह आपका मित्र-कार्य था, परन्तु सरकारकी नीतिसे गत अुन्नीस वर्षोसे अुलझनमे पडा था। यदि अिसमे आपका हाथ न होता तो मित्रका पूरा विनाश होता और मुकदमा चन्द महीनोमे ही समाप्त हो गया होता। अब आप अिसे समाप्त करनेपर तुले। सात दिनो तक आपने बहुत कष्ट अुठाया और अुन्नीस वर्षोके निस्वार्थ श्रमका अपेक्षित फल ता० १४ जुलाअीको प्राप्त हुआ। आपके पक्षकी जीत हुअी, परन्तु आपकी जीवनी तो धूप-छायाका अनूठा खेल थी। ता० २० जुलाअीको आप मामूली बुखारसे पीडित हुअे। अुस दिन दीवान चमनलाल आपसे मिलने आअे थे। प्रचलित राजनीतिपर अुनके साथ आपने दीर्घ चर्चा की। शामको वे टहलनेके लिअे आपको मोटरमे ले गअे। अुन्होने आपसे काश्मीरमे दो-तीन मास तक विश्राम करनेका अनुरोध किया और स्वय अिसका प्रबन्ध करनेका आश्वासन दिया। आपने अुत्तर दिया कि मेरे जैसे क्षीणकाय व्यक्ति द्वारा अितनी लम्बी सफर करना असम्भव है। बुखार कम होते ही मै पूनाके पास किसी स्थानमे विश्राम करूँगा। दीवान चमन-लालने आपसे भारतीय-मजदूर-परिषदका अुपाध्यक्ष होनेकी प्रार्थना की। आपने तत्काल स्वीकार किया और गद्‌गद् कण्ठसे कहा कि मुझे पक्का स्मरण है कि सन् १९०८ मे जब मुझे छह वर्षोकी सजा सुनाअी गअी थी, तब बम्बअीके मजदूरोने लगातार छह दिनोकी प्रथम तथा अनूठी हडताल द्वारा अुसका कडा विरोध किया था। मजदूरोका ऋण मै कैसे अदा कर सकता हूँ? दीवान चमनलाल सन्तुष्ट हुअे, क्योकि अुनकी अिच्छा पूरी हुअी। शामको अेक घटेके बाद वे लौटे, परन्तु तिलकका बुखार बहुत बढ गया था। अुस दिन आप बिस्तरे पर लेटे तो फिर अुठ न सके। बम्बअीके विख्यात डाक्टर तथा

धन्वन्तरि जैसे वैद्यराज्य आपकी चिकित्सा तथा औषधिकी योजना कर रहे थे, पर कुछ लाभ न हुआ। आपको भ्रम तथा सन्निपात हुआ। जितनी भयावह बीमारीमे भी आप देश तथा स्वराज्यके सम्बन्धमे ही चिन्तन करते थे। बीच-बीचमे आपके मुँहमे अेकाअेक निम्नलिखित ढंगके वाक्य या अुद्‌गार प्रवाहित होते थे, मानो आप भाषण कर रहे हो, "सन् १८१८ मे अंग्रेजोकी सत्ता भारतमे कायम हुअी। परसो १९१८ साल समाप्त हुआ। धिक्कार-धिक्कार!! हम अभी भी अुनके दास बने हैं। पंजाब-हत्याकाण्डका प्रतिकार आप कैसे करेंगे। विट्‌ठल भाअी पटेल लन्दनमे प्रचार-कार्य कर रहे हैं। अब अुन्हे यहाँसे सहायता भेजो। हमने कलकत्तेमें स्पेशल कॉंग्रेस करनेका निश्चय किया है। मेरा यह पूरा विश्वास है कि भारतका अुद्धार स्वराज्य-प्राप्तिके विना कदापि नही हो सकता। स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम अुसे प्राप्त करके ही रहेंगे। आपने और जनताने जो कष्ट अुठाअे है अुनके लिअे मैं आपका कृतज्ञ हूँ।" अित्यादि। देशकी चिन्ता अुनके मनमे अंत तक रही। यह तिलमिलाहट सिंहकी अन्तिम पुकार थी। गिरनेवाली बिजलीकी कड़कड़ाहट थी। बुझते हुअे दीपककी आखिरी ज्योति थी। जुलाअीके अन्तिम ८-१० दिन देशवासियोंने चिन्ता, व्यग्रता और अुद्विग्नतामे विताअे। देशके कोने-कोनेमें हजारो प्रार्थनाअे हुअी। महात्मा गाधी, देशबन्धु दास, तथा स्वागत-समितिके कतिपय सदस्य लोकमान्यको कलकत्ता कॉंग्रेसके विशेष अधिवेशनका अध्यक्ष बनानेकी योजना बना रहे थे। बीमारीकी बात सुनते ही महात्मा गाधी बम्बअीकी ओर दौड़े। लाला लाजपतराय भी बेचैन हुअे और बम्बअीकी ओर चल पडे। देशके सभी प्रान्तोसे कार्यकर्ताओके झुंड बम्बअीकी ओर अग्रसर हुअे। अखिल भारतवर्षकी जनता आपकी बीमारीका हाल जाननेके लिअे अुत्सुक थी। मन्दिरोमें जप, अभिषेक, प्रार्थना तथा अनुष्ठान हो रहे थे। परन्तु "जातस्यहि ध्रुवं मृत्यु" अिस सूक्तिकी अटलता सिद्ध हुअी और लोकमान्यताके गौरीशंकर शिखरसे तिलकने ता ३१ जुलाअीकी भयावनी रातको १ बजे स्वर्गारोहण किया। समस्त भारतवासी अिस दुखद घटनासे शोक-सागरमे डूब गअे। पहली अगस्तको भारतवर्षमें अपूर्व राष्ट्रीय शोक

दिन तथा हडताल मनाओी गओी। वैसा शोक सार्वजनिक रूपसे अिस देशमे अिससे पहले कभी नही मनाया गया था। बम्बओीमे अपूर्व शव-यात्रा निकली। शवके साथ जुलूसमे हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सिख तथा ओीसाओी लाखोकी सख्यामें थे। अिस शोक-सागरको देखकर आकाश भी विकल हुआ और अश्रुसिचन करने लगा। लगातार अेक घण्टेतक भीषण वर्षा हुओी, परन्तु जनता टससे मस न हुओी। शव-यात्राका जुलूस बढता ही गया। अन्ततोगत्वा सागरके किनारे चौपाटीपर चन्दनकी चितामे लोकमान्यके पार्थिव देहका अन्तिम अग्नि-सस्कार यथाविधि सम्पन्न हुआ। अिसी स्थानपर आज लोकमान्यकी प्रस्तर-प्रतिमा खडी है। ज्यो-ज्यो चिताकी ज्वालाअे धधकी त्यो-त्यो जनताके हृदयमें शोककी लपटें अुठने लगी। आकाशस्थित देवी-देवताओने भी व्याकुलतासे मोटे-मोटे आँसुओका सिचन आधे घण्टेतक किया। अिधर विशाल अरब सागर भी विह्वलतासे अुमड पडा। मानो सब सृष्टि विकल हुओी हो।

काँग्रेसकी श्रद्धांजलि

विशेष अधिवेशन कलकत्ता सितम्बर १९२०

"The Congress places on record its deep and profound sorrow at the death of Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, whose stainless purity of life, services and sufferings in the cause of his country, whose deep devotion to the welfare of the people, whose arduous endeavours in the fight for national autonomy would enshrine his memory in the grateful recollection of our people and would be a source of strength and inspiration to countless generations of his countrymen."

अर्थात् "लोकमान्य तिलककी मृत्युपर काँग्रेस अतीव दुखी तथा शोकयुक्त होकर अुनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पण करती है। काँग्रेसको दृढ आशा है कि आपका निष्कलक चरित्र, आपकी निरपेक्ष देश-सेवा, स्वराज्यके लिअे किया हुआ अविरल त्याग तथा बलिदान, अपने देश-भाअियोके हितकी व्यग्रता अित्यादि चिरस्मरणीय रहेगे और आपकी पवित्र स्मृति भविष्यमें असंख्य पीढियोके लिअे प्रोत्साहन तथा बलप्रदायक स्रोत बनी रहेगी।"

बीसवाँ प्रकरण

समकालीन नेताओंके कुछ संस्मरण

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

मैंने भारतके प्राय सब नेताओसे सन् १८९६ मे दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोके सम्बन्धमे वार्तालाप किया । मै पूना गया किन्तु वहाँकी परिस्थितिसे मैं पूर्णतया अनभिज्ञ था । मुझे अितना मालूम था कि सार्वजनिक सभाके प्रमुख लोकमान्य तिलक थे और डेक्कन सभाके प्रधान-मन्त्री गोपालकृष्ण गोखले । मै जब तिलकजीसे मिलने गया तब वे अपने अनेक साथियोसे वार्तालाप करनेमे व्यस्त थे । मैंने लोकमान्यसे कहा कि पूनामे अेक सार्वजनिक सभा करना मेरा अुद्देश्य है । अुन्होने पूछा कि क्या आप श्री गोपालराव गोखलेसे मिल चुके है ? मै अुनके प्रश्नका अभिप्राय समझ नही सका । मैं अवाक् रह गया । फिर तिलकजीने स्वयम् मुझे पूनाकी सार्वजनिक दलबन्दीसे परिचित कराया । अुनकी निर्मल स्पष्टवादितासे मै बहुत प्रभावित हुआ । अुन्होने मुझे सरल सुझाव दिया कि मै सार्वजनिक दलबन्दीसे सदा अलग रहनेवाले डा. रामकृष्णराव भाण्डारकरसे अिस सभाका अध्यक्ष होनेकी प्रार्थना करूँ । अिसके अतिरिक्त तिलकजीने मुझे आश्वासन दिया कि वे हर हालतमें मुझे पूरी सहायता प्रदान करेगे । अिस तरह तिलकजीने धैर्य देकर मुझे सम्भाला । अपने कोटि-कोटि देश-बन्धुओकी तरह अुनकी दुर्दम्य आकाक्षा, अगाध ज्ञान, देशप्रेम और सबसे अधिक अुनके पवित्र महान् व्यक्तिगत जीवनकी मै प्रशसा करता हूँ । आधुनिक कालके सब नेताओकी अपेक्षा अुन्होने अपनी ओर लोगोका ध्यान सबसे अधिक खीचा था । अुन्होने स्वराज्यका मन्त्र हमारे प्राणोमे फूँका । प्रस्थापित राजसत्ताकी बुराअिओकी जितनी प्रतीति अुन्हे हुअी थी, अुतनी और किसीको नही । अुनके अच्छेसे-अच्छे अनुयाअीकी तरह अुनका सन्देश अुतनी ही सत्यतासे देशको देनेका मे

दावा करता हूँ। मैं भली-भाँति जानता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र स्वराज्यकी प्राप्ति ही अुनकी आत्माको शान्ति दे सकती है, और कोअी बात नही।

कॉंग्रेसके कलकत्तामे हुअे विशेष अधिवेशनके समय मुझे लोकमान्यकी अनुपस्थिति बहुत खल रही थी। मेरा आज भी यह मत है कि वे जीते होते तो कलकत्तेके मौकेका स्वागत करते। पर यदि अैसा न होता और वे विरोध भी करते तो भी मुझे पसन्द आता। मैं अुनसे कुछ सीखता। मेरे साथ अुनके मतभेद हमेशा रहते थे। पर वे सब मीठे होते थे। मुझसे अुनका निकटका सम्बन्ध है, यह बात अुन्होने मुझे सदा मानने दी। यह लिखते समय अुनके अवसानका चित्र मेरी आखोके सामने आ जाता है। मध्य-रात्रि मे मुझे अुनके अवसान हो जानेका टेलीफोन मेरे साथी पटवर्धनने किया था। अुसी समय साथियोके सामने मेरे मुँहसे यह अुद्‌गार निकला था—"मेरे पास बडा सहारा था जो आज टूट गया।" अिस समय असहयोग-आन्दोलन जोरोपर चल रहा था, अुनसे अुत्साह और प्रेरणा पानेकी मैं आशा रखता था। असहयोगके सम्बन्धमे अुन्होने मुझे विश्वसनीय आश्वासन दिया था। अुन्हे स्वयम् असहयोग मजूर था, परन्तु जनताकी शक्तिके बारेमे कुछ शकित थे। यदि देश और काग्रेस बहुमतसे असहयोगका कार्यक्रम स्वीकार करे तो वे स्वयम् असहयोगमे भरसक योग देनेको तत्पर थे। यकीन था कि अुनके जैसा तेजस्वी राष्ट्र-नेता असहयोगके आन्दोलनोसे अछूता न रहता।

महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय

मेरा लोकमान्य तिलकजीसे सन् १८८५ से घना परिचय था, जब वे पूनामे न्यू अिंग्लिश स्कूल तथा फर्ग्यूसन कालिजमें केवल ४०) रुपये मासिक जीवन-वेतन स्वीकार कर अध्यापनका कार्य करते थे, तभीसे मुझपर आपके स्वार्थत्याग तथा बुद्धिमानीका अमिट प्रभाव पड़ा। भविष्यमें हम मित्र बने। वे बहुत असाधारण पुरुष-सिंह थे। अुनका जीवन अुपदेशमय और मनुष्यमें विद्या-प्रेम, देशभक्ति, धैर्य और अुत्साह बढानेवाला है। राजा भर्तृहरिका नीचे लिखा प्रसिद्ध सुभाषित अुनके विषयमें प्रचुर-अंशमे घटता था:—

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम. ।
यशसिचाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदंहि महात्मनाम् ॥

लोकमान्यको युद्ध-प्रवन्ध करनेका अवसर नही मिला, नही तो जैसा देशभक्त गोपाल कृष्ण गोखलेजीने कहा था लोकमान्य अुसमे भी निपुण पाअे जाते। अुन्हे शास्त्र-ग्रन्थोका व्यमन था और वे शास्त्र तथा सद्ग्रन्थोका अभ्यास करते रहना देश-भक्तका परम धर्म मानते थे। अिसीलिअे ऋषियोने नियम किया है कि "अहवह स्वाध्यायामधीयत" प्रतिदिन वेद-वेदागका तथा अन्य अुत्तम ग्रन्थोका अध्ययन करते रहना चाहिअे। जैसा सुखमे वैसा ही विपत्तिमे लोकमान्यका शास्त्राध्ययन-व्यसन समान बना रहा। राजनीतिमे वे बेजोड थे। अग्रेजोकी नीतिको जैसा वे समझते थे वैसा और नेताओंमें बहुत कम पुरुषोने समझा था। सबसे बडे दो गुण लोकमान्यमे निर्भयता और धैर्य थे। "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध स्वत्व है" ये स्वतन्त्रजनोचित भाव अुसीके हृदयमे रह सकते थे और अुसीके मुखसे निकल सकते थे जिसका हृदय कभी भयसे दुर्बल नही हुआ और जिसके हृदयको विपत्तिका प्रवल-से-प्रबल पवन भी विचलित नही कर सकता। लोकमान्यको पुत्रका वियोग हुआ, धर्मपत्नीका वियोग हुआ, ऋणका सकट आया, तीन बार जेल जाना पडा और अनेक विपत्तियाँ भी आअी किन्तु अुनका धैर्य नही डिगा। मुझे नीचे लिखे श्लोक स्मरण आते है जो कि अुनके सम्बन्धमे अुचित जँचते है --

पुत्रदारैर्वियुक्तस्य वियुक्तस्य धनेन वा।
मग्नस्य व्यसने कृच्छ्रे धृति. श्रेयस्करी नृप ॥
चलानि गिरय कामं युगान्ते पवना हताः।
कृच्छ्रेऽपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मन ॥

मुझे अुनके मृत्युके केवल बारह दिन पूर्व अुनके घर पूनामें रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अुस समय अुन्होने अमेरिका, फ्रान्स, जर्मनी, जापान जैसे विदेशोमें भारत विषयक जागृति तथा प्रचार करनेकी बात मुझसे व्याकुलतासे कही। मैं नि.सन्देह कहता हूँ कि लोकमान्यकी दु खद मृत्युतक अुनसे अधिक लोकप्रिय अन्य राष्ट्रनेता भारतमे नही था। अुनकी पावनकारी स्मृति भविष्यमे पीढियो तक स्फूर्तिका स्रोत बनी रहेगी।

पंजाबसिंह लाला लाजपतराय

मेरा लोकमान्य तिलकसे १८९६ से परिचय था किन्तु १९०४ से अुनसे घनिष्ठ मित्रता हुअी। सन् १९०६ मे कलकत्ता-कांग्रेस द्वारा आपकी अलौकिक प्रतिभाके कारण स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षाका चतुर्मुखी कार्यक्रम स्वीकृत किया गया। बाबू अरविंद घोष, बाबू विपिनचन्द्र पाल तथा मैंने स्वय अुनकी अुग्र राष्ट्रीय नीतिका भरसक समर्थन तथा प्रचार किया। कॉंग्रेसकी अेकता कायम रखनेके लिअे अुन्होने कुछ भी अुठा नही रखा। मैं जब अमेरिकामे भारतके लिअे प्रचार करता था, तब अुन्होने मेरी सब तरहसे सहायता की। मैं जब सन् १९१९ मे अमेरिकासे लौटा तब अुन्होंने बम्बअीमे मेरा हार्दिक तथा भव्य स्वागत किया और स्वराज्य-सघकी ओरसे मुझे अभिनन्दन-पत्र अर्पण किया। अुनके बौद्धिक तथा मानसिक अलौकिक गुणोका मुझपर बहुत असर हुआ। सन् १९२० में दिल्ली तथा बनारसमें हुअे अखिल भारतीय कॉंग्रेसके अधिवेशनोके समय "असहयोग" के विषयमें अुनकी और मेरी काफी चर्चा हुअी। अुनकी अन्तिम बीमारीकी वार्ता सुनते ही मैं व्याकुलतासे बम्बअीकी ओर चल पडा। परन्तु बम्बअी स्टेशनपर पहुँचते ही मुझे मालूम पडा कि अुनकी महान् आत्मा अिस ससारसे चल बसी। मेरे हृदयपर वज्राघात हुआ और मैं स्तभित हुआ। जब मैं सभला तब अुनकी मृत्युसे भारतकी जो क्षति हुअी अुसकी दु.खद अनुभूति मुझे कअी दिनो तक रही।

देशबन्धु बैरिस्टर चित्तरंजनदास

मैं १९०६ मे कलकत्ता-कॉंग्रेस-अधिवेशनके समय लोकमान्य तिलकके सम्पर्कमें आया। अुनकी अलौकिक बुद्धिमानी, धैर्य तथा अुग्र राजनीतिक मतका मेरे युवक हृदयपर चिरप्रभाव पडा। अिसके पश्चात् सन १९१६ में मेरा अुनसे दृढ परिचय हुआ। मैं अुनके राष्ट्रीय दलका अेक कार्यकर्ता बना। वास्तवमे सन १९१७ मे हमारी हार्दिक अिच्छा थी कि लोकमान्य तिलक कलकत्ता-कॉंग्रेसके सभापति बने, परन्तु अुन्होने स्वयम् डा० अेनीबेसेन्टका नाम सभापति-पदके लिअे सूचित किया। सन १९१६ से १९२० तक वे कॉंग्रेस तथा भारतके सिरमौर नेता थे। आयर्लेंडके सिनफीन दलकी भाँति पार्लमेन्टमे अँग्रेज-सरकारसे मुकाबला करनेके वे पक्षपाती थे। अुनमे राजनीतिज्ञकी कुशलता, वीरकी निडरता तथा साधुकी पवित्रताका अनोखा समन्वय दिखाअी देता था।

बैरिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना

लोकमान्य तिलक चतुर राजनीतिज्ञ थे। सूरत-कॉंग्रेसके समयसे मैं अुनको जानने लगा। सन १९०८ मे कोर्टके कार्यसे मेरा अुनसे परिचय हुआ। सन १९१४ मे जब वे मंडालेसे मुक्त होकर लौटे तबसे मेरा और अुनका परिचय दृढ होता गया। अुनके संस्थापित स्वराज्य-संघका मैं अेक निष्ठावान कार्यकर्ता बना। वे व्यवहार-कुशल नेता थे। अुनकी दृष्टि राष्ट्रीयतासे लबालब थी। साम्प्रदायिकता या जातीयताका अुसमे पूरा अभाव था। अमृतसरकी कॉंग्रेसमे अुनकी पैनी राजनीतिक बुद्धिमानीकी विजय हुअी। वे निःस्वार्थी देशभक्त थे। अुनके प्रति सब भारतवासियोंके मनमें आदर था। सचमुच भारतके राजनीतिक तथा सार्वजनिक क्षेत्रमे वे अद्वितीय महापुरुष थे।

पंडित मोतीलाल नेहरू

यद्यपि लोकमान्य तिलकसे मेरा दृढ परिचय नही हुआ था तथापि मैं आपको हृदयसे चाहनेवालोमेंसे अेक था। कॉंग्रेस-अधिवेशनोंके समय आपसे

राजनीतिक प्रश्नोके सम्बन्धमे वार्तालाप करनेके पाँच-छह मौके मुझे प्राप्त हुअे थे। आपकी पैनी बुद्धि तथा राजनीतिक ज्ञानसे मैं प्रभावित हुआ था, परन्तु मैं आपसे कभी भी पूर्णतया सहमत नही हुआ। सूरत कॉग्रेसमे मैं नरमदलका प्रतिनिधि था, परन्तु तिलकजीके धैर्यकी प्रशसा मन-ही-मन करता था। लोकमान्य तिलकजीने म गाधीजी द्वारा प्रदर्शित असहयोग कार्य-क्रमको आशीर्वाद दिया था। यद्यपि असहयोगकी सफलताके सम्बन्धमे आपको आशका थी।

डा० अेनीबेसेन्ट

जबसे मै भारतकी राजनीतिमे हाथ बटाने लगी तबसे ही तिलकसे मेरा परिचय हुआ। मै सन् १९१५ मे पूना गअी और आपसे मिली। आप कॉग्रेसके दोनो दलोमे मेल करानेके लिअे व्याकुल थे और आपने मुझसे मध्यस्थता करानेके लिअे अनुरोध किया। मैने दोनो दलोके बीच समझौता करानेका प्रयत्न किया और भविष्यमे वह सफल भी हुआ। तिलकने सबसे पहले स्वराज्य-सघकी स्थापना की। अिसके पश्चात् मैने अखिल भारतीय स्वराज्य-सघ स्थापित किया। मेरे सहयोगकी अिच्छा प्रदर्शित करते ही तिलकने बिना हिचकिचाहट हार्दिक सहयोग देनेका अभिवचन दिया और अुसे निभाया। जब सन् १९१७ मे अँग्रेज सरकारने मुझे नजरबन्द किया तब तिलकने सरकारकी भर्त्सनाकी आवाज बुलन्द की। सन् १९१९ मे हम दोनोके बीच मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारके सम्बन्धमे प्रामाणिक मतभेद हुआ और वह अन्त तक रहा। परन्तु मै यह कह सकती हूँ कि आपके विरोधमे भी अेक प्रकारकी अुदारता, स्पष्टता तथा रमणीकता रहती थी। किसी भी व्यक्तिपर आपकी विद्वत्ता, दर्शन-शास्त्रज्ञता, कर्मठता तथा स्वार्थ-त्यागका असर पड़े बिना न रहता था।

Ramsay Macdonald :—

(Late Premier of England, Labour Leader, London)

I twice met Mr. Tilak, and I was deeply impressed

at the little I saw of him, by his fine strong personality, and I was fully convinced that he was a man of powerful intelligence and sincere convictions. He loved freedom above everything. He was prepared to sacrifice everything for his country's freedom. He will no doubt be remembered in Histroy as the great statesman of modern India.

A. Fenner Brockway: (M. P., British Labour Leader)

I shall always regard it as a great privilege to have known Bal Gangadhar Tilak. One of the brightest memories of the year from 1918 to 1920 was my association with him as a comrade in his work on behalf of India in this country. He was one of the sons of India whose memory will live for ever and in the days when India wins her freedom, the people will recall the sacrifices and labour of this great patriot. He was a fearless advocate of the right of the Indian people to govern themselves and he always thought of the masses of Indian people and not merely of the wealthier class. By his work the political and economic freedom of India has been undoubtedly brought a great deal near and we should all dedicate ourselves to the cause which he served so nobly.

डा. अेम अे अन्सारी

मेरा लोकमान्य तिलकसे पहला परिचय लखनअू-काग्रेसकी विषय-निर्धारिणी समितिमें हुआ जब कि अुन्होंने खुले दिलसे कहा कि "मैं अग्रेजी हुकूमतमें रहनेकी अपेक्षा भारतीय मुसलमानोकी हुकूमतमें रहना अधिक पसन्द करता हूँ।" अुनकी निखरी देशभक्तिकी मुझपर अमिट छाप पड़ी।

अुनकी ही वजहसे लखनअू समझौता सम्पन्न हुआ। वे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीयताके कट्टर समर्थक थे। "हिन्दूराज" कायम करनेकी कल्पना अुनको छू तक नही सकती थी। सकीर्णता अथवा साम्प्रदायिकतासे विलकुल परे थे। कलकत्ताकी काग्रेसमे (१९१७) अलीवन्धुकी रिहाअीके लिअे प्रस्ताव पेश किया गया था, जिसका तेजस्वी समर्थन लोकमान्य तिलकने ही किया। अुस समय अलीवन्धुकी वृद्धा माता वी. अम्मा काग्रेसमें अुपस्थित थी। अुनकी वेचैनीसे लोकमान्य तिलक भी व्याकुल हुअे और अुन्होने गद्गद् कण्ठसे कहा था कि "मै वीरप्रसवा वी. अम्माके प्रति हार्दिक घन्यवाद प्रकट करता हूँ कि अुनके दो सुयोग्य पुत्र देशकी आजादीके लिअे जेलमे वन्द किअे गअे है। परमेश्वरसे मै प्रार्थना करता हूँ कि अैसी सैकड़ो माताअे भारतवर्षमें हो।" तिलकजीके अुद्गार सुनते ही वी. अम्माके मुखपर सन्तोषकी झलक दिखाअी पड़ी। सचमुच लोकमान्य तिलकका हृदय हिमालय जैसा अूंचा था। अमृतसरकी कांग्रेसमे मैने अुनकी अलौकिक वुद्धिकी विजय देखी। वनारसमे अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी हुअी, अुसमें अुन्होने खिलाफतके प्रस्तावका समर्थन किया था। मुसलमानोंके न्याय-सिद्ध हकोंके वे सदा रक्षक थे। सचमुच वे अैसे युग-पुरुष थे जो कअी शताब्दिओंके वाद अिस भूमिपर अवतार धारण कर देश तथा समाजमें नअी चेतना पैदा करते है।

भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू

मैने लोकमान्य तिलककी लोकप्रियताकी पहली झलक सन् १९०८ में देखी जव कि आपको काले पानीकी कड़ी सजा दी गअी थी। मैंने स्वयम् देखा था कि सरकारी अूँचे अफसरोको कअी दिनोतक वम्वअी तथा पूनामे प्रवल अुपद्रव होनेकी आशंका सताती रही। अुन दिनो वम्वअीके गवर्नरने डरकर अपने निजी कार्यक्रम, जो कि वहुत पहले तय हुअे थे, रद्द करवाअे। लोकमान्य तिलककी सादगीका मुझपर अमिट असर हुआ। मैंने अपनी आँखोसे देखा कि महाराष्ट्र, वम्वअी, लखनअू, दिल्ली, मद्रास तथा कलकत्तामें लोगोने

आपका देवदूत जैसा स्वागत किया। मुझे आपके साथ लंदनमें रहनेका भी मौका प्राप्त हुआ था। वहाँ आपने तत्काल स्वराज्य प्रदान करनेकी माँग भारतकी ओरसे निर्भीकता तथा बुद्धिमत्तापूर्वक प्रस्तुत की थी। आपका युगप्रवर्तक मन्त्र 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और अुसे मैं प्राप्त करूँगा ही' मेरे कानोंमें सदा गूँजता है और देश-सेवाके लिअे प्रोत्साहित करता है।

आंध्र-केसरी टी. प्रकाशम्

मैं लोकमान्य तिलकको सूरत काँग्रेस (१९०७) से जानने लगा। वहाँ अुनके अलौकिक धैर्य तथा बौद्धिक गुणोंका मुझपर अमिट असर हुआ। वे स्वराज्य-मन्त्रके स्रष्टा तथा कर्मठ प्रचारक थे। अमृतसर-काँग्रेसकी विषय-निर्वाचिनी समितिमें अुनमें और गाँधीजीमें चटकीला वार्तालाप हुआ जो मैंने बडी सतर्कतासे सुना। महात्मा गाँधीजी कहने लगे कि हमारी राजनीतिका आधार केवल सत्य ही होना चाहिअे। लोकमान्य तिलकने तत्काल अुत्तर दिया कि केवल सत्य ही राजनीतिका आधार नहीं हो सकता। समयानुकूल वर्ताव करना ही राजनीति है। अुनकी दृष्टिमें राजनीतिका लचीला होना आवश्यक था। जो भी हो वे अपने वचनके पक्के थे और देशको आजाद करानेके लिअे आत्मोत्सर्ग करनेके लिअे तत्पर थे। देशभक्त लोकमान्य अमर हैं।

बै. विट्ठलभाओ पटेल (भारतकी धारा-सभाके भूतपूर्व अध्यक्ष)

लोकमान्य तिलक अेक अैसे महापुरुष थे जो भारतकी राजनीतिको सुखजीवी लोगोंके संकीर्ण क्षेत्रसे आम जनताके बीच ले गअे। आप भारतीय राष्ट्रीयताके जनक थे। आप स्वतन्त्रताको ही सबसे अधिक महत्व देते थे। आपका विश्वास था कि स्वतन्त्रता सब तरहकी अुन्नतिका मूल है। सन् १९०८ से मैंने आपके विषयमें जो सुना अुससे मेरे मनमें आपके प्रति आदर अुत्पन्न हुआ। आपके प्रति मेरा आदर दिन-प्रतिदिन बढता ही गया। अन्ततोगत्वा

आपसे मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध सन् १९१८ मे आया जब कि मै कॉंग्रेसका प्रधान मंत्री बना। सयोगसे आप भी कॉंग्रेसके निर्वाचित अध्यक्ष बने। दिल्ली-कॉंग्रेसमे यह तय हुआ कि आपके नेतृत्वमें अेक प्रतिनिधि-मडल लन्दन भेजा जाअे। मै स्वयम् अुसका अेक सदस्य था। लन्दनमें मुझे लगातार छह मास आपके साथ रहनेका सुअवसर प्राप्त हुआ। मै नि सकोच भावसे कहता हूँ कि तब आपके प्रति मेरे आदरके भावका रूपान्तर गाढी श्रद्धामें हुआ। मुझे आप समीपसे अधिक महान प्रतीत हुअे। आपका सब कुछ ही अलौकिक था। आपने भारत-मंत्रीके सम्मुख कॉंग्रेसकी ओरसे अतीव निर्भीकता तथा बुद्धिमानीसे स्वशासनकी मॉंग प्रस्तुत की। मैंने स्वयम् देखा कि आपके वार्तासे अूँचे अँग्रेज कूटनीतिज्ञ सन्न हो जाते थे। आपने विदेशी राज्योमे भारत सम्बन्धी प्रचार करनेका सूत्रपात किया। मृत्युके दो वर्ष पूर्व अिस कार्यके लिये आपने बहुत कुछ किया। लन्दनमें ब्रिटिश कॉंग्रेस-कमेटीकी पुनर्व्यवस्था आपने ही की। आपने ही लालाजीको अमेरिकामे सहायता भेजी। आप जापान, फ्रास, अमेरिका अित्यादि देशोमे कॉंग्रेसकी ओरसे प्रचार-केन्द्र स्थापित करना चाहते थे। अिस कार्यके लिअे आपने चन्दा अिकट्ठा करनेका श्रीगणेश भी किया। आपकी कर्मठता तथा तत्परता वर्णनसे परे थी। नौकरशाहीपर आपकी अमिट अेव भयपूर्ण छाप थी। बड़े-बडे अँग्रेज अफसर आपके सम्मुख अुपस्थित होना भयवश टालते थे। मुझे स्मरण है कि जब आप लन्दनमें ज्वाअिट पार्लमेन्टरी कमेटीके सम्मुख अुपस्थित होनेके लिअे हालमे अेक ओरके द्वारसे प्रविष्ट हुअे तो दूसरी ओरके द्वारसे लार्ड सिडेनहम चुपचाप खिसक गअे। वास्तवमे वे जॉअिन्ट पार्लमेन्टरी कमेटीके सदस्य थे। जब वे भारतमे थे तबसे ही आपसे डरते थे। सचमुच लोकमान्य तिलक नौकरशाहीके कट्टर शत्रु थे। आपकी अमर कीर्ति भविष्यकी पीढियोके लिअे स्फूर्तिका स्रोत होगी।

विद्यार्थी तिलककी हाअीस्कूल तथा कालेजमें रचित संस्कृत कवितायें

सदागुणज्ञ सुपरीक्षणाय य ।
कवीन्द्रकाव्यामृतकाचनस्य वै ॥
करोति लोके निकष न दुर्जन ।
खलाय तस्मायहिताय मे नम ॥ १ ॥

कृशानुताप कुरुते यथामलं ।
मलं गृहीत्वा वपतोऽस्य जीवन ॥
तथा करोत्येव च य सतोहित. ।
खलाय तस्मै प्रथम नमोस्तुते ॥ २ ॥

यथा पयस्यैव घृत हि वर्तते ।
तथापि लोके सहतेऽतितप्तता ॥
प्रयाति शुद्धि च तदा ततोमृत ।
खलस्य तोषे कथिता कथाशुचि ॥ ३ ॥

मातृ-विलाप

प्रसमीक्ष्य सुतं गुणालय । विधिना सहृतजीवितं पुरा ।
जननी निपपात दु खिता । धरणौ मोहवशं गता भृश ॥ १ ॥
अथ-सा जननी विमूर्छिता । प्रकृति प्राप्तवती यथा यथा ।
सुतजीवितनाशहेतुभिर्विष मोहैरभवत्तथाकुला ॥ २ ॥
वत हास्मि हता विधे त्वया । तनयस्यासुहृता न मे पुन ।
रविणा सरसि प्रशोषिते । ननुजीवेच्छफरी तदामया ॥ ३ ॥

पितरौ प्रथमं ततः सुतौ । हननस्य क्रम अेष भो विधे ।
तनय प्रथमं कथ त्वया । मम नीत प्रतिकूलचारिणा ॥ ४ ॥
बहुकालमहो न सस्थिति । सुत चाप्त्वा न क्लासु वर्धन ।
सकलै सुजनैर्मुदेक्षित । प्रतिपच्चन्द्र अिवासि निर्गत ॥ ५ ॥
अुपचारशतैर्विवर्धित । प्रथम सूचितभाविवैभव. ।
सहसैव दवाग्निना हत. । सुत बीजाकुरवग्दतो भवान् ॥ ६ ॥
न भवान् भवनाद्वहिर्गतो । नुमति प्राप्य कदापि नो मम ।
अधुना परिहाय माक थ सुत! नापृच्छय दिव प्रयास्यसि ॥ ७ ॥
पदवी त्रिदशालयस्य सा । विषमा भूतगुणादिसकुला ।
सुगताद्य कथं सुत त्वया । गमनेऽल्पाध्वन अेव सीदता ॥ ८ ॥
न कृत करणीयमस्ति यत् । अनुभूतानि सुखानि न त्वया ।
वितत विमल यशो न ते । परलोकं कथमद्य गम्यते ॥ ९ ॥
वचन न ममावधारितं । शिशुतायामपि जातक त्वया ।
विफलीकुरुषेऽद्य मे कथ । गिरमुत्थाय सुभाषयेति माम् ॥ १० ॥
नयने मम बाष्पपूरिते । सुत कृत्वाप्यपहृत्य जीवित ।
तव देहविलोकरोधन । कुरुतेऽतृप्त अिवैतदतक ॥ ११ ॥
तवदूयत अेव कोमल । मृदु शय्या विनिवेशित वपु. ।
प्रसहेत तदेव हा कथ । अधुना तात चिताधिरोहणे ॥ १२ ॥
हृतपकजकातिलोचने । वदन चैव शर्देन्दुदर्शनम् ।
मधुरं वचन वपुस्तव । सुभग मन्मथगर्वहारि च ॥ १३ ॥

परिशिष्ट

लोकमान्य तिलक लिखित पुस्तके

१. Arctic Home in the Vedas.

२. मद्रास, सीलोन व ब्रह्मदेश येथील प्रवास

३. The Orion or researches into the antiquity of the Vedas.

४. रहस्य-सजीवन, श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य या ग्रंथाचा शेवटील भाग

५. रहस्य विवेचन; अर्थात् गीतेचें कर्मयोगपर निरूपण

६. श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य—अथवा कर्मयोग शास्त्र

७ Vedic Chronology and Vedang Jyotisha

अिस पुस्तकके सन्दर्भ-ग्रन्थोंकी सूची

१. The History of Indian National Congress Vol. I
By Dr. P. Sitarammaiya.

२. लोकमान्य टिळकांचे चरित्र, खड १, २, ३
लेखक, साहित्य-सम्राट् न. चि. केळकर.

३. लोकमान्य टिळकाचे पुण्यस्मरण ,, ,,

४. लो. टिळकाच्या आठवणी व आख्यायिका, खड १, २, ३
सपादक श्री स. वि. बापट.

५. लो. टिळकाचे केसरीतील लेख सर्व भाग

६. आधुनिक भारत--ले. आचार्य शकरराव जावडेकर

७ टिळक भारत--ले. शि. ल. करन्दीकर

८. कर्मयोग-शास्त्र, वेदकाल निर्णय आणि आर्यांचे मूल
वसति स्थान---लेखक लो. बा. टिळक

९. राष्ट्र-जनक लोकमान्य. ले. ना. द. शिखरे

१०. लोकमान्य तिलकका दर्शन--अनु. श्री सरवटे

११. लो. तिलकका चरित्र भाग १ ला
अनुवादक . श्री सि. मा. लोढे

बहता पा

गु जरातीके सुप्र